ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

9

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात जुलफ़्क़ार 'फ़क़ीर'

मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

Edition: 2014 साइज़: 23X36/16

पेज: 304

पेशकर्दा : जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

فریدبکڈپو(پرائیویٹ)لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2

Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998

E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 9

By: Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi

Pages: 304 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001

Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन
(विषय-सूची)

❋ ❋ ❋

शैतान के हथकंडे

❋ ❋ ❋

मख़्लूक़ की मुहब्बत

❋ ❋ ❋

इस्लाहे नफ़्स

❋ ❋ ❋

रमज़ानुल-मुबारक के फ़ज़ाइल

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله لوليه والصلوة والسلام على نبيه وعلى آله وصحبه اوتماعه

اجمعين الى يوم الدين. اما بعد

उलमा और नेक लोगों के महबूब हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क्कार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामतबरकातुहू के उलूम व मारिफ़ वाले बयान को छापने का यह सिलसिला "खुत्बाते फ़कीर" के उनवान से 1417 हि० (1996 ई०) से शुरू किया था और अब यह नवीं जिल्द आपके हाथों में है। जिस तरह शाहीन (बाज़) की परवाज़ हर आन बुलन्द से बुलन्दतर और बढ़ती चली जाती है कुछ यही हाल हज़रत दामतबरकातुहू के बयानात हिकमत व मारिफ़त का है। जिस बयान को भी पढ़ेंगे एक नई परवाज़े फ़िक्र नज़र आएगी। यह कोई पेशावराना ख़िताबत या याद की हुई तक़रीरें नहीं हैं बल्कि हज़रत के दिल का सोज़ और रूह से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं जो अल्फ़ाज़ के सांचे में ढलकर आप तक पहुँच रहे होते हैं।

अलहम्दुलिल्लाह इदारा "मक्तबतुल-फ़कीर" को यह ऐज़ाज़ हासिल है कि हज़रत दामतबरकातुहू के इन बयानात को किताबी सूरत में अवाम के नफ़ा उठाने के लिए छापता है। हर बयान को तहरीर में लाने के बाद हज़रत दामतबरकातुहू से इस्लाह करवाई जाती है, फिर कंपोज़िंग और प्रुफ़रीडिंग का काम भी बड़ी बारीकी

के साथ किया जाता है और आख़िर में प्रिन्टिंग और बाइन्डिंग का पेचीदा और तकनीकी मरहला आता है। यह तमाम मरहले बड़ी तवज्जेह और मेहनत को चाहते हैं जोकि 'मक्तबतुल-फ़कीर' के ज़ेरे एहतिमाम अंजाम दिए जाते हैं। फिर किताब आपके हाथों में पहुँचती है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश की जाती है कि इशाअत के इस काम में कहीं कोई कमी कोताही महसूस हो या इसकी बेहतरी के लिए सुझाव रखते हों तो इत्तिला फ़रमाकर अल्लाह के हाँ अज्र के हक़दार बनें।

बारगाहे ईज़दी में यह दुआ है कि अल्लाह जल्लेशानुहू हमें हज़रत दामतबरकातुहू के इन बयानात की गूंज पूरी दुनिया तक पहुँचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और इसे आख़िरत के लिए सदक़ा जारिया बनाएं, अमीन।

डा० शाहिद महमूद नक़्शबंदी अफ़ी अन्हु
ख़ादिम मक्तबातुल फ़कीर फ़ैसलाबाद

मुशाहेदात

अल्लाहु रब्बुलइज़्ज़त का बहुत ही फ़ज़्ल व करम और एहसान है कि फ़क़ीर को पिछले तीन साल से हर साल रमज़ानुल मुबारक के आख़िर अशरे में हज़रत के साथ ज़ाम्बिया (अफ़्रीक़ा) में एतिकाफ़ की सआदत नसीब होती है। मोहतरम मुहम्मद हनीफ़ साहब की क़ाबिले दाद कोशिश से हज़रत के ज़ाम्बिया में होने वाले बयानात का यह पहला मजमूआ "ख़ुत्बाते फ़क़ीर जिल्द–9" तैयार हुई तो उन्होंने फ़क़ीर से कहा कि पढ़ने वालों के नफ़े के लिए कुछ वहाँ के चश्मदीद हालात तहरीर फ़रमा दें। पढ़ने वाले जब इन बयानात को पढ़ेंगे और पसमंज़र माहौल और शरीक लोगों की कैफ़ियत भी उनके सामने होगी तो गोया इन महफ़िलों में उनकी ग़ायबाना शिरकत हो जाएगी। आजिज़ तहरीर की लाइन का आदमी तो नहीं बस जो हालात भी वहाँ देखता रहा सादा अल्फ़ाज़ में सीधे-सीधे पेश करने की कोशिश करता है। अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाए।

यूँ तो हज़रत के बयानात का सिलसिला अफ़्रीक़ा की बहुत सी रियासतों में मौक़े-मौक़े चलता रहता है लेकिन रमज़ानुल मुबारक में हज़रत अक़्दस आसपास के कुछ मुल्कों मसलन मुज़ाम्बिक, ज़िम्बावे, साऊथ अफ़्रीक़ा, मलावी वग़ैरह का दौरा करने के बाद आख़िरी अशरे का एतिकाफ़ लूसाका (ज़ाम्बिया) में फ़रमाते हैं। मोहतरम यूनुस सुलेमान को हर साल मेज़बान बनने की सआदत

नसीब होती है। हज़रत की आमद के वक़्त वहाँ के शहरियों का जोश व ख़रोश देखने के क़ाबिल होता है। उलमा सुल्हा की बड़ी तादाद इस्तिक़बाल के लिए एयरपोर्ट पहुँचती है। कुछ लोगों के तो बच्चे भी साथ होते हैं जो हज़रत को गुलदस्ते पेश करते हैं। ये बच्चे सुन्नत लिबास में लिपटे, जुब्बा, अमामे में बहुत अच्छे लगते हैं। एक दफ़ा तो एयरपोर्ट पर काम करने वाली एक औरत ने पूछ ही लिया कि हज़रत! ये आपके पोते हैं? फ़रमाया, "जी हाँ।" कहने लगी, "इतने सारे?" फ़रमाया, "और भी हैं।" वह एक बच्चे की तरफ़ इशारा करके कहने लगी कि यह मुझे दे दें, बहुत प्यारा है।" फ़रमाया, "इतने फ़ालतू भी नहीं।"

एतिकाफ़ का इंतिज़ाम जामा मस्जिद नूर लोसाका में किया जाता है। मुस्तक़िल एतिकाफ़ करने वालों की तादाद सौ से भी बढ़ जाती है। इनमें अवाम के अलावा उलमा सुल्हा और कुछ दूसरे मशाइख़ तरीक़त के ख़लीफ़ा बड़ी तादाद में मौजूद होते हैं। पाकिस्तान, हिन्दुस्तान, बंगलादेश, मिडिल ऐशियाई रियासतों और अफ़्रीक़ी रियासतों से भी उलमा की जमाअतें शरीक होती रहती हैं। मुस्तक़िल एतिकाफ़ करने वालों के अलावा बहुत से मुक़ामी लोग भी अपनी मआशी सरगर्मियों के हिसाब से वक़्ती तौर पर एतिकाफ़ करते हैं। रोज़ाना तीन मज्लिसें होती हैं :

1. औरतों के लिए डेढ़ दो घंटे की मुस्तक़िल नशिस्त सुबह दस बजे होती है जिसमें कम व बेश एक हज़ार औरतें दूर दराज़ का सफ़र करके शरीक होती हैं।
2. अस्र के बाद मर्द मौतकिफ़ हज़रात के लिए खुसूसी नशिस्त होती है।

3. ईशा के बाद ढाई घंटे की अमूमी नशिस्त होती है जिसमें शहर के आसपास से बड़ी तादाद में लोग शरीक होते हैं।

इसके अलावा इतवार के दिन ज़ोहर के बाद नवजवानों के लिए भी एक खुसूसी नशिस्त होती है।

बयानात के दौरान माइक को रेंडियो-ट्रान्समीटर से भी जोड़ दिया जाता है जिससे दूर दराज़ के लोग बराहे-रास्त इन बयानात से फ़ायदा उठा सकते हैं।

इन महफ़िलों में होने वाले हज़रात के बयानात निहायत पुरमग़ज़, पुरहिकमत और जामेअ होते हैं और फिर हज़रत की रूहानी तवज्जोहात उन्हें और ज़्यादा असरदार बना देती हैं। चुनाँचे हाज़िरीन पर रिक़्क़ते क़ल्ब की वजह से गिरया तारी हो जाता है। दुआ के दौरान तड़प व बेचैनी का मंज़र अजीब होता है। बिला मुबालग़े इस एक अशरे में पैदा होने वाली रूहनी वारदात और कैफ़ियतें हाज़िरीन सारा साल महसूस करते रहते हैं।

यह किताब हज़रत के उन्हीं बयानाते हिकमत व मारिफ़त का मजमूआ है। अल्लाह तआला उन सब लोगों को जज़ाए ख़ैर दे जिन्होंने इन बयानात को महफ़ूज़ करने में, तर्तीब देने में और छापने में अपनी हिम्मत भर हिस्सा डाला। खुसूसन मोहतरम मुहम्मद हनीफ़ साहब, डाक्टर शाहिद महमूद साहब और हाजी सिद्दीक़ साहब का जमाअत पर बहुत एहसान है कि वे हज़रत के खुत्बात की इशाअत में कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला उनकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उन्हें अज्रे जज़ील अता फ़रमाए, आमीन।

(मौलाना) हबीबुल्लाह

नाज़िम दारुलउलूम झंग पाकिस्तान

पेश-ए-लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی الله تعالٰی علٰی خیر خلقه سیدنا محمد وعلٰی اله واصحابه اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबाकिराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتديتم﴾ यानी हिदायत पा जाओगे की बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामतबरकातुहू हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है कि हाज़िरीन

के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि उनके ख़ुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे ख़ुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत अक़्दस दामतबरकातुहू ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामतबरकातुहू का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको लिखते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि मैं भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। ये ख़ुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु
एम०ए०बी०एड०
मौज़ा बाग़, झंग

بسم الله الرحمن الرحيم

حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ

तर्के दुनिया की हक़ीक़त

यह बयान 22 रमज़ानुल मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 7 दिसंबर 2001 ई० को ज़ाम्बिया में हुआ। सुनने वालों में उलमा, सुल्हा और आम लोगों की बड़ी तादाद थी।

इक़्तिबास

माल की मिसाल पानी की सी है। किश्ती के चलने के लिए पानी ज़रूरी है। मगर किश्ती तब चलती है जब पानी किश्ती के नीचे होता है और अगर नीचे के बजाए पानी किश्ती के अंदर आ जाए तो यही पानी उसके डूबने का सबब बन जाएगा। यहाँ से मालूम हुआ कि ऐ मोमिन! तेरा माल पानी की तरह है और तू किश्ती की मानिन्द है। अगर यह माल तेरे नीचे रहा तो यह तेरे तैरने का ज़रिया बनेगा और अगर यहाँ से निकलकर तेरे दिल में आ गया तो फिर यह तेरे डूबने का सबब बन जाएगा। इसलिए साबित हुआ कि अगर माल जेब में हो तो वह बेहतरीन ख़ादिम है और अगर दिल में हो तो बदतरीन आक़ा है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
नक़्शबंदी मुजद्दी मद्देज़िल्लहु

तर्के दुनिया की हक़ीक़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ

سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًاo (بنی اسرائیل:١٩)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَلدُّنْيَا دَارُ مَنْ لَّا دَارَ لَهٗ وَمَالُ مَنْ لَّا مَالَ لَهٗ

وَلَهَا يَجْمَعُ مَنْ لَّا عَقْلَ لَهٗ او كما قال عليه الصلوة والسلام.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

दुनियादारों के लिए लफ़्ज़ "जनाब" का तोहफ़ा

उर्दू ज़बान के कुछ अल्फ़ाज़ ऐसे हैं कि उनका हर हर हर्फ़ बड़ा बा-माइने होता है। मिसाल के तौर पर एक जगह पर कुछ अंग्रेज़ी वाले लोग थे। वे दीनी तुलबा को बहुत तंग करते थे। वह अरबी मदरसों के तुलबा को कभी क़ुर्बानी को मेंढा कहते, कभी कुछ कहते, कभी कुछ कहते। एक दिन वे सब तुलबा मिल बैठे और कहने लगे कि उन अंग्रेज़ी वाले लोगों के लिए कोई ऐसा

लफ़्ज़ बनाएं जिसमें उनकी सारी सिफ़ात आ जाएं। उन्होंने एक दूसरे से कहा कि उनमें होता क्या कुछ है :

एक ने कहा कि इनमें बड़ी **जिहालत** है।

दूसरे ने कहा ये लोग बड़े **नालायक़** होते हैं।

तीसरे ने कहा ये बड़े **अहमक़** होते हैं।

चौथे ने कहा ये तो बड़े **बेवक़ूफ़** होते हैं।

उसके बाद उन्होंने कहा कि ये सब बातें ठीक हैं। हम इन चारों अलफ़ाज़ के पहले-पहले हर्फ़ को लेकर एक लफ़्ज़ बनाते हैं। चुनाँचे उन्होंने एक लफ़्ज़ बनाया, **"जनाब।"**

'जीम' से जाहिल,

'नून' से नालायक़,

'अलिफ़' से अहमक़,

'बा' से बेवक़ूफ़।

उसके बाद उन्होंने हर अंग्रेज़ी वाले को "जनाब" कहना शुरू कर दिया। यह लफ़्ज़ ऐसा मशहूर हुआ कि आज किसी को पता ही नहीं कि यह बना कैसे था। सब एक दूसरे को जनाब कहते फिरते हैं। आज आम मुहावरे में जनाब, बारगाह के माने में है जैसा कि हज़रत के माने बारगाह हैं। जनाब और हज़रत यह दोनों अलफ़ाज़ ऐज़ाज़ी बन गए हैं।

लफ़्ज़ "दुश्मन" की वजह तर्कीब

जिस तरह इस लफ़्ज़ का हर-हर हर्फ़ ब-माइने है इस तरह लफ़्ज़ "दुश्मन" का भी हर हर हर्फ़ बा-माइने है। जनाब का

लफ्ज़ तो तुलबा ने शरारत की वजह से बनाया मगर दुश्मन का लफ़्ज़ अल्लाह वालों ने दिलों की तहारत की नीयत से बनाया। दुश्मन के लफ़्ज़ में भी चार हुरुफ़ हैं और इंसान के दुमश्न भी चार हैं :

'दाल' से दुनिया,

'शीन' से शैतान,

'मीम' से मख़्लूक़ की मुहब्बत

'नून' से नफ़्स।

आइन्दा की महफ़िलों में इन चारो दुश्मनों के बारे में तफ़्सील बयान की जाएगी। इसलिए कि जब तक इंसान को अपने दुश्मन का पता ही न हो, वह उस वक़्त तक उसके वार से बच नहीं सकता। दुश्मन उसको हलाक कर देगा क्योंकि दोस्ती के रंग में दुश्मनी करने वाले बहुत से लोग होते हैं क्योंकि दुनिया, शैतान, मख़्लूक़ और नफ़्स इंसान के आख़िरत के दुश्मन हैं। इसलिए कि ये दुश्मन और भी ज़्यादा बड़े और ख़तरनाक दुमश्न हैं।

आज का उनवान है "दुनिया" यानी तर्के लज़्ज़ाते दुनिया। दुनिया की लज़्ज़तें हमें अपने पीछे ऐसे लगा लेती हैं कि हमें अपने रब से ग़ाफ़िल कर देती हैं। इंसान दुनिया की लज़्ज़तों मे पड़कर इस बात को भूल जाता है कि मैं क्या हूँ और क्या नहीं हूँ।

इमाम ग़ज़ाली रह० के नज़दीक दुनिया की मिसाल

इमाम ग़ज़ाली रह० ने यह बात बड़े अच्छे अंदाज़ में समझाई। वह फ़रमाते हैं कि एक आदमी जा रहा था। एक शेर उसके पीछे भागा। उसके क़रीब कोई पेड़ नहीं भी था जिस पर वह चढ़

जाता। उसे एक कुँवा नज़र आया। उसने सोचा कि मैं कुँए में छलांग लगा देता हूँ। जब शेर चला जाएगा तो मैं भी कुँए से बाहर निकल आऊँगा। जब उसने नीचे छलांग लगाने के लिए देखा तो उसे कुँए में पानी के ऊपर एक काला नांग तैरता नज़र आया। अब पीछे शेर था और नीचे कुँए में काला नाग था। वह और ज़्यादा परेशान होकर सोचने लगा कि अब मैं क्या करूं। उसे कुँएं की दीवार पर कुछ घास उगी हुई नज़र आई। उसने सोचा कि मैं उस घास को पकड़कर लटक जाता हूँ न ऊपर रहूँ कि शेर खा जाए और न नीचे जाऊँ कि साँप डसे। मैं दर्मियान में लटक जाता हूँ जब शेर चला जाएगा तो मैं भी बाहर निकल आऊँगा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा कि एक काला और सफ़ेद चूहा दोनों उसी घास को काट रहे हैं जिस घास को पकड़कर वह लटक रहा था। अब उसे और ज़्यादा परेशानी हुई। इस परेशानी के आलम में जब उसने इधर-उधर देखा तो उसे करीब ही शहद की मक्खियों का एक छत्ता नज़र आया। उस पर मक्खियाँ तो नहीं थीं मगर वह शहद से भरा हुआ था। यह छत्ता देखकर उसे ख़्याल आया कि ज़रा देखूं तो सहीं कि इसमें कैसा शहद है। चुनाँचे उसने एक हाथ से घास को पकड़ा और दूसरे हाथ की उंगली पर जब शहद लगाकर चखा तो उसे बड़ा मज़ा आया। अब वह उसे चाटने में मशग़ूल हो गया। न उसे शेर याद रहा न नाग याद रहा और न ही उसे चूहे याद रहे। सोचें कि उसका अंजाम क्या होगा। यह मिसाल देने के बाद इमाम गज़ाली रह० फ़रमाते हैं :

- ऐ दोस्त! तेरी मिसाल उसी इंसान की सी है।
- मलकुल-मौत शेर की मानिन्द तेरे पीछे लगा हुआ है,

- क़ब्र का अज़ाब उस साँप की सूरत में तेरे इंतिज़ार में है,
- काला और सफ़ेद चूहा, ये तेरी ज़िंदगी के दिन और रात हैं,
- घास तेरी ज़िंदगी है जिसे चूहे काट रहे हैं,
- और यह शहद का छत्ता दुनिया की लज़्ज़तें हैं जिनसे लुत्फ़अंदोज़ होने में तू लगा हुआ है। तुझे कुछ याद नहीं, सोच कि तेरा अंजाम क्या होगा।

वाक़ई बात यही है कि इंसान दुनिया की लज़्ज़तों में फंसकर अपने रब को नाराज़ कर लेता है। कोई खाने पीने की लज़्ज़तों में फंसा हुआ है और कोई अच्छे ओहदे और शोहरत की लज़्ज़त में फंसा हुआ है। यही लज़्ज़तें इंसान को आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देती हैं। इसलिए जहाँ तर्के दुनिया का लफ़्ज़ आएगा उससे मुराद तर्के लज़्ज़ात होगा।

उम्मते मुहम्मदिया के फ़ुक़रा का मुक़ाम

हमारे मशाइख़ ने दुनिया के बारे में अजीब आरिफ़ाना कलाम फ़रमाया है :

﴿حَلَالُهَا حِسَابٌ وَحَرَامُهَا وَبَالٌ﴾

इस दुनिया का हलाल हो तो हिसाब देना होगा और अगर हराम हो तो वह इंसान के लिए वबाल होगा।

इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत के फ़ुक़रा मेरी उम्मत के अमीर लोगों से पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। इसलिए कि उनको दुनिया में थोड़ा रिज़्क़ दिया गया और उन्होंने सब्र व शुक्र से

वक़्त गुज़ारा जबकि दूसरों को ख़ूब माल मिला और मनपसन्द खाने खाए।

याद रखें कि आख़िरत का एक दिन दुनिया के सत्तर हज़ार सालों के बराबर है। बाज़ रिवायात में आया है कि पचास हज़ार सालों के बराबर है। अब अगर एक दिन पचास हज़ार सालों के बराबर भी हो और ग़रीब लोग पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे तो उस दिन अमीर लोग तमन्ना करेंगे, काश! हम भी दुनिया में फ़क़ीर होते। ग़रीबों के लिए ख़ुशख़बरी हो।

दुनिया व आख़िरत में आसाइश का मामला

कभी-कभी माल की वजह से इंसान में "मैं" आ जाती है। उसकी आवाज़ में माल की झंकार शामिल होती है। कई अमीर लोग तो फ़िरऔन बन जाते हैं और वे ख़ुदा के लहजे में बोलना शुरू कर देते हैं। इसके मुक़ाबले में अगर कोई मालदार होने के बावजूद आजिज़ी करेगा और वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के क़ुर्ब को हासिल करने के लिए नेक बनेगा तो वह ग़रीबों पर भी फ़ज़ीलत पा जाएगा। इसीलिए फ़रमाया गया है कि कई लोग ऐसे होंगे जो दुनिया में नरम बिस्तरों पर रहते होंगे और आख़िरत में भी अल्लाह तआला उनको जन्नत के बिछौने अता फ़रमा देंगे।

मदीने के ग़रीब लोगों की परेशानी

एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास मदीना के ग़रीब लोग आए। फ़ुक़राए मदीना से मुराद अस्हाबे सुफ़्फ़ा हैं

जिनमें से किसी के जिस्म पर पूरा कपड़ा होता था और किसी के जिस्म पर पूरा कपड़ा भी नहीं होता था। सिर्फ़ सतर छिपाने का कपड़ा होता था। सहाबा किराम फ़रमाते हैं कि हम एक दूसरे की ओट में बैठते थे ताकि हमारे नंगे बदनों पर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र न पड़ जाए।

इन फ़ुक़रा ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें जिस हाल में रखा, हम इस पर राज़ी हैं मगर हम फ़िक्रमंद हैं कि मालदार सहाबा आमाल में हम से आगे बढ़ गए क्योंकि वे माली इबादतें करते हैं हम नहीं कर सकते। हम यह चाहते हैं कि हमें भी आख़िरत के बड़े दर्जे मिलें और उनसे आगे बढ़ जाएं। इसलिए हमें कुछ बता दीजिए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ पढ़ो तो तैंतीस मर्तबा सुब्हानअल्लाह, तैंतीस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और चौंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। इनके पढ़ने से अल्लाह तआला तुम्हें आख़िरत में बुलन्द मर्तबे अता फ़रमा देंगे।

सहाबा किराम आख़िरत में दर्जात की बुलन्दी का नुस्ख़ा पाकर बड़े ख़ुश हुए। अब उन्होंने नमाज़ों के बाद चुपके-चुपके सुब्हानअल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़ना शुरू कर दिया। वह अमीर सहाबा किराम जिनको अल्लाह तआला ने फ़राख़ी अता फ़रमाई थी उनका भी अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू था। उन्होंने जब देखा कि कोई इधर बैठा पढ़ रहा है और कोई उधर बैठा पढ़ रहा है तो सोचा कि आख़िर कोई तो बात है। चुनाँचे खोद कुरेद करने के बाद उन्हें पता चल गया और उन्होंने भी अमल करना शुरू कर दिया।

जब उन ग़रीब सहाबा किराम को पता चला कि इन अमीर सहाबा किराम ने भी अमल करना शुरू कर दिया तो वे सोच में पड़ गए कि हम इन अमीरों से कैसे आगे बढ़ सकते हैं। चुनाँचे वे फिर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आपने दर्जात की बुलन्दी का जो नुस्ख़ा हमें इर्शाद फ़रमाया था वह तो अमीर लोग भी कर रहे हैं। यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ (الجمعہ:۴)﴾

यह तो फिर अल्लाह का फ़ज़ल है जिसको चाहे वह अता कर दे।

गोया नेकी के साथ-साथ अल्लाह तआला ज़्यादा रिज़्क़ अता फ़रमाएं तो यह उसका फ़ज़्ल होता है। और अगर यह माल दुनियादारी, तकब्बुर, शोहरत और रियाकारी का सबब बने तो फिर इंसान के लिए वबाल है। इसलिए इस उनवान को खोलकर बयान करना बहुत ज़रूरी है ताकि इंसान गड़बड़ी से बच जाए।

तमाम बुराईयों की जड़

हदीस पाक में फ़रमाया गया :

﴿حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ.﴾

दुनिया की मुहब्बत तमाम बुराईयों की जड़ है।

हमारे मशाइख़ ने मतलब समझाने की ख़ातिर इस हदीस को सामने रखते हुए चंद अल्फ़ाज़ और बढ़ा दिए हैं। चुनाँचे फ़रमाया :

﴿حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ. وَتَرْكُهَا مِفْتَاحُ كُلِّ فَضِيْلَةٍ.﴾

दुनिया की मुहब्बत तमाम बुराईयों की जड़ है और उसका तर्क कर देना हर फ़ज़ीलत की कुंजी है।

तर्के दुनिया का मतलब

दुनिया को तर्क कर देने का मतलब यह नहीं है कि बीवी, बच्चों और माँ-बाप को छोड़कर ग़ार में मुसल्ला बिछाकर इबादत शुरू कर दी जाए। क्योंकि हदीस पाक में है :

﴿لَا رَهْبَانِيَّةَ فِى الْإِسْلَامِ.﴾

इस्लाम में रहबानियत (सन्यास) नहीं है।

और बनी इस्राईल ने जो रहबानियत अख़्तियार की थी उसके बारे में क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया है :

﴿وَرَهْبَانِيَّةَ نِ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ (الحديد:٢٧)﴾

और रहबानियत तो बिदअत थी जो इन ईसाईयों ने घढ़ ली थी, हमने फ़र्ज़ नहीं की थी।

यानी उन्होंने अपनी मर्ज़ी से रहबानियत को अख़्तियार किया था। अल्लाह तआला ने इसका हुक्म नहीं दिया था। इससे पता चला कि रहबानियत को तर्के दुनिया नहीं कहते बल्कि वह तो कामचोर लोगों का काम होता है। उनका काम करने को दिल नहीं करता और वह कहते हैं कि हम तवक्कुल पर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। तर्के दुनिया का मतलब यह है कि इंसान दुनिया की लज़्ज़तों को हेच समझे और यक़ीन जाने कि लज़्ज़तों के पूरा करने की जगह आख़िरत है। जिसने दुनिया को बक़द्र ज़रूरत इस्तेमाल किया वह इंसान कामयाब रहा और जो लज़्ज़तों और शहवतों के

पीछे पड़ गया वह बर्बाद हो गया। इसलिए इंसान दुनिया में तो रहे मगर दुनिया का तलबगार न बने और वह सोचे :

दुनिया में हों दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नहीं हूँ

हम दुनिया के बाज़ार से तो गुज़रें मगर दुनिया के ख़रीदार न बनें। इंसान बाज़ार से तो गुज़रता है मगर वह अपनी मंज़िल की तरफ़ रवां-दवां रहता है। सौ तरह का ट्रैफ़िक होता है मगर वह उनकी तरफ़ कान भी नहीं धरता। वह सिर्फ़ गुज़र रहा होता है। इसी तरह हम जब बाज़ार से गुज़र रहे होते हैं तो कभी पीला चेहरा नज़र आता है, कभी नीला चेहर नज़र आता है, फंसाने के लिए शैतान के कई फंदे रास्ते में मौजूद होते हैं। शैतान के चलते फिरते कई जाल नज़र आते हैं। हम इस दुनिया में तो रहें मगर शैतान के जालों से अपने आपको बचाएं।

तर्के लज़्ज़त दुनिया के मतलब यह भी नहीं होता कि इंसान अच्छे खाने छोड़ दे बल्कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से जो रिज़्क मिले वह उसे इस्तेमाल करे मगर उसके दिल में माल व दौलत जमा करने की हवस न हो। उसे जो मिल जाए वह उसे अल्लाह की नेमत समझकर इस्तेमाल करेगा। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि हमने अपने बड़ों से मारिफ़त वाला सबक़ तर्के दुनिया के ज़रिए सीखा, तस्बीहात के ज़रिए नहीं।

एक बच्चे की अमली नसीहत

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में एक आदमी अपने बेटे को लाया और अर्ज़ किया, हज़रत! इसके लिए दुआ फ़रमा दें। यह एक

अच्छी आदत हैं। पहले ज़माने में भी लोग अपनी औलाद के लिए अल्लाह वालों से दुआ करवाते थे। अल्लाह करे कि हमें भी अल्लाह वालों की दुआ लग जाए। यह और बात है कि लोग कई मर्तबा अपने बेटों को लेकर दुआएं करवाने के लिए आते हैं मगर बाप की अपनी हालत ऐसी होती है कि पहले उसके लिए दुआ करने को दिल करता है कि अल्लाह तआला उसको हिदायत दे। ख़ैर उन अल्लाह वालों ने उसके बेटे के लिए दुआ कर दी। उनके पास जेब में कोई मीठी चीज़ थी। उन्होंने निकालकर उस बच्चे को देनी चाही। जब उन्होंने वह चीज़ बच्चे की तरफ़ बढ़ाई तो बच्चे ने मुँह फेर लिया और अपने वालिद की तरफ़ देखना शुरू कर दिया हालाँकि बचपन में बच्चे के अंदर मीठी चीज़ खाने का शौक़ शदीद होता है। उन बुज़ुर्ग ने फिर इर्शाद फ़रमाया, ले लो। बच्चे ने फिर उस चीज़ से नज़रें हटाकर अपने बाप की तरफ़ देखना शुरू कर दिया। उसके वालिद ने कहा, बेटा हज़रत आपको चीज़ दे रहे हैं ले लो। जब बाप ने इजाज़त दे दी तो बच्चे ने हाथ बढ़ाया और वह चीज़ ले ली।

जब बच्चे ने वह चीज़ ले ली तो उन बुज़ुर्ग की आँखों में आँसू आ गए। वह आदमी हैरान होकर पूछने लगा, हज़रत! आप क्यों रोए? वह फ़रमाने लगे कि हमसे तो यह बच्चा अच्छा है कि मैंने इसको ऐसी चीज़ दी जिसकी तलब इसके अंदर शदीद है लेकिन इसने इस चीज़ को नहीं देखा बल्कि आपकी तरफ़ देखा कि मेरा अब्बा मुझे क्या कहता है। ऐ काश! हम जो गलियों में चलते हैं और हमारी नज़रों के सामने भी नज़रों को अपनी तरफ़ खींचने वाली शख़्सियतें आती हैं। हम भी उधर से नज़र फेरकर देखते कि रब तआला हमें क्या कहते हैं।

ख़तरनाक जादूगरी

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

الدُّنْيَا اَسْحَرُ مِنْ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ. كَانَ سِحْرُ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ يُفَرِّقُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖ. وَهٰذِهِ السَّحَارَةُ بَيْنَ الْعَبْدِ وَرَبِّهٖ.

दुनिया हारूत और मारूत से भी बड़ी जादूगरनी है। हारूत और मारूत का जादू मियाँ और बीवी के दर्मियान जुदाई डालता देता था और दुनिया ऐसी जादूगरनी है जो बंदे और परवरदिगार के दर्मियान जुदाई डाल देती है।

हारूत और मारूत दो फ़रिश्ते थे। अल्लाह तआला ने उनको इंसानों की आज़माईश के लिए जादू का इल्म देकर भेजा मगर इंसान को उसके सीखने और इस्तेमाल करने से मना फ़रमा दिया। उनके पास जो भी जादू का इल्म सीखने के लिए आता वह उनको बता देते कि यह नुक़सानदेह है लेकिन ग़ाफ़िल लोग भी सीखते थे। इस जादू के ज़रिए मियाँ-बीवी के दर्मियान जुदाई डाल देते थे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह दुनिया ऐसी जादूगरनी है कि जो बंदे और परवरदिगार के दर्मियान जुदाई डाल देती है।

किसी बाख़ुदा शायर ने क्या ख़ूब कहा—

لِكُلِّ شَيْءٍ اِذَا فَارَقْتَهٗ عِوَضٌ   وَلَيْسَ لِلّٰهِ اِنْ فَارَقْتَ مِنْ عِوَضٍ

तू दुनिया की जिस चीज़ से भी जुदा होगा तेरे लिए हर चीज़ का बदल मौजूद है लेकिन अगर तू अल्लाह से जुदा हुआ तो तेरे लिए कोई बदल मौजूद नहीं होगा।

एक अनमोल नसीहत

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु एक जलीलुल-क़द्र सहाबी हैं। हमारे सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया में सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद उनका नाम आता है। वह आतिशप्रस्त के बेटे थे। वह कई उस्तादों से होते हुए आख़िर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनको अस्हाबे सुफ़्फ़ा का मानीटर (निगरान) बना दिया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को उनसे इतनी मुहब्बत थी कि आपने इर्शाद फ़रमाया ﴿السلمان منا اهل البيت﴾ सलमान मेरे अहले बैत में से हैं।

जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मदीना की हिजरत के बाद सहाबा किराम में आपस में भाईचारा करवाया तो उस वक़्त हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबूदरदा रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई बना दिया। वह दोनों एक दूसरे को अपने हालात सुनाया करते थे। हज़रत अबूदरदा रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुलमक़दस चले गए और वहीं रहना शुरू कर दिया। उन्होंने वहाँ से हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा और यह तहरीर फ़रमाया :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْزَلَنِیْ فِی الْاَرْضِ الْمُقَدَّسِ وَاٰتَانِیَ اللّٰهُ مَالاً وَّاَوْلَادًا﴾

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने मुझे मुक़द्दस जगह पर वारिद होने की तौफ़ीक़ बख़्शी और अल्लाह तआला ने मुझे माल भी ख़ूब दिया और औलाद भी ख़ूब अता फ़रमाई।

जब हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह पढ़ा तो

आपने उस ख़त के जवाब में फ़रमाया :

فاعلم يا ابا الدردا ان الارض المقدس لا تقدس الانسان ولكن تقدس الانسان باالاعمال الصالحه والاخلاق الفاضلة فليت اعطاک الله بدل المال علما نافعا وبدل الاولاد عملا صالحا.

ऐ अबूदरदा! आप इस बात को जान लीजिए कि जगह की वजह से इंसान मुक़द्दस नहीं बना करता बल्कि इंसान का तक़द्दुस तो नेक आमाल और अच्छे अख़्लाक़ की वजह से होता है। ऐ काश! अल्लाह तआला तुझे माल के बदले इल्मे नाफ़े अता फ़रमा दे और औलाद के बदले अमले सालेह अता फ़रमा देता।

इस बात से अंदाज़ा लगा लीजिए कि हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की नज़र किस चीज़ पर रहती थी। वे दुनिया की इन चीज़ों की तरफ़ नहीं भागते थे बल्कि उनकी नज़र हमेशा आख़िरत की तरफ़ रहती थी।

अक़्ले मआश और अक़्ले मआद

अल्लाह वालों के मुताबिक़ अक़्ल दो तरह की होती है :

1. अक़्ले मआश,

2. अक़्ले मआद।

अक़्ले मआश वह अक़्ल होती है जो दुनिया का फ़ायदा सोचने वाली हो। आपने देखा होगा कि कुछ लोग दुनिया के मामले में बड़े तेज़ होते हैं मगर वे दीन के मामले में कहते हैं कि हमें तो कुछ समझ नहीं है। **अक़्ले मआद** उस अक़्ल को कहते हैं कि जो हर चीज़ में आख़िरत की तरफ़ रुजू करने वाली हो। अंबिया

किराम अलैहिमुस्सलाम दुनिया में अक़्ले मआद लेकर तशरीफ़ लाए और फिर उनके सदके ईमान वालों को भी अक़्ले मआद नसीब हुई। यही वजह है कि अल्लाह वालों के पास अक़्ले मआद होती है और वह हर चीज़ को आख़िरत के नुक़्तए नज़र से देखते हैं। एक मिसाल से बात साफ़ हो जाएगी।

अच्छी संगत का ईनाम

एक आदमी संगतरे बेच रहा था और आवाज़ लगा रहा था, "चंगे संगतरे, चंगे संगतरे।" एक अल्लाह वाले उनके क़रीब से गुज़रने लगे। उन्होंने जब उसकी आवाज़ सुनी तो उन पर अजीब हाल तारी हुआ। वह ऊँची आवाज़ से, "अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! कहने लगे। जब उनको सहूलत हुई तो किसी ने पूछा हज़रत! क्या बना? हज़रत ने फ़रमाया, क्या तुमने नहीं सुना कि वह क्या कह रहा था।? उसने कहा, हज़रत! वह तो संगतरे बेच रहा था और वह संगतरे बेचते हुए आवाज़ लगा रहा था, चंगे संगतरे, चंगे संगतरे। हज़रत ने फ़रमाया, नहीं तुम समझे ही नहीं कि वह क्या कह रहा था। वह कह रहा था, "चंगे संग तरे" यानी जो अच्छों के संग लग गए वह तर गए यानी जो नेकों के साथ जुड़ गए उनकी किश्ती किनारे लग गई।

यहीं से फ़र्क़ देख लीजिए कि दुनियादार ने उस चीज़ से दुनिया को सोचा और अल्लाह वालों ने उस चीज़ से आख़िरत को सोचा। यही वजह है कि अल्लाह वाले होते तो दुनिया में हैं लेकिन वह दुनिया से धोका नहीं खाते। उन पर दुनिया का मकर व फ़रेब वाज़ेह हो चुका होता है।

सांपों का मंत्र

जिन लोगों को सांप का मंत्र आता है वे सांप पकड़ लेते हैं मगर सांप उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचाते। हमने खुद इस बात का मुशाहिदा किया है। हमारा एक वाकिफ़ आदमी था। वह करीब ही रहता था। उसे सांप पकड़ने का फ़न आता था। अल्लाह की शान वह एक एक मीटर काले सांप पकड़कर ले आता था।

एक मर्तबा एक सांप सोया पड़ा था। वह आदमी अपने एक दोस्त के साथ मिलकर उसके करीब से गुज़रने लगा, उसके दोस्त ने कहा, यह सांप पड़ा है। वह कहने लगा यह सोया हुआ है। सोए हुए को क्या पकड़ना। लिहाज़ा उसने जाकर सांप को जगाया और जब सांप भागने लगा तो उस वक़्त उसको पकड़ा। उसका दोस्त कहने लगा तुमने तो सांप को पकड़ ही लिया। हम तो साइकल चलाने के लिए निकले थे। उसने कहा, बहुत अच्छा। उसने सांप को लपेटकर अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने ज़िंदा सांप जेब में डालकर साईकल चलाई। इससे मालूम हुआ कि जिन लोगों को सांप का मंत्र आता है सांप उनको नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

दुनिया का मंत्र

यूँ मालूम होता है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में रहकर दुनिया का मंत्र सीख लिया था। इसलिए वे दुनिया में तो रहते थे मगर दुनिया ने उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। हमें भी चाहिए कि हम भी अल्लाह वालों की सोहबत में रहकर दुनिया का मंत्र सीखें।

फिर हम दुनिया में तो रहेंगे मगर यह हमें नुक़सान नहीं देगी।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कई दफ़ा मेहराब में खड़े होकर कहते, ﴿يا صفراء يا بيضاء غرغيرى﴾ ऐ सोने! ऐ चाँदी! किसी और को धोका दे यानी मैं तेरे धोके में आने वाला नहीं हूँ। हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने एक अजीब बात लिखी है। वह फ़रमाते हैं कि आम मुसलमान तो यह समझते हैं कि सहाबा किराम की सबसे बड़ी करामत यह है कि हज़रत सअद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर दरिया से हिफ़ाज़त से गुज़र गया मगर अहले इल्म के नज़दीक सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की सबसे बड़ी करामत यह है कि उनके सामने फ़ुतूहात के दरवाज़े खुले तो दुनिया का दरिया बहने लगा और वे अपने ईमान को इस दुनिया के दरिया से हिफ़ाज़त से बचाकर ले गए।

सैय्यदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में आख़िरत की फ़िक्र

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस क़द्र आख़िरत का फ़िक्र था कि एक दफ़ा उन्होंने पीने के लिए पानी मांगा तो किसी ने शर्बत लाकर पेश कर दिया। वह शर्बत पीते हुए रोने लग गए। किसी ने पूछा हज़रत! आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाने लगे कि मुझे क़ुरआन मजीद की आयत याद आ गई कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला कुछ लोगों को कह देंगे :

﴿أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَٰتِكُمْ فِى حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا﴾

तुमने तो दुनिया की लज़्ज़तें दुनिया में समेट ली थीं, वे तुम्हें

मिल गयी थीं। आज तुम्हारे लिए मेरे पास कोई हिस्सा नहीं है।

अब सोचें कि उन्होंने पानी मांगा और उसके बदले में शर्बत मिला तो उसको पीते हुए रोने लग गए कि ऐसा तो नहीं कि आख़िरत की लज़्ज़तें दुनिया में ही मिल रही हों।

सैय्यदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की गुज़रान मुश्किल थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और चंद दूसरे सहाबा किराम भी थे। उन्होंने मिलकर मशवरा किया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बैतुल-माल से बहुत कम तंख़्वाह मिलती है, उसे बढ़ाना चाहिए। सबने मशवरा कर लिया कि इतना बढ़ाना चाहिए। लेकिन सवाल यह पैदा हुआ कि अमीरुल-मुमिनीन को कौन बताए। उसके लिए कोई तैयार न हुआ। मशवरे में तय पाया कि हम उम्मुल-मुमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस मशवरे से आगाह कर देते हैं और वह अपने वालिद मोहतरम को यह बात बता देंगी। लिहाज़ा उन्होंने हज़रत हफ़सा को अपना मशवरा बता दिया। यह भी कहा कि हमारे नामों का इल्म अमीरुल मुमिनीन को न हो।

उम्मुल मुमिनीन हज़रत हफ़सा ने एक बार मौक़ा पाकर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर को बताया कि अब्बा जान! कुछ हज़रात ने यह सोचा है कि आपकी तंख़्वाह कुछ बढ़ा देनी चाहिए क्योंकि आपका वक़्त तंगी से गुज़र रहा है। हज़रत उमर ने पूछा, यह किस-किस ने मशवरा किया है? उन्होंने कहा मैं उनका नाम

नहीं बताऊँगी। यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया, हफ़सा! अगर तू मुझे उनके नाम बता देती तो मैं उनको ऐसी सज़ा देता कि उनके जिस्मों पर निशान पड़ जाते कि ये लोग मुझे दुनिया की लज़्ज़तों की तरफ़ माइल करना चाहते हैं। और फिर फ़रमाया, हफ़सा! तू मुझे बता कि तेरे घर में नबी अलैहिस्सलाम की गुज़रान कैसी थी?

हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब में कहा कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहनने के लिए एक ही जोड़ा था। दूसरा जोड़ा गेरू रंग का था। जो कभी किसी लश्कर के आने पर या जुमा के दिन पहना करते थे। खजूर की छाल का एक तकिया था। एक कंबल था जिसे सर्दियों में आधा ऊपर और आधा नीचे ले लेते थे और गर्मियों में चार तह करके नीचे बिछा लेते थे। मेरे घर में कई दिनों तक चूल्हे में आग भी नहीं जलती थी। मैंने एक बार घी के डिब्बे की तलछट से रोटी को चिपड़ दिया तो नबी अलैहिस्सलाम ने खुद उसे शौक़ से खाया और दूसरों को भी शौक़ से खिलाया।

यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया, हफ़सा! नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारी। उनके बाद अमीरुल मुमिनीन अबूबक्र ने भी उसी रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारी और वह अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल गए हैं। अगर मैं भी उसी रास्ते पर चलूंगा तो फिर मैं उनसे मिल सकूंगा। अगर मेरा रास्ता बदल गया तो मंज़िल भी बदल जाएगी। सुब्हानअल्लाह इन हज़रात को यह हक़ीक़त समझ में आ चुकी थी कि यह दुनिया की ज़िंदगी ख़त्म होने वाली है। इसलिए वे ज़रूरत

के बराबर दुनियावी नेमतें हासिल करते थे और लज़्ज़तों को आख़िरत पर छोड़ देते थे।

सैय्यदना हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को दुनिया से ज़ोहद

एक बार अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी के दिल में बड़ी तमन्ना थी कि घर में कोई स्वीट डिश तैयार करें। उन्होंने हज़रत अबूबक्र से कहा कि कुछ पैसे दें। अमीरुल मुमिमीन हज़रत अबूबक्र ने फ़रमाया कि मेरे पास पैसे तो नहीं हैं। उनकी बीवी ने सोचा कि मुझे रोज़ाना का थोड़ा-थोड़ा ख़र्चा मिलता है, मैं उसमें से बचाती रहती हूँ। जब मुनासिब रक़म जमा हो जाएगी तो कोई मीठी चीज़ बना लूंगी। इस तरह उन्होंने एक दिन स्वीट डिश बनाई। खुद भी खाई और हज़रत अबूबक्र को भी पेश की। हज़रत अबूबक्र ने पूछा यह पैसे कहाँ से आए? कहने लगीं कि आप मुझे जो रोज़ाना ख़र्चा देते हैं मैंने उसमें से थोड़ा थोड़ा बचाकर कुछ पैसे इकठ्ठे किए और आज यह स्वीट डिश बनाई है। आपने फ़रमाया बहुत अच्छा, साबित हुआ कि यह ख़र्चा हमारी ज़रूरत से ज़्यादा है। लिहाज़ा आपने इतनी मिक्दार आइन्दा बैतुल माल से लेनी बंद कर दी।

सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़ावत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिन सहाबा किराम को दुनिया का माल दिया वे दोनों हाथों से अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करते थे ताकि अल्लाह के हाँ ज़्यादा से ज़्यादा रुतबे पाएं। हज़रत

उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने ख़ूब माल दिया था। उसके दिल में माल की मुहब्बत नहीं दी थी। वह अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करने में कभी ढील नहीं करते थे। बैरे रोमा एक कुआँ था जो एक यहूदी की मिल्कियत में था। उस वक़्त मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी मुश्किल का सामना था। वह इस यहूदी से पानी ख़रीदते थे। जब हज़रत उस्मान ने देखा कि मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी दुश्वारी का सामना है तो वह यहूदी के पास गए और उसे फ़रमाया कि यह कुँवा बेच दो। उसने कहा, मेरी तो बड़ी कमाई होती है। मैं तो नहीं बेचूंगा। यहूदी का जवाब सुनकर हज़रत उस्मान ने फ़रमाया कि आप आधा बेच दें और क़ीमत पूरी ले लें। वह यहूदी न समझ सका। अल्लाह वालों के पास फ़िरासत होती है। यहूदी ने कहा, हाँ ठीक है कि आधा हक़ दूंगा और क़ीमत पूरी लूंगा। उसने क़ीमत पूरी ले ली और आधा हक़ दे दिया और कहा कि एक दिन आप पानी निकालें और दूसरे दिन हम पानी निकालेंगे। जब हज़रत उस्मान ने उसे पैसे दे दिए तो आपने ऐलान करवा दिया कि मेरी बारी के दिन मुसलमान और काफ़िर सब बग़ैर क़ीमत के अल्लाह के लिए पानी इस्तेमाल करें। जब लोगों को एक दिन मुफ़्त पानी मिलने लगा तो दूसरे दिन ख़रीदने वाला कौन होता। चुनाँचे वह यहूदी कुछ महीनों के बाद आया और कहने लगा, जी आप मुझसे बाक़ी आधा भी ख़रीद लें। आप ने बाक़ी आधा भी ख़रीदकर अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया।

एक मर्तबा सैय्यदना उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सामान से लदे हुए एक हज़ार ऊँट नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत

में पेश कर दिए। यह वाक़िआ यूँ है कि एक बार जंग के मौक़े पर खाने पीने के सामान की ज़रूरत थी और क़हत भी था। सहाबा किराम मुश्किल हालात में थे। उन्हीं दिनों हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के एक हज़ार ऊँट सामान से लदे हुए शाम से आए। मदीना मुनव्वरा के सब ताजिर ख़रीदने के लिए पहुँच गए। वह कहने लगे कि आप जितना मुनाफ़ा लेना चाहते हैं ले लें। आपने पूछा कितना मुनाफ़ा दोगे? एक ने कहा, कि सौ फ़ीसद मुनाफ़ा दे दूंगा यानी जितने का आपने यह माल ख़रीदा है उससे दुगना देने के लिए तैयार हूँ। आपने फ़रमाया नहीं थोड़ा है। दूसरे ने कहा कि मैं इससे भी दुगना मुनाफ़ा देता हूँ। तीसरे ने उससे बढ़कर कहा और चौथे ने उससे बढ़कर कहा। मगर आपने कहा कि मैं नहीं देता। हाँ अलबत्ता इससे ज़्यादा कोई दे सकता हो तो बताए। उन्होंने कहा, इससे ज़्यादा तो नहीं दे सकते।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे पास एक ऐसा ग्राहक है जो जिसने दस गुना की तो पक्की गारन्टी दी है, वैसे उसने सत्तर गुना भी कहा है और सात सौ गुना भी कहा है बल्कि ﴾وَاللّٰهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ.﴿ और उसने कह दिया कि मैं बग़ैर हिसाब के इसका अज्र दूंगा। चुनाँचे यह कहकर आपने सारा माल उसी वक़्त अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिया, सुब्हानअल्लाह।

फ़रमाने नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हज़ार दरख़्तों की क़ुर्बानी

वे सहाबा किराम जो नए-नए मुसलमान होते थे। नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी दिलदारी के लिए उनसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाया करते थे। एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तश्रीफ़ फ़रमा थे। एक आदमी जो नया-नया मुसलमान हुआ था आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी मेरा एक बाग़ है और मेरे साथ एक मुसलमान का बाग़ है। वह मुसलमान बूढ़ा हो चुका है। अगर मेरे पेड़ों की लाइन सीधी हो तो उसके दस पेड़ आ जाते हैं। इस तरह मैं हिफ़ाज़त के लिए दीवार भी बना सकता हूँ। मैंने उस बूढ़े मुसलमान से कहा कि यह दस पेड़ मुझे दे दो। लेकिन वह बेचने को तैयार नहीं। लिहाज़ा आप मेहरबानी फ़रमा कर ये पेड़ मुझे दिलवा दें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बूढ़े सहाबी को तलब फ़रमाया। वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो गए। अच्छा बूढ़ों की समझ कभी-कभी अपनी ही होती है क्योंकि उम्र ही ऐसी होती है। बूढ़ा आदमी तो बता भी नहीं सकता कि उसको क्या-क्या तकलीफ़ है। एक बूढ़ा आदमी किसी डॉक्टर के पास गया। उसने डॉक्टर से कहा, जी मुझे बहुत कम दिखाई देता है। डॉक्टर साहब ने कहा, बाबा जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़ा आदमी फिर कहने लगा, डॉक्टर साहब मेरे सब दांत गिर गए हैं। डॉक्टर साहब ने कहा, जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़े आदमी ने फिर कहा, डॉक्टर साहब! मुझे खाना हज़म नहीं होता। डॉक्टर साहब ने कहा जी यह बुढ़ापा है। वह फिर कहने लगा, डॉक्टर साहब, मैं चलता हूँ तो आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है। डॉक्टर साहब ने कहा, जी! यह बुढ़ापा है। बूढ़ा आदमी बुढ़ापे वाला जवाब बार-बार सुनकर तंग आ चुका था और गुस्से में कहने लगा, यह क्या बात हुई कि हर चीज़ बुढ़ापा है। डॉक्टर साहब कहने लगे,

बाबा जी! यह भी बुढ़ापा है। ख़ैर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस सहाबी को बुलाया और फ़रमाया कि आपका यह भाई चाहता है कि अगर आप उसे अपने दस पेड़ दे दें तो उनकी लाइन सीधी हो सकती है। वह बूढ़े सहाबी आगे से पूछते हैं, ऐ अल्लाह के नबी! यह आपका हुक्म है या मशवरा है? आपने इर्शाद फ़रमाया, यह मेरा हुक्म नहीं है बल्कि मशवरा है, तुम्हें फ़ैसला करने का अख़्तियार है। वह जवाब में कहने लगे कि ऐ अल्लाह के नबी! मैं नहीं देना चाहता। जब उस बूढ़े सहाबी ने कहा मैं नहीं देना चाहता तो नया मुसलमान कुछ मायूस सा हुआ। उसके बाद नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम उसे नहीं देना चाहते तो मैं उसे ख़रीदना चाहता हूँ। लिहाज़ा मुझे दे दो। उन्होंने फिर पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! यह आपका हुक्म है या मशवरा है? आपने फ़रमाया, मशवरा है। वह कहने लगे, मैं नहीं देता। यह कहकर वह सहाबी अपने घर के लिए रवाना होने लगे तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि सुनो! तुम्हें जन्नत के पेड़ बदले में मिलेंगे और मैं जन्नत में बहुत बड़ा बाग़ दिलवाने की ज़मानत देता हूँ और तुम्हें जन्नत में घर भी मिलेगा लेकिन वह कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! ﴿لا حاجة لي﴾ अब मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।

यह बात एक सहाबी ने सुनी जिनका एक हज़ार पेड़ों का बाग़ था। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आपने जो ख़ुशख़बरी उसे दी है कि अगर तुम यह दस पेड़ दे दो तो तुम्हें जन्नत में बाग़ मिलेगा और घर भी मिलेगा। क्या यह वादा उसके साथ था या मेरे साथ भी है। आपने फ़रमाया, अगर तुम ख़रीदकर दे दो तो यह वादा तुम्हारे लिए भी है। वह कहने लगे, बहुत अच्छा। वह

सहाबी वहाँ से चले और कुछ देर बाद बूढ़े मियाँ के घर पहुँच गए। उन्होंने बूढ़े मियाँ को सलाम किया और उससे पूछा कि क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ? वह कहने लगे, नहीं। आप ही बता दें। कहने लगे, मैं क़ुब्बा का फ़लाँ अमीर आदमी हूँ जिसका एक हज़ार पेड़ों का बाग़ है। बूढ़े मियाँ कहने लगे, हाँ उसकी तो मैंने बहुत शोहरत सुनी है। अच्छा आप वही हैं। आपके बाग़ में तो बड़ी आला खजूरें हैं और बहुत ज़्यादा फल देती हैं। वह कहने लगे, अच्छा आपने भी मेरे बाग़ का ज़िक्र सुना हुआ है। अब मैं आपके साथ एक सौदा करने आया हूँ। बूढ़े मियाँ कहने लगे वह क्या? उन्होंने कहा, आपके जो ये दस पेड़ हैं ये मुझे दे दें और मेरा हज़ार पेड़ों वाला बाग़ आप ले लें। यह सुनकर उनकी आँखों में चमक आ गई। वह बूढ़े मियाँ थे और उन्हीं पेड़ों पर उनका गुज़ारा था। इसलिए वह छोड़ना नहीं चाहते थे। लेकिन जब उन्होंने यह सुना कि इसके बदले में एक हज़ार पेड़ों का बाग़ मिलेगा तो कहने लगे, ठीक है मैं तेरे साथ सौदा कर लेता हूँ। चुनाँचे तय पा गया कि बूढ़े मियाँ ने हज़ार पेड़ों के बदले में दस पेड़ बेच दिए हैं।

वह सहाबी यह सौदा करके नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे वह पेड़ मिल गए हैं और अब वे पेड़ आपकी ख़िदमत में पेश करता हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, मैं ज़मानत देता हूँ कि इसके बदले में तुम्हें जन्नत में मकान भी मिलेगा और बाग़ भी मिलेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से जन्नत की ज़मानत की ख़ुशख़बरी सुनकर वह हज़ार पेड़ों के बाग़ के किनारे पर वापस आए। बाग़ के अंदर दाख़िल न हुए। वहीं से खड़े होकर अपनी बीवी को आवाज़ दी और कहा, ऐ फ़लाँ की

अम्मी! ऐ फ़लाँ की अम्मी। बीवी ने कहा, क्या बात है? आप अंदर क्यों नहीं आते? वह कहने लगे, मैं इस बाग़ का सौदा कर चुका हूँ। अब यह बाग़ मेरा नहीं है बल्कि मैंने इसे जन्नत के बाग़ के बदले में अल्लाह के हाँ बेच दिया है। सामान और बच्चों समेत बाहर आ जा। मैं इधर ही इंतिज़ार करूंगा। बीवी ने जब यह सुना तो कहने लगीं, मैं तुझ पर क़ुर्बान जाऊँ। तूने तो ज़िंदगी में पहली दफ़ा अच्छा सौदा करके मेरा दिल ख़ुश कर दिया। वह अपना सामान और बच्चों को लेकर बाग़ से बाहर आ गई और उन्होंने वह बाग़ अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दिया। सुब्हानअल्लाह! जिनका माल ऐसा हो कि अल्लाह के लिए आख़िरत कमाने के लिए वह उसे लगा रहे हों तो वह माल उनके लिए बेहतरीन सवारी है। और अगर माल दुनिया के मज़े की ख़ातिर हो तो फिर वह नुक़सानदेह है।

मालदार या माल के चौकीदार

यह बात ज़हन में बिठा लें कि कुछ लोग मालदार होते हैं और कुछ लोग माल के चौकीदार होते हैं। मालदार तो वे होते हैं कि जिनके पास माल हो और अल्लाह के रास्ते में ख़ूब लगा रहे हों और माल के चौकीदार वे होते हैं जो रोज़ाना बैंक बैलेंस चैक करते हैं। वे गिनते रहते हैं अब इतने हो गए अब इतने हो गए। वे बेचारे चौकीदार होते हैं। बेचारे ख़ुद तो चले जाएंगे और उनकी औलदें अय्याशियाँ करेंगी।

दुनिया पानी की मानिन्द है

﴿وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاءِ. (الکہف:۴۵)﴾

और उनको बता दें कि दुनिया की ज़िंदगी ऐसी है जैसे हमने उतारा पानी आसमान से।

इस आयत में अल्लाह तआला ने ज़िंदगी की मिसाल पानी से दी है। दुनिया और पानी में आपको कई चीज़ें एक जैसी नज़र आएंगी। इस सिलसिले में चंद मिसालें पेश ख़िदमत हैं :

पहली चीज़

पानी की सिफ़्त है कि वह एक जगह पर कभी नहीं ठहरता। उसे जहाँ बहने का मौक़ा मिले बहता है। जिस तरह पानी एक जगह नहीं ठहरता उसी तरह दुनिया भी कभी एक जगह नहीं ठहरती। जहाँ मौक़ा मिलता है दुनिया हाथ से निकल जाती है। जो बंदा यह समझता है कि मेरे पास दुनिया है उसके पास से दुनिया रोज़ाना खिसक रही होती है। याद रखें कि यह आहिस्ता आहिस्ता खिसकती है। किसी के पास से पचास साल में खिसकती है और किसी के पास से सौ साल में खिसकती है। किसी के पास से सत्तर साल में खिसकती है और किसी के पास से सौ साल में खिसकती है मगर बंदे को पता नहीं चलता। यह हर बंदे के पास जाती है मगर यह ठहरती किसी के पास नहीं। इसने कई लोगों से निकाह किए और उन सबको रंडवा कर दिया। एक बुज़ुर्ग ने एक बार ख़्वाब में दुनिया को कुंवारी लड़की की मानिन्द देखा। उन्होंने पूछा तूने लाखों निकाह किए इसके बावजूद कुंवारी ही रही? कहने लगी जिन्होंने मुझ से निकाह किए वे मर्द नहीं थे और जो मर्द थे वे मुझ से निकाह करने पर आमादा ही नहीं हुए।

इसलिए अल्लाह वाले दुनिया की तरफ़ मुहब्बत की नज़र से

नहीं देखते। उनकी नज़र में मतलूबे हक़ीक़ी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात होती है। लिहाज़ा उनकी तवज्जोह उसी की तरफ़ होती है। वे आख़िरत की लज़्ज़तों के ख़्वाहिशमंद होते हैं बल्कि जब उनको दुनिया की लज़्ज़तें मिलती हैं तो वे इस बात से घबराते हैं कि ऐसा न हो कि नेक आमाल का अज्र आख़िरत के बजाए कहीं हमें दुनिया में ही न दे दिया जाए।

दूसरी चीज़

दूसरी क़द्रे मुशतरिक यह है कि जो आदमी भी पानी में दाख़िल होता है वह तर हुए बग़ैर नहीं रहता। इसी तरह दुनिया भी ऐसी है कि जो आदमी भी इसमें घुसेगा वह मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहेगा।

तीसरी चीज़

तीसरी क़द्रे मुशतरिक यह है कि पानी जब ज़रूरत के मुताबिक़ हो तो फ़ायदेमंद है और जब ज़रूरत के से बढ़ जाए तो नुक़सानदेह होता है। इसी तरह दुनिया भी अगर ज़रूरत के मुताबिक़ हो तो बंदे के लिए फ़ायदेमंद होती है और जब ज़रूरत से बढ़ जाए तो फिर यह नुक़सान पहुँचाना शुरू कर देती है। पानी का सैलाब जब आता है तो बंद भी तोड़ देता है क्योंकि वह ज़रूरत से ज़्यादा होता है। इसी तरह जिन लोगों के पास भी ज़रूरत से बहुत ज़्यादा माल होता है तो वह अय्याशियाँ करते हैं और शरिअत की हदों को तोड़ देते हैं। जो लोग जुए की बाज़ियाँ लगाते हैं और एक-एक रात में लाखों गंवाते हैं वह उनकी ज़रूरत का पैसा थोड़े ही होता है। उन्हें तो बिल्कुल परवाह ही नहीं होती।

चौथी चीज़

एक तफ़्सीर में इसी आयत के तहत लिखा है कि अल्लाह तआला ने दुनिया को पानी के साथ मुशाबिहत इस लिए दी है कि पानी कसीर मिक़्दार में हो तो पाक होता है लेकिन शर्त यह है कि उसका ज़ाएक़ा उसका रंग और बू न बदले। अगर उसका ज़ाएक़ा, रंग या बू बदल जाए तो वह सारा का सारा पानी नापाक हो जाता है। फ़ुक़्हा ने लिखा है कि जिस पानी का ज़ाएक़ा, रंग और बू न बदले वह पाक भी होता है और पाक करने वाला भी होता है।

इल्मी नुक्ता

वुज़ू में चेहरे का धोना ज़रूरी होता है हालाँकि उससे पहले हाथ भी धोते हैं, कुल्ली भी करते हैं और नाक में पानी भी डालते हैं। यहाँ एक तालिब इल्म के दिल में सवाल पैदा होता है कि वुज़ू की तर्तीब में सुन्नत को फ़र्ज़ पर मुक़द्दम क्यों किया है जबकि हक़ यह बनता है कि सुन्नत पर फ़र्ज़ को मुक़द्दम किया जाता है। सुन्नत बाद में होती है। फ़ुक़्हा ने इसका यही जवाब दिया है कि जब कोई आदमी पानी के साथ वुज़ू करने लगेगा और वह अपने हाथ में पानी लेगा तो उसे आँखों से देखकर पानी का रंग पता चलेगा, जब मुँह में डालेगा तो ज़ाएक़ा पता चलेगा और नाक में डालेगा तो उसे बू का पता चल जाएगा। इसी तरीक़े से जब उसे तसल्ली हो जाएगी की पानी का रंग भी ठीक है, उसका ज़ाएक़ा भी ठीक है और उसकी बू भी ठीक है तो वह शरिअत का हुक्म पूरा करने के लिए चेहरे को धोएगा।

इसी तरह किसी के पास जितना माल भी क्यों न हो अगर हराम की वजह से उसका ज़ाएक़ा नहीं बदला, अगर मुशतबिहात (शुब्हों) की वजह से उसका रंग नहीं बदला और अगर ज़कात अदा न करने की वजह से उसकी बू नहीं बदली तो वह सब का सब माल पाक होगा यानी जिस बंदे के अंदर हराम माल आए, शुब्हे वाला माल आए या अगरचे हलाल माल आए मगर उसमें तकब्बुर और मैं आ जाए तो पानी की मानिन्द यह दुनिया भी नापाक हो जाएगी।

दुनिया खेल तमाशा है

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त एक और जगह इर्शाद फ़रमाते हैं :

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ وَّاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ. (عنكبوت:٦٤)

और यह दुनिया की ज़िंदगी नहीं मगर खेल तमाशा और आख़िरत की ज़िंदगी तो हमेशा रहने वाली है, काश ये जान लेते।

इस आयत में अल्लाह तआला ने ज़िंदगी को खेल तमाशा के साथ तश्बीह दी है, इसकी कई वजहें हैं :

- दुनिया में सबसे जल्दी ख़त्म होने वाली चीज़ खेल तमाशा है। जितने भी खेल तमाशे हैं वे चंद घड़ियों के होते हैं। स्क्रीन पे तमाशा देखें तो भी चंद घड़ियों का होता है। सर्कस का तमाशा भी चंद घड़ियों का होता है, रीछ और बंदर का तमाशा भी चंद घड़ियों का होता है। अल्लाह तआला ने भी दुनिया को खेल तमाशे के साथ तश्बीह दी है ताकि लोगों को

पता चल जाए कि दुनिया घड़ी दो घड़ी का मामला है। यही वजह है कि क़यामत के दिन कहेंगे :

﴿مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ. (الروم:٥٥)﴾ वह नहीं खड़े मगर एक घड़ी।

यहाँ तक कि कुछ तो यहाँ तक कहेंगे :

﴿لَمْ يَلْبَثُوْا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحٰهَا. (النزعت:٣٦)﴾

वह दुनिया में नहीं रहे मगर सुबह का थोड़ा सा वक़्त या शाम का थोड़ा सा वक़्त।

सौ साल की ज़िंदगी भी थोड़ी नज़र आएगी, गोया–

"ख़्वाब था जो कुछ देखा जो सुना अफ़साना था।"

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उम्र एक हज़ार साल से ज़्यादा थी। नौ सौ पचास साल तो तबलीग़ की उम्र थी। फिर उसके बाद अज़ाब आया और अज़ाब के बाद भी साठ साल ज़िंदा रहे। रिवायतों में आया है कि जब उनकी वफ़ात हुई तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनसे पूछा, ऐ मेरे प्यारे नबी! आपने दुनिया की ज़िंदगी को कैसा पाया? उन्होंने जवाब दिया, ऐ अल्लाह! मुझे यूँ महसूस हुआ कि एक मकान के दो दरवाज़े थे, मैं एक में दाख़िल हुआ और दूसरे में से निकल आया। तो जब एक हज़ार साल की ज़िंदगी यूँ नज़र आएगी तो फिर दुनिया की सौ साला ज़िंदगी का क्या भरोसा है?

मरने वाले को यही महसूस होता है कि दुनिया की ज़िंदगी थोड़ी देर की बात थी। आप ख़ुद तजरिबा करके देख लें। आप ज़रा प्राइमरी स्कूल की ज़िंदगी को याद करें, आप को यूँ महसूस होगा कि कल की बात है हालाँकि उस वक़्त को

गुज़रे हुए पचास साल हो गए होंगे।

- दुनिया को खेल तमाशे से तशबीह देने में दूसरी बात यह थी कि आमतौर पर खेल तमाशा देखने के बाद बंदे को अफ़सोस ही होता है और वह कहता है कि बस पैसे भी ज़ाए किए और वक़्त भी ज़ाए किया। अक्सर देखने में आता है कि जो लोग खेल तमाशा देखते हैं वे बाद में कहते हैं कि बस हम ऐसे ही चले गए, हमारे कई ज़रूरी काम रहे गए। दुनियादार का भी बिल्कुल यही हाल होता है कि अपनी मौत के वक़्त अफ़सोस करता है कि मैंने तो अपनी ज़िंदगी ज़ाए कर दी।
- एक वजह यह भी है कि आजकल खेल तमाशे आमतौर पर साए की मानिन्द होते हैं। स्क्रीन पर तो नज़र आता है कि बंदे चल रहें हैं मगर हक़ीक़त में उनका साया चल रहा होता है। और जो उनके पीछे भागते हैं वे साए के पीछे भाग रहे होते हैं। दुनिया का मामला भी ऐसा ही है। जो उसके पीछे भागता है वह भी साए के पीछे भाग रहा होता है। उससे कुछ हासिल नहीं होता।

दुनिया मुर्दार की मानिन्द

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلدُّنْیَا جِیْفَةٌ وَطَالِبُوْهَا کِلَابٌ﴾

दुनिया मुर्दार है और उसके तलब करने वाले कुत्ते हैं।

यह हदीस बड़ी क़ाबिले ग़ौर है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जो उम्मत पर इतने शफ़ीक़ और मेहरबान हैं उनके ये

अल्फ़ाज़ हैं कि दुनिया मुर्दार है, उसको तलब करने वाला कुत्ता है।

हदीस पाक में कव्वे के लफ़्ज़ का इस्तेमाल नहीं हुआ बल्कि कुत्ते का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है हालाँकि जिस तरह कुत्ता मुर्दार खाता है कव्वा भी मुर्दार खाता है। इसके पीछे कुछ हक़ाइक़ हैं।

पहला नुक्ता : मिसाल के तौर पर कव्वे को जहाँ कहीं कोई मुर्दार मिलता है तो वह उसे अकेला नहीं खाता बल्कि वह मुर्दार देखकर शोर मचाता है और अपनी सब बिरादरी और क़ौम को बुला लेता है और फिर वे सब मिलकर खाते हैं। लेकिन कुत्ता मुर्दार को हमेशा अकेला खाता है। वह किसी दूसरे कुत्ते की साझेदारी पसन्द नहीं करता। उसके सामने उसके क़द से पाँच गुना बड़ा मुर्दार भी पड़ा होता है तो वह ख़ुद अकेले उसको खा भी नहीं सकता मगर वह कभी दूसरे को बर्दाश्त नहीं करेगा बल्कि अगर कोई दूसरा कुत्ता आ जाए तो वह मुर्दार को छोड़कर उस कुत्ते के साथ लड़ना शुरू कर देगा और फिर जो ताक़तवर होगा वही उसको खाएगा। यही हाल दुनियादार का है। वह भी दुनिया का सारा फ़ायदा ख़ुद लेना चाहता है। अगर चंद बंदे मिलकर काम करें तो उनमें से हर एक की यह ख़्वाहिश होती है कि किसी तरह मेरे खाते में ज़्यादा आ जाए। वह भी दूसरों को देना पसन्द नहीं करता बल्कि सारे का सारा ख़ुद लेना चाहता है। गोया उसके अदंर भी कुत्ते जैसी सिफ़्त है कि जिस तरह कुत्ता अकेला मुर्दार को खाना चाहता है उसी तरह यह भी सारी दुनिया के ख़ज़ानों को अकेला समेटना चाहता है।

दूसरा नुक्ता : दूसरा नुक्ता यह है कि कव्वा कभी किसी मुर्दा कव्वे को नहीं खाता बल्कि अगर कहीं पर मुर्दा कव्वा पड़ा

हो तो कव्वे पर आने से कतराते हैं और ख़ूब शोर मचाते हैं। जबकि कुत्ते की हालत यह होती है कि अगर उसे किसी मुर्दार कुत्ते की हड्डियाँ मिल जाएं तो वह उनको भी चबा लेता है। यही हाल दुनियादारों का है कि वह दुनिया से तो धोका करता ही है अगर उसका कोई भाई भी उसके साथ काम करे तो वह उसको भी धोका देने से बाज़ नहीं आता। इस कमीनी दुनिया की ख़ातिर अपना बनकर अपनों को धोका देता है। क़रीबी रिश्तेदार आपस में काम करते हैं मगर धोका दे जाते हैं। गोया उनके अंदर भी वही बात होती है जो कुत्ते के अंदर होती है।

तीसरा नुक्ता : तीसरा नुक्ता यह है कि कव्वा दूसरे कव्वों से इबरत पकड़ता है। अगर कोई आदमी किसी कव्वे को मारकर लटका दे तो कव्वे क़रीब आना छोड़ देंगे। वह उस जगह से इबरत पकड़ेंगे कि इसने जब एक कव्वे को मार डाला है तो हम भी अगर उधर गए तो हमें भी मार डालेगा लेकिन कुत्ता दूसरे कुत्तों से इबरत नहीं पकड़ता। यही हाल दुनियादार का होता है। उसके सामने रोज़ाना दुनियादार मर रहे होते हैं और उनका बुरा अंजाम हो रहा होता है लेकिन उसके बावजूद दुनियादार यह चाहता है कि मुझे भी दुनिया मिल जाए। एक कुर्सी को छोड़ता है और उसे सूली पर लटका दिया जाता है मगर दूसरा तैयार होता है कि कुर्सी मुझे दे दी जाए। यह तो रोज़ का तमाशा है। आप सुनते ही रहते हैं कि :

रात को अमीर हैं सुबह को फ़क़ीर हैं,
रात को वज़ीर हैं सुबह को असीर (क़ैदी) हैं,
रात को वज़ीरे आज़म हैं सुबह को असीरे आज़म हैं,

रात को सदर हैं सुबह को मुल्क बदर हैं।

लेकिन इबरत कोई नहीं पकड़ता। एक जाता है और कई तैयार होते हैं। वे यह नहीं देखते की हम से पहले वाले का क्या अंजाम हुआ।

चौथा नुक्ता : एक नुक्ता यह भी है कि अगर कव्वा मुर्दार खाता है तो वह नरम गोश्त खाता है और हड्डियों को छोड़ देता है लेकिन कुत्ता गोश भी खाता है और हड्डियों को भी चचोड़ता है। यही हाल दुनियादार का है कि वह पहले जाएज़ मुनाफ़े कमाता हैं और फिर सूद दर सूद भी खाता है। गोया हड्डियाँ भी चचोड़ता है।

पाँचवाँ नुक्ता : एक नुक्ता और भी है कि अगर किसी जगह पर मुर्दार पड़ा हुआ हो और कव्वा उसमें से कुछ खाए भी तो वह रात में अपने घोंसले में चला जाता है। वह रात को उस मुर्दार के पास नहीं ठहरता। वह दिन में उसे खाएगा और रात को वापस चला जाएगा। लेकिन कुत्ते की आदत और है। वह दिन में उसे खाएगा और रात को उस पर बैठकर पहरा देगा ताकि और कुत्ता उस पर क़ब्ज़ा न कर ले। यही हाल दुनियादार का है। वह सारा दिन दुकान के अंदर होता है और रात को दुकान उसके अंदर होती है। यहाँ तक कि वह नमाज़ भी पढ़ रहा होता है तो दुकान उसके अंदर होती है। बस साबित हुआ कि दुनिया के तलबगार कुत्ते की सी आदतें रखता है, सुब्हानअल्लाह। सदक़ा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें दुनिया का तबलगार बनने से महफ़ूज़ फ़रमाए, आमीन सुम्मा आमीन।

दौरे हाज़िर का सबसे बड़ा फ़ितना

आज के दौर का सबसे बड़ा फ़ितना दुनिया की मुहब्बत है। हर बंदे के दिल की तमन्ना है :

﴿يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ. (القصص:۷۹) ﴾

काश! हमारे पास इतना होता जितना क़ारून को दिया गया है बेशक उसकी बड़ी क़िस्मत है।

हर बंदे की यही तमन्ना है, इल्ला माशाअल्लाह।

दुनिया क्या है?

इतना कुछ सुनने के बाद दिल में यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर दुनिया है क्या? मौलाना रोम रह० ने एक जगह पर बहुत अच्छे अंदाज़ में यह बात समझाई है। वह फ़रमाते हैं :

چیست دنیا از خدا غافل بدن
نے قماش و نقرہ و فرزند و زن

दुनिया क्या है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से ग़ाफ़िल होने का नाम दुनिया है। माल, पैसे, बच्चे और बीवी का नाम दुनिया नहीं है।

गोया जो चीज़ भी इंसान को अल्लाह तआला की तरफ़ से ग़ाफ़िल कर दे वही दुनिया है चाहे कोई चीज़ भी हो। अगर वह बीवी है तो वह भी दुनिया में शामिल होगी अगर वे बच्चे हैं तो वे भी दुनिया में शामिल होंगे, अगर वह कारोबार है तो वह भी दुनिया में शामिल होगा, मकान है तो वह भी दुनिया में शामिल होगा और अगर कोई और काम है तो वह भी दुनिया में शामिल

होगा। हो सकता है कि एक आदमी मुसल्ले पर बैठा हुआ भी दुनियादार हो और यह भी हो सकता है कि कोई आदमी दुकान पर बैठा हुआ भी दीनदार हो। यह दिल की हालत पर है।

दो आदमियों की दिली कैफ़ियत

शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० ने लिखा है कि मैं हज पर गया। मैंने वहाँ देखा कि एक आदमी ग़िलाफ़े काबा को पकड़कर दुआएं मांग रहा था। जब मैं उस के दिल की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो उसका दिल अल्लाह से ग़ाफ़िल था। वह इसलिए कि उसके साथ कुछ और लोग भी हज के लिए आए हुए थे। दुआ मांगते हुए उसके दिल में कैफ़ियत पैदा हो रही थी कि काश मेरे दोस्त मुझे देखते कि मैं कैसे रो रोकर दुआएं मांग रहा हूँ। वह आदमी यह अमल अल्लाह के लिए नहीं कर रहा था बल्कि दिखाने के तौर पर कर रहा था। उसके इर्द-गिर्द इतना हुजूम था कि वह लोगों के झुरमुठ में घिरा हुआ था। फ़रमाते हैं कि जब मैं मिना में आया और मैंने देखा कि एक नौजवान अपना माल बेच रहा था। फिर फ़रमाते हैं कि जब मैं उसके दिल की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो मैंने उसके दिल को एक लम्हे के लिए भी अल्लाह तआला की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं पाया। यही मक़सूदे ज़िन्दगी है कि हम अपने कारोबार में हों या जहाँ कहीं भी हों, हमारा दिल हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में लगा हुआ हो यानी दस्त बकार दिल बयार। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

رجال لاتلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقامة الصلوٰة وايتاء الزكوٰة.

يخافون يوم تتقلب فيه القلوب الابصار. (سورة نور: ٣٧)

वह मर्द कि नहीं ग़ाफ़िल हुए सौदा करने में और न बेचने में अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम रखने से और ज़कात देने से, डरते हैं उस दिन से जिस दिन उलट जाएंगे दिल और आँखें।

नूरे निस्बत के तालिब के लिए एक सुनहरी उसूल

दुनिया की लज़्ज़तें अल्लाह की मारिफ़त के हासिल होने में बहुत बड़ी रुकावट हैं। हमार मशाइख़ ने यह फ़रमाया है कि सालन दरअसल गोश्त और सब्ज़ी से मिलकर बनता है, घी और मिर्च मसाले ऊपर की चीज़ें हैं। अगर किसी के पास यह ऊपर की चीज़ें न भी हों और सिर्फ़ सब्ज़ी ही उबाल ले तो सब्ज़ी से ही काम चल जाएगा। अगर किसी के पास गोश्त हो और वह उसी को उबाल ले तो भी काम चल जाएगा। लेकिन अगर किसी के पास सब्ज़ी या गोश्त न हो बल्कि सिर्फ़ पानी, घी और नमक मिर्च हो तो उनसे भूख नहीं मिट सकेगी। अवराद व वज़ाइफ़ की मिसाल नमक, मिर्च और दूसरी ऊपरी चीज़ों की मानिन्द है और दुनिया की लज़्ज़तों को तर्क करना और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को तर्क करने की मिसाल सब्ज़ी और गोश्त की मानिन्द है। लिहाज़ा जो आदमी चाहता है कि मुझे निस्बत का नूर मिले तो उसे चाहिए कि वह दुनिया की लज़्ज़तों से बचे, तलब छोड़ दे क्योंकि अल्लाह तआला ने जो रिज़्क़ पहुँचाना है वह तो ज़रूरत पहुँचकर रहेगा। दिल में दुनिया की हवस और ललक न रहे। हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि हमने अपने अकाबिर से यह मारिफ़त वाला सबक़ तर्क दुनिया के ज़रिए सीखा, तस्बीहात के ज़रिए से नहीं।

बातिनी सफ़र में आसानियाँ

हमारे मशाइख़ किसी से रोज़गार या नौकरी नहीं छुड़वाते थे। इसलिए आज हम भी आप से फ़ारिग़ वक़्त मांगते हैं। यकीन कीजिए कि आज का मुसलमान अगर फ़ारिग़ वक़्त भी दीन पर लगाना शुरू कर दे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसकी भी बिगड़ी बना देंगे क्योंकि रूहानी दर्जात तय करने के लिए अल्लाह तआला ने बहुत आसानियाँ पैदा कर दी हैं। ज़रा बताएं कि परवरदिगार आलम ने ज़ाहिरी सफ़र में आसानियाँ की हैं या नहीं? पहले ऊँटों और घोड़ों पर सफ़र होता था जबकि आजकल के ज़माने में लोग बसों, ट्रेनों और हवाई जहाज़ों में सफ़र करते हैं। पहले एक हज़ार मील का सफ़र करना होता था तो इंसान को एक महीना लगता था। घोड़े और ऊँट पर लोग एक दिन में बीस मील का सफ़र तय तय करते थे। यह उनके हाँ एक मुत्तफ़िका मंज़िल तय थी। वे बीस-बीस मील का सफ़र तय करके पडाव डाल देते थे। और आजकल के दौर में अगर हज़ार मील का सफ़र करना हो तो एक घंटा चाहिए होता है। सोचने की बात है कि जो परवरदिगार इतना मेहरबान है कि उसने बंदों की कमज़ोरियों को देखते हुए उनके ज़ाहिरी सफ़र में आसानियाँ पैदा फ़रमा दीं उसने बातिनी सफ़र में कितनी आसानियाँ पैदा कर दीं होंगी। इसलिए आज के दौर में बातिन का सफ़र करना बहुत आसान है। हर बंदा यह सफ़र कर सकता है। कोई बंदा यह नहीं कह सकता कि मैं तो बातिनी सफ़र कर ही नहीं सकता बल्कि बीमार भी यह सफ़र कर सकता है, काम वाला भी तय कर सकता है, बूढ़ा भी तय कर सकता है और जवान भी तय कर सकता है।

ख़्वाहिशात पूरी करने की जगह

हमारे बुज़ुर्ग दुनिया की लज़्ज़तों से दूर भागते थे। वे कहते थे कि अगर इनमें लगेंगे तो इनकी कोई हद नहीं होगी। और यह एक मानी हुई हक़ीक़त है कि ज़रूरत की एक हद होती है जबकि ख़्वाहिशात की कोई हद नहीं होती। इसीलिए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम दुनिया में अपनी ज़रूरियात को पूरा करो और तुम्हारी ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए मैंने जन्नत बना दी है।

चुनाँचे इशर्दि फ़रमाया :

﴿وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيَ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ. (حم السجدہ:٣١)﴾

और तुम्हारे लिए उस जन्नत में वह कुछ होगा जो तुम्हारा जी चाहेगा और वह कुछ मिलेगा जो तुम मांगोगे।

इसलिए यह बात ज़हन में बिठा लीजिए कि ख़्वाहिशात जन्नत में पूरी होंगी। लिहाज़ा दुनिया में अपनी ज़रूरियात पूरी कीजिए और अपनी ज़िंदगी गुज़ारते चले जाइए।

ख़्वाजा अबुलहसन ख़रक़ानी रह० की शाने इस्तिग़ना

हमारे मशाइख़ अल्लाह तआला की याद में लगे रहते थे। उनकी नज़र में इंसान की अज़्मत उसके दीन की वजह से होती थी और दुनिया की वजह से उनके हाँ इंसान की अज़्मत नहीं होती थी। ख़्वाजा अबुलहसन ख़ारक़ानी रह० सिलसिला नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गों में से थे। वह एक फ़क़ीर आदमी थे। अल्लाह ने उन्हें आम क़ुबूलियत दी थी। उनकी ख़ानक़ाह पर

वक़्त के अमीर, कबीर लोग भी आते थे। एक बार उन्होंने अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि आज सारी ख़ानकाह की सफ़ाई करो। उस ज़माने में चिप्स के फ़र्श नहीं होते थे बल्कि कच्ची मट्टी होती थी। जुमा का दिन था। इसलिए कुछ लोग नहाने धोने में लग गए और कुछ ख़ानाक़ाह की सफ़ाई करने में मसरूफ हो गए। हज़रत रह० के सर के बाल लंबे- लंबे थे। उनके सर में खुजली सी होने लगी। सर में खुजली कभी तो जुओं की वजह से होती है और कभी ज़्यादा दिन न नहाने की वजह से भी ख़ारिश सी होती है। हज़रत को ख़ारिश महसूस हुई तो आपने अपने एक ख़ादिम से फरमाया ज़रा मेरे बालों में देखो कि जुओं की वजह से ख़ारिश हो रही है या किसी और वजह से। उसने कहा, जी बहुत अच्छा। अब हज़रत बैठ गए और उस ख़ादिम ने जुएं ढूंढना शुरू कर दिया। बाहर लोगों ने झाड़ू देना शुरू कर दिया। ख़ूब मिट्टी उड़ने लगी। अल्लाह की शान कि ठीक उसी वक़्त सुलतान महमूद ग़ज़नवी हज़रत की मुलाक़ात के लिए पहुँच गया। जब मुरीदों ने देखा कि बादशाह सलामत आ गए है। तो वह घबराए कि यहाँ तो मिट्टी उड़ रही है। उनमें से एक भागा कि मैं हज़रत को बादशाह के आने की ख़बर दे दूं। उसने अंदर आकर अजीब मंज़र देखा कि हज़रत सर झुकाकर बैठे हैं और एक ख़ादिम आपके बालों में जुएं तलाश कर रहा है। उस मुरीद ने ख़ादिम को इशारा किया कि वह बादशाह सलामत आ रहे हैं। जब उसे मालूम हुआ कि बादशाह सलामत आ रहे हैं तो वह ख़ादिम भी घबरा सा गया और उसी हालत उसने कहा, हज़रत! हज़रत ने उसकी तरफ़ सर उठाकर देखा तो वह फिर कहने लगा। हज़रत! वह बादशाह

सलामत आ रहे हैं। हज़रत यह सुनकर फ़रमाने लगे, ओहो! मैं समझा कि तेरे हाथ में कोई बड़ी सी जूँ आ गई। इससे अंदाज़ा लगाइए कि उनके दिल में दुनिया की क्या हक़ीक़त होती थी। जब सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रह० हज़रत अबुलहसन ख़रक़ानी रह० के पास आया तो हज़रत बैठे रहे। वह ख़ुद आकर हज़रत से मिला। उसने मिलने के बाद एक थैली में कुछ पैसे हज़रत को हदिए के तौर पर पेश किए मगर हज़रत रह० ने उसे लेने से इंकार कर दिया। उसने फिर थैली पेश की। हज़रत के पास उस वक़्त एक सूखी रोटी पड़ी हुई थी। आपने उस थैली के बदले में वह सूखी रोटी पेश की और फ़रमाया, इसे खाइए। अब उसने रोटी का लुक़्मा तो मुँह में डाल लिया लेकिन सूखा लुक़्मा उसके गले से नीचे नहीं उतर रहा था बल्कि वह लुक़्मा उसके गले में फंस गया। हज़रत रह० ने जब देखा कि गले में लुक़्मा फंस चुका है तो पूछा क्या बात है, लुक़्मा नीचे नहीं उतर रहा? उसने कहा, जी हाँ नहीं उतर रहा है। हज़रत रह० ने फ़रमाया, आपकी यह थैली भी इसी तरह मेरे गले से नीचे नहीं उतर रही है। सुब्हानअल्लाह! ऐसी नसीहत की।

बादशाह जब हज़रत की महफ़िल में बैठा तो उसने असर क़ुबूल किया। इसलिए जब वह उठकर जाने लगा तो हज़रत रह० उठकर उसके साथ ख़ानक़ाह के दरवाज़े तक गए और वहाँ से रुख़सत किया। एक मुरीद ने बाद में हज़रत रह० से सवाल पूछा कि हज़रत! जब बादशाह सलामत आए तो आप बैठे रहे लेकिन जब वह जाने लगे तो आप उनको दरवाज़े तक छोड़कर आए, इसमें क्या राज़ है? हज़रत रह० ने फ़रमाया, जब वह यहाँ आया

था तो वह अपने आपको बादशाह समझकर आया था और उसके दिल में तकब्बुर था, इसलिए हम जहाँ बैठे थे वहीं बैठे रहे। फिर हमने उसके तकब्बुर का इलाज किया। जब वह कुछ देर मेरे पास रहा तो उसके दिल में अल्लाह वालों की मुहब्बत पैदा हो गई थी, जिसकी वजह से उसके अंदर आजिजी आ चुकी थी। लिहाज़ा मैंने इस आजिज़ी की क़द्र करते हुए उसको ख़ानाक़ाह के इस दरवाज़े तक जाकर छोड़ा।

सोमनाथ की फ़तेह

इसी मुलाक़ात के दौरान बादशाह ने कहा, हज़रत! मैंने सोमनाथ पर हमले का इरादा किया है कि दुश्मन की तादाद बहुत ज़्यादा है। इसलिए मुक़ाबला सख़्त है, मेहरबानी फ़रमाकर दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला हमें कामयाबी अता फ़रमाए। जब सुलतान महमूद ने दुआ के लिए अर्ज़ किया तो हज़रत के पास एक जुब्बा पड़ा हुआ था वह उन्होंने उठाकर बादशाह को दे दिया और फ़रमाया कि इसे अपने साथ ले जाएं और जब आप ज़रूरत महसूस करें तो आप इस जुब्बे को सामने रखकर दुआ मांगना कि अल्लाह! अगर इस जुब्बे वाले का तेरे यहाँ कोई मक़ाम है तो उसकी बरकत से मेरे इस मामले को हल फ़रमा दे। उसने कहा बहुत अच्छा। वह जुब्बा लेकर चला गया।

वापसी पर सुलतान महमूद ने ग़जनवी रह० ने तैयारी करके सोमनाथ पर हमला किया। उस वक़्त हिंदू और दूसरे मज़हब के लोग सब मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़े थे। इसलिए काफ़िरों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। जब उसने देखा कि मुसलमानों के लश्कर में कमज़ोरी आ रही है तो उसे याद आया

कि हज़रत ने तो मुझे एक जुब्बा दिया था। लिहाज़ा उसने इस आड़े वक़्त में उस जुब्बे को सामने रखा और अल्लाह तआला से दुआ मांगने बैठ गया कि ऐ मालिक! अगर इस जुब्बे वाले का तेरे हाँ कुछ मक़ाम है और वह तेरे दोस्तों में है तो उसकी बरकत से तू मुझे सोमनाथ का फ़ातेह बना दे। चुनाँचे जंग का पांसा पलटा और अल्लाह तआला ने उसे सोमनाथ का फ़ातेह बना दिया।

सोमनाथ की फ़तेह के काफ़ी अरसे के बाद सुल्तान ग़ज़नवी ने सोचा कि मैं हज़रत के पास जाकर उनका शुक्रिया अदा करूं और उनको ख़ुशख़बरी भी सुनाऊँ। लिहाज़ा वह मिलने आया। उसने हज़रत को सारा किस्सा सुनाया। हज़रत ने पूछा कि आपने जुब्बे को सामने रखकर क्या दुआ मांगी थी? बादशाह ने कहा हज़रत! यह दुआ मांगी थी कि ऐ अल्लाह इस जुब्बे वाले का तेरे यहाँ कोई मक़ाम हो और वह तेरे दोस्तों में से है तो सोमनाथ का फ़ातेह बना दे। हज़रत ने सुनकर फ़रमाया तूने बहुत सस्ता सौदा कर लिया अगर तू यह दुआ मांगता कि ऐ अल्लाह! इसकी बरकत से मुझे पूरी दुनिया का फ़ातेह बना दे तो तुझे अल्लाह तआला पूरी दुनिया का फ़ातेह बना देते।

जी हाँ इन अल्लाह वालों का अल्लाह के हाँ एक मुक़ाम होता है क्योंकि उन्होंने ज़िंदगी नेकी और तक़्वे पर गुज़ारी होती है। इसलिए अल्लाह तआला उनकी ज़बान से निकले हुए बोलों की लाज रख लिया करते हैं।

ख़ानक़ाह की मिट्टी का अदब

सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० की वफ़ात के बाद किसी ने

ख़्वाब में देखा वह जन्नत की सैर कर रहे थे। उसने कहा आप तो दुनिया के बादशाह थे और आख़िरत में बादशाहों का बड़ा बुरा हाल होता है। उनका तो लम्बा चौड़ा हिसाब व किताब होता है और आपको मैं जन्नत में देख रहा हूँ। उसने जवाब में कहा, हाँ मेरा एक छोटा सा अमल था लेकिन परवरदिगारे आलम को वही एक अमल पसंद आ गया। जिसकी वजह से मेरी मग़फ़िरत कर दी गई। उसने पूछा वह कौन सा अमल है? कहने लगा कि मैं एक दफ़ा अबूल हसन ख़रक़ानी रह० की ख़ानक़ाह पर गया था। वहाँ लोग झाड़ू दे रहे थे। जिसकी वजह से मिट्टी उड़ रही थी। मैंने उस मिट्टी में से गुज़रते हुए उस मिट्टी को इस नीयत से चेहरे पर मल लिया था कि अल्लाह वालों के कपड़े और बिस्तरों की मिट्टी है। इसलिए अल्लाह तआला ने मुझे फ़रमाया कि तूने रास्ते में निकलने वाले दरवेशों की मिट्टी की क़द्र की इसीलिए इसकी बरकत से तेरे चेहरे को जहन्नम की आग से बरी फ़रमा देते हैं, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत सालिम रह० की शाने इस्तिग़ना

हमारे बड़ों पर ऐसे-ऐसे वाकिआत पेश आए कि उन्हें वक़्त के बादशाहों ने बड़ी-बड़ी जागीरें पेश कीं मगर उन्होंने अपनी ज़ात के लिए कभी क़ुबूल नहीं की। हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हज़रत सालिम रह० एक बार हरम मक्का में तशरीफ़ लाए। मुताफ़ (तवाफ़ की जगह) में आपकी मुलाक़ात वक़्त के बादशाह से हिशाम बिन अब्दुल मलिक से हुई। हिशाम ने सलाम के बाद अर्ज़ किया हज़रत! कोई ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमाएं

ताकि मैं आपकी कोई ख़िदमत कर सकूं। आपने फ़रमाया, हिशाम, मुझे बैतुल्लाह शरीफ़ के सामने खड़े होकर ग़ैरुल्लाह से हाजत बयान करते हुए शर्म आती है क्योंकि अदब इलाही का तक़ाज़ा है कि यहाँ सिर्फ़ उसी के सामने हाथ फैलाया जाए। हिशाम ला जवाब हो गया। क़ुदरतन जब आप हरम शरीफ़ से बाहर निकले तो हिशाम भी ठीक उसी वक़्त बाहर निकला। आपको देखकर फिर वह क़रीब आया और कहने लगा, हज़रत अब फ़रमाइए कि मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ? आपने फ़रमाया, हिशाम, बताओ मैं तुमसे क्या मांगू, दीन या दुनिया? हिशाम जानता था कि दीन के मैदान में तो आपका शुमार वक़्त के अहम तरीन बुज़ुर्ग हस्तियों में होता है। लिहाज़ा कहने लगा, हज़रत आप मुझसे दुनिया मांगे। आपने फ़ौरन जवाब दिया कि दुनिया तो मैंने दुनिया के बनाने वाले से भी नहीं मांगी, भला तुम से क्हाँ मांगूगा। यह सुनते ही हिशाम का चेहरा लटक गया और अपना सा मुँह लेकर रह गया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क्या चाहते हैं?

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ وَمَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا اِلَّا ذِكْرُ اللّٰهِ وَمَا وَالَاهُ.﴾

दुनिया मलऊना है और जो कुछ दुनिया में है वह भी मलऊन है सिवाए अल्लाह की याद के और जो कुछ उसके क़रीब हो।

यानी जिक्र करने वाले और जो ज़िक्र के क़रीब है यानी उसके असबाब, उनको छोड़कर बाक़ी सारी दुनिया मलऊना है। इस से अंदाज़ा लगाइए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क्या चाहते हैं। वह

चाहते हैं कि हम ज़िक्र के ज़रिए अपनी ज़िंदगी को आख़िरत की ज़िंदगी बना लें और दुनिया से अपनी ज़िंदगी को अलैहिदा कर लें। यह चीज़ इंसान को इल्म और ज़िक्र से नसीब होती है।

अल्लाह तआला ने जब से दुनिया बनाई। उसने कभी भी उसको मुहब्बत की नज़र से नहीं देखा। अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे दुनिया से दिल लगाने के बजाए आख़िरत से दिल लगाएं। इसलिए हमारे असलाफ़ को दुनिया की ज़िंदगी थोड़ी देर की बात नज़र आती थी। वे कहते थे कि यहाँ की वक़्ती लज़्ज़तों के पीछे क्या लगना है। ऐसा न हो कि इसकी वजह से हमें आख़िरत की लज़्ज़तों से महरूम कर दिया जाए। अगर किसी नवजवान के दिल में यह बात आ जाए तो सोचिए कि उसके लिए अपने नफ़्स को कंट्रोल करना कितना आसान होगा। क्या वह नफ़्सानी लज़्ज़तों के पीछे भागेगा? नहीं बल्कि अगर उसे गुनाह की पेशकश भी होगी तो वह बचेगा और वह कहेगा कि मैं फ़ानी लज़्ज़त के पीछे नहीं जाऊँगा क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि उसके बदले में आख़िरत की लज़्ज़तों से महरूम कर दिया जाऊँ।

एतिदाल वाला रास्ता

मोमिन का काम यह है कि वह रिज़्क़ हलाल की कोशिश करे और मामला अल्लाह तआला पर छोड़ दे। अगर अल्लाह तआला बहुत अता फ़रमाते हैं तो अल्लाह का शुक्र अदा करे और अगर अल्लाह तआला उसे तंग रिज़्क़ दे तो सब्र करे। शुक्र करने वाला भी जन्नती और सब्र करने वाला भी जन्नती। मोमिन के लिए दोनों तरफ़ जन्नत है। याद रखें कि नतीजे हमारे अख़्तियार में

नहीं हैं। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तक़्सीम है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيْشَتَهُمْ. (الزخرف:۳۲)﴾

हमने उनके दर्मियान रिज़्क़ तक़्सीम किया।

हम अल्लाह तआला की तक़्सीम पर राज़ी रहें। क्योंकि हदीस पाक में आया है कि जिस बंदे को दुनिया में थोड़ा रिज़्क़ मिलेगा और वह उस के बावजूद भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से राज़ी रहेगा तो अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन फ़रमाएंगे ऐ मेरे बंदे! तू मेरे दिए हुए थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी हो गया था। आज मैं तेरे थोड़े अमलों पर राज़ी हो जाता हूँ। लिहाज़ा अल्लाह तआला उसको जन्नत अता फ़रमा देंगे। इसलिए अगर अल्लाह तआला किसी को खुला रिज़्क़ दें तो वह शुक्र अदा करे और अगर वह किसी को तंग रिज़्क़ दे तो वह सब्र करे। ऐसा न हो कि रिज़्क़ के तंग होने की सूरत में वह झूठ बोलना शुरू कर दे या धोका देना शुरू कर दे और दूसरों का माल ग़लत तरीक़े से हासिल करने की कोशिश करे और अगर माल ज़्यादा मिल जाए तो अल्लाह को भूल भी न जाए। देखो, इस्लाम ने कैसा एतिदाल का रास्ता दिखाया है कि आदमी के पास माल भी हो और उसके साथ आजिज़ी भी हो।

माल ईमान के लिए ढाल है

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि वह दुनिया कितनी अच्छी है जो इंसान की आख़िरत के बनाने में इस्तेमाल हो जाए। इसलिए मालूम हुआ कि सारी दुनिया बुरी नहीं है क्योंकि जो माल आख़िरत संवरने का ज़रिया बनता है वह इंसान के पास

अल्लाह की नेमत हुआ करता है बल्कि यह फ़क़ीर तो कहता है कि आज के दौर में माल इंसान के ईमान के लिए ढाल है क्योंकि हदीस पाक में आया है :

﴿كَادَ الْفَقْرُ اَنْ يَّكُوْنَ كُفْرًا۔﴾

क़रीब है कि कहीं तंगदस्ती तुझे कुफ़्र में न पहुँचा दे।

यक़ीन कीजिए कि हमने लोगों को कुफ़्र में फंसते हुए देखा। वे तंगदस्ती की वजह से चंद पैसों की ख़ातिर अपना मुसलमान वाला नाम बदलकर काफ़िरों वाला नाम अपना लेते हैं। आपको पता ही है कि कई मुल्कों में बढ़ती हुई आबादियों में मिशनरियाँ काम कर रही हैं और कुछ पैसों का माहाना वज़ीफ़ा देने के बदले उनका नाम मुसलमानों से ईसाईयों वाला करवाकर दीन की दौलत से महरूम कर देती हैं।

याद रखें कि हम आज़माईशों के क़ाबिल नहीं हैं। इसलिए तंगदस्ती से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पनाह मांगें और जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अच्छे हाल में रखा हुआ है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करें।

मुर्ग़ाबी की तरह बनिए

मुर्ग़ाबी एक परिन्दा है। उस परिन्दे की यह सिफ़्त है कि वह पानी में बैठता है लेकिन जब भी उसके लिए उड़ने का वक़्त आता है तो वह वहीं पानी से ही उड़ जाता है। उसे उड़ने में कोई रुकावट नहीं होती। उलमा ने लिखा है कि उसे उड़ने में इसलिए रुकावट नहीं होती कि मुर्ग़ाबी पानी में तो बैठती है मगर उसके

पर इतने मुलायम होते हैं कि वे पानी में भीगते नहीं। लिहाज़ा वह उड़ने के वक़्त फ़ौरन उड़ जाती है। मोमिन को भी चाहिए कि वह मुर्ग़ाबी की तरह बने कि अगर माल पानी की तरह है तो यह पानी के अंदर रहे मगर अपने परों को भीगने न दे। जब मौत का वक़्त आ जाए तो यह मुर्ग़ाबी की तरह उड़ान लगाकर अपने असली घर की तरफ़ चला जाए।

बेहतरीन ख़ादिम और बदतरीन आक़ा

माल की मिसाल पानी की सी है। किश्ती के चलने के लिए पानी ज़रूरी है। मगर किश्ती तब चलती है जब पानी किश्ती के नीचे होता है और अगर नीचे के बजाए पानी किश्ती के अंदर आ जाए तो यही पानी उसके डूबने का सबब बन जाएगा। यहाँ से मालूम हुआ कि ऐ मोमिन! तेरा माल पानी की तरह है और तू किश्ती की मानिन्द है। अगर यह माल तेरे नीचे रहा तो यह तेरे तैरने का ज़रिया बनेगा और अगर यहाँ से निकलकर तेरे दिल में आ गया तो फिर यह तेरे डूबने का सबब बन जाएगा। इसलिए साबित हुआ कि अगर माल जेब में हो तो वह बेहतरीन ख़ादिम है और अगर दिल में हो तो बदतरीन आक़ा है।

लाजवाब कर देने वाला सवाल

हमने देखा है कि जो इंसान अल्लाह के रास्ते में जितना ज़्यादा ख़र्च करता है, अल्लाह तआला उसे ज़्यादा देते हैं। आप में कई हैसियत वाले लोग बैठे हैं। आप कोई एक बंदा ऐसा बता दें जिसने दीन के कामों में बहुत ज़्यादा माल ख़र्च किया हो और वह

बैंकर पट हो गया हो। क्या आप कोई ऐसी मिसाल पेश कर सकते हैं। आप कोई ऐसी मिसाल पेश नहीं कर सकते क्योंकि मैंने दुनिया के कई मुल्कों में यह बात पूछी मगर आज तक कोई भी इसका जवाब नहीं दे सका लेकिन मैं आपको उन लोगों की मिसालें देता हूँ जिन्होंने ख़ूब दुनिया कमाई और दुनिया के अलल्ले तलल्ले में पड़े रहे यहाँ तक कि बैंकर पट हो गए। सैंकड़ों मिसालें दी जा सकती हैं कि करोड़ोंपति बैंकर पट हो गए। जो लोग दुनिया कमाकर दुनिया पर लगा देते हैं उनको तो बैंकर पट होते देखा है लेकिन दीन की ख़ातिर बैंकर पट होने वाला कोई एक नहीं देखा। मालूम हुआ कि जो बंदा दीन के लिए जितना भी ख़र्च करता है परवरदिगार आलम उसे उतना ही ज़्यादा अता फ़रमा देते हैं।

मुनाफ़े की तिजारत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक आदमी था। वह बेचारा बहुत ही ग़रीब था। वह टुकड़े-टुकड़े को तरसता था। एक दफ़ा उनकी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गई। वह कहने लगा, हज़रत! आप कलीमुल्लाह हैं और कोहे तूर पर जा रहे हैं। आप मेरी तरफ़ से अल्लाह तआला की ख़िदमत में यह फ़रियाद पेश कर देना कि मेरी आने वाली ज़िंदगी का सारा रिज़्क एक ही दम दे दें ताकि मैं कुछ दिन तो अच्छी तरह से खा पी कर जाऊँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसकी फ़रियाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़िदमत में पेश कर दी। परवरदिगार आलम ने उसकी फ़रियाद क़ुबूल फ़रमाई और उसे कुछ बकरियाँ, गेहूँ की

चंद बोरियाँ और जो चीज़ें उसके मुक़द्दर में थीं वे सब अता फ़रमा दीं। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने काम में लग गए।

एक साल के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सालम को ख़्याल आया कि मैं उस बंदे का पता तो करूं कि उसका क्या बना। जब उसके घर गए तो आपने देखा कि उसने आलीशान मकान बनाया हुआ है। उसके दोस्त आए हुए हैं। उनके लिए दस्तरख़्वान लगे हुए हैं। उन पर क़िस्म-क़िस्म के खाने लगे हुए हैं और सब लोग खा पीकर मज़े उड़ा रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम यह सारा मंज़र देखकर बड़े हैरान हुए। जब कुछ दिनों बाद कोहे तूर पर हाज़िर हुए और अल्लाह तआला से हम कलाम हुए तो अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार आलम! आपने उसे जो सारी ज़िंदगी का रिज़्क़ अता फ़रमा दिया था। वह तो थोड़ा सा था। और अब तो उसके पास कई गुना ज़्यादा नेमतें हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे मूसा! अगर वह रिज़्क़ अपनी ज़ात पर इस्तेमाल करता तो उसका रिज़्क़ वही था जो हमने उसको दे दिया था लेकिन उसने हमारे साथ नफ़े की तिजारत की। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, अल्लाह! उसने कौनसी तिजारत की? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि उसने मेहमानों को खाना खिलाना शुरू कर दिया और मेरे रास्ते में ख़र्च करना शुरू कर दिया और मेरा दस्तूर है कि जो मेरे रास्ते में एक रुपया ख़र्च करता है मैं उसे कम से कम दस गुना ज़्यादा दिया करता हूँ। क्योंकि उसको तिजारत में नफ़ा ज़्यादा हुआ है इसलिए उसके पास माल व दौलत बहुत ज़्यादा है।

दो चीज़ें क़याम का सबब

एक अहम नुक्ता सुनिए कि अल्लाह तआला ने दो चीज़ों को क़याम का सबब बताया है। एक बैतुल्लाह शरीफ़ को और दूसरा माल को। जहाँ काबा को क़याम का सबब बताया है वहाँ फ़रमाया :

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِلنَّاسِ. (المائدہ:۹۷)

अल्लाह ने कर दिया काबा को जो घर है बुज़ुर्गी वाला क़याम का बाइस लोगों के लिए।

और जहाँ माल को इंसानों के लिए क़याम का सबब बताया, वहाँ इर्शाद फ़रमाया :

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيَامًا. (النساء:۵)

और तुम अपना माल बेवक़ूफ़ों के सुपुर्द न करो जिसको हमने तुम्हारे क़याम का सबब बनाया है।

यहाँ मुफ़स्सिरीन ने यह नुक्ता लिखा है कि बैतुल्लाह इंसान की रूहानी ज़िंदगी के क़याम का सबब है और माल इंसान की जिस्मानी ज़िंदगी के क़याम का सबब है। इस लिए अगर किसी को अल्लाह ने माल दिया है तो वह उसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बड़ी नेमत समझे और उसको अपनी आख़िरत के बनाने में लगा दे।

अल्लाह तआला हमें आफ़ियत वाला रिज़्क़ अता फ़रमा दें। ऐसा माल अता फ़रमाए जो वबाल से ख़ाली हो और हम माल को अपनी आख़िरत संवारने में ख़र्च करें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें

दुनिया की हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें हर लम्हे आख़िरत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें और क़ियामत के दिन हमें अपने मक़्बूल बंदों में शामिल फ़रमा लें, आमीन सुम्मा आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

अश'आरे मुराक़बा

अपने मन में डूब कर पा जा सुराग़े ज़िंदगी
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन

मन की दुनिया मन की दुनिया सोज़ो मस्ती जज़्बो शौक़
तन की दुनिया तन की दुनिया सूदो सौदा मकरो फ़न

मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं
तन की दौलत छांव है आता है धन जाता है धन

पानी पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात
तू झुका जब ग़ैर के आगे न तन तेरा न मन

بسم الله الرحمن الرحيم

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ

शैतान के हथकंडे

यह बयान 24 रमज़ानुल मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 9 दिसंबर 2001 ई० को मस्जिद नूर लूसाका (ज़ाम्बिया) में हुआ। सुनने वालों में उलमा, सुल्हा और आम लोगों की बड़ी तादाद थी।

इक़्तिबास

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शैतान हमारा ऐसा दुश्मन है जो कभी रिश्वत क़ुबूल नहीं करता। बाक़ी दुश्मन ऐसे होते हैं कि अगर कोई हदिए, तोहफ़े और रिश्वत दे दे तो वे नरम पड़ जाएंगे और मुख़ालिफ़त छोड़ देंगे और अगर ख़ुशामद की जाए तो उसे भी वे मान जाएंगे मगर शैतान वह दुश्मन है जो न तो रिश्वत क़ुबूल करता है और न ख़ुशामद क़ुबूल करता है। यह कोई नहीं कह सकता कि हम एक दिन बैठकर उसकी ख़ुशामद कर लेंगे और यह हमारी जान छोड़ जाएगा। यह हर्गिज़ नहीं छोड़ेगा क्योंकि यह ईमान का डाकू है और इसकी हर वक़्त इस बात पर नज़र है कि मैं किस तरह इंसान को ईमान से महरूम कर दूँ।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
नक़्शबंदी मुजद्ददी मद्देज़िल्लहु

शैतान के हथकंडे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّاo (الصّٰفّٰت:١٨٠تا١٨٢)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

दूसरा बड़ा दुश्मन

अगर इंसान को अपने दुश्मनों का पता हो तो वह उनके हमलों से बच सकता है। छिपे हुए जिस्मानी दुश्मन तो नुक़सानदेह होते ही हैं मगर रूहानी दुश्मन उनसे भी ज़्यादा नुक़सानदेह होते हैं। अगर जान चली जाए तो इंसान मौत के मुँह में चला जाता है। अगर रूह पर हमला हो तो इंसान जहन्नम के मुँह में चला जाएगा। इंसान का पहला बड़ा दुश्मन "दुनिया की मुहब्बत" है। इसका तज़्किरा पहली नशिस्तों में हो चुका है और आज की महफ़िल में दूसरे बड़े दुश्मन "शैतान" के बारे में तफ़्सील बयान की जाएगी।

शैतान के मकर व फ़रेब को समझने की ज़रूरत

इर्शादे बारी तआला है :

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَکُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, पस तुम भी उसे दुश्मन बनाकर रखो।

शैतान ऐसा बदबख़्त और मरदूद है कि वह ख़ुदा का भी दुश्मन है और ख़ुदा के बंदों का भी दुश्मन है। हमें इस दुश्मन के मकर व फ़रेब का अच्छी तरह पता होना चाहिए क्योंकि जब चोर को पता चल जाता है कि मालिक मकान को मेरा पता चल गया है तो फिर वह उस घर में आना छोड़ देता है। इसी तरह जब शैतान को पता चल जाता है कि अब यह मेरे मकर व फ़रेब समझ चुका है तो वह भी उससे नाउम्मीद होने लग जाता है। फिर उसके जाल काम नहीं करते। इसलिए उलमा ने इस पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। एक किताब का नाम है "तलबीस इब्लीस।" यह इमाम जौज़ी रह० की तसनीफ़ है। इसका उर्दू तर्जुमा हो चुका है। यह लेकर पढ़नी चाहिए ताकि पता चले कि शैतान कैसे-कैसे वरग़लाता है।

शैतान की कहानी क़ुरआन की ज़बानी

क़ुरआन मजीद में शैतान की पूरी हिस्ट्री बयान कर दी गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿كَانَ مِنَ الْجِنِّ (کهف:٥٠)﴾ वह जिन्नों में से था।

उसने बड़ी इबादत की, ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर सज्दे किए

यहाँ तक कि उसको बड़ा क़ुर्ब मिला। कसरत इबादत की वजह से उसका नाम ताऊसुल-मलाइका पड़ गया।

जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया और फ़रमाया कि यह दुनिया में मेरे ख़लीफ़ा होंगे और फ़रिश्तों को हुक्म दिया ﴿اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ. (الاعراف:١١)﴾ यानी आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो तो सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया लेकिन शैतान ने सज्दा नहीं किया।

اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ. (البقرة:٣٤)

इस शैतान ने इंकार किया, तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने पूछा तुमने सज्दा क्यों नहीं किया तो कहने लगा,

اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ. (الاعراف:١٢)

मैं इससे ज़्यादा बेहतर हूँ, मुझे आपने आग से बनाया है और इसे मिट्टी से बनाया।

उसने अपने बेहतर होने की यह दलील पेश की कि आपने मुझे आग से बनाया है और आग के शोले ऊपर को उठते हैं, गोया उनमें बुलन्दी की तरफ़ रुजू करता हूँ जबकि आदम अलैहिस्सलाम को तूने मिट्टी से बनाया है और मिट्टी में पस्ती होती है। इस लिए मैं बुलन्द मर्तबा होने के बावजूद पस्त मर्तबा चीज़ को सज्दा क्यों करूं।

सज्दे का इंकार करके शैतान ने दो काम किए। पहला काम तो यह किया कि उसने इज्मा की मुख़ालिफ़त की और पूरी

दुनिया में इज्मा का पहला मुख़ालिफ़ बना। दूसरे लफ़्ज़ों में वह पूरी दुनिया में सबसे पहला ग़ैर-मुक़ल्लिद बना। सारे फ़रिश्ते एक तरफ़ थे और वह अकेला एक तरफ़ था। उसने कहा कि आपने तो फ़रमाया दिया है कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करूं मगर नहीं, मैं किसी को क्यों मानूं, मैं तो नहीं मानता। मैं तो वह काम करूंगा जो मेरे दिल में आएगा। और उसने दूसरा काम यह किया कि उसने बुरा क़यास किया। उसने क़यास किया कि मैं आदम से बेहतर हूँ हालाँकि बेहतर तो वह होता है जिसे परवरदिगार बेहतर कहे। मगर वह धोका खा गया। यहाँ सोचने की बात यह है कि उसे उस वक़्त किस चीज़ का नशा चढ़ा हुआ था? उसे उस वक़्त "मैं" का नशा चढ़ा हुआ था। शराब का नशा छोटा होता है और "मैं" का नशा उससे बड़ा होता है।

जब शैतान ने सज्दा करने से इंकार कर दिया तो परवरदिगार आलम ने फ़रमाया :

فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّکَ رَجِیْمٌ (الحجر:۳۴)

निकल जा मेरे दरबार से, पस तू मरदूद है।

और साथ ही एक और बात भी कह दी, फ़रमाया :

اِنَّ عَلَیْکَ لَعْنَتِیْ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ (ص:۷۸)

क़यामत तक तेरे ऊपर मेरी लानतें बरसेंगी।

जब अल्लाह तआला ने शैतान को अपने दरबार से फटकार दिया तो उसके बुरे अंजाम से फरिश्ते थर्र-थर्र कांपने लगे। शैतान बदबख़्त और मरदूद है। वह इस वक़्त भी यह बातें सुन रहा होगा और उसे गुस्सा भी आ रहा होगा। हम तो चाहते हैं कि उसे

गुस्सा आए। जब हमने परवरदिगार की पनाह मांगी तो फिर हमें किस बात का डर है। वह इतने बड़े इबरतनाक अंजाम के बावजूद कहने लगा, ऐ अल्लाह! आपने मुझे अपने दरबार से फटकार तो दिया है, अब मेरी दुआएं तो क़ुबूल कर लीजिए।

यहाँ उलमा ने एक नुक्ता लिखा है कि क्योंकि शैतान को अल्लाह तआला की मारिफ़त हासिल थी इसलिए उसका नुक्ता मालूम था कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की एक सिफ़्त रहमत भी है और एक सिफ़्त ग़ज़ब भी है और दोनों उससे जुदा नहीं होतीं। ऐन ग़ज़ब के आलम में भी अल्लाह तआला रहीम होते हैं। लिहाज़ा अगरचे वह मुझसे ग़ुस्से और जलाल में है मगर रहमत की सिफ़्त भी है। चुनाँचे उसने दुआ मांगी :

﴿رَبِّ فَانْظِرْنِیْ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ. (الحجر:٣٦)﴾

ऐ परवरदिगार! मुझे क़यामत तक की मुहलत दे दीजिए।

रब्बे करीम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اِنَّکَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ(الحجر:٣٧)﴾

बेशक क़यामत तक के लिए तुझे मोहलत दे दी गई है।

यहाँ उलमा किराम ने एक नुक्ता लिखा है कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त शैतान जैसे मरदूद को ग़ुस्से और जलाल के आलम में मोहलत दे देते हैं तो ऐ उम्मते मुहम्मदिया के ग़ुलाम! तो अगर अल्लाह से ख़ुशी की हालत में मोहलत मांगेगा तो अल्लाह तआला तुझे मोहलत क्यों नहीं अता फ़रमाएंगे।

शैतान ने सोचा कि आदम को जन्नत में जगह मिल गई है और मैं रान्दाए दरगाह बन गया हूँ। इसलिए किसी न किसी तरह

उनको जन्नत में से निकलवाना चाहिए। चुनाँचे वह इस कोशिश में लग गया। उसके पास वक़्त की तो कोई कमी नहीं थी, उसे बस एक ही काम था। उसने सोचा कि मैं किस तरीक़े से उनको जन्नत से निकलवा सकता हूँ। तो वह इस नतीजे पर पहुँचा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तो यक़ीन दिलाना मुश्किल है लेकिन उनकी अहलिया तो एक औरत हैं। मैं उनके सामने जाकर क़समें खा खा कर यक़ीन दिलाता हूँ।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रमाया था कि तुम दोनों इस जन्नत में रहोगे मगर फ़लाँ दरख़्त का फल न खाना। शैतान अम्मा हव्वा के पास गया और उनके दिल में बात डाली कि मैं आपको एक ऐसा काम बताऊँ जिसको करने से आप हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में रहेंगी, कोई आप को निकाल ही नहीं सकेगा और तुम्हें ऐसी शाही मिलेगी जो कभी वापस नहीं ली जाएगी। शैतान ने जब यह ख़्याल दिल में डाला तो उन्होंने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कहा लेकिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नहीं, रब्बे करीम ने हमें मना फ़रमाया है इसलिए हम नहीं खाएंगे।

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उस दरख़्त का फल खाने से इंकार कर दिया तो शैतान पीछे न हटा बल्कि और एक प्वाइंट लेकर आया। वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने आकर कहने लगा कि जब आपको अल्लाह तआला ने दरख़्त का फल खाने से मना किया था उसक वक़्त आप फ़लाँ दरख़्त के क़रीब खड़े थे और अल्लाह तआला ने तो ख़ास उस दरख़्त का फल खाने से मना किया था ऐसे तो और कई दरख़्त हैं। आप ख़ास उस दरख़्त से न खाएं बल्कि और दरख़्त से खा लें। हज़रत आदम

अलैहिस्सलाम फ़रमाया नहीं हम नहीं खाते। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया ﴿وَقَاسَمَهُمَا (الاعراف:۲۱)﴾ और उसने उन दोनों के सामने क़स्में खाएं।

जब कोई क़समें खाकर बात करे तो दूसरे बंदे को यक़ीन आ जाता है अब तो वह क़समें खा रहा है। लिहाज़ा जब उसने बार-बार क़समें खाएं तो अम्मा हव्वा के दिल में यह बात आई कि यह जन्नत है और यहाँ अल्लाह का क़ुर्ब है। अगर हम इस दरख़्त का फल खा लेंगे तो हमें हमेशा-हमेशा के लिए अल्लाह का क़ुर्ब नसीब रहेगा। चुनाँचे उन्होंने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कहना शुरू कर दिया यहाँ तक कि वह वक़्त आया जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अम्मा हव्वा ने उस दरख़्त का फल खा लिया। उस वक़्त उनके ज़हन में यह बिल्कुल नहीं था कि हम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी कर रहे हैं क्योंकि वह समझते थे कि ख़ास उस दरख़्त का फल खाना नाफ़रमानी है। इसके अलावा और दरख़्तों से फल खाना नाफ़रमानी नहीं है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में साफ़ फ़रमा दिया :

﴿وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا. (طٰہٰ:۱۱۵)﴾

हमने आदम के अंदर मासियत का इरादा नहीं पाया।

यानी उनके दिल में यह बात न थी कि यह भी अल्लाह की नाफ़रमानी और मैंने करनी भी ज़रूर है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अम्मा हव्वा की मुलाक़ात

जब उस दरख़्त का फल खा बैठे तो परवरदिगार आलम ने

फ़रमाया ऐ आदम! अब आपको इससे नीचे उतरना पड़ेगा। चुनाँचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अम्मा हव्वा दोनों को ज़मीन पर उतार दिया गया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को श्रीलंका की एक पहाड़ी पर उतारा गया वह पहाड़ी हरी-भरी थी और उस पर बाग़ात भी थे। और अम्मा हव्वा को अफ़्रीक़ा के मुल्कों में उतारा गया, वह जगह बंजर थी। दोनों को एक दूसरे का कुछ पता नहीं था। वह जुदाई में रोते रहे और अल्लाह तआला से माफ़ियाँ मांगते रहे। अहादीसे मुबारक में आया है कि वे दोनों तीन सौ साल तक रोते रहे। आख़िर इधर श्रीलंका से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम चले और अफ़्रीक़ा से अम्मा हव्वा चलीं। मैदाने अरफ़ात के एक पहाड़ "जबले रहमत" पर एक तरफ़ से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ऊपर चढ़े और दूसरी तरफ़ से अम्मा हव्वा ऊपर चढ़ीं। इस पहाड़ी पर दोनों की एक दूसरे से मुलाक़ात हुई। उस पहाड़ को जबले रहमत इसलिए कहते हैं कि उस पर अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अम्मा हव्वा की तौबा को क़ुबूल फ़रमा लिया था।

जब उनकी तौबा क़ुबूल हो गई तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में यह बात डाली कि बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ चलें। चुनाँचे जब वे दोनों अरफ़ात से मक्का मुकर्रमा की तरफ़ चले तो उन्हें मुज़दलफ़ा में रात आई। मुज़दलफ़ा चादर को कहते हैं। उस वक़्त उनके पास एक बड़ी चादर थी और दोनों मियाँ-बीवी उस एक ही चादर के अंदर सोए थे। इस वजह से उस जगह का नाम मुज़दलफ़ा पड़ गया। उसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का घर बनाया। इधर ही अम्मा हव्वा की वफ़ात हुई जिस

जगह पर उनकी वफ़ात हुई उस शहर का नाम जिद्दा पड़ गया। जिद्दा दादी को कहते हैं। अम्मा हव्वा की क़ब्र जिद्दा शहर में इस वक़्त भी मौजूद है।

इतनी तफ़्सील बताने का मक़सद यह है कि यह शैतान हमारा भी दुश्मन है और हमारे बाप-दादा का भी दुश्मन है। हमारी इससे ख़ानदानी दुश्मनी है।

औरत की कमज़ोरी

एक और बात भी समझ लें कि शैतान ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पहले नहीं बहकाया क्योंकि उसे पता था कि वह मेरी बातों में नहीं आएंगे। इसलिए पहले अम्मा हव्वा को कहा। औरत के अंदर यह कमज़ोरी है कि यह बेचारी फिसलती भी जल्दी है और फिसलाती भी जल्दी है।

शैतान के साथ दुश्मनी पैदा करने का एक अछूता अंदाज़

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को शैतान से ज़ाती दुश्मनी है। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया कि यह तुम्हारा भी दुश्मन है मेरा भी दुश्मन है। अल्लाह तआला ने इंसान के दिल में शैतान के साथ नफ़रत पैदा करने के लिए क़ुरआन मजीद में बड़े अजीब अंदाज़ में तज़्किरा फ़रमाया। क़ुरआन अज़ीमुश-शान का यह हुस्न व जमाल है कि जहाँ असर पैदा करना होता है वहाँ ऐसे नुक्ते लाए जाते हैं।

- अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने बनी इस्राईल को अपने एहसानात

याद दिलाने थे तो भी अजीब अंदाज़ अपनाया गया। फ़िरऔन के बनी इस्राईल पर होने वाले ज़ुल्मों की दास्तानें मशहूर हैं। बच्चियों को ज़िंदा छोड़ देता था लेकिन छोटे बच्चों को ज़िब्ह कर देता था। लेकिन जब अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में बनी इस्राईल को अपने एहसानात याद दिलाए तो फ़रमाया :

﴿يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاءَ كُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاءَ كُمْ. (البقرہ:٤٩)﴾

वह फ़िरऔन तुम्हारे बेटों को क़त्ल करता था और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रखता था।

यहाँ सोचने की बात है कि वह तो छोटे बच्चों को क़त्ल करता था और छोटी बच्चियों को ज़िंदा छोड़ता था मगर क़ुरआन मजीद में बच्चों की बजाए बेटों और बच्चियों की बजाए औरतों का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया, इसकी क्या वजह है? इसकी वजह यह है कि अगर किसी को यूँ कहें कि उसने तुम्हारे मर्दों को मारा तो इतना ग़ुस्सा नहीं आता और अगर कहें कि तुम्हारे मासूम बेटे को मारा तो तबियत में ज़्यादा ग़ुस्सा आता है कि अच्छा मासूमों को क़त्ल करता था। इसी तरह अगर यूँ कहें कि उसने तुम्हारी मासूम बच्ची को ज़िंदा रखा तो इतना ग़ुस्सा नहीं आता और कहें कि उसने तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रखा तो औरत की इज़्ज़त, हुरमत, असमत और ग़ैरत फ़ौरन आपके ज़हन में आती है कि हमारी औरतों को उसने ज़िंदा रखा। इसीलिए क़ुरआन ने बच्चे के लिए इब्ने का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया ताकि उसके दिल में ग़ैरत आए और बच्ची के लिए बिन्त का लफ़्ज़ इस्तेमाल करने के बजाए औरत का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया ताकि उनकी ग़ैरत उभरे।

- इसी तरह अल्लाह तआला ने इंसानों के दिलों में शैतान

के साथ दुश्मनी पैदा करनी थी तो क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया कि शैतान तुम्हारा दुश्मन है।

﴿كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ الْجَنَّةِ (الاعراف:٢٧)﴾

जैसे उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवाया।

और दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا. (الاعراف:٢٧)﴾

उतरवाए उनसे उनके कपड़े।

शैतान के साथ दुश्मनी पैदा करने का यह एक अछूता अंदाज़ है। यही बात आप को एक मिसाल से समझाता हूँ ताकि बात समझ आ जाए। फ़र्ज़ करें कि आपके वालदैन किसी के घर में हों और कोई बंदा आकर घरवालों से कहता है कि इनको बाहर निकाल दो और आपको पता चले कि फ़लाँ ने तो मेरे माँ-बाप को घर से धक्के दिलवाकर बाहर निकलवा दिया है तो यह सुनकर आपको कितना ग़ुस्सा आएगा। और इससे भी ज़्यादा ग़ुस्सा इस बात पर आता है कि अगर किसी के माँ-बाप को कोई पकड़े और कोई बंदा आकर उनसे कहे कि इनको बेलिबास कर दो। अब अगर किसी को बताया जाए कि तेरे माँ-बाप को दुश्मन ने पकड़ा तो था लेकिन इस आदमी ने मशवरा दिया था कि उनका लिबास भी उतार दो तो बताएं उसके बारे में इसको कितना ग़ुस्सा आएगा। इन आयतों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दोनों बातें बतला दीं ताकि मालूम होने पर तबियत में ग़ुस्से की लहर दौड़ जाए और मेरे बंदे मेरे बनकर रहें, शैतान के क़रीब भी न जाएं।

ज़ाती दुश्मनी के लिए ज़ाती नाम का इस्तेमाल

क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को शैतान से ज़ाती अदावत है इसलिए अल्लाह तआला ने शैतान से अपनी ज़ात के साथ पनाह मांगने के लिए तो तावीज़ हमें सिखाया है उसमें सिफ़ाती नाम इस्तेमाल नहीं किए बल्कि उसमें सिर्फ़ अल्लाह तआला का ज़ाती नाम है।

﴿اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ अऊज़ुबिल्लाहि मिनश-शैतानिर्-रजीम।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला ने ताऊज़ में ज़ाती नाम इसलिए इस्तेमाल किया कि अल्लाह तआला बताना चाहते हैं कि ऐ मेरे बंदे! शैतान मरदूद मेरा ज़ाती दुश्मन है, जब तुम्हें उससे पनाह मांगनी होगी तो तुम मेरा ज़ाती नाम लेकर पुकारना, मैं तुम्हें उससे बचाकर दिखाऊँगा।

अगर कोई आदमी सुबह के वक़्त दस मर्तबा तऊज़ पढ़े तो शाम तक और अगर शाम को दस मर्तबा तऊज़ पढ़े तो सुबह तक शैतान के शर से महफ़ूज़ रहेगा।

शैतान को पैदा करने की हिकमतें

यहाँ सवाल पैदा होता है कि अगर शैतान ने इतना ही बड़ा दुश्मन बनना था तो फिर अल्लाह तआला ने उसे पैदा ही क्यों किया? तो सुनिए :

﴿فعل الحكيم لا يخلو عن الحكمة.﴾

दाना का कोई काम भी दानाई से ख़ाली नहीं होता।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जो शैतान को पैदा फ़रमाया उसमें भी बहुत सी हिकमतें थीं:

1. एक हिकमत यह थी कि अगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन के ऊपर बातिल की तरफ़ बुलाने वाला कोई न होता तो हक़ की तरफ़ आने पर अल्लाह तआला अज्र कैसे अता फ़रमाते। उसूल भी यही है कि अगर कोई मन्फ़ी ताक़त (Negative Force) हो तो उसके ख़िलाफ़ करने पर कहा जाता है कि अच्छा भाई शाबाश तू ईनाम का मुस्तहिक़ है। अल्लाह तआला ने भी शैतान को इसलिए पैदा किया कि यह आदम अलैहिस्सलाम और औलादे आदम को मेरे रास्ते से हटाने की कोशिश करे मगर वे इसकी बात मानने के बजाए मेरी बात मानें और जब मेरे पास आएं तो मैं अपनी बात मानने पर उनको हमेशा हमेशा के लिए जन्नत की नेमतें अता फ़रमा दूँ।
2. देखें कि अगर आग न होती तो ऊद की ख़ुश्बू कैसे ज़ाहिर होती। ऊद को आग के ऊपर जलाते हैं और ख़ुशबू पैदा होती है। जिस तरह आग के पैदा होने से हमें ऊद की ख़ुशबू का पता चला इसी तरह शैतान के पैदा होने से हमें नेकी करने के अज्र का पता चला। यह दूसरी हिकमत है।
3. उलमा ने शैतान के पैदा करने की एक हिकमत यह भी लिखी है कि अगर इंसान दुनिया में आता और शैतान न होता और यह अपने नफ़्स की वजह से बुराई करता तो फिर इसकी माफ़ी के चान्स ख़त्म हो जाते और कहा जाता कि इसने ख़ुद बुराई की इसलिए अब माफ़ी नहीं हो सकती। और

अब क्योंकि शैतान पैदा हो चुका है और वह भी वरग़लाता है, इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन जिनको माफ़ करना चाहेंगे उनका सारा बोझ शैतान के सर पर डाल देंगे और अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि मेरे इन बंदों को शैतान ने बहकाया था। लिहाज़ा अब मैं इनको माफ़ करके जन्नत में दाख़िल कर देता हूँ।

शैतान पर इल्ज़ामों की बौछार

इसीलिए अगर आप क़ुरआन मजीद में ग़ौर करें तो मालूम होगा कि अल्लाह तआला ने जहाँ भी अपने नेक बंदों का तज़्किरा फ़रमाया ओर उनसे कोई ऊँची-नीची बात हो गई तो उसकी शैतान की तरफ़ निस्बत दी। चंद मिसालों पर ग़ौर कीजिए।

- अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهُمَا (البقرہ:٣٦)﴾ पस शैतान ने उनको बहका दिया।

यहाँ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अम्मा हव्वा की निस्बत नहीं की बल्कि शैतान को मूरिद इल्ज़ाम यानी मुलज़िम ठहराया।

- इसी तरह एक जगह फ़रमाया :

﴿وَمَا اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ. (الکہف:٦٣)﴾ और शैतान ने मुझे भुला दिया।

- एक जगह और फ़रमाया :

﴿مِنْ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ. (یوسف:١٠٠)﴾ उसके बाद शैतान ने झगड़ा डाला।

इन आयतों में देखें कि अगरचे गुनाह इंसानों से हुए मगर

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको मुलज़िम ठहराने के बजाए शैतान को मुलज़िम ठहराया।

शैतान के हथकंडों से बचने का हुक्म

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ. وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ. (يٰسين:٦٠تا٦١)

ऐ बनी आदम! क्या मैंने तुम से यह नहीं कह रखा था कि तुम शैतान की बंदगी न करना बेशक वह तुम्हारा ज़ाहिर बाहर दुश्मन है और सिर्फ़ मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है।

- एक और जगह पर फ़रमाया

﴿اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ. (القصص:١٥)﴾ बेशक वह खुला बहकाने वाला दुश्मन है।

- कहीं फ़रमाया :

﴿وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (الفاطر:٥)﴾ और तुम्हें अल्लाह तआला के साथ धोका देने वाला धोका न दे।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने ख़ूब वाज़ेह कर दिया कि तुमने शैतान के हथकंडों से बचना है और मेरा बंदा बनकर ज़िंदगी गुज़ारनी है।

रहमान और शैतान के दर्मियान मकालमा (बातचीत)

जब शैतान को मोहलत मिल गई तो वह कहने लगा :

﴿رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ٥ (الحجر:٣٩)﴾

ऐ मेरे रब! जैसा तूने मुझे गुमराह किया है मैं भी उनके लिए ज़मीन में चीज़ें मुज़ैय्यन करके दिखाऊँगा और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह कर दूंगा।

फिर कहने लगा :

﴿وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ.(الاعراف:١٧)﴾

और तू अक्सर नाशुक्रा पाएगा।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ(الحجر:٤٢)﴾

जो मेरे बंदे होंगे उन पर तेरा कोई बस नहीं चलेगा।

नाक़ाबिले माफ़ी गुनाह से हिफ़ाज़त

क्या इससे यही मुराद है कि नेक लोगों से गुनाह हो ही नहीं सकते। नहीं बल्कि मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि जो मेरे बंदे होंगे उनसे तू कोई ऐसा गुनाह नहीं करवा सकता जो नाक़ाबिले माफ़ी हो। लिहाज़ा अगर ईमान वाले ग़फ़लत की वजह से कोई गुनाह करेंगे भी सही तो वह क़ाबिले माफ़ी होंगे। तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला होता है। जब भी वह तौबा करेंगे अल्लाह तआला उनके सब गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

शैतान की पहली कोशिश

हदीस पाक में आया है :

शैतान इब्ने आदम के क़ल्ब की तरफ़ अपना मुँह करके बैठा

होता है। जब वह देखता है कि उसका दिल ज़िक्र कर रहा है तो वह पीछे हटा रहता है और जब देखता है कि दिल ग़ाफ़िल हो चुका है तो फिर वह वसवसे डालना शुरू कर देता है। यही वजह है कि शैतान की अव्वलीन कोशिश यह होती है कि जैसे ही बंदा ग़ाफ़िल हो, वह उसे बुराई पर लगा दे।

शैतान के लिए सबसे मुहलिक हथियार

दुनिया का दस्तूर है कि जब कोई बंदा अपने किसी दुश्मन पर क़ाबू पाता है तो वह उसे हैंड्स-अप करा देता है ताकि अगर उस वक़्त उसके पास कोई मोहलिक चीज़ है जिससे वह नुक़सान पहुँचा सकता है तो वह उसके हाथों से छीन ले और उसके हाथ ख़ाली हो जाएं।

अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ (المجادلہ:١٩)﴾

शैतान उन पर ग़ालिब आया और उसने उन्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया।

ज़िक्रुल्लाह शैतान के लिए एक मुहलिक हथियार है, इसलिए जब उसे मौक़ा मिलता है वह बंदे को ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल कर देता है।

फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाइन की हिफ़ाज़त

बल्कि शैतान बंदे को नमाज़ से भी पहले अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल करता है। सुनिए क़ुरआन अज़ीमुश्शान, अल्लाह तआला

इर्शाद फ़रमाते हैं :

إِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ. (المائدہ:۹۱)

बेशक शैतान यह इरादा करता है कि तुम्हारे दर्मियान शराब और जुए के ज़रिए दुश्मनी और बुग़ज़ डाले और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे।

यहाँ अल्लाह तआला ने ज़िक्र का तज़्किरा पहले किया नमाज़ का बाद में। इससे मालूम हुआ कि इंसान पहले अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है और बाद में नमाज़ों से ग़ाफ़िल होता है। इसलिए अक़्लमंद बंदा वह होता है जो दुश्मन को अपनी बाउन्ड्री लाइन से परे रखे। हर मुल्क की एक फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाइन होती है और एक सेकिन्ड डिफ़ेन्स लाइन होती है। कोशिश यह होती है कि दुश्मन फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाइन से पीछे ही रहे। और अगर वह फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाईन से आगे आ गया तो फिर वह दूसरी लाईन के पास भी पहुँच जाएगा।

ज़िक्रुल्लाह हमारे लिए फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाईन है। अगर हम अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करेंगे तो शैतान मरदूद वैसे ही हम से दूर रहेगा और अगर हम ग़ाफ़िल बन गए तो फ़र्स्ट डिफ़ेन्स लाईन को क्रास करके दूसरी डिफ़ेन्स लाईन (नमाज़) के पास आ जाएगा और हमें नमाज़ से भी ग़ाफ़िल करना शुरू कर देगा। इसलिए कोशिश करें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ज़िक्र कसरत के साथ करें ताकि ज़िक्र की बरकत की वजह से शैतान के मकर व फ़रेब से बच सकें। और यक़ीनन ऐसा होता है। इसकी दलील के लिए क़ुरआन मजीद की यह आयत पेश की जा सकती है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ﴾

(الاعراف:٢٠١)

बेशक मेरे जो बंदे मुत्तक़ी हैं उन पर शैतान की एक पलटन हमलावर होती है तो वह अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। बस अल्लाह तआला उनको शैतान के हथकंडों से बचा लेते हैं।

मालूम हुआ कि मोमिन के पास शैतान से बचने का हथियार अल्लाह का ज़िक्र है। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ज़िक्र की कोई हद मुक़र्रर नहीं फ़रमाई। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا﴾ (الاحزاب:٤١)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह को कसरत से याद करो।

ज़िक्रे कसीर किसे कहते हैं?

अब यहाँ सवाल पैदा होता है कि ज़िक्रे कसीर किसे कहते हैं? इसके लिए एक मोटी सी बात इर्शाद फ़रमा दी, फ़रमाया :

﴿الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَّقُعُودًا وَّعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ﴾ (آل عمران:١٩١)

वे बंदे जो खड़े, बैठे और लेटे मुझे याद करते हैं।

ज़िक्रे कसीर की यही तफ़्सीर है कि हम खड़े, बैठे, लेटे अल्लाह को याद करें और अपने दिल में अल्लाह का ध्यान जमाएं। जब दिल में अल्लाह की याद आ जाएगी तो फिर इंसान का दिल शैतान के वार से महफ़ूज़ हो जाएगा।

एक नादीदा दुश्मन से लड़ाई

शैतान तो इंसान को देखता है मगर इंसान शैतान को नहीं

देख सकता। यहाँ तालिब इल्म के ज़हन में सवाल पैदा होता है कि अगर दो बंदों के दर्मियान मुक़ाबला होता है तो पहलवान एक दूसरे के सामने होते हैं लेकिन बंदों का शैतान से अजीब मुक़ाबला है कि शैतान तो बंदों को देखता है लेकिन बंदे उसे नहीं देख सकते। वह मरदूद हमें अब भी देख रहा है कि हम मस्जिद में बैठे हैं और उसके सीने पर मूंग दली जा रही है। वह सोच रहा होगा कि मैंने इनको इतना बहकाया कि इस साल नहीं बल्कि अगले साल एतिकाफ़ में बैठ जाना लेकिन इन्होंने मेरी बात नहीं मानी और इसी साल बैठ गए।

उलमा ने इस तालिब-इल्माना सवाल का जवाब यह लिखा है कि क्योंकि यह हमें देखता है और हम उसे नहीं देख सकते। इसलिए हमारे न देख सकने की वजह से अल्लाह तआला ने अपनी मदद हमारे शामिल कर दी। अगर हम भी देख सकते तो फिर मुक़ाबला एक जैसा होता और हमें उसके साथ लड़ाई करनी पड़ जाती। इसमें हिकमत यह थी कि इंसान को उसके देखने की ताक़त ही न दी। बस इतना ही कह दिया कि जब उस मरदूद से बचना हो तो मुझे पुकार लेना। तुम उससे क्या लड़ोगे मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करके दिखाऊँगा। जैसे छोटे बच्चे को माँ लड़ने के लिए हाथ में डंडा नहीं देती बल्कि वह उसे कहती है, बेटा अगर कोई तुझे कुछ कहे तो मुझे बताना। अल्लाह तआला ने भी यही मामला फ़रमाया कि बंदे को उसको देखने की ताक़त से महरूम कर दिया। फिर इसको बहाना बना दिया कि मेरे बंदे! तू तो उसको देख नहीं सकता और तुझे देखता है और वार करता है इसलिए जब तूने इस मरदूद से बचना हो तो मुझे पुकार लेना, मैं

परवरदिगार तुम्हें शैतान से महफ़ूज़ फ़रमा दूंगा। इसलिए जब हम "ला हवला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" पढ़ते हैं तो शैतान भाग जाता है बल्कि भागते हुए उसकी हवा भी निकल रही होती है।

दो दोस्त थे। एक दूसरे से मिलने आया तो वह नमाज़ पढ़ रहा था। लिहाज़ा वह चला गया। बाद में एक दूसरे से मिले तो उसने कहा, यार! मैं आपसे मिलने आया था मगर आप नमाज़ पढ़ रहे थे। वे आपस में बड़े बेतकल्लुफ़ थे। उसने कहा फिर आप चले क्यों गए मैंने कौनसा ला हवला वला क़ुव्वता पढ़ दिया था।

हमें चाहिए कि जब भी गुनाह का वसवसा दिल में आए हम "ला हवला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" पढ़ें। जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था :

﴿قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ﴾ (یوسف:۲۳) कहा मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

हम इसी तरह फ़ौरन अल्लाह की पनाह चाहें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें महफ़ूज़ फ़रमा देंगे। गोया शैतान के वसवसों से बचने का आसान गुर यह है कि जैसे ही ज़हन में वसवसा आए, उसे ज़हन में जमने न दें बल्कि फ़ौरन "ला हवला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह" पढ़ लें। शैतान उस वक़्त भाग जाएगा और वसवसा ख़त्म हो जाएगा। इसी तरह "अऊज़ुबिल्लाहि मिनश् शैतानिर्रजीम" पढ़ लेने से भी शैतान भाग जाता है और वसवसा ख़त्म हो जाता है।

शैतानी और नफ़्सानी वसवसों की पहचान

यहाँ एक इल्मी नुक्ता सुनते चलें। इंसान के दिल में जो गुनाह के ख़्याल आते हैं वे कभी-कभी तो शैतान की तरफ़ से होते हैं

और कभी-कभी नफ़्स की तरफ़ से होते हैं। यह नफ़्स बड़ा गुरू-घंटाल है बल्कि यह महा-बदमाश है, इसकी भी बारी आएगी, आज तो शैतान की बारी है। सोचने की बात है कि बंदे को कैसे पता चले कि यह वसवसा शैतान की तरफ़ से है या नफ़्स की तरफ़ से? इसको परखने का आसान तरीक़ा यह है कि अगर कोई वसवसा दिल में आए और इंसान त-ऊज़ यानी "अऊज़ुबिल्लाहि मिनश् शैतानिर्रजीम" पढ़ ले या "ला हवला" पढ़ ले तो अगर वह शैतानी वसवसा होगा तो फ़ौरन रुख़्सत हो जाएगा और इसके पढ़ने के बावजूद भी दिल में गुनाह का ख़्याल रहे तो समझ ले कि यह शैतान की तरफ़ से नहीं बल्कि अंदर के नफ़्स की तरफ़ से वसवसा होगा।

शैतान के अजीब व ग़रीब हथकंडे हैं जिनसे वह इंसान को बहकाता है। जब आपको पता चल जाएगा तो फिर आपको समझना आसान हो जाएगा कि शैतान मुझे बहका रहा है या नहीं। फिर आप धोका नहीं खाएंगे। कम से कम यह ज़रूरत पता होगा कि क्या हो रहा है। फिर भी इसका एक गुर यह है कि यह इंसान को बड़ी नेकी से हटाकर छोटी नेकी पर ले आता है। मसलन अगर किसी को नेकी का एक काम करने पर एक लाख नेकियाँ मिलनी थीं तो वह उसे किसी एक सौ नेकियों वाले काम पर लगा देगा कि उसे ज़्यादा फ़ायदा न हो।

शैतान ने तहज्जुद के लिए जगा दिया

एक बुज़ुर्ग के बारे में आता है कि एक रात उनकी तहज्जुद की नमाज़ क़ज़ा हो गई। उन्होंने उसके अफ़सोस की वजह से

सुबह उठकर अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाकर माफ़ी मांगी। कुछ दिनों के बाद फिर वह रात को सोए हुए थे। उस रात जिहाद की वजह से बहुत ज़्यादा थकावट थी। तहज्जुद की नमाज़ क़ज़ा होने का वक़्त क़रीब था। कोई आदमी आया और उन्हें पकड़कर जगाया और कहने लगा, जी आप उठें और जल्दी से नमाज़ पढ़ लें। तहज्जुद का वक़्त जा रहा है। वह बुज़ुर्ग उठ बैठे और कहने लगे तू तो मेरा बड़ा भला चाहने वाला है कि ऐन वक़्त पर जगा दिया। तुम्हारी मेहरबानी। यह तो बता कि तू कौन है? वह कहने लगा कि मैं शैतान हूँ। उन्होंने कहा, शैतान तो किसी को तहज्जुद के लिए नहीं जगाता। तूने मुझे कैसे जगा दिया, तुम तो किसी का भला नहीं चाहते? वह कहने लगा, मैं आपका भला आज भी नहीं चाह रहा हूँ। वह बुज़ुर्ग बड़े हैरान हुए कि और फ़रमाने लगे कि तूने मुझे तहज्जुद के लिए जगाया और कह रहा है कि मैं भला नहीं चाह रहा। वह मरदूद कहने लगा वजह यह है कि जब आपकी पहली तहज्जुद की नमाज़ क़ज़ा हुई थी तो उस वक़्त आप इतना रोए थे कि आपको उस रोने पर इतना अज्र मिला कि सालों की तहज्जुद पर भी इतना अज्र नहीं मिल सकता। आप आज भी सो गए थे। तहज्जुद का वक़्त जा रहा था। मैंने सोचा कि अगर आप आज भी इतना रोए तो आपको आज फिर उतना अज्र मिल जाएगा। इसिलए मैंने बेहतर समझा कि आपको जगा दूं ताकि आपको सिर्फ़ रात की तहज्जुद का अज्र मिले।

कहीं शहादत का रुत्बा न मिल जाए

एक बुज़ुर्ग दीवार के साथ चारपाई बिछाकर सोए हुए थे। उनके पास शैतान आया और उन्हें जगा दिया। उन्होंने पूछा, क्या हुआ? वह तेज़ी से कहने लगा, यह दीवार गिरने वाली है। बस तू

एक तरफ़ हट जा। जब उन्होंने जल्दी में सुना तो वह एक तरफ़ हट गए। जैसे ही वह एक तरफ़ हटे दीवार नीचे गिर गई। वह बुज़ुर्ग कहने लगे, भई! तेरा भला हो, तू मेरा कितना भला चाहने वाला है, तू कौन है? वह कहने लगा, मैं शैतान हूँ। उन्होंने कहा, शैतान तो कभी किसी का भला नहीं करता। तूने कैसे भलाई की? वह कहने लगा, मैंने अब भी कोई भलाई नहीं की। वह हैरान होकर कहने लगे, यह भलाई तो है कि तूने मुझे दीवार के नीचे दबने ने से बचा लिया। शैतान ने कहा, यही तो मेरा फ़न था। अगर आप वहीं लेटे रहते और दीवार गिर जाती तो अचानक दीवार के नीचे दबने की वजह से आपको शहादत की मौत आती। मैंने आपको पहले ही जगा दिया कि कहीं आपको शहादत का रुत्बा न मिल जाए।

इज़्दिवाजी ज़िंदगी को बर्बाद करने में शैतान का किरदार

शैतान ख़ुशगवार इज़्दिवाजी ज़िंदगी को क़तई पसन्द नहीं करता। वह चाहता है कि मियाँ-बीवी में रंजिश पैदा हो और ताल्लुक़ात में ख़राबी पैदा हो। वह ख़ासतौर पर ख़ाविन्दों के दिमाग़ में फ़ुतूर डालता है। लिहाज़ा ख़ाविन्द बाहर दोस्तों के अंदर गुलाब का फूल बना रहता है और घर के अंदर करेला नीम चढ़ा बन जाता है। नौजवान आकर कहते हैं, हज़रत! पता नहीं क्या वजह है कि घर में आते ही दिमाग़ गर्म हो जाता है। वह असल में शैतान गर्म कर रहा होता है। वह मियाँ-बीवी के दर्मियान उलझनें पैदा करना चाहता है।

शैतान पहले तो मियाँ-बीवी के दर्मियान झगड़ा करवाकर ख़ाविन्द के मुँह से तलाक़ के अलफ़ाज़ कहलवाता है। जब उसकी अक़्ल ठिकाने आती है तो वह कहता है कि मैंने तो गुस्से में तलाक़ के अलफ़ाज़ कह कह दिए थे। चुनाँचे वह बग़ैर किसी को बताए मियाँ-बीवी के तौर पर आपस में रहना शुरू कर देंगे। वह जितना अरसा भी इस हाल में एक दूसरे से मिलते रहे तब तक उन्हें ज़िना का गुनाह मिलता रहेगा। अब देखें कि कितना बड़ा गुनाह करवा दिया। यह ऐसे कलीदी गुनाह करवाता है।

हदीस पाक में आया है कि क़यामत के क़ुर्ब की निशानियों में से है कि ख़ाविन्द अपनी बीवियों को तलाक़ देंगे और फिर बग़ैर निकाह और रुजू के उनके साथ इसी तरह अपनी ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

शैतान की उंगली का फ़साद

एक मर्तबा एक आदमी ने शैतान को देखा। उसने कहा, मरदूद! तू बड़ा ही बदमाश है। तूने क्या फ़साद मचाया हुआ है अगर तू आराम से एक जगह बैठ जाता तो दुनिया में अमन हो जाता। वह मरदूद जवाब में कहने लगा, मैं तो कुछ भी नहीं करता। सिर्फ़ उंगली लगाता हूँ। उसने पूछा, क्या मतलब? शैतान कहने लगा, अभी देखना।

क़रीब ही एक हलवाई की दुकान थी। वहाँ किसी बर्तन में शीरा पड़ा हुआ था। शैतान ने उंगली शीरे में डुबोई और दीवार पर लगा दी। मक्खी आकर शीरे पर बैठ गई। उस मक्खी को खाने के लिए एक छिपकली आ गई। साथ ही एक आदमी काम कर रहा था। उसने छिपकली को देखा तो जूता उठाकर छिपकली

को मारा। वह जूता दीवार से टकराकर हलवाई की मिठाई पर गिरा। जैसी ही जूता मिठाई पर गिरा तो हलवाई उठ खड़ा हुआ और गुस्से में आकर कहने लगा, ओए! तूने मेरी मिठाई में जूता क्यों मारा? अब वह उलझने लग गए। इधर से उसके दोस्त आ गए और उधर उसके दोस्त पहुँच गए। आख़िर ऐसा झगड़ा मचा कि खुदा की पनाह। अब शैतान उस आदमी से कहने लगा, देख! मैं नहीं कहता था कि मैं तो सिर्फ़ उंगली लगाता हूँ। जब उसकी एक उंगली में यह फ़साद है तो फिर पूरे शैतान में कितनी नहूसत होगी।

गुस्से में शैतान का किरदार

वाक़ई शैतान ऐसे काम करवाता है जिससे इंसान के अंदर गुस्सा पैदा हो। उसके बाद बाक़ी सारे काम इंसान का अपना नफ़्स करता है। इसलिए मोमिन को चाहिए कि वह अपने अंदर सब्र व बर्दाश्त पैदा करे और अपने पर क़ाबू पाना सीखे क्योंकि जब कोई इंसान गुस्से की हालत में होता है तो शैतान उसकी रगों के अंदर ख़ून की तरह दौड़ता है। एक और रिवायत में है कि जब इंसान गुस्से की हालत में होता है तो शैतान उसके साथ ऐसा खेलता है जैसे कोई बच्चा गेंद के साथ खेल रहा होता है। आजकल नवजवानों की सबसे बड़ी बीमारी ही "गुस्सा" है। इन बेचारों से तो गुस्सा बर्दाश्त ही नहीं होता। उनको कोई पता ही नहीं होता कि गुस्से में शैतान उनसे क्या कुछ करवा लेता है।

इल्म से रोकने में शैतान का किरदार

हदीस पाक में आया है कि शैतान का तख़्त समुन्द्र की सतह

पर लगता है। वह वहाँ अपना दरबार लगाता है और अपने चेलों चांटों को बुलाता है और उनकी दिन भर की कारगुज़ारी सुनता है। उनमें से एक कहता है कि मैंने यह बुरा काम करवा दिया, यह बुरा काम करवा दिया।

दूसरा कहता है कि मैंने मियाँ-बीवी में तलाक़ दिलवा दी। वह उसे कहता है कि शाबाश (Well done) तूने बहुत अच्छा काम किया। वह उसे अपने क़रीब बिठा लेता है। जब सब अपनी-अपनी कारगुज़ारी सुना लेते हैं तो वह कहता है कि एक छोटा सा शतूगंड़ा एक तरफ़ बैठा हुआ था। वह उससे पूछता है कि तूने क्या किया? वह कहता है कि मैंने तो एक छोटा सा काम किया है। उसने पूछा, वह कौन सा? वह कहने लगा कि एक छोटा सा तालिब इल्म घर से निकला था। उसे माँ ने पढ़ने के लिए मदरसे भेजा और मैंने उसके दिल में यह बात डाली कि पढ़ने क्या जाना है, चलें फ़लां ग्राउन्ड में जाकर खेलते हैं। लिहाज़ा वह मदरसे जाने के बजाए खेलने में लग गया और वहीं वक़्त गुज़ारकर वापस चला गया। शैतान ने जब यह सुना कि इसने उस बच्चे को पढ़ने से हटाया तो कहने लगा, वाह! तूने वह काम किया है जो किसी दूसरे ने नहीं किया। चुनाँचे शैतान उस शतूगंड़े को ईनाम में एक ताज पहना देता है।

मालूम हुआ कि इल्म से रोकना शैतान के नज़दीक सबसे बड़ा काम है क्योंकि उसको पता है कि अगर इसको इल्म हासिल हो गया तो फिर मेरे हथकंडों से बच जाएगा। इसलिए जो दोस्त इल्म हासिल करते हैं और नेकी की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हिफ़ाज़त में होते हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शैतान मुसलमान हो गया

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि हर इंसान के साथ एक शैतान होता है। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! क्या आपके साथ भी? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हाँ मेरे साथ भी एक शैतान है लेकिन मेरा शैतान मुसलमान हो गया है। अल्लाह करे हमारा शैतान भी मुसलमान हो जाए।

अल्लाह तआला का बंदे से शिकवा

हदीस क़ुदसी में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿یا ابن آدم ما انصفتنی﴾ ऐ इब्ने आदम! तूने मेरे साथ इंसाफ़ नहीं किया।

वह क्यों? इसलिए कि ऐ इब्ने आदम! शैतान तुम्हारा दुश्मन था, मैंने तुम्हारे दुश्मन को जन्नत से जो तुम्हारा घर था धुतकार कर बाहर निकाल दिया लेकिन यह शैतान मेरा दुश्मन है तुम उसे मेरे घर यानी अपने दिल से क्यों नहीं निकालते। हमें चाहिए कि हम शैतान को अल्लाह के घर से धकेल कर निकाल दें।

दिल की सफ़ाई का ज़िम्मेदार कौन है?

यहाँ एक तालिब-इल्माना सवाल पैदा होता है कि इंसान का दिल अल्लाह तआला का घर है और अल्लाह तआला उसमें आते

हैं और यह भी चाहते हैं कि शैतान उसमें से निकल जाए तो अल्लाह तआला ख़ुद ही निकाल दें। उलमा ने इसका जवाब लिखा है। वह फ़रमाते हैं कि ऐ इंसान! तेरी हैसियत मेज़बान की सी है और परवरदिगार की हैसियत मेहमान की सी है। और घर की सफ़ाई की ज़िम्मेदारी मेज़बान के ज़िम्मे हुआ करती है, मेहमान के ज़िम्मे नहीं। इसलिए दिल को साफ़ करना हमारी ज़िम्मेदारी है। जब यह दिल साफ़ हो जाएगा तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इंसान के दिल पर तजल्लियात अता फ़रमा देंगे।

सालिकीन को बहकाने के दो तरीक़े

शैतान सालिकों यानी अपनी इस्लाह की कोशिश करने वालों को दो तरह से बहकाता है :

1. शहवतों के ज़रिए
2. शुब्हात के ज़रिए

शहवत से मुराद चीज़ों या ग़ैर-महरम की मुहब्बत है। कई सालिक तो इन ज़ंजीरों में उलझे हुए होते हैं। वह कुछ करना भी चाहते हों तो कुछ नहीं कर सकते। और जिन सालिकों की तबियतें ज़्यादा सलीम (नेक) होती हैं और मख़्लूक़ की तरफ़ ध्यान नहीं करतीं सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान रखती हैं, उनको शैतान शुब्हात के ज़रिए रास्ते से हटाता है। मसलन दीन की बातों में कोई शुब्ह पैदा कर देता है, तसव्वुफ़ व सुलूक के बारे में कोई शुब्ह पैदा कर देता है, पीर के बारे में शुब्ह पैदा कर देता है और कभी ज़िक्र व अज़्कार के बारे में कोई शुब्ह पैदा कर देता है। इस तरह वह इंसान को बहकाने में कामयाब हो जाता है। यहाँ तक

कभी-कभी तो यह हालत होती है कि सालिकों के ज़हन में इबादत करते हुए भी इतने गंदे ख़्यालात होते हैं कि परेशान हो जाते हैं। आप यह बातसुनकर हैरान होंगे कि मुझे एक तालिब इल्म ने लिखा, हज़रत! मैं क़ुरआन मजीद का तर्जुमा पढ़ रहा था और मैं उस्ताद की मौजूदगी में उस दर्स के दौरान बैठा कबीरा गुनाह का प्लान बना रहा था।

मोमिन और फ़ासिक़ की गुनाह करते वक़्त कैफ़ियत

शैतान इंसान के सामने गुनाहों को हल्का करके पेश करता है। लिहाज़ा वह कबीरा गुनाह भी कर लेगा तो उसे भी छोटा समझेगा। हदीस पाक में फ़रमाया गया कि मोमिन की यह शान है कि वह कबीरा गुनाह को यूँ समझता है कि जैसे सर के ऊपर कोई पहाड़ गिरा हुआ हो और फ़ासिक़ आदमी गुनाह को यूँ समझता है कि जैसे मक्खी बैठी हुई थी जिसे उड़ा दिया।

सालिक के लिए सबसे बड़ा फ़ित्ना

शैतान इंसान के सामने आमाल को सजाकर पेश करता है। इसलिए आपको ऐसे सालिक भी मिलेंगे जो विर्द व वज़ीफ़े भी करते हैं और साथ-साथ उनकी ज़िंदगी में शरिअत की पाबन्दी भी नहीं होती और वे इसके बावजूद भी अपने आपको सालिक समझ रहे होते हैं। इससे बड़ा फ़ित्ना क्या हो सकता है कि शरिअत के कामों की नाफ़रमानी भी की जाए और फिर अपने आपको अल्लाह तआला का मुक़र्रब भी समझा जाए यानी–

ऊपर से ला इलाहा और अंदर से काली बला

तरीक़त की नमाज़ों का वावेला

इसलिए शैतान ने कुछ लोगों के दिलों में डाला कि जो लोग पाँच नमाज़ें पढ़ते हैं वह शरिअत की नमाज़ें हैं और हम तरीक़त की नमाज़ें पढ़ते हैं और कहते हैं :

तिहाड़डी पंच वेल्ले साड्डी हर वेल्ले

ये सब कुफ़्र व इल्हाद की बातें हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने तक पहुँचने के सब रास्तों को बंद कर दिया सिवाए उस रास्ते के जिस पर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम चले। जो आदमी उस रास्ते पर चलेगा वही अपने रब का क़ुर्ब हासिल कर सकेगा और अगर उस रास्ते से हटेगा तो उसकी मंज़िल भी बदल जाएगी।

शैतान का साथ

शैतान बहुत बुरा साथी है। चुनाँचे इशदि बारी तआला है :

﴿وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهُ قَرِيْنًا فَسَاءَ قَرِيْنًا.﴾

और शैतान जिसका साथी हुआ यह बहुत बुरा साथी है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम सबको उसका साथी बनने से और उसके हथकंडों से महफ़ूज़ फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन।

ईमान का डाकू

शैतान इंसान के ईमान का डाकू है। इसलिए यह हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। इस बात की दलील हमें इससे मिलती है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इंसान की जान की हिफ़ाज़त फ़रिश्तों के

ज़िम्मे लगाई और उसके ईमान की हिफ़ाज़त ख़ुद अपने ज़िम्मे ली। हदीस पाक में आया है कि जिस तरह दुनिया में इंसान चलते फिरते हैं उसी तरह कई जगहों पर जिन्न भी होते हैं। जिन्नों में इतनी ताक़त होती है कि अगर वे चाहें तो वे इंसानों को जान से मार दें मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हर इंसान के साथ फ़रिश्ते तय कर दिए हैं जो उनकी हिफ़ाज़त करते हैं और उनकी वजह से जिन्न उनको नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। इसी तरह ये भी फ़रिश्तों की तरफ़ से हिफ़ाज़त ही होती है कि इंसान एक्सीडेंट से बाल बाल बच जाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने इंसान के ईमान की हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ली है। इसलिए मालूम हुआ कि ईमान की हिफ़ाज़त जान की हिफ़ाज़त से ज़्यादा अहमियत रखती है। शैतान हमारी सबसे क़ीमती पूंजी "ईमान" का डाकू है। इसलिए उसके हथकंडों से बचने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है।

ज़िद्दी शैतान

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शैतान हमारा ऐसा दुश्मन है जो कभी रिश्वत क़ुबूल नहीं करता। बाक़ी सब दुश्मन ऐसे होते हैं कि अगर कोई हदिए, तोहफ़े और रिश्वत दे दे तो वे नरम पड़ जाएंगे और मुख़ालिफ़त छोड़ देंगे और अगर ख़ुशामद की जाए तो उसे भी वे मान जाएंगे मगर शैतान वह दुश्मन है जो न तो रिश्वत क़ुबूल करता है और न ख़ुशामद क़ुबूल करता है। यह कोई नहीं कह सकता कि हम एक दिन बैठकर उसकी ख़ुशामद कर लेंगे और यह हमारी जान छोड़ जाएगा। यह हर्गिज़ नहीं छोड़ेगा क्योंकि यह ईमान का डाकू है और इसकी हर वक़्त इस बात पर नज़र है कि मैं किस तरह इंसान को ईमान से महरूम करूं।

दो ख़तरनाक रूहानी बीमारियाँ

जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपने उम्मतियों को लेकर किश्ती में बैठे तो उन्हें किश्ती में एक बूढ़ा नज़र आया। उसको कोई पहचानता भी नहीं था। आप अलैहिस्सलाम ने हर चीज़ का जोड़ा-जोड़ा किश्ती में बिठाया था। मगर वह अकेला था। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से पूछने लगे कि यह बूढ़ा कौन है? हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उससे पूछा, बताओ तुम कौन हो? वह कहने लगा, जी मैं शैतान हूँ। आपने सुनकर फ़रमाया, तू इतना चालाक और बदमाश है कि किश्ती में आ गया। कहने लगा, जी! मुझसे ग़लती हो गई, आप मुझे माफ़ फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, तुम्हें हम ऐसे ही नहीं छोड़ेंगे। तू हमें अपना गुर बताता जा जिससे तू लोगों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता है। कहने लगा, जी! मैं सच सच बतलाऊँगा अलबत्ता आप वादा करें कि आप मुझे छोड़ देंगे। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ठीक है हम तुम्हें छोड़ देंगे। वह कहने लगा, मैं दो बातों से इंसान को ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता हूँ, एक हसद दूसरा हिर्स। वह फिर कहने लगा कि हसद ऐसी चीज़ कि मैं ख़ुद उसकी वजह से बर्बाद हुआ और हिर्स वह चीज़ जिसकी वजह से आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से ज़मीन पर उतार दिया गया। इसलिए मैं इन्हीं दो चीज़ों की वजह से इंसानों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचाता हूँ :

1. हसद,
2. हिर्स

हक़ीक़त में ये दोनों ऐसी ख़तरनाक बीमारियाँ हैं जो तमाम बीमारियों की बुनियाद बनती हैं। आज के सब लड़ाई झगड़े या तो हसद की वजह से हैं या हिर्स की वजह से। हसद करने वाला इंसान अंदर ही अंदर जलता रहता है। वह किसी को अच्छी हालत में देख नहीं सकता। दूसरे इंसान पर अल्लाह तआला की नेमतें होती हैं और हासिद के अंदर मरोड़ पैदा होते हैं कि वह अच्छी हालत में क्यों है।

शैतान के तजरिबात का निचोड़

एक बार शैतान की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने पूछा तू कौन है? वह कहने लगा, मैं शैतान हूँ। उन्होंने फ़रमाया, तुम लोगों को गुमराह करने के लिए बड़े डोरे डालते फिरते हो। तुम्हारे तजरिबे में कौन सी बात आइ है? वह कहने लगा कि आपने तो बड़ी अजीब बात पूछी है। यह कैसे हो सकता है कि मैं आपको अपनी सारी ज़िंदगी का तजरिबा बता दूँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, फिर क्या है बता दे। वह कहने लगा, तीन बातें मेरे तजरिबात का निचोड़ हैं।

1. पहली बात यह है कि अगर आप सदक़ा करने की नीयत कर लें तो फ़ौरन दे देना क्यों कि मेरी कोशिश यह होती है कि नीयत करने के बाद बंदे को भुला दूँ। जब मैं किसी को भुला देता हूँ तो फिर से याद नहीं होता कि मैंने नीयत की थी या नहीं।
2. दूसरी बात यह है कि जब आप अल्लाह तआला से कोई वादा करें तो उसे फ़ौरन पूरा कर देना क्योंकि मेरी कोशिश यह होती है कि मैं उस वादे को तोड़ दूँ। मसलन कोई वादा करे कि ऐ अल्लाह! मैं यह गुनाह नहीं करूंगा तो मैं ख़ास

मेहनत करता हूँ कि वह इस गुनाह में ज़रूर मुब्तला हो।

3. तीसरी बात यह है कि किसी ग़ैर-महरम के साथ तन्हाई में न बैठना क्योंकि मैं मर्द की कशिश औरत के दिल में पैदा कर देता हूँ और औरत की कशिश मर्द के दिल में पैदा कर देता हूँ।

मैं यह काम अपने चेलों से नहीं लेता बल्कि मैं अपने आप ये काम करता हूँ।

शैतान की रस्सियाँ

हदीस पाक में आया है :

﴿النِّسَاءُ حَبَائِلُ الشَّيْطٰنِ﴾ औरतें शैतान की रस्सियाँ हैं।

औरतें शैतान का ऐसा जाल हैं जिसमें आदमी फंस ही जाता है। बाज़ किताबों में शैतान का क़ौल नक़ल किया गया है कि औरत मेरा वह तीर है जो कभी ख़ता नहीं होता। यही वजह है कि शैतान ने मर्दों को औरतों के ज़रिए तबाह कर रखा है और औरतों को माल के जरिए। तज़्किए नफ़्स न हो तो नवजवान और बूढ़े सब बदनज़री के मरीज़ होते हैं बल्कि फ़ासिक़ व फ़ाजिर क़िस्म के लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि औलाद तो अपनी अच्छी लगती है मगर बीवी दूसरे की अच्छी लगती है, अल्लाह बचाए। हमारे असलाफ़ औरतों के फ़ितने से बहुत बचते थे। हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि जब वह बूढ़े हो गए और बाल भी सफ़ेद हो गए तो उस वक़्त यह दुआ मांगा करते थे ऐ अल्लाह! मुझे क़त्ल व ज़िना से महफ़ूज़ फ़रमाना। किसी ने दुआ सुनी तो पूछा आप इस बुढ़ापे में भी ऐसी दुआ

मांग रहे हैं? फ़रमाने लगे कि मेरा शैतान अभी तक मेरे साथ मौजूद है, अभी पीछे हटा तो नहीं।

हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा अब्दुलमालिक रह० चौक क़ुरैशियाँ वाले एक मर्तबा किसी मुरीद के घर तशरीफ़ ले गए। मुरीद की बीवी ने हज़रत से पर्दा न किया। हज़रत ने मुरीद को बुलाकर डांटा और कहा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ मेरा शैतान तो बूढ़ा नहीं हुआ। लिहाज़ा मुरीद को यह बात सुनकर अक़्ल आई और पर्दे का इंतिज़ाम किया।

बरसीसा राहिब की गुमराही और उसका इबरतनाक अंजाम

बरसिया राहिब के मकर व फ़रेब के बारे में हदीस पाक में ही अजीब वाक़िआ आया है। आमिर बिन उबैद बिन यसार रह० से लेकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तक इस वाक़िए की सनद पहुँचाई है। यह वाक़िआ "तलबीस इब्लीस" में भी नक़्ल किया गया है :

बनी इस्राईल में बरसीसा नाम का एक राहिब था। उस वक़्त बनी इस्राईल में उस जैसा कोई इबादत गुज़ार न था। उसने एक इबादतख़ाना बनाया हुआ था। और उसी में इबादत में मस्त रहता था। उसे लोगों से कोई लेना-देना नहीं था। न तो वह किसी को मिलता था और न ही किसी के पास जाता था। शैतान ने उसे गुमराह करने का इरादा किया।

बरसीसा अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकलता था। वह ऐसा इबादतगुज़ार था कि अपना वक़्त हर्गिज़ ज़ाए नहीं करता था।

शैतान ने देखा कि जब कभी दिन में वह कुछ वक़्त के लिए थक जाता तो कभी-कभी खिड़की से बाहर झांक कर देख लेता था। इधर क़रीब कोई आबादी नहीं थी। उसका अकेला सोमा था। बरसीसा के इबादतख़ाने के इर्द-गिर्द खेत और बाग़ थे। जब शैतान ने देखा कि वह दिन में एक दो मर्तबा खिड़की से देखता है तो उस मरदूद ने इंसानी शक्ल में आकर उस खिड़की के सामने नमाज़ की नीयत बांध ली। उसने नमाज़ क्या पढ़नी थी सिर्फ़ शक्ल बनाकर खड़ा था। अब देखो कि जिसकी जो लाइन होती है उसको गुमराह करने के लिए उसके मुताबिक़ दिलकश बहरूप बनाता है।

चुनाँचे जब बरसीसा ने खिड़की से बाहर झांका तो एक आदमी को क़याम की हालत में खड़े देखा। वह बड़ा हैरान हुआ। जब दिन के दूसरे हिस्से में उसने दोबारा इरादतन बाहर देखा तो वह आदमी रुकू की हालत में था। फिर तीसरी मर्तबा सज्दे की हालत में देखा। कई दिन इसी तरह होता रहा। आहिस्ता-आहिस्ता बरसीसा के दिल में यह बात आने लगी कि यह तो कोई बड़ा ही बुज़ुर्ग इंसान है जो दिन रात इतनी इबादत कर रहा है। वह कई महीनों तक इसी तरह शक्ल बनाकर क़याम, रुकू और सज्दे करता रहा। यहाँ तक कि बरसीसा ने दिल में सोचा कि मैं इससे पूछूं तो सही कि यह कौन है?

जब बरसीसा के दिल में ख़्याल आया तो शैतान ने खिड़की के क़रीब मुसल्ला बिछाना शुरू कर दिया। जब मुसल्ला खिड़की के क़रीब आ गया तो बरसीसा ने बाहर झांका और शैतान से पूछा, तुम कौन हो? वह कहने लगा कि आपको मुझसे क्या ग़रज़ है। मैं

अपने काम में लगा हूँ, मेहरबानी करके आप मुझे डिस्टर्ब न करें। वह सोचने लगा कि अजीब बात है कि यह आदमी किसी की कोई बात सुनना गवारा ही नहीं करता। दूसरे दिन बरसीसा ने फिर पूछा कि आप अपना तार्रुफ़ तो करवाएं। वह आदमी कहने लगा कि मुझे अपना काम करने दो।

अल्लाह तआला की शान एक दिन बारिश हो गई। वह आदमी बारिश में भी नमाज़ की शक्ल बनाकर खड़ा हो गया। बरसीसा के दिल में बात आई कि जब यह इतना इबादतगुज़ार है कि इसने बारिश की भी कोई परवाह नहीं की क्यों न मैं अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करूं और इससे कहूँ कि आप अंदर आ जाएं। चुनाँचे उसने शैतान को पेशकश की कि बाहर बारिश हो रही है, आप अंदर आ जाएं। वह जवाब में कहने लगा ठीक है, मोमिन को मोमिन की दावत क़ुबूल कर लेनी चाहिए। लिहाज़ा आपकी दावत क़ुबूल कर लेता हूँ। शैतान तो चाहता ही यह था। चुनाँचे उसने कमरे में आकर नमाज़ की नीयत बांध ली। वह कई महीनों तक उसके कमरे में इबादत की शक्ल बनाकर खड़ा रहा। वह इबादत नहीं कर रहा था सिर्फ़ नमाज़ की शक्ल बना रहा था। लेकिन बरसीसा यही समझ रहा था कि वह नमाज़ पढ़ रहा है। उसको नमाज़ से क्या ग़र्ज़ थी, वह तो अपने मिशन पर था।

जब कई महीने गुज़र गए तो बरसीसा ने उसे वाक़ई बहु बड़ा बुज़ुर्ग समझना शुरू कर दिया और उसके दिल में उसके साथ अक़ीदत पैदा होना शुरू हो गई। इतने अरसे के बाद शैतान बरसीसा से कहने लगा कि अब मेरा साल पूरा हो चुका है लिहाज़ा में अब यहाँ से जाता हूँ। मेरा मुक़ाम कहीं और है। रवानगी के

वक़्त वैसे ही दिल नरम होता है। लिहाज़ा शैतान बरसीसा से कहने लगा, अच्छा मैं आपको जाते-जाते एक ऐसा तोहफ़ा दे जाता हूँ जो मुझे अपने बड़ों से मिला था। वह तोहफ़ा यह है कि अगर तुम्हारे पास कोई बीमार आए तो उस पर यह पढ़कर दम कर देना, वह ठीक हो जाया करेगा। बरसीसा ने कहा मुझे इस अमल की कोई ज़रूरत नहीं है। शैतान कहने लगा कि हमें यह नेमत तवील मुद्दत की मेहनत के बाद मिली है। वह नेमत तुम्हें तोहफ़े में दे रहा हूँ और तुम इंकार कर रहे हो। तुम बड़े नालायक़ इंसान हो। यह सुनकर बरसीसा कहने लगा, अच्छा जी मुझे भी सिखा दें। चुनाँचे शैतान ने उसे एक अमल सिखा दिया और यह कहते हुए रुख़सत हो गया कि अच्छा फिर कभी मिलेंगे।

वह वहाँ से सीधा बादशाह के घर गया। बादशाह के तीन बेटे और एक बेटी थी। शैतान ने जाकर उसकी बेटी पर असर डाला और वह मजनूना सी बन गई। वह ख़ूबसूरत और पढ़ी लिखी लड़की थी लेकिन शैतान के असर से उसको दौरे पड़ने शुरू हो गए। बादशाह ने उसके इलाज के लिए हकीम डाक्टर बुलवाए। कई दिनों तक वह उसका इलाज करते रहे लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ।

जब कई दिनों के इलाज के बाद भी कुछ फ़ायदा न हुआ तो शैतान ने बादशाह के दिल में बात डाली कि बड़े हकीमों और डाक्टरों से इलाज करवा लिया है, अब किसी दम वाले से ही दम करवाकर देख लूँ। यह ख़्याल दिल में आते ही उसने सोचा कि हाँ किसी दम वाले को तलाश करना चाहिए। चुनाँचे उसने अपने सरकारी आदमी भेजे ताकि वह पता करके आएं कि इस वक़्त

सबसे ज़्यादा नेक बंदा कौन है। सब ने कहा कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा नेक आदमी तो बरसीसा है और वह तो किसी से मिलता ही नहीं। बादशाह ने कहा कि अगर वह किसी से नहीं मिलता तो उनके पास जाकर मेरी तरफ़ से दरख़्वास्त करो कि हम आपके पास आ जाते हैं।

कुछ आदमी बरसीसा के पास गए। उसने उन्हें देखकर कहा कि आप मुझे डिस्टर्ब करने क्यों आए हैं? उन्होंने कहा कि बादशाह की बेटी बीमार है। हकीमों और डाक्टरों से बड़ा इलाज करवाया है लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बादशाह चाहते हैं कि आप बेशक यहाँ न आएं ताकि आपकी इबादत में ख़लल न आए, हम आपके पास बच्ची को ले आते हैं। आप यही उस बच्ची को दम कर देना। हमें उम्मीद है कि आपके दम करने से वह ठीक हो जाएगी। बरसीसा के दिल में ख़्याल आया कि हाँ मैंने एक दम सीखा था, उस दम के आज़माने का अच्छा मौक़ा है, चलो यह तो पता चल जाएगा कि वह दम ठीक भी है या नहीं। चुनाँचे उसने उन लोगों को बादशाह की बेटी को लाने की इजाज़त दे दी।

बादशाह अपनी बेटी को लेकर बरसीसा के पास आ गया। उसने जैसे ही दम किया वह फ़ौरन ठीक हो गई। मर्ज़ भी शैतान ने लगाया था और दम भी उसी ने बताया था। लिहाज़ा दम करते ही शैतान उसको छोड़कर चला गया और वह बिल्कुल ठीक हो गई। बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी इसके दम से ठीक हुई है।

एक डेढ़ माह के बाद शैतान ने फिर इसी तरह बच्ची पर हमला किया और वह उसे फिर बरसीसा के पास ले आए। उसने

दम किया तो वह फिर उसे छोड़कर चला गया। यहाँ तक कि दो चार मर्तबा के बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी का इलाज इसके दम में है। अब बरसीसा की बड़ी शोहरत हुई कि इसके दम से बादशाह की बेटी ठीक हो जाती है।

कुछ अरसे के बाद उस बादशाह के मुल्क पर किसी ने हमला किया तो वह अपने शहज़ादों के साथ दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए तैयारी करने लगा। अब बादशाह सोच में पड़ गया कि अगर जंग में जाएं तो बेटी किसके पास छोड़कर जाएं। किसी ने मशवरा दिया कि किसी वज़ीर के पास छोड़ जाएं और किसी ने कोई और मशवरा दिया। बादशाह कहने लगा कि अगर इसको दोबारा बीमारी लग गई तो फिर क्या बनेगा? बरसीसा तो किसी की बात भी नहीं सुनेगा। चुनाँचे बादशाह ने कहा कि मैं खुद बरसीसा के पास अपनी बेटी को छोड़ जाता हूँ। देखो शैतान कैसा जोड़ मिलाता है। लिहाज़ा बादशाह अपने तीनों बेटों और बेटियों को लेकर बरसीसा के पास पहुँच गया और कहने लगा कि हम जंग पर जा रहे हैं, ज़िंदगी और मौत का पता नहीं है। मुझे इस वक़्त सबसे ज़्यादा भरोसा आप पर है और मेरी बेटी का इलाज भी आप ही के पास है। लिहाज़ा मैं चाहता हूँ कि यह बच्ची आपके पास ही ठहर जाए। बरसीसा कहने लगा, तोबा! तोबा!!! मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ कि यह अकेली मेरे पास ठहरे। बादशाह ने कहा नहीं कोई ऐसी बात नहीं है, बस आप इजाज़त दे दें। मैं इसके रहने के लिए आपके इबादतख़ाने के सामने एक घर बनवा देता हूँ तो यह उसी घर में ठहरेगी। बरसीसा ने यह सुनकर कहा, चलो ठीक है। जब उसने इजाज़त दे दी तो बादशाह ने

उसके इबादतख़ाने के सामने घर बनवा दिया और बच्ची को छोड़कर जंग पर रवाना हो गया।

बरसीसा के दिल में बात आई कि मैं अपने लिए खाना तो बनाता ही हूँ अगर बच्ची का खाना भी मैं ही बना दिया करूं तो इसमें क्या हरज है क्योंकि वह अकेली है, पता नहीं अपने लिए पकाएगी भी या नहीं पकाएगी। चुनाँचे बरसीसा खाना बनाता और आधा खाना ख़ुद खाकर बाक़ी आधा खाना अपने इबादतख़ाने के दरवाज़े से बाहर रख देता और अपना दरवाज़ा खटखटा देता। यह उस लड़की के लिए इशारा होता था कि अपना खाना उठा लो। इस तरह वह लड़की खाना उठाकर ले जाती और खा लेती। कई महीनों तक यही मामूल रहा।

उसके बाद शैतान ने उसके दिल में यह बात डाली कि देखो, वह लड़की अकेली रहती है, तुम खाना पकाकर घर के दरवाज़े के बाहर रख देते हो और लड़की को खाना उठाने के लिए गली में निकलना पड़ता है। अगर कभी किसी मर्द ने देख लिया तो उसकी इज़्ज़त ख़राब कर देगा। इसलिए बेहतर है कि खाना बनाकर उसके दरवाज़े के अंदर रख दिया करो ताकि उसको बाहर न निकलना पड़े। चुनाँचे बरसीसा ने खाना बनाकर उस लड़की के घर के दरवाज़े के अंदर रखना शुरू कर दिया। वह खाना रखकर कुंडी खटखटा देता और लड़की खाना उठा लेती। यही सिलसिला चलता रहा।

जब कुछ और महीने इस तरह गुज़र गए तो शैतान ने उसके दिल में डाला कि तुम तो इबादत में लगे होते हो। यह लड़की अकेली है, ऐसा न हो कि तन्हाई की वजह से और ज़्यादा बीमार

हो जाए। इसलिए बेहतर है कि उसको कुछ नसीहत कर दिया करो ताकि वह भी इबादत गुज़ार बन जाए और उसका वक़्त ज़ाए न हो। यह ख़्याल दिल में आते ही उसने कहा, हाँ यह बात तो बहुत अच्छी है। लेकिन इसकी क्या तर्तीब होनी चाहिए। शैतान ने इस बात का जवाब भी उसके दिल में डाला कि लड़की को कह दो कि वह अपने घर की छत पर आ जाया करे और तुम भी अपने घर की छत पर बैठ जाया करो और उसे वअज़ व नसीहत किया करो। चुनाँचे बरसीसा ने इस तर्तीब से वअज़ व नसीहत करना शुरू कर दी। उसके वअज़ का उस पर असर हुआ। उसने नमाज़े पढ़नी और वज़ीफ़े करने शुरू कर दिए। अब शैतान ने उस के दिल में बात डाली कि देख तेरी नसीहत का लड़की पर कितना असर हुआ। ऐसी नसीहत तुम्हें हर रोज़ करनी चाहिए। चुनाँचे बरसीसा ने रोज़ाना नसीहत करना शुरू कर दी।

इसी तरह जब करते करते कुछ वक़्त गुज़र गया तो शैतान ने फिर बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि तुम अपने घर की छत पर बैठते हो और लड़की अपने घर की छत पर बैठती है, रास्ते में गुज़रने वाले क्या सोचेंगे कि ये कौन लोग बातें कर रहे हैं। इस तरह तो बहुत ग़लत तास्सुर पैदा हो जाएगा। इसलिए बेहतर है कि छत पर बैठकर ऊँची आवाज़ से बात करने के बजाए तुम घर के दरवाज़े से बाहर खड़े होकर तक़रीर करो और वह दरवाज़े के अंदर खड़ी होकर सुन ले, पर्दा तो होगा ही सही। चुनाँचे अब इस तर्तीब से वअज़ व नसीहत शुरू हो गई। कुछ अरसे तक इसी तरह मामूल रहा।

इसके बाद शैतान ने फिर बरसीसा के दिल में ख़्याल डाला कि

तुम बाहर खड़े होकर तक़रीर करते हो, देखने वाले क्या कहेंगे कि यह आदमी पागलों की तरह ऐसे ही बातें कर रहा है। इसलिए अगर तक़रीर करनी ही है तो चलो किवाड़ के अंदर खड़े होकर कर लिया करो। वह दूर खड़ी होकर सुन लिया करेगी। चुनाँचे अब बरसीसा ने दरवाज़े के अंदर खड़े होकर तक़रीर करना शुरू कर दी। जब उसने अंदर खड़े होकर तक़रीर करना शुरू कर दी तो लड़की ने उसको बताया कि इतनी नमाज़ें पढ़ती हूँ और इतनी इबादत करती हूँ। यह सुनकर उसे बड़ी ख़ुशी हुई कि मेरी बातों का उस पर बड़ा असर हो रहा है। अब मैं अकेला ही इबादत नहीं कर रहा होता बल्कि यह भी इबादत कर रही होती है। कई दिन तक यही सिलसिला चलता रहा।

आख़िर शैतान ने लड़की के दिल में बरसीसा की मुहब्बत डाल दी और बरसीसा के दिल में लड़की की मुहब्बत डाली। चुनाँचे लड़की ने कहा कि आप जो खड़े-खड़े बयान करते हैं मैं आपके लिए चारपाई डाल दिया करूंगी आप उस पर बैठकर बयान करना और मैं दूर बैठकर सुन लिया करूंगी। बरसीसा ने कहा, बहुत अच्छा। लड़की ने दरवाज़े के क़रीब चारपाई डाल दी। बरसीसा उस पर बैठकर नसीहत करता रहा और लड़की बैठकर बात सुनती रही। इस दौरान शैतान ने बरसीसा के दिल में लड़की के लिए बड़ी शफ़क़त और हमदर्दी पैदा कर दी। कुछ दिन गुज़रे तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि नसीहत तो लड़की को सुनानी होती है, तुम्हें दूर बैठने की वजह से ऊँचा बोलना पड़ता है, गली से गुज़रने वाले लोग भी सुनते हैं। कितना अच्छा हो कि यह चारपाई ज़रा आगे करके रख लिया करें और दोनों पस्त

आवाज़ में बातचीत कर लिया करें। चुनाँचे बरसीसा की चारपाई लड़की की चारपाई के क़रीब हो गई और वअज़ व नसीहत का सिलसिला जारी रहा।

कुछ अरसा इसी तरह गुज़रा तो शैतान ने लड़की को सजाकर बरसीसा के सामने पेश करना शुरू कर दिया और वह लड़की के हुस्न व जमाल का दीवाना होता गया। अब शैतान ने बरसीसा के दिल में जवानी के ख़्यालात डालना शुरू कर दिए। यहाँ तक कि बरसीसा का दिल इबादतख़ाने से उचाट हो गया और ज़्यादा वक़्त लड़की से बात करने में गुजर जाता। साल गुज़र चुका था। एक दफ़ा शहज़ादों ने आकर शहज़ादी की ख़बर ली तो शहज़ादी को खुश व खुर्रम पाया और राहिब के गुन गाते देखा। शहज़ादों को लड़ाई के लिए दोबारा सफ़र पर जाना था इसलिए वे मुतमइन होकर चले गए। अब शहज़ादों के जाने के बाद शैतान ने अपनी कोशिशें तेज़ कर दीं। चुनाँचे उसने बरसीसा के दिल में लड़की का इश्क़ पैदा कर दिया और लड़की के दिल में बरसीसा का इश्क़ पैदा कर दिया। यहाँ तक कि दोनों तरफ़ बराबर की आग सुलग उठी।

अब जिस वक़्त आबिद नसीहत करता तो सारा वक़्त उसकी निगाहें शहज़ादी के चेहरे पर जमी रहतीं। शैतान लड़की को नाज़ व अंदाज़ सिखाता और सरापा नाज़नीन और रश्के क़मर अपने अंदाज़ व अदाओं से बरसीसा का दिल लुभाती। यहाँ तक कि बरसीसा ने अलग चारपाई पर बैठने के बजाए लड़की के साथ ही चारपाई पर बैठना शुरू कर दिया। अब उसकी निगाहें शहज़ादी के चेहरे पर पड़ीं तो उसने उसे सरापा हुस्न व जमाल और नज़र को

जज़्ब करने वाली पाया। चुनाँचे आबिद अपने शहवानी जज़्बात पर क़ाबू न रख सका और उसने शहज़ादी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। शहज़ादी ने मुस्कराकर हौसला अफ़ज़ाई की। यहाँ तक कि बरसीसा ज़िना कर बैठा। जब दोनों के दर्मियान से हया की दीवार हट गई और ज़िना कर लिया तो वह आपस में मियाँ-बीवी की तरह रहने लगे। इस दौरान शहज़ादी को हमल ठहर गया।

बरसीसा को फ़िक्र हुई कि अगर किसी को पता चल गया तो क्या बनेगा। मगर शैतान ने उसके दिल में ख़्याल डाला कि कोई फ़िक्र की बात नहीं, जब बच्चा पैदा होगा तो बच्चे को ज़िंदा दरगोर कर देना और लड़की को समझा देना। वह अपना ऐब भी छिपाएगी और तुम्हारा ऐब भी छिपाएगी। इस ख़्याल के आते ही उसके डर और ख़ौफ़ के तमाम पर्दे दूर हो गए और बरसीसा बेख़ौफ़ व ख़तर हवस परस्ती और नफ़्सपरस्ती में मशग़ूल रहा।

एक वह दिन भी आया जब उस शहज़ादी ने बच्चे को जन्म दिया। जब बच्चे को दूध पिलाते काफ़ी अरसा गुज़र गया तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह ख़्याल डाला कि अब तो डेढ़ दो साल गुज़र गए बादशाह और दूसरे लोग भी जंग से वापस आने वाले हैं, शहज़ादी तो उनको सारा माजरा सुना देगी। इसलिए तुम इसका बेटा किसी बहाने से क़त्ल कर दो ताकि गुनाह का सुबूत न रहे।

चुनाँचे एक दफ़ा शहज़ादी सोई हुई थी तो बरसीसा ने उस बच्चे को उठाया और क़त्ल करके घर के सेहन में दबा दिया। माँ तो माँ ही होती है। जब वह उठी तो उसने कहा, मेरा बेटा किधर है? बरसीसा ने कहा मुझे कोई ख़बर नहीं। माँ ने इधर-उधर देखा

तो बेटे का कहीं सुराग़ नहीं मिला। चुनाँचे वह उससे ख़फ़ा होने लगी तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि यह माँ है, यह अपने बच्चे को हर्गिज़ नहीं भूलेगी। पहले तो न मालूम बताती या न बताती, अब तो ज़रूर बता देगी। लिहाज़ा अब एक ही इलाज बाक़ी है कि लड़की को भी क़त्ल कर दो ताकि न रहे बांस न बजे बांसुरी। जब बादशाह आकर पूछेगा तो बता देना कि लड़की बीमार हुई और मर गई थी। जैसे ही उसके दिल में यह बात आई तो कहने लगा बिल्कुल ठीक है। चुनाँचे उसने लड़की को भी क़त्ल कर दिया और लड़के साथ ही सहन में दफ़न कर दिया। उसके बाद अपनी इबादत में मशग़ूल हो गया।

कुछ महीनों के बाद बादशाह वापस आ गए। उसने बेटों को भेजा कि जाओ अपनी बहन को ले आओ। वे बरसीसा के पास आए और कहने लगे कि हमारी बहन आपके पास थी हम उसे लेने आए हैं। बरसीसा उनकी बात सुनकर रो पड़ा और कहने लगा कि आपकी बहन बहुत अच्छी थी, बड़ी नेक थी और ऐसे-ऐसे इबादत करती थी लेकिन वह अल्लाह को प्यारी हो गई। यह सहन में उसकी क़ब्र है। भाईयों ने जब सुना तो वे रो-धो कर वापस चल गए।

घर जाकर जब वे रात को सोए तो शैतान ख़्वाब में बड़े-भाई के पास गया और उससे पूछने लगा कि बताओ तुम्हारी बहन का क्या बना? वह कहने लगा कि हम जंग के लिए गए हुए थे और उसे बरसीसा के पास छोड़ गए थे, अब वह मर चुकी है। शैतान कहने लगा, वह मरी नहीं थी। उसने पूछा कि अगर मरी नहीं तो फिर क्या हुआ था? शैतान कहने लगा, बरसीसा ने उससे ज़िना

किया, जब बच्चा पैदा हुआ तो उसने ख़ुद उसको क़त्ल किया और फ़लां जगह दफ़न कर दिया और बच्चे को भी उसी के साथ दफ़न किया था। उसके बाद वह ख़्वाब में ही उसके दर्मियाने भई के पास गया और उसको भी यही कुछ बताया और फिर उसके छोटे भाई के पास जाकर भी यही कुछ कहा।

तीनों भाई जब सुबह उठे तो एक ने कहा मैंने यह ख़्वाब देखा है, दूसरे ने कहा कि मैंने भी यही ख़्वाब देखा है। तीसरे ने कहा मैंने भी यही ख़्वाब देखा है। वह आपस में कहने लगे कि यह अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि सबको एक जैसा ख़्वाब आया है। सबसे छोटे भाई ने कहा, यह इत्तिफ़ाक़ की बात नहीं बल्कि मैं तो जाकर इसकी तहक़ीक़ करूंगा। दूसरे ने कहा, भाई छोड़ो भाई यह कौन सी बात है जाने दो। वह कहने लगा नहीं ज़रूर तहक़ीक़ करूंगा। चुनाँचे छोटा भाई गुस्से में आकर चल पड़ा। उसे देखकर बाक़ी भाई भी उसके साथ हो लिए। उन्होंने जाकर जब ज़मीन को खोदा तो उन्हें उसमें अपनी बहन की हड्डियाँ भी मिल गयीं और साथ ही छोटे से बच्चे की हड्डियों का ढांचा भी मिल गया।

जब सुबूत मिल गया तो उन्होंने बरसीसा को गिरफ़्तार कर लिया। जब क़ाज़ी के पास ले जाया गया तो उसने क़ाज़ी के सामने अपने घिनावने और मकरूह फ़ेअल का इक़रार कर लिया और क़ाज़ी ने बरसीसा को फांसी देने का हुक्म दे दिया।

जब बरसीसा को फांसी के तख़्ते पर लाया गया तो उसके गले में फंदा डाला गया और फंदे को खींचने का वक़्त आया तो फंदा खिंचने से ठीक दो चार लम्हे पहले शैतान उसके पास वही इबादतगुज़ार आदमी की शक्ल में आया। वह उसे कहने लगा,

मुझे पहचानते हो कि मैं कौन हूँ? बरसीसा ने कहा, हाँ मैं तुम्हें पहचानता हूँ, तुम वही इबादतगुज़ार आदमी हो जिसने मुझे दम करना सिखाया था। शैतान ने कहा सुनो, वह दम भी आपको मैंने बताया, लड़की को भी अपना असर डालकर मैंने ही बीमार किया था, फिर उसे क़त्ल भी मैंने ही तुझसे करवाया था और अगर अब तू बचना चाहे तो मैं ही तुझे बचा सकता हूँ। बरसीसा ने कहा, अब तुम मुझे कैसे बचा सकते हो? शैतान कहने लगा, तुम मेरी एक बात मान लो। मैं तुम्हारा यह काम कर देता हूँ। बरसीसा ने कहा, मैं आपकी कौन सी बात मानूं? शैतान ने कहा, बस यह कह दो कि ख़ुदा नहीं है। बरसीसा के हवास ख़राब हो चुके थे। उसने सोचा चलो, मैं एक दफ़ा कह देता हूँ, फिर फांसी से बचने के बाद दोबारा इक़रार कर लूंगा। चुनाँचे उसने कह दिया। ख़ुदा मौजूद नहीं है। ऐन उसी वक़्त खींचने वाले ने रस्सा खींच दिया और यूँ इस इबादतगुज़ार की कुफ़्र पर मौत आ गई।

इससे अंदाज़ा लगाइए कि शैतान कितनी लंबी प्लानिंग करके इंसान को गुनाह के क़रीब करता चला जाता है। इससे इंसान ख़ुद नहीं बच सकता। बस अल्लाह तआला ही उससे बचा सकता है। हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर यूँ दुआ मांगनी चाहिए :

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ رَبِّ اَعُوْذُبِکَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ
وَاَعُوْذُبِکَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ.

ऐ अल्लाह! हमें शैतान मरदूद के शर से महफ़ूज़ फ़रमा, ऐ परवरदिगार! मैं आपकी पनाह मांगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास आएं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

इंसान को चाहिए कि न तो वह अपनी इबादत पर नाज़ करे और न ही अपने आप पर एतिमाद करे। एक दफ़ा किसी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि अपने दरवाज़े की देहलीज़ पर बैठे हुए हैं। उसने उन्हें सलाम किया और आगे चला गया। थोड़ी देर के बाद वह फिर वापसी पर उसी रास्ते से गुज़रने लगा तो देखा कि अभी तक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दरवाज़े की देहलीज़ पर बैठे हुए थे। वह हैरान होकर पूछने लगा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप दरवाज़े पर उस वक़्त से बैठे हुए हैं? आप फ़रमाने लगे, मेरी बेटी हफ़्सा उम्मुल-मोमिनीन हैं। वह आज घर आई हुई हैं और मेरी बीवी घर पर नहीं है जिसकी वजह से वह घर में अकेली हैं। इसलिए मैंने घर में उसके पास अकेले बैठने के बजाए यहाँ दरवाज़े पर बैठना पसन्द किया, अल्लाहु अकबर। हमारे असलाफ़ इस शैतान मरदूद के शर से इस क़द्र बचते थे। इस मरदूद की चालों को उस वक़्त तक समझना मुमकिन नहीं है जब तक अल्लाह तआला की मदद शामिले हाल न हो।

शैतान की सवारी

एक आदमी की बड़ी तमन्ना थी कि शैतान से मेरी मुलाक़ात हो और उससे बात करूं। एक बार उसकी मुलाक़ात शैतान से हो गई। उसके पास बड़े जाल थे। उस आदमी ने पूछा तुम कौन हो? कहने लगा, शैतान हूँ। उसने जाल की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा ये सारा कुछ क्या है? किसलिए लिए फिरते हो? कहने लगा कि

ये फंदे हैं और जाल हैं जिनमें लोगों को पकड़ता हूँ। उसने पूछा, मेरे लिए कौन सा जाल है? शैतान कहने लगा कि तेरे लिए किसी जाल की ज़रूरत ही नहीं है। उसने कहा, वाह! मैं ऐसा भी नहीं हूँ कि जाल के बग़ैर तेरे हाथ आ जाऊँ। शैतान ने कहा, अच्छा देख लेना। बात आई गई हो गई।

उसके बाद वह आदमी अपने घर की तरफ़ रवाना हुआ। रास्ते में दरिया था। जब वह दरिया के किनारे पहुँचा तो किश्ती जा चुकी थी। लिहाज़ा उसने फ़ैसला कर लिया कि यह दरिया पार करके जाता हूँ। किनारे पर ही एक बुढ़िया आफ़त की पुड़िया जो हड्डियों को ढांचा बन चुकी थी, लाठी लेकर बैठी रो रही थी। उसने पूछा, अम्मा क्या हुआ? कहने लगी, मुझे दरिया के पार जाना था। किश्ती जा चुकी है और मैं अकेली हूँ। मैं यहाँ रह भी नहीं सकती। मेरे बच्चे घर में अकेले हैं। तू मुझे भी किसी तरह साथ ले जा। मैं तेरे बच्चों को दुआएं दूंगी। उसने कहा, मैं तुझे कैसे लेकर जाऊँ? कहने लगी तुम खुद तो जाओगे ही, मैं तो हड्डियों का ढांचा हूँ। कंधों पर उठाकर ले जाना। उसने कहा, नहीं, नहीं मैं नहीं ले जाता। उसने उसे बड़ी दुआएं दीं और कहा, तुम्हारा भला होगा। मेरे बच्चे अकेले हैं। मैं घर पहुँच जाऊँगी तो वे भी आपको दुआएं देंगे। उसके दिल में बुढ़िया के बारे में हमदर्दी आ गई। उसने कहा, अच्छा, चलें मैं आपको उठा लेता हूँ। पहले तो उसने सोचा कमर पर उठा लेता हूँ। फिर कहने लगा कि कहीं फिसल न जाए लिहाज़ा कहने लगा कि चलो मेरे कंधों पर बैठ जाओ। वह बुढ़िया को कंधों पर बिठाकर दरिया कें अंदर दाख़िल हो गया। चलते-चलते जब वह दरिया के बिल्कुल बीच में

पहुँचा तो बुढ़िया ने उसके बाल पकड़कर खींचे और कहने लगी, ऐ मेरे गधे तेज़ी से चल। वह आदमी हैरान होकर पूछने लगा कि तू कौन है? उसने कहा मैं वही हूँ जिसने तुझे कहा था कि तुझे क़ाबू में करने के लिए किसी जाल की ज़रूरत नहीं है। अब देख कि तुझे मैंने बग़ैर जाल के कैसे फंसाया। तुझे नज़र नहीं आ रहा था कि मैं ग़ैर महरम हूँ। तूने मुझे कंधे पर कैसे बिठला लिया था।

फ़िक्र की घड़ी

शैतान का सबसे बड़ा हमला मौत के वक़्त होता है। मेरे दोस्तो! हमें यह सोचना चाहिए कि यह मरदूद तो हमें ज़िंदगी में जीते जागते बहका देता है। मौत के वक़्त जब होश व हवास भी पूरे नहीं होते उस वक़्त उसके लिए हमें बहकाना कितना आसान होगा। इसलिए हमें अपने ख़ात्मे के बारे में फ़िक्रमंद होने की बहुत ज़रूरत है। हमारे असलाफ़ रो-रो कर दुआएं मांगते थे कि ऐ अल्लाह! हमारा ख़ात्मा बिलख़ैर फ़रमा देना।

बेदीन बनाने की आख़िरी कोशिश

हदीस पाक में आया है कि शैतान मौत के वक़्त मरे हुए रिश्तेदारों मसलन माँ, बाप या भाई की शक्ल में आता है और चारपाई पर बैठ जाता है और उसे बेदीन बनाने के लिए नसीहत करना शुरू कर देता है। मसलन माँ की शक्ल में आता है तो बेटे को प्यार करता है, उसी तरह बोलता है जैसे माँ बोलती है। कहता है, बेटा! मैं इस्लाम पर मरी थी और मुझे आगे अज़ाब हुआ है। अब तेरा मरने का वक़्त है, मैं तुम्हें नसीहत करने के लिए आई हूँ ताकि तू भी कहीं जहन्नम में न चला जाए। तू मेरी

बात मान ले और ख़ुदा का इंकार कर दे। मरने वाला क्योंकि सामने माँ की शक्ल में देख रहा होता है। इसलिए वह उसकी बात मानकर दहरिया बन जाता है। इस तरह वह किसी को नसरानी बनने की तालीम करता है और किसी को यहूदियत अपनाने की नसीहत करता है। अब बताइए कि जब शैतान इन मुहब्बत वाली शख़्सियतों की शक्ल में आकर डोरे डालेगा तो फिर उसके शर से बचना कितना मुश्किल होगा। इसलिए ईमान के मामले में बहुत चौकन्ना होने की ज़रूरत है।

तकबीरे ऊला और मिसवाक की पाबन्दी पर ईनामे इलाही

हदीस पाक में आया है कि जो इंसान तकबीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने की पाबन्दी करता है और मिसवाक की पाबन्दी करता है, उसके पास मौत के वक़्त अल्लाह तआला जब मलकुल मौत को भेजते हैं तो मलकुल मौत तीन काम करता है :

1. शैतान को मारकर उस बंदे से दूर भगा देता है,
2. उस बंदे को बता देता है कि अब तेरे मरने का वक़्त क़रीब है,
3. उसके कलिमा याद दिला देता है।

चुनाँचे वह बंदा कलिमा पढ़ता है और मलकुल-मौत उसकी रूह को क़ब्ज़ करके ले जाते हैं। हदीस पाक में है :

﴿من كان آخر كلامه لا اله الا الله دخل الجنة.﴾

जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाह होगा वह जन्नत में दाख़िल होगा।

इसलिए हमें चाहिए कि हम यह दुआ मांगा करें कि ऐ अल्लाह! हमें अपने ऊपर कोई भरोसा नहीं है। सिर्फ़ तेरी ज़ात पर भरोसा है। मौत के वक़्त तू मलकुल मौत को फ़रमा देना कि वह हमें कलिमा याद करा दें।

इमाम राज़ी रह० पर शैतान का हमला

इमाम राज़ी रह० एक बहुत बड़े आलिम थे। उन्होंने वजूद बारी तआला के बारे में एक किताब लिखी जिसमें उन्होंने अल्लाह तआला के वजूद के बारे में सौ दलीलें दीं। जब उनकी वफ़ात का वक़्त करीब आया तो शैतान ने आकर कहा, राज़ी! खुदा तो मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा, नहीं खुदा तो मौजूद है। वह कहने लगा, दलील पेश करो। उन्होंने एक दलील दी। शैतान ने उस दलील को तोड़ दिया। उन्होंने दूसरी दलील दी मगर उसने उसको भी तोड़ दिया। उन्होंने तीसरी दलील दी। उसने उसको भी तोड़ दिया। आख़िर उन्होंने अपनी जमा की हुई सौ दलीलें दीं। और उसने उन सौ की सौ दलीलों को तोड़ दिया। अब इमाम राज़ी रह० घबरा गए लेकिन क्योंकि उनके दिल में इख़्लास था। इसलिए अल्लाह तआला ने उनके ईमान की हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम फ़रमा दिया। उस वक़्त आपके पीर व मुर्शिद शेख़ नजमुद्दीन कुबरा रह० दूर दराज़ किसी जगह वुज़ू फ़रमा रहे थे। अल्लाह तआला ने उन्हें इमाम राज़ी रह० की परेशानी के बारे में कश्फ़ से इत्तिला दी। उन्होंने गुस्से में आकर वह लोटा जिससे वुज़ू फ़रमा रहे थे दीवार पर दे मारा और इमाम राज़ी को पुकार कर कहा, अरे राज़ी! तू यूँ क्यों नहीं कह देता कि मैं अल्लाह तआला को

बग़ैर दलील के एक मानता हूँ। उस वक़्त शेख़ नजमुद्दीन कुबरा रह० का गुस्सा भरा चेहरा इमाम राज़ी रह० के बिल्कुल सामने था। इमाम राज़ी रह० ने यही कहा तो शैतान उनसे दूर हो गया।

डाक्टर मौत के वक़्त नशे का टीका न लगाएं

जब आप देखें कि किसी की मौत का वक़्त क़रीब है तो उसे डाक्टरों से बचाएं। अल्लाह इन डाक्टरों को हिदायत दे कि वह मौत की अलामत ज़ाहिर होने के बाद भी उसे नशे का टीका लगा देते हैं। नशे का टीका लगने की वजह से उस बेचारे को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ ही नहीं मिलती और वह उसी तरह दुनिया से चला जाता है। इसलिए जब पता चल जाए कि अब मौत का वक़्त क़रीब है तो डाक्टर को डांटकर कहें कि ख़बरदार! इसे नशे का टीका मत लगाना क्योंकि हम मुसलमान हैं और मोमिन मरने के लिए हर वक़्त तैयार होता है। उसे कह दें कि जनाब! आप अपनी तरफ़ से इसका इलाज कर चुके हैं। अब मौत की अलामत ज़ाहिर हो रही हैं इसलिए इसे अल्लाह के हुज़ूर पहुँचने के लिए तैयारी करने दें और इसे होश में रहने दें ताकि आख़िरी वक़्त में कलिमा पढ़कर दुनिया से रुख़्सत हो।

मरने वाले पर ज़ुल्म मत करें

अगर मरीज़ एक दफ़ा कलिमा पढ़ ले तो उसके साथ बार-बार बातें मत करें और उसका आख़िरी कलाम कलिमा ही रहने दें। यह न हो कि बहन आकर कहे, मुझे पहचान रहे हो, मैं कौन हूँ? उस वक़्त उसे अपनी पहचान मत करवाएं और ख़ामोश रहें ताकि उसका पढ़ा हुआ कलिमा अल्लाह के हाँ क़ुबूल हो जाए। ये चीज़ें

साहिबे दिल लोगों के पास बैठकर समझ में आती हैं वरना अक्सर रिश्तेदार उस पर ज़ुल्म करते हैं और उसे उस वक़्त कलिमे से महरूम कर देते हैं। अल्लाह करे कि मौत के वक़्त कोई साहिबे दिल पास हो जो बंदे को उस वक़्त कलिमा पढ़ने की तलक़ीन करे।

मरीज़ को कलिमा पढ़ने की तलक़ीन करने का तरीक़ा

मरीज़ को हर्गिज़ न कहा जाए कि आप कलिमा पढ़ें। हो सकता है कि वह बीमारी की वजह से न पढ़ सके या इंकार कर दे। इसका तरीक़ा यह है कि क़रीब बैठकर ऊँची आवाज़ से खुद कलिमा पढ़ना शुरू कर दें ताकि वह उनकी आवाज़ सुनकर कलिमा पढ़ ले।

निस्बते नक़्शबंदिया की बरकत का वाक़िआ

अब आपको राज़ की बात बताता हूँ। वैसे मेरी आदत ऐसी बातें करने की नहीं है। इस वक़्त वह बात क़ुदरतन याद आ गई, बता देता हूँ शायद किसी का फ़ायदा हो जाए। हमारे एक पुराने दोस्त हैं वह मेरे हम-उम्र हैं और क्लास के साथी भी। उनके वालिद साहब नक्शबंदी सिलसिले में बैअत थे। जब वह फ़ौत हुए तो यह आजिज़ बैरूने मुल्क था। वापसी पर उस दोस्त ने यह वाक़िआ मस्जिद में बावुज़ू खड़े होकर खुद सुनाया।

वह कहने लगे मेरे वालिद पर मौत के आसार ज़ाहिर होना शुरू हो गए। हम सब भाई, बहन क़रीब बैठ गए। किसी सूरः यासीन पढ़ना शुरू कर दी किसी ने कलिमा पढ़ना शुरू कर दिया,

कहने लगे कि मैंने अपने वालिद के चेहरे के बिल्कुल क़रीब होकर बैठ गया और ऊँची आवाज़ में "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" कहना शुरू कर दिया। मैं पंद्रह मिनट उनके चेहरे पर टकटकी बाँधकर देखता रहा और कलिमा पढ़ता रहा मगर मेरे वालिद के होंठ गोया सिले हुए थे और कुछ हरकत न की। इतने में बहन ने इशारा किया कि अब्बू के पाँव पहले खड़े थे, अब वह ढीले पड़ गए हैं। इससे हमें महसूस हुआ कि पाँव की तरफ़ से रूह निकलनी शुरू हो गई है। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि वालिद साहब के घुटने जो पहले खड़े थे वे भी ढीले पड़ गए। अभी तक साँस तेज़ होकर उखड़ी नहीं थी लेकिन अब पहले के मुक़ाबले यह साँस तेज़ होना शुरू हो गई। हमें साफ़ पता चल रहा था कि अब कुछ मिनटों की बात है। कहने लगे जब मैंने घुटनों को ढलते हुए देखा तो उस वक़्त मेरे दिल में बात आई कि मैं पंद्रह मिनट से अब्बू के चेहरे की तरफ़ देख रहा हूँ। मैंने उकने होंठ हिलते नहीं देखे क्या मेरे वालिद दुनिया से बग़ैर कलिमा पढ़े रुख़्सत हो जाएंगे।

यह सोचकर मैं ज़ार व क़तार रोने लगा और दुआएं मांगने लगा। कहने लगे कि अचानक मेरे दिल में एक ख़्याल आया और दुआ मांगते हुए मैंने यह दुआ मांगी, "ऐ अल्लाह! मेरे वालिद का ताल्लुक़ शेख़ ज़ुलफ़क़ार अहमद दामत बरकातुहुम के साथ है और उनका तअल्लुक़ अपने शेख़ के साथ है और ऊपर चलते चलते यह रूहानी तअल्लुक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है। ऐ अल्लाह! अगर इस निस्बत का तेरे यहाँ कोई मक़ाम है तो उसकी बरकत से मेरे वालिद को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।" कहने लगे मैंने पलक झपकने की देर में दुआ

मांगी और मेरे वालिद ने होंठ खोलकर पाँच बार कलिमा पढ़ा और अल्लाह को प्यारे हो गए। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ निस्बत का बड़ा मक़ाम है। हमारे असलाफ़ की ज़िन्दगियाँ तक़्वे से भरी होती हैं। हम तो मुफ़्तख़ोर हैं। हमारी अपनी मेहनत तो है ही नहीं लेकिन हमारे बड़े वाक़ई अल्लाह के मक़बूल बंदे थे।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर शैतान का हमला

जब इमाम अहमद बिन हंबल रह० का आख़िरी वक़्त आया तो तलबा ने उनके सामने कलिमा तैय्यबा को दौर करना शुरू कर दिया। उनकी आवाज़ सुनकर इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया, "ला।" फिर थोड़ी देर के बाद आवाज़ निकाल कर कहा, "ला।" उनके शागिर्द हैरान हुए कि पूरा कलिमा पढ़ने के बजाए सिर्फ़ "ला" पढ़ रहे हैं। जब थोड़ी देर बाद उनकी तबियत संभली और होश में आए तो कुछ बातें भी करने लगे। इस दौरान एक तालिब इल्म ने पूछा, हज़रत! जब हम कलिमा पढ़ रहे थे तो आप पूरा कलिमा पढ़ने के बजाए सिर्फ़ ला कह रहे थे। इसकी क्या वजह थी? इमाम साहब रह० ने फ़रमाया, उस वक़्त शैतान मेरे सामने था और वह मुझसे कह रहा था, अहमद बिन हंबल! तू ईमान बचाकर दुनिया से जा रहा है और मैं उस मरदूद से कह रहा था, "ला।" अभी नहीं, अभी नहीं बल्कि जब तक मेरी रूह निकल नहीं जाती उस वक़्त मैं तुझसे अमन में नहीं हूँ।

इमाम राज़ी रह० का फ़रमान

इमाम राज़ी रह० फ़रमाते थे :

"ऐ बंदे! शैतान फ़ारिग़ है और तू मशग़ूल है। शैतान तुझे

देखता है और तू उसे नहीं देख सकता। तू उसे भूल जाता है मगर वह तुझे नहीं भूलता और तेरे अंदर से तेरा नफ़्स उसका मददगार है, इसलिए लाज़मी है कि शैतान के हमलों से अपना बचाओ कर ले वरना यह इस जंग के अंदर तुम्हें हराकर ईमान से महरूम कर देगा।"

शैतान की मक्कारी की इंतिहा

नबी अलैहिस्सलाम एक बार नमाज़ पढ़ाई और सूरः नजम की तिलावत फ़रमाई। पढ़ते पढ़ते आप इस आयत पर पहुँचे :

﴿اَفَرَاَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى. وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى.﴾

क्या राय है तुम्हारी लात व उज़्ज़ा के बारे में और पिछले तीसरे मनात के बारे में।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये आयतें पढ़ीं तो सांस लेने के लिए रुके। इस वक़्फ़े के दौरान सहाबा किराम को यह महसूस हुआ कि नबी अलैहिस्सलाम ने चंद अलफ़ाज़ यह भी पढ़े :

﴿وَاِنَّ شَفَاعَتَهُنَّ لَتُرْتَجٰى﴾ (इनसे शफ़ाअत की उम्मीद की जाती है।)

मुश्रिकीन तिलावत सुन रहे थे। जब उन्होंने देखा कि यह आयत भी पढ़ी है तो उन्होंने भी मुसलमानों के साथ मिलकर सज्दा किया और खुश हुए कि आज के बाद झगड़ा ख़त्म हुआ।

सहाबा किराम के दिल बड़े डूबे। यहाँ तक कि नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! क्या यह आयत नई उतरी है? फ़रमाया, नहीं। अर्ज़ किया ऐ

अल्लाह के नबी हमने यह आयत नई सुनी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने तो नहीं पढ़ी। इतने में जिब्रील अलैहिस्सलाम आ गए और उन्होंने बता, ऐ अल्लाह के महबूब! जब आपने लात और उज़्ज़ा वाली आयत पढ़कर वक़्फ़ किया तो शैतान ने ऐसी आवाज़ बनाई की सहाबा किराम को पहचान न हो सकी कि कौन पढ़ रहा है और वे समझे कि शायद आपकी तरफ़ से यह आयत पढ़ी गई है। शैतान ने उनको मुग़ालते में डालने की कोशिश की है।

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम की मौजूदगी में जब कि जमाअत हो रही थी और ख़ुशू वाली नमाज़ थी उस वक़्त यह शैतान फ़ितना डालने से बाज़ न आया तो फिर हमें तो यह आसानी से फ़ितने में डाल सकता है।

शैतान के मुख़्तलिफ़ हथकंडे

शैतान मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से फ़ितना में डालता है :

1. उलमा ने लिखा है कि यह सबसे पहले इंसान को ताआत से रोकता है यानी इंसान के दिल से ताआत की अहमियत निकाल देता है जिसकी वजह से बंदा कहता है कि अच्छा, मैं नमाज़ पढ़ लूंगा हालाँकि दिल में पढ़ने की नीयत नहीं होती।
2. अगर इंसान शैतान के कहने से भी नेकी से न रुके और वह नीयत कर ले कि मैंने यह नेकी करनी है तो फिर वह दूसरा हथियार इस्तेमाल करता है कि वह नेक काम को टालने की कोशिश करता है। मसलन किसी के दिल में यह बात आई

कि मैं तौबा कर लेता हूँ तो यह उसके दिल में डालता है कि अच्छा, फिर कल से तौबा कर लेना। किसी के दिल में यह बात आई कि मैं नमाज़ पढूंगा तो वह कहता है कि कल से नमाज़ शुरू कर देना। यूँ शैतान उसे नेकी के काम से टालने की कोशिश करता है। और याद रखें कि जो काम टाल दिया जाता है वह काम टल जाया करता है।

३. अगर कोई बंदा शैतान के उकसाने पर भी नेक काम करने से न टले और वह कहे कि मैंने यह काम करना है तो फिर वह दिल में डालता है कि जल्दी करो। मसलन किसी जगह पर खाना भी हो और नमाज़ भी हो तो दिल में डालता है कि जल्दी से नमाज़ पढ़ ले फिर तसल्ली से खाना खा लेना। नहीं भाई नहीं बल्कि यूँ कहना चाहिए कि भई! जल्दी जल्दी खाना खा लो फिर तसल्ली से नमाज़ पढ़ेंगे।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि पाँच चीज़ों में जल्दबाज़ी जाएज़ है और इन पाँच चीज़ों के अलावा बाक़ी चीज़ों में जल्दी शैतान की तरफ़ से होती है :

- जब लड़की जवान हो जाए तो जितना जल्दी उसका रिश्ता मिल सके उतना अच्छा है। जब मिल जाए तो फिर उसकी शादी में जल्दी करनी चाहिए।,
- अगर किसी के ज़िम्मे कर्ज़ हो तो उस कर्ज़ को अदा करने में जल्दी करनी चाहिए।
- जब कोई बंदा फ़ौत हो जाए तो उस मुर्दे को दफ़न करने में जल्दी करनी चाहिए।

- जब कोई मेहमान आ जाए तो उसकी मेहमानवाज़ी में जल्दी करनी चाहिए। इसलिए हमने वस्त एशिया की रियासतों में देखा है कि जैसे ही मेहमान घर में आता है तो फ़ौरन कम से कम पानी तो ज़रूर मेहमान के सामने रख देते हैं। उसके बाद खाने पीने की चीज़ें पेश की जाती हैं। याद रखें कि पानी का पिलाना भी मेहमान नवाज़ी में शामिल है। लिहाज़ा जिसने मेहमान के सामने कटोरा भरकर पानी रख दिया उसने गोया मेहमान नवाज़ी कर ली।
- जब गुनाह हो जाए तो उससे तौबा में करने में जल्दी करे।

इन पाँच चीज़ों के अलावा बाक़ी सब चीज़ों में जल्दी करना शैतान की तरफ़ से होती है।

4. अगर कोई आदमी जल्दी में कोई नेक काम कर लेता है तो फिर वह इसमें रिया करवाता है। और यूँ वह रिया के ज़रिए उसके किए हुए अमल को बर्बाद करवा देता है। वह दिल में सोचने लगता है कि ज़रा दूसरे भी देख लें कि मैं कैसा नेक अमल कर रहा हूँ।
5. अगर उसमें काम करते वक़्त रिया पैदा न हो तो वह उसके दिल में उजब डाल देता है और वह सोचता है कि मैं दूसरों से बेहतर हों। मसलन यह कहता है कि मैं तो फिर भी नमाज़ें पढ़ लेता हूँ लेकिन फ़लाँ तो नमाज़ें ही नहीं पढ़ता। वह समझता है कि मैं तो आख़िर पढ़ा लिखा हूँ, हाफ़िज़ हूँ, क़ारी हूँ, आलिम हूँ और मैंने इतने हज किए हैं। जब इस तरह उसमें हवा भर जाती है तो यही उजब उसकी बर्बादी का सबब बन जाता है।

6. अगर उसके दिल में उजब भी पैदा न हो तो वह आख़िरी चाल इस्तेमाल करता है यह उसके दिल में शोहरत की तमन्ना पैदाकर देता है। वह ज़बान से शोहरत पसन्दी की बातें नहीं करेगा बल्कि उसके दिल में यह बात होगी कि लोग मेरी तारीफ़ें करें और जब लोग उसकी तारीफ़ें करेंगे तो वह ख़ुश होगा।

शैतान इन छः हथकंडों से इंसान के नेक आमाल को बर्बाद कर देता है।

शैतान के हथकंडों से बचने के तरीक़े

शैतान के हथकंडों से बचने की तीन तरीक़े हैं :

1. हमारे मशाइख़ ने मिसाल देते हुए फ़रमाया कि अगर एक आदमी अपने दोस्त को मिलने के लिए जाए और उसके सहन में एक पालतू कुत्ता हो और वह भौंके और बंदे को काटने के लिए आए तो उससे बचने के लिए तीन तरीक़े हैं :

- एक तो यह कि वह वापस अपने घर को आ जाए। इस तरह उसे अपने दोस्त का वस्ल हासिल नहीं होगा।
- दूसरा तरीक़ा यह है कि कुत्ते के साथ लड़ना झगड़ना शुरू कर दे। इससे भी वह नुक़सान उठाएगा।
- तीसरा तरीक़ा यह है कि उस वक़्त अपने दोस्त को पुकारे कि ज़रा कुत्ते को आवाज़ दे दें। जब उसका दोस्त कुत्ते को इशारा कर देगा तो वह दुबकर कोने में बैठ जाएगा।

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि शैतान उसी कुत्ते की तरह है। अगर हम शैतान से उलझ पड़ेंगे तो हम अपना वक़्त बर्बाद

करेंगे। इसलिए बेहतर यह है कि उसके मालिक को पुकारें कि ऐ परवरदिगार! इस मरदूद से हमें महफ़ूज़ फ़रमा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इशारा होगा तो यह मरदूद दुबकर कोने में बैठ जाएगा और अल्लाह तआला उसके शर से महफ़ूज़ फ़रमा देंगे। इसलिए इसके फ़ितने से बचने के लिए रोज़ाना दुआ किया करें। हमारे मशाइख़ का यह मामूल था कि वे ईशा की नमाज़ के बाद दो रकअत पढ़कर अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिए रोज़ाना दुआ मांगा करते थे कि ऐ अल्लाह! हम आजिज़ और मिस्कीन हैं, तू हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा देना।

2. उसके हथकंडों से बचने का दूसरा तरीक़ा यह है कि सुन्नत की इत्तिबा करे। इसलिए कि जब इंसान हर काम सुन्नत के मुताबिक़ करता है तो शैतान को दख़लअंदाज़ी करने का मौक़ा ही नहीं मिलता। गोया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर वह काम किया जिससे शैतान के रास्तों को बंद किया जा सकता है। इसके ख़िलाफ़ आप जहाँ भी सुन्नत छोड़ेंगे आप वहाँ पर शैतान को दख़लअंदाज़ी का मौक़ा देंगे। इसलिए सर के बालों से पैरों के नाख़ुनों तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक-एक सुन्नत को अपना लेना शैतान के रास्ते को बंद कर देता है।

3. इसके फ़ित्नों से बचने का तीसरा तरीक़ा ज़िक्रुल्लाह की कसरत करना है। यही वजह है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया कि ज़िक्रुल्लाह की कसरत करने से अल्लाह तआला शैतान से हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से शैतान का डरना

हमारे असलाफ़ ने ऐसी पीकाज़ा ज़िंदगियाँ गुज़ारी हैं कि अल्लाह तआला ने उनको शैतान मरदूद के शर से महफ़ूज़ फ़रमा दिया था। हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि शैतान उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साए से भी डरता है। एक और रिवायत में है कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जिस रास्ते से गुज़रते हैं शैतान उस रास्ते को भी छोड़ जाता है। अल्लाहु अकबर। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ ऐसी क़ुबूलियत और महबूबियत थी कि शैतान ही भाग जाता था। यह सब कुछ इसलिए था कि उनका हर-हर काम सौ फ़ीसद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ होता था।

रिवायत में आया है कि शैतान ने हज़रत उमर से तीन मर्तबा उलझने की कोशिश की और उन्होंने उसे तीनों दफ़ा ज़मीन पर पटख़ दिया और तीसरी मर्तबा उन्होंने उसका कंधा पकड़कर कहा तू कितना बूदा और ज़ईफ़ है। उसके वक़्त के बाद से शैतान उनका रास्ता ही छोड़ गया।

शैतान हड्डियों का ढांचा

शेख़ुल-हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० ने फ़ज़ाईले ज़िक्र में लिखा है कि एक आदमी ने शैतान को देखा। वह हड्डियों का ढांचा बना हुआ था और उसका बुरा हाल था। उसने पूछा, यह क्या हुआ? कहने लगा क्या बताऊँ कि कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने मेरे जिगर के कबाब बना दिए हैं और उन्होंने मुझे हड्डियों का ढांचा बना दिया है। उसने कहा, वे कौन लोग

हैं? कहने लगा कि वे जो शूनीज़ा की मस्जिद में बैठे हुए हैं। वह आदमी फ़ौरन शूनीज़ा की मस्जिद में गया। जब वह उस मस्जिद में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि वहाँ कुछ मुत्तक़ी, परहेज़गार और बाखुदा इंसान बैठे अल्लाह को याद कर रहे थे। अल्लाह तआला ने उन लोगों के दिलों में भी यह बात इलक़ा कर दी। चुनाँचे जैसी वह मस्जिद में दाख़िल हुआ तो उन्होंने मुस्कराकर मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया कि उस मरदूद की बातों पर ऐतिमाद न करना।

शैतान का नंगे फिरना

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। उन्होंने शैतान को नंगा देखा। उन्होंने कहा ओ मरदूद! तुझे आदमियों के बीच इस तरह चलते हुए शर्म नहीं आती। वह कहने लगा, खुदा की क़सम! यह आदमी नहीं हैं। अगर ये आदमी होते तो मैं इनके साथ ऐसा न खेलता जिस तरह लड़के गेंद से खेलते हैं। आदमी तो वह जिन्होंने अल्लाह के ज़िक्र के ज़रिए मेरे बदन को बीमार किया हुआ है।

शैतान किस चीज़ से डरता है

शैतान ज़ाकिर शाग़िल आदमी से उसके दिल की नूरानियत की वजह से डर रहा होता है क्योंकि वह दिल तजल्लियाते रब्बानी की गुज़रगाह बन चुका होता है। अबूसईद ख़ज़ाज़ रह० कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि शैतान ने मुझ पर हमला किया। मैंने जवाब में एक लकड़ी उठाई और उसे मारना शुरू कर दिया। उसने इसकी कोई परवाह नहीं की। उस वक़्त ग़ैब से आवाज़ आई कि यह मरदूद लकड़ी से नहीं डरता बल्कि यह दिल के नूर

से डरता है। गोया जिस का दिल जितना ज़्यादा नूरानी होगा शैतान उतना ही उस बंदे से डरेगा।

एक आबिद की शैतान से कुश्ती

'अह्याउल-उलूम" में लिखा है कि बनी इस्राईल में एक आबिद रहता था। वह हर वक़्त इबादते इलाही में लगा रहता था। एक बार उनके पास कुछ लोग हाज़िर हुए और कहने लगे, हज़रत! यहाँ एक ऐसी कौम रहती है जो एक पेड़ की पूजा करती है। अगर हो सके तो उन लोगों को इस पेड़ की पूजा से किसी तरह रोक दिया जाए। यह सुनकर उनको गुस्सा आया और कुल्हाड़ा कंधे पर रखकर उस पेड़ को काटने के लिए चल दिए।

रास्ते में उन्हें शैतान एक बूढ़े आदमी की शक्ल में मिला। उस मरदूद ने उनसे पूछा, जी आप कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कहा, फ़लाँ पेड़ को काटने के लिए जा रहा हूँ। शैतान ने कहा, तुम्हें उस पेड़ से क्या वास्ता? तुम अपनी इबादत में मशग़ूल रहो। एक बेकार काम के लिए अपनी इबादत क्यों छोड़ते हो? इबादतगुज़ार ने कहा, यह भी इबादत है। शैतान ने कहा, मैं तुम्हें वह पेड़ काटने नहीं दूंगा। आख़िर दोनों में मुक़ाबला हुआ वह आबिद बहुत जल्द उस पर हावी हो गया। और उसके सीने पर चढ़कर बैठ गया। शैतान ने अपने आपको बेबस देखकर एक चाल चली। अच्छा एक बात सुन। आबिद ने उसे छोड़ दिया। शैतान कहने लगा कि अल्लाह तआला ने तुझ पर फ़र्ज़ तो नहीं किया। तेरा इससे कोई नुक़सान नहीं है। तू तो उसकी पूजी भी नहीं करता। अल्लाह के बहुत से नबी आए। अगर अल्लाह चाहता तो वह किसी नबी के

ज़रिए इसको कटवा देता। इसलिए मैं यही कहता हूँ कि तो तू इसको काटने का इरादा छोड़ दे। लेकिन आबिद ने मज़बूत इरादे के साथ कहा कि नहीं मैं तो उसको ज़रूर काटूंगा। यह सुनकर शैतान ने फिर उससे लड़ाई शुरू कर दी और वह आबिद फिर मज़बूत इरादे की बरकत से उसके सीने पर चढ़ बैठा।

अब शैतान ने एक और पैंतरा बदला। वह कहने लगा कि तू एक ग़रीब आदमी है। दुनिया वालों पर बोझ बना हुआ है। अब मैं आर-पार बात कहता हूँ कि तू इस काम से बाज़ आ जा। मैं तुझे तीन दीनार दे दिया करूंगा जो रोज़ाना तुझे अपने सिरहाने से मिल जाया करेंगे। इस रक़म से तेरी ज़रूरतें भी पूरी होंगी, ग़रीब लोगों की मदद भी करना और अपने रिश्तेदारों पर एहसान भी। इस तरह तुम्हें बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा जबकि पेड़ के काटने से सिर्फ़ पेड़ के काटने का सवाब मिलेगा, इससे ज़्यादा नहीं।

उस आबिद ने शैतान की यह बात मान ली। इस तरह उसे अपने तकिए के नीचे से रोज़ाना तीन दीनार मिलना शुरू हो गए। कुछ दिनों के बाद वह दीनार मिलना बंद हो गए तो उसे फिर शैतान पर गुस्सा आया और फिर कुल्हाड़ा उठाकर पेड़ को काटने के लिए चल दिया। रास्ते में वही बूढ़ा फिर मिला और पूछा कि अब कहाँ जाने का इरादा है। आबिद ने कहा कि उसी पेड़ को काटने जा रहा हूँ। उस बूढ़े शैतान ने कहा कि तू उसको नहीं काट सकेगा। चुनाँचे अब फिर दोनों के बीच झगड़ा हो गया। अब की बार वह बूढ़ा ग़ालिब आ गया और आबिद के सीने पर चढ़ गया। आबिद ने हैरान होकर उससे पूछा कि क्या बात है कि इस बार तू मुझ पर ग़ालिब आ गया? शैतान ने कहा, पहली बार तेरा

गुस्सा ख़ालिस अल्लाह के लिए था। इसलिए अल्लाह तआला ने तुझे ग़ालिब रखा। अब क्योंकि इसमें दीनारों के लालच की मिलावट थी इसलिए मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया।

शैतान से बढ़कर शैतान

आज के दौर में हमें अपने ऊपर ज़्यादा मेहनत करने की ज़रूरत है क्योंकि पहले ज़माने में तो फ़ित्ने पैदल आया करते थे और आज के दौर में तो फ़ितने सवारियों पर सवार होकर आ रहे हैं। एक मर्तबा शैतान को फ़ारिग़ बैठे हुए देखा। उसने कहा, क्या बात है आज छुट्टी मना रहे हो। कहने लगा, अब तो इंसानों में भी मेरे बहुत चेले हो गए हैं। इसलिए अब मुझे इतना काम करने की ज़रूरत नहीं है। वह मेरा काम ख़ुद ही करते रहते हैं। उसने हैरान होकर कहा, अच्छा वह तेरा काम करते रहते हैं। कहने लगा, हाँ मेरे चेले बड़े पक्के हैं। पहले मैं उन्हें गुनाहों के तरीक़े सिखाता था और वह ऐसे बन गए हैं कि मैं उनसे गुनाहों के तरीक़े सीखता हूँ। वाक़ई जब इंसान बिगड़ता है तो शैतान से बढ़कर शैतान बन जाता है।

शैतान की फ़रियाद

शायर मशरिक़ अल्लामा इक़बाल रह० का कलाम दिलों में बहुत ज़्यादा तासीर पैदा करता है। उनका फ़ारसी का कलाम उनके उर्दू के कलाम से बहुत बेहतर है। जिनको अल्लाह ने फ़ारसी की समझ दी वह इस बात का बख़ूबी एहसास कर सकते हैं बल्कि यह कहना बेजा न होगा कि उनका फ़ारसी में ऐसा अजीब कलाम है कि वह वाक़ई पीर रूमी का शागिर्द हिन्दी

साबित हुए। उन्होंने फ़ारसी में एक अजीब नज़्म लिखी, जिसका नाम "नालाए शैतान" यानी शैतान की फ़रियाद। वह फ़रमाते हैं कि शैतान ने एक मर्तबा मज्लिस क़ायम की और उसने अल्लाह से यूँ फ़रियाद की :

ابن آدم چیست یک مشت خس است
مشت خس را یک شرر از من بس است

ऐ अल्लाह! इब्ने आदम क्या है? बस तिनकों की एक मुट्ठी है। तिनकों की एक मुट्ठी को जलाने के लिए तो मेरी तरफ़ से एक ही शर काफ़ी है।

اندریں عالم اگر جذ خس نہ بود
ایں قدر آتش مرا دادن چہ سود

ऐ अल्लाह! अगर इस ख़स के अलावा दुनिया में और कुछ नहीं था तो मुझे जो आपने इतनी आग दी है मुझे वह आग आपने किस लिए अता की?

اے، خدا! یک زندہ مرد حق پرست
لذتے شاید کہ یابم در شکست

ऐ अल्लाह! कोई एक बाख़ुदा मुझे भी मिला दीजिए ताकि मैं भी हारने खाने की लज़्ज़त पा सकूँ।

शैतान का ज़लील व ख़्वार होना

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का यह बहुत बड़ा करम है कि शैतान इंसान से जितने भी गुनाह करवाता है बंदा जब नादिम होकर तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला उसके गुनाह को माफ़ कर

देते हैं और यह मरदूद उस वक़्त अपने सर पर मिट्टी डालत है। इसीलिए वक़ूफ़े अरफ़ा के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने शैतान को जितना ज़लील व ख़्वार होते बदर के दिन देखा या अरफ़ा के दिन देखा, उससे ज़्यादा ज़लील व ख़्वार होते मैंने कहीं और नहीं देखा। उसके बाल खुले हुए होते हैं। सर मर मिट्टी डाल रहा होता है और रो रहा होता है क्योंकि उसने इंसानों को गुमराह करने के लिए सालों साल मेहनत की होती है और मुक़ामे अरफ़ात पर आकर वह तोबा कर लेते हैं और अल्लाह तआला उनकी ग़ल्तियों को माफ़ फ़रमा देते हैं और तौबा एक ऐसी चीज़ है—

It can change our minus into plus. यह हमारे गुनाहों को हमारी नेकियों से बदल सकती है।

औलादे आदम अलैहिस्सलाम को बहकाने का अज़्म और उसका जवाब

जब शैतान ने यह कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे आदम अलैहिस्सलाम की वजह से धुतकारा गया है ﴿فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ﴾ मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! अब मैं औलादे आदम को बहकाऊँगा और वरग़लाऊँगा और इनमें से अक्सर बंदे तेरे नाशुक्रे होंगे। तो उस वक़्त अल्लाह की रहमत जोश में आई और परवरदिगार आलम ने फ़रमाया, ओ शैतान बदबख़्त! तू मेरी क़सम खाकर कहता है कि मेरे बंदों को बहकाएगा, वरग़लाएगा और मेरा नाफ़रमान बना देगा, तू मेरी बात भी सुन ले कि मेरे बंदे इंसान होने के नाते गुनाह करते फिरेंगे, करते फिरेंगे, करते फिरेंगे अगर

वे अपनी मौत से पहले पहले मेरे दर पर माफ़ी मांग लेंगे तो ﴿فَبِعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ لَا اَزَالُ اَغْفِرُلَهُمْ مَاسْتَغْفِرُوْنِیْ.﴾ मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मुझे अपने जलाल की क़सम! मैं उनकी तौबा क़ुबूल करता रहूंगा जब तक वे मुझसे माफ़ी मांगते रहेंगे। शैतान ने बहकाने के लिए एक क़सम खाई और रहमान ने बख़्शने के लिए दो कसमे खायीं। इसलिए हमें चाहिए कि शैतान ने हम से जो जो गुनाह करवाए हम उनसे पक्की सच्ची तौबा करें।

दो महफ़ूज़ सिम्ते

जब शैतान ने कहा ऐ अल्लाह! मैं औलादे आदम पर दाएं, बाएं, आगे और पीछे चारों तरफ़ से हमले करूंगा तो फ़रिश्ते यह सुनकर बड़े हैरान हुए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे फ़रिश्तों इतना ताज्जुब क्यों कर रहे हो? फ़रिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह! अब तो इब्ने आदम के लिए मुश्किल बन गई है, वे तो मरदूद के हथकंडों से नहीं बच सकेंगे। परवरदिगार आलम ने फ़रमाया, तुम न ताज्जुब करो, इसने चार सिमतों का नाम तो लिया मगर ऊपर और नीचे वाली सिम्तों को भूल गया। इसलिए मेरे गुनाहगार बंदे जब कभी नादिम और शर्मिन्दा होकर मेरे दरपे आ जाएगा और अपने हाथ दुआ मांगने के लिए उठा लेगा क्योंकि उसके हाथ ऊपर की सिम्त को उठेंगे और शैतान असरअंदाज़ नहीं हो सकेगा। इसलिए मेरे बंदे के हाथ अभी नीचे नहीं जाएंगे कि मैं उससे पहले उसके गुनाहों को माफ़ कर दूंगा। और अगर कभी मेरा बंदा नादिम और शर्मिन्दा होकर मेरे दर पे आकर अपना सर झुका देगा तो चूँकि नीचे की सिम्त को झुकाएगा और शैतान नीचे की सिम्त से असरअंदाज़ नहीं हो सकेगा इसलिए मेरा बंदा अभी

सज्दे से सर नहीं उठाएगा कि इससे पहले मैं उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दूंगा।

मेरे दोस्तो! ऊपर और नीचे की सिमतें महफ़ूज़ है इसलिए परवरदिगार आलम से अपने गुनाहों की माफ़ी मांग लीजिए। तन्हाईयों में हाथ उठाकर मांगिए, सज्दे में सर डालकर मांगिए। परवरदिगार आलम की रहमतों का महीना है बल्कि मग़फ़िरत का अशरा है और आप हज़रात यहाँ अल्लाह के दर की चौखट को पकड़कर बैठे हैं। क्या बईद है कि हममें किसी की नदामत अल्लाह को पसन्द आ जाए और उसके इख़्लास की बरकत से अल्लाह तआला सबकी तौबा को क़ुबूल फ़रमा ले।

रब्बे करीम हमें आने वाली ज़िंदगी में शैतान के हथकंडों से महफ़ूज़ फ़रमा ले और मौत के वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त अता फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

بسم الله الرحمن الرحيم

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ.

मख़्लूक़ की मुहब्बत

यह बयान 25 रमज़ानुल मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 10 दिसंबर 2001 ई० को मस्जिद नूर लूसाका (ज़ाम्बिया) में हुआ। सुनने वालों में उलमा, सुल्हा और आम लोगों की बड़ी तादाद थी।

इक़्तिबास

हर चीज़ की एक हद होती है। जब कोई चीज़ हद से बढ़ जाती है तो वह नुक़सानदेह बन जाती है। बीवी-बच्चों की मुहब्बत महमूद है बशर्ते इंसान शरिअत की हुदूद के अंदर रहकर उससे ताल्लुक़ रखे। जब यह ताल्लुक़ इंसान को ग़ैर शरई कामों पर मजबूर कर दे तो फिर वह मज़मूम (बुरा) बन जाता है। कितने ही ऐसे लोग हैं जो बीवी के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए रिश्वत लेते हैं, धोका देते हैं और मालूम नहीं कौन-कौन से पापड़ बेलते हैं। इसके अलावा औलाद का बहाना बनाकर नाजाएज़ माल कमाते हैं। अगर ऐसी सूरतेहाल है तो बीवी बच्चों का यह प्यार उनके लिए क़ाबिले अज्र नहीं बल्कि मज़म्मत (डांट) के क़ाबिल है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़्क़ार अहमद
नक़्शबंदी मुजद्ददी मद्ददेज़िल्लहु

मख़्लूक़ की मुहब्बत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ط

وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِo (البقرہ:١٦٥)

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرِ يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ

وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ. (التغابن:١٤)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

तीसरा बड़ा दुश्मन

दुश्मन के लफ़्ज़ में तीसरा हर्फ़ ''मीम'' है। इससे मुराद मख़्लूक़ है। यह भी हमारा दुश्मन है क्योंकि मख़्लूक़ कई मर्तबा बंदे और अल्लाह के दर्मियान एक रुकावट बन जाती है। कुछ मुहब्बतें ऐसी हैं जिनके करने का अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से हुक्म है और कुछ मुहब्बतें ऐसी हैं जिनसे मना कर दिया है। इसलिए मख़्लूक़ के साथ शरई हुदूद के अंदर रहते हुए मुहब्बतों

को रखना एक नाज़ुक मसअला है। अगर ताल्लुक़ घटे तब भी पकड़ होगी और अगर ज़रूरत से ज़्यादा ताल्लुक़ हो तब भी पकड़ होगी। क्योंकि इंसान "उन्स" से बना है इसलिए उनकी तबियतें आपस में मानूस हो जाती हैं और वे एक दूसरे के क़रीब रहना शुरू कर देते हैं। कई मर्तबा जब दो बंदे इकठ्ठे हो जाते हैं तो उनकी ख़ैर इकठ्ठी हो जाती है और कई मर्तबा दो बंदे इकठ्ठे हो जाते हैं तो उनका शर इकठ्ठा हो जाता है गोया डबल शर हो जाता है जोकि दोनों के लिए फ़ितने का बाइस बनता है। इसलिए इस मज़मून को अच्छी तरह समझना ज़रूरी है क्योंकि इंसानों को इंसानियत की मैराज तक पहुँचाने और अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने मे एक बड़ी रुकावट इसके मासिवा से गिरफ़्तारी है।

मख़्लूक़ की मुहब्बत में हद्दे फ़ासिल

इसमें हद्दे फ़ासिल यह है कि इंसान मख़्लूक़ से कट जाए और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से जुड़ जाए और फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की निस्बत के साथ मख़्लूक़ से ताल्लुक़ क़ायम कर लें यानी किसी इंसान से भी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की बुनियाद पर ताल्लुक़ न हो बल्कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की निस्बत से हो। इसलिए तसव्वुफ़ व सुलूक की किताबों में इसको 'इन्क़तअ अन-मख़्लूक़' यानी मख़्लूक़ से कटना कह देते हैं। जो बंदा 'इन्क़तअ अन-मख़्लूक़' हासिल नहीं कर सकता उसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मारिफ़त हासिल नहीं हो सकती। अब 'इन्क़तअ अन-मख़्लूक़' से यह हर्गिज़ मुराद नहीं है कि लोगों से बिल्कुल हट-कट कर किसी ग़ार में जाकर छिप जाएं बल्कि इसका मक़सद यह है कि सालिक के दिल में उसके ताल्लुक़ के असरात न हों। यह 'इन्क़तअ

अन-मख़्लूक़' तबत्तुल भी कहलाता है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا(المزمل:٨)﴾

और ज़िक्र कर अपने रब के नाम का और उसकी तरफ़ तबत्तुल अख़्तियार कर।

यानी मख़्लूक़ से तोड़ और अल्लाह से जोड़। फिर अल्लाह की निस्बत से मख़्लूक़ से ताल्लुक़ क़ायम कर। इसीलिए इंसान अपने माँ-बाप से मुहब्बत करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की वजह से, पीर और उस्ताद से मुहब्बत करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की वजह से, बीवी से मुहब्बत करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की वजह से, बच्चों से मुहब्बत करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की वजह से।

अगर ये तमाम मुहब्बतें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की निस्बत से हैं तो ये सब जाएज़ हैं और इन पर अज्र मिलेगा और अगर इन मुहब्बतों की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की निस्बत दब गई और नफ़्स की निस्बत क़ायम हो गई तो फिर ये मज़मूम हो जाएगी। इसलिए आज यह बयान किया जाएगा कि जाएज़ मुहब्बतें कौन सी हैं और नाजाएज़ मुहब्बतें कौन सी हैं।

तक्मील ईमान

चुनाँचे हदीस पाक में आया है :

﴿مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ وَاَعْطٰى لِلّٰهِ وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الْاِيْمَانَ﴾

जिसने अल्लाह के लिए मुहब्बत की, अल्लाह के लिए किसी से बुग़ज़ रखा, अल्लाह के लिए किसी को अता किया और

अल्लाह के लिए ही रोका तहक़ीक़ उसने ईमान को मुकम्मल कर लिया।

यह हुब्बे फ़िल्लाह सबसे पहला क़दम है जो कि महमूद और मतलूब है। इसीलिए हदीस पाक में आया है कि क़यामत के दिन सात क़िस्म के लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अर्श के साए में होंगे जिस दिन अर्श के सिवा कोई दूसरा साया न होगा। उनमें से दो वे होंगे जो अल्लाह के लिए एक दूसरे से मुहब्बत करते होंगे।

मुहब्बत फ़िल्लाह का मुक़ाम

अल्लाह के लिए मुहब्बत का अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ा मुक़ाम है। इसीलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ﴾ क़यामत के दिन इंसान उसी के साथ होगा जिससे उसे मुहब्बत होगी।

सहाबा किराम कहते हैं कि जब हमने यह हदीस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी तो हमें जितनी ख़ुशी उस हदीस को सुनकर हुई इतनी ख़ुशी हमें ज़िंदगी में कभी नहीं हुई थी। उनको नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सच्ची मुहब्बत तो पहले ही थी इसलिए जब यह हदीस मुबारक सुनी कि इंसान आख़िरत में उसी के साथ होगा जिससे उसे मुहब्बत होगी तो उनको गारन्टी मिल गई कि क़यामत के दिन महबूब के क़दमों में जगह नसीब हो जाएगी। इसलिए वह ख़ुश हो गए।

आज भी यह चीज़ इसी तरह मौजूद है। अगर आज भी किसी को अल्लाह वालों से अल्लाह के लिए मुहब्बत हो तो यह हदीस पाक उन पर भी सादिक़ आ सकती है क्योंकि यह हदीस पाक

अब भी उन्हीं फ़ज़ाइल के साथ मौजूद है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन्हीं का साथ अता फ़रमाएंगे। क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَابِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ. (الطور:٢١)

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल किए और उनकी औलादों ने उनकी इत्तिबा करने की कोशिश की तो हम उनकी औलादों को क़यामत के दिन उनके साथ इकठ्ठा कर देंगे और उनके आमाल की कमी को पूरा करके उनको वही दर्जा अता फ़रमा देंगे।

इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन ने एक बात तो यह लिखी कि जो उलमा और मशाइख़ की औलाद है उनके लिए इस आयत में ख़ुशख़बरी है कि अगर उनकी औलाद अपने वालदैन की तरह तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी अख़्तियार करने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला उन पर नरमी फ़रमा देंगे और उनको उनके माँ-बाप के साथ मिला देंगे। और दूसरी बात यह लिखी कि इस आयत में उस्ताद और मशाइख़ के शागिर्दों के लिए ख़ुशख़बरी है क्योंकि वह भी उनकी रूहानी औलाद होती है। अगर उनको अपने उस्तादों और मशाइख़ के साथ सच्ची मुहब्बत होगी तो उनका भी अपने उस्तादों और मशाइख़ के साथ हश्र फ़रमा दिया जाएगा।

उलमा ने तफ़्सीर के अंदर लिखा है कि जिन दो बंदों को अल्लाह के लिए मुहब्बत होगी अगर उनमें से एक अपने तक़्वे की वजह से बड़ा बुलन्द परवाज़ होगा और ऊँचे मुक़ामात पाएगा और दूसरा कोशिश तो करेगा मगर पस्त परवाज़ होगा। अगर उनको

इसी मुहब्बत पर मौत आई होगी तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन इस पस्त परवाज़ को भी उसके बुलन्द परवाज़ साथी के मुक़ामात अता फ़रमा देंगे। सुब्हानअल्लाह अल्लाह के लिए की जाने वाली मुहब्बत का अल्लाह के हाँ बड़ा मुक़ाम है। इस मुहब्बत के सलामत रहने की दुआ किया करें, क्या मालूम कि किस भाई के साथ क़ायम हुआ दीनी ताल्लुक़ क़ुबूल हो जाए और हमारी बख़्शिश का ज़रिया बन जाए।

अब यहाँ पता चला कि जिस बंदे को अपने शेख़ के साथ सच्ची और खरी मुहब्बत का ताल्लुक़ होगा वह क़यामत के दिन अपने शेख़ के साथ होगा। उसको अपने शेख़ के साथ मुहब्बत थी वह उनके साथ, इस तरह यह भी ऊपर पहुँच गया। उनको अपने शेख़ से मुहब्बत थी, वह ऊपर पहुँचे तो यह भी पहुँच गया। इसी तरह चलते चलते सबको आख़िर में सहाबा में से किसी सहाबी से मुहब्बत होगी, ये सब उस सहाबी के साथ मिल जाएंगे। फिर उस सहाबी को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से मुहब्बत होगी, ज़ब वह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ मिलेंगे तो इसको भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ नसीब हो जाएगा। मालूम हुआ कि अल्लाह वालों के साथ मुहब्बत करने वालों को क़यामत के दिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के क़दमों में जगह नसीब हो जाएगी।

तीन मुन्फ़रिद अहकाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में एक चीज़ पर नज़र जमाने का हुक्म दिया है और दो चीज़ों से नज़र हटाने का हुक्म

दिया है। जिस चीज़ पर जमाने का हुक्म दिया है उसके बारे में इर्शाद फ़रमाया :

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ.

(الكهف:٢٨)

और तू अपने आपको उन लोगों के साथ नत्थी रख जो सुबह व शाम अल्लाह की रज़ाजोई के लिए उसको याद करते हैं और तू अपनी निगाहें उनके चेहरों से इधर-उधर मत हटा।

अब देखिए कि अल्लाह तआला निगाहें जमाने का हुक्म दे रहे हैं। मालूम हुआ कि अल्लाह! अल्लाह! करने वाले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इतना बुलन्द मुक़ाम पा लेते हैं कि परवरदिगार चाहते हैं कि उनके चेहरे पर नज़र पड़े तो जमी रहे। अगर नज़र हटा ली तो ﴿تُرِيدُونَ زِينَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا﴾ के मिस्दाक़ हम दुनियावी ज़ेब व ज़ीनत को चाहने वाले बन जाएंगे।

यहाँ दिल में एक सवाल पैदा होता है कि अल्लाह वालों के चेहरों पर नज़रें जमाने का हुक्म क्यों दिया गया है? इसका जवाब यह है कि ये वे लोग होते हैं जिनके चेहरों को देखकर अल्लाह याद आ जाता है। इंसान अपनी शक्ल को उनके आइने में देखता है जिसकी वजह से एहसासे नदामत पैदा होता है और ध्यान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ जाता है। इसलिए अल्लाह तआला ने यह बात पसन्द फ़रमाई कि मेरे प्यारे बंदों को लोग मुहब्बत की नज़र से देखते रहें।

हज़रत बयज़ीद बुस्तामी रह० के एक शागिर्द थे। वह फ़रमाया करते थे कि जब कभी मेरे दिल पर ज़ुलमत आती थी मैं जाकर अपने शेख़ के चेहरे पर नज़र डालता था और मेरे दिल की गिरह

खुल जाती थी। यह अल्लाह वालों की ज़ियारत की तासीर होती है जिसकी वजह से दिल नेकी तरफ़ माइल होता है। उनकी सोहबत में रहकर दुनिया भूल जाती है। जितनी देर भी उनके पास बैठा जाए दुनिया का ख़्याल नहीं आता। उनके दिलों से दुनिया ऐसे निकल चुकी होती है कि जो बंदा उनके पास जाकर बैठ जाए उस को भी दुनिया याद नहीं आती। उनके दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत इस क़द्र उतर चुकी होती है कि जो भी उनके पास बैठ जाए उन के दिल भी अल्लाह तआला की मुहब्बत से भर जाते हैं।

और जिन दो चीज़ों से नज़रें हटाने का हुक्म दिया है उनमें से एक ग़ैर-महरम है, फ़रमाया :

﴿قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوا مِنْ اَبْصَارِهِمْ. (النور:٣٠)﴾

आप ईमान वालों से फ़रमा दीजिए कि आप अपनी नज़रें नीची रखें।

यानी ग़ैर-महरमों से अपनी निगाहों को हटा लें। और दूसरी बात यह कि जिन लोगों को माल पैसा मिल जाता है, मुसलमान हो या काफ़िर, उनको दूसरे लोग देख-देखकर ललचाते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने उनसे भी नज़रें हटाने का हुक्म दिया है। चुनाँचे फ़रमाया :

﴿وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖ(النحل:٨٨)﴾

और ऐ महबूब! उनको जो कुछ मिला है आप उस पर निगाह न डालें।

क्योंकि यह चंद दिन की बात है। गोया फ़रमाया कि चार दिन की चांदनी है फिर अंधेरी रात।

क्योंकि जमाल और माल दोनों बंदे को अपनी तरफ़ खींचते हैं। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दोनों पर नज़रें जमाने से मना फ़रमा दिया। इन दोनों पर नज़रें जमाने के बजाए अल्लाह वालों पर नज़रें जमाओ, तुम्हें अल्लाह तआला की मुहब्बत नसीब हो जाएगी।

शुआओं (किरनों) के ज़रिए इलाज

यह नज़र भी बड़ी क़ीमती चीज़ है। अल्लाह वालों को अल्लाह तआला ने एक रूहानी क़ुव्वत दी हुई होती है। देखें कि साइन्स की दुनिया मैगनेट की शुआओं को मानती है। ज़ाहिर में तो मेगनेट दूर पड़ा होता है लेकिन लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है। हक़ीक़त में उसकी शुआएं लोहे को अपनी तरफ़ खींच रही होती हैं। जिस तरह मक़्नातीस की शुआएं लोहे को खींचती हैं उसी तरह अल्लाह वालों के दिलों की शुआएं भी सालिकों (मुरीदों) के दिलों को खींच रही होती हैं। और लोग कशिश महसूस कर रहे होते हैं। आज कई बीमारियों का शुआओं से इलाज होता है। मसलन लोग अस्पताल में जाकर कैंसर का इलाज शुआओं के ज़रिए करवाते हैं। अगर शुआओं के ज़रिए बदन की ज़ाहिरी बीमारियाँ ख़त्म हो सकती हैं तो क्या निगाहों की शुआओं से बदन की बातिनी बीमारिया नहीं दूर हो सकतीं। याद रखें कि जब बुरों की नज़र पड़ती है तो लोग बीमार हो जाते हैं और जब अच्छों की नज़र पड़ती है तो लोग शिफ़ा पा जाते हैं। इसलिए अल्लामा इक़बाल रह० ने कहा—

अक़्ल के पास ख़िर्द के सिवा कुछ और नहीं
तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं

अल्लाह करे हम भी किसी की नज़र में रहना सीखें। कहने वालों ने कहा—

न किताबों से न वअज़ों से न ज़र से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

यह फ़ैज़ाने नज़र था या के मक्तब की करामत थी
सिखाए किसने इस्माईल को अदाबे फ़रज़न्दी

आँखों में बस गई हैं क़यामत की शोख़ियाँ
दो चार दिन रहे थे किसी की निगाह में

जो किसी अल्लाह वाले की नज़र के सामने चंद दिन गुज़ार लेता है तो वह नज़र ऐसी तासीर पैदा कर देती है कि उसकी अपनी नज़र भी काम करना शुरू कर देती है, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह वालों की मुहब्बत इंसान के लिए ज़रूरी होती ताकि उसकी बातिनी बीमारियाँ दूर हों और उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत समा सके।

तार्रुफ़ की अहमियत

ईमान वालों के साथ भाई चारा और दोस्ती इंतिहाई ज़रूरी है क्योंकि अगर समाज में रहते हुए इंसान सलाम, कलाम और पैग़ाम का सिलसिला न रखे तो ज़िंदगी कैसे गुज़रेगी। इसीलिए हदीस पाक में आया है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اكثروا من معرفة الناس فان لكل مومن شفاعة﴾

तुम लोगों से ज़्यादा तार्रुफ़ किया करो क्योंकि मोमिन को शफ़ाअत का हक़ हासिल है।

हो सकता है कि जब कल क़यामत के दिन तुम्हारी पूछताछ हो रही हो तो कोई ऐसा वाक़िफ़ बंदा मिल जाए जिसकी बख़्शिश हो चुकी हो, वह शफ़ाअत करे और तुम्हारी बख़्शिश का ज़रिया बन जाए। इसलिए ईमान वालों को चाहिए कि वे एक दूसरे के साथ तारुफ़ किया करें। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا.(الحجرات:١٣)﴾

और हमने तुम्हारे क़बीले इसलिए बनाए ताकि तुम एक दूसरे के साथ तारुफ़ कर सको।

हमने कई लोगों को देखा है कि उनको लोगों के साथ तार्रुफ़ का कोई ख़्याल नहीं होता। अगरचे यह चीज़ मतलूब नहीं है लेकिन अगर कहीं मौक़ा मिले तो बातचीत करके पूछ लेना चाहिए कि आप कौन हैं, कहाँ से हैं क्योंकि मुसलमान होने की वजह से एक ताल्लुक़ है।

बेवफ़ाई का ज़माना

इन ताल्लुक़ात को अगर हम शरई हुदूद के अंदर रहकर मज़बूत करें तो अल्लाह के हाँ इसका फ़ायदा होगा लेकिन इंतिहाई अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि आज ऐसी बेवफ़ाई का ज़माना आ चुका है कि सालों की रिश्तेदारियों को लम्हों के अंदर तोड़कर रख देते हैं। ख़ून इतने सफ़ेद हो गए हैं कि सगा भाई सगे भाई से नहीं बोलता। यह कहाँ की इंसानियत है और कहाँ की मुसलमानी है। उनके दर्मियान "मैं" और हसद की वजह से ऐसी जंग चल रही होती है कि वे एक दूसरे की गर्दन मार देने के लिए तैयार हो जाते हैं। अल्लाह तआला को यह चीज़ पसन्द नहीं है।

दोस्ती में दीनदारी की अहमियत

दीनी भाईयों की अपनी अहमियत है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ. (الحجرات:١٠)﴾ बेशक ईमान वाले भाई-भाई हैं।

दीनी रिश्ता ख़ूनी रिश्ते से भी ज़्यादा गहरा होता है। इस रिश्ते की अपनी एक मिठास और कशिश है। अलबत्ता इंसान जिसको भी दोस्त बनाए, चाहिए कि उसकी दीनदारी की बुनियाद पर उस को दोस्त बनाए क्योंकि अगर फ़ासिक़ को दोस्त बनाएगा तो ख़ुद भी फ़ासिक़ बन जाएगा और अगर नेकों को दोस्त बनाएगा तो वह ख़ुद भी नेक बन जाएगा। इसीलिए फ़रमाया गया :

﴿اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِكْ.﴾

आदमी अपने दोस्त के दीन पर आता है, बस तुम में से हर कोई देखे कि वह किसको ख़लील (दोस्त) बना रहा है।

आम मुशाहिदा किया गया है कि अगर दोस्ती की बुनियाद नेकी और तक़्वे पर हो तो फिर यह ताल्लुक़ अच्छा चलता है और अगर सिर्फ़ दुनियवी गर्ज़ की बिना पर ताल्लुक़ हो तो उल्टा वबाल बन जाता है।

दोस्ती के आदाब

इमाम बाक़र रह० ने अपने बेटे इमाम जाफ़र सादिक़ रह० को नसीहत की, "ऐ बेटे! पाँच बंदों के साथ हर्गिज़ दोस्ती न करना बल्कि रास्ता चलते हुए अगर वे तुम्हारे साथ चलें तो उनके साथ भी न चलना। इमाम जाफ़र रह० ने पूछा, अब्बा जान! वे कौनसे पाँच बंदे हैं?

वह फ़रमाने लगे, एक झूठा इंसान है। पूछा क्यों? उन्होंने फ़रमाया कि झूठा इंसान दूर को क़रीब साबित करेगा और क़रीब को दूर साबित करेगा। इस तरह वह तुझे धोका देगा।

दूसरा इंसान फ़ासिक़ व फ़ाजिर है। फ़ासिक़ उस आदमी को कहते हैं जिसको अल्लाह के हुक्मों की परवाह न हो। जब अपनी मर्ज़ी हो तो अमल कर ले और मर्ज़ी न हो तो अमल न करे। पूछा वह क्यों? फ़रमाया इसलिए कि फ़ासिक़ आदमी तुम्हें एक लुक़्मे या एक लुक़्मे से कम क़ीमत में बेच देगा। बल्कि वह सौदा भी कर देगा और भाव का भी पता नहीं चलने देगा। बेटे ने पूछा, अब्बू! एक लुक़्मे की तो समझ में आती है लेकिन एक लुक़्मे से कम का क्या मतलब है? फ़रमाने लगे, एक लुक़्मे से कम से मुराद यह है कि वह तुझे एक लुक़्मा मिलने की उम्मीद पर बेच देगा।

तीसरा बेवक़ूफ़ इंसान है। पूछा बेवक़ूफ़ से दोस्ती क्यों न करें। फ़रमाया इसलिए कि वह तुझे फ़ायदा पहुँचाना चाहेगा लेकिन तुझे नुक़सान पहुँचा बैठेगा। इसीलिए कहते हैं कि बेवक़ूफ़ दोस्त से अक़्लमंद दुश्मन बेहतर होता है।

चौथा बख़ील इंसान बख़ील है। इस कंजूस और मक्खी चूस बंदे से भी दोस्ती न करना। पूछा वह क्यों? फ़रमाया इसलिए कि वह तुझे इस वक़्त छोड़ देगा जब तुझे उसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत होगी यानी जब तू उसका मोहताज होगा तो वह तुझे धोका दे जाएगा।

पाँचवे नंबर पर फ़रमाया कि जो इंसान रिश्ते नाते तोड़ने वाला हो उससे भी दोस्ती न करना इसलिए कि क़ुरआन में उस पर अल्लाह की लानत आई है।

सुब्हानअल्लाह! पहले ज़माने में माँ-बाप ने इल्म सीखा होता था इसलिए वे अपने तजरिबात का निचोड़ अपने बच्चों को बताया करते थे। आज है कोई ऐसा माँ-बाप जो बच्चों से कहे कि मैंने मारिफ़त की चंद बातें सीखी हैं, इनको ज़हन में रखना। इस किस्म की कोई नसीहत करते ही नहीं, बच्चों से क्या गिला करें कि वे मानते नहीं। यह हमारी कमज़ोरी है कि हम उनको आदाब सिखाते ही नहीं।

हज़रत सुल्तान बाहू रह० पाकिस्तान में हमारे ही ज़िले में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनको सुल्तानुल-आरिफ़ीन कहा जाता है। वह सिलसिला आलिया क़ादरिया के पहले दौर के बड़े मशाइख़ में से थे। उनके पंजाबी शे'र बड़े ही मारूफ़ हैं। वह दोस्ती के आदाब के बारे में फ़रमाते हैं :

तर्जुमा : बुरे दोस्त के साथ दोस्ती न करें और अपने नसब को धब्बा न लगाएं। कढ़वे कुँए कभी मीठे नहीं हो सकते चाहे तुम उनमें लाखों मन गुड़ डाल दो। कव्वे के बच्चे कभी हंस नहीं बना करते चाहे तुम उसको मोतियों की ग़िज़ा खिलाते रहो। सांप के बच्चे वफ़ादार नहीं हो सकते चाहे चुल्लू में दूध लेकर ही उसको क्यों न पिला दें और हंज़ल कभी तरबूज़ नहीं बनता चाहे उस फल को तुम मक्के ही क्यों न लेकर चले जाओ।

बात तो बिल्कुल ठीक है, कुछ लोग वाक़ई ऐसे होते हैं जिन पर नेकी का कोई असर नहीं होता। अगर ऐसे दोस्त हों तो उनसे बचने की ज़रूरत है। वे कढ़वे कुंए की मानिन्द है, सांप के बच्चे की मानिन्द है, कव्वे के बच्चे की मानिन्द है और वह हंज़ल के फल की मानिन्द है। उससे जुदा रहना चाहिए वरना उसकी

सोहबत तुझे भी बुरा बना देगी। जो आदमी बुरों की दोस्ती अख़्तियार करता है और कहता है कि मेरा दोस्त तो वाक़ई बुरा है लेकिन मुझ पर उसकी बुराई का कोई असर नहीं होता, वह झूठ बोलता है। यक़ीन जानिए कि वह ऐसे यक़ीन से झूठ बोलता है जैसे यक़ीन से अल्लाह के वली दीन की दावत देते हैं।

बीवी बच्चों की मुहब्बत

इंसान की ज़िंदगी में बहुत सारे ताल्लुक़ात जज़्बात के साथ वाबस्ता होते हैं। ख़ासकर बीवी बच्चों के साथ बहुत ही जज़्बाती ताल्लुक़ होता है। इसलिए इंसान उनकी खुशी को अपनी खुशी समझता है और उनके ग़म को अपना ग़म समझता है। उसे उनके साथ इतना प्यार होता है कि वह अपनी तकलीफ़ तो बर्दाश्त कर जाता है लेकिन उससे उनकी तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं होती। यह मुहब्बत शरई मुहब्बत है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهِ.﴾ तुम में से सबसे बेहतर वह है जो तुम में से अपने घरवालों के लिए बेहतर हो।

मुहब्बत क़ाबिले मज़म्मत कब बनती है?

हर चीज़ की एक हद होती है। जब कोई चीज़ हद से बढ़ जाती है तो वह नुक़सानदेह बन जाती है। बीवी की मुहब्बत महमूद है बशर्तेकि शरिअत की हुदूद के अंदर रहकर उससे ताल्लुक़ रखे। जब यह ताल्लुक़ इंसान को ग़ैर शरई कामों पर मजबूर कर दे तो फिर यह बुरा बन जाता है। कितने ही ऐसे लोग हैं जो बीवी के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए रिश्वत लेते हैं, धोका देते हैं और मालूम नहीं कि कौन-कौन से पापड़ बेलते हैं।

इसके अलावा औलाद का बहाना बनाकर नाजाएज़ माल कमाते हैं। ऐसी सूरतेहाल है तो बीवी बच्चों का यह प्यार उनके लिए क़ाबिले अज्र नहीं बल्कि पकड़ के क़ाबिल है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ.

(التغابن:١٤)﴾

ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बीवियों में से और तुम्हारी औलादों में से तुम्हारे दुश्मन हैं, उनसे बचकर रहना।

बताने का मक़सद यह था कि यह मुहब्बत बड़ी अच्छी चीज़ है और अल्लाह तआला को भी पसन्द है लेकिन इस मुहब्बत की रौ में इतना न बह जाना कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म टूटने लग जाएं और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतें छूटने लग जाएं। नतीजा यह निकला कि अगर ये ताल्लुक़ात शरई हुदूद के अंदर हैं तो क़ाबिले अज्र हैं और अगर हुदूद से निकल जाएं तो क़ाबिले मज़म्मत हैं क्योंकि हमारे पास कसौटी शरिअते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही है।

माल और औलाद के ज़रिए आज़माइश

एक और जगह पर इर्शादे बारी तआला है :

﴿إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ.(التغابن :١٥)﴾

बेशक तुम्हारे अमवाल (माल) और औलाद तुम्हारे लिए फ़ितना हैं।

यहाँ यह बात ज़हन में रखना कि यह फ़ितने का लफ़्ज़ उर्दू

ज़बान का लफ़्ज़ नहीं है बल्कि अरबी का लफ़्ज़ है। कभी-कभी एक ही लफ़्ज़ बहुत सी ज़बानों में इस्तेमाल होता है मगर माने मुख़्तलिफ़ होते हैं। मसलन 'ज़लील' का लफ़्ज़ उर्दू में बहुत ही निचले दर्जे के इंसान के लिए इस्तेमाल होता है जबकि अरबी में कमज़ोर आदमी के लिए इस्तेमाल होता है। मिसाल के तौर पर क़ुरआन मजीद में ईमान वालों के लिए फ़रमाया गया :

﴿لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ.(آل عمران:۱۲۳)﴾

और तुम्हारी मदद कर चुका है अल्लाह बदर की लड़ाई में और तुम कज़ोर थे।

इसी तरह ﴿دلا﴾ का लफ़्ज़ अरबी ज़बान में आम है। हज व उमरा पर जाएं तो लोगों को वहाँ के मुक़ामी लोगों की शर्टों के पीछे "दल्ला" कंपनी का नाम लिखा हुआ नज़र आता है। जद्दा में एक टावर का नाम भी 'दल्ला टावर' है। वहाँ यह लफ़्ज़ बिल्कुल एब नहीं समझा जाता है जबकि यही "दल्ला" का लफ़्ज़ अगर उर्दू में बोला जाए तो उसका बहुत ही बुरा माने बनता है बल्कि अगर कोई आदमी किसी को दल्ला कह दे तो उसे गाली के तौर पर समझा जाता है।

हम 1985 ई० में जब वाशिंगटन गए तो उस वक़्त वहाँ सऊदी अरब की तरफ़ से बंदर बिन सुल्तान सफ़ीर थे। हम बैठकर सोचते थे कि पता नहीं उसके वालिद उसकी पैदाईश पर नाराज़ थे जिस की वजह से उसका नाम बंदर रखा। आख़िर पता चला कि अरबी ज़बान में बंदर ख़ूबसूरत इंसान को कहते हैं। उस वक़्त हमें मालूम हुआ कि यह उर्दू के बंदर नहीं बल्कि अरबी के बंदर हैं।

इसी तरह अमवाल और औलाद अरबी ज़बान का फ़ित्ना हैं

और उर्दू का फ़ित्ना नहीं। अरबी में फ़ित्ना आज़माइश को कहते हैं और उर्दू ज़बान में फ़साद मचाने वाले को फ़ितना कहते हैं।

एक आलिम थे। उनके घर में झगड़ा रहता था। आख़िर हमें सुलझाना पड़ा। झगड़ा यह था कि वह आलिम अपने बच्चों को फ़ितना कह देते थे और बीवी कहती कि आप पढ़े लिखे होने के बावजूद औलाद को फ़ितना क्यों कहते हैं? जब हमें पता चला और हमारे सामने मसअला पेश हुआ तो फिर हमने उनकी बीवी को समझाया कि आप भी ठीक कहती हैं और वह भी ठीक कहते हैं। आप इसे उर्दू ज़बान के मानी में समझ रही हैं और वह इसे अरबी ज़बान के मानी में कह रहे हैं। क्योंकि औलाद आज़माइश होती है। वैसे भी बंदे को अपनी औलाद से प्यार होता है और प्यार में बंदा पता नहीं अपनी औलाद को क्या कुछ कह देता है। इतनी बातें करने के बाद झगड़ा ख़त्म हुआ।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि औलाद आज़माइश कैसे है? इसका जवाब यह है कि औलाद प्यारी होती है। अगर बच्चा इतनी उम्र को पहुँच जाए कि उस पर नमाज़ पढ़ना ज़रूरी हो जाए तो उसे बाप एक ही दफ़ा जगाता है, मुहब्बत की वजह से बार-बार नहीं जगाता ताकि उसकी नींद में ख़लल न हो हालाँकि बालिग़ होने के बाद नमाज़ न पढ़ने की वजह से गुनहागार हो रहा होता है। बाप मुहब्बत के हाथों मजबूर होकर गुनाह करवा रहा होता है। फ़र्ज़ छूट रहे होते हैं और बाप इस गुनाह में बराबर शरीक होता है। इसलिए औलाद को आज़माईश कहा गया है। इसी तरह बीवी से कभी-कभी इसलिए बात नहीं करता कि नाराज़ न हो जाए।

शरिअत ने बीवी-बच्चों से मुहब्बत रखने का हुक्म भी दिया है और हदें भी तय कर दी हैं। इसलिए हमें चाहिए कि कि हम अपने बीवी बच्चों के साथ शरिअत की हदों के अंदर रहकर ताल्लुक़ रखें।

दीनदारी के साथ हुस्ने सुलूक की ज़रूरत

कुछ ऐसे लोगों को भी देखा है कि जब वे दीन में आगे बढ़ते हैं तो उनका बीवी बच्चों से बर्ताव बहुत ही नामुनासिब होता है। यह चीज़ भी ग़लत है। जो दीनदार बन जाए उसको तो चाहिए कि बीवी-बच्चों पर और ज़्यादा मेहरबान हो जाए। ऐसा हर्गिज़ न बनें कि उनकी बीवियाँ उनकी दीनदारी से तौबा करें और कहें कि ऐसी दीनदारी से तो अल्लाह की पनाह।

कुछ लोग तो आलिम और समझदार होने के बावजूद ऐसे होते हैं कि अगर बीवी नमाज़ में सुस्ती कर जाए तो एक दफ़ा उसे नमाज़ के लिए उठाते हैं। इससे पहले तो नमाज़ न पढ़ने पर टोकते नहीं थे। अब वह ज़िद कर जाती है। पीर साहब से बैअत करके अगर ख़ुद कुछ जागते हैं तो कहते हैं कि बीवी भी फ़ौरन जाग जाए। वह इतने सालों से सोई हुई है वह कैसे जागेगी। उसको तो जागने में टाइम लगेगा। वह सुबह जगाने से भी नहीं जागती तो अब सूफ़ी साहब का पारा चढ़ जाता है और कहता है कि सोई पड़ी है, इसे शर्म नहीं आती, मुर्दार बनकर पड़ी हुई है और हराम खाती है। इसका नतीजा यह निकलेगा कि वह भी आगे से ज़िद्द करेगी। इससे काम उल्टा बिगड़ेगा। इसलिए जो लोग दीनी चेहरा-मोहरा अख़्तियार करें उनको चाहिए कि इसकी

भी लाज रखें कि उसके बीवी बच्चे ख़ुशी महसूस करें कि हम एक दीनदार हस्ती के ज़ेरे साए ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं वरना हमने ऐसी औलाद भी देखी है कि वह कहती है कि अगर दीनदारी यही है जैसी हमारे अब्बू में है तो हम इससे बाज़ आए। इसमें दीन की किसी क़िस्म की कमज़ोरी का इज़्हार नहीं होता बल्कि ज़ाती कमज़ोरियाँ होती हैं मगर क्योंकि घरवाले भुगत रहे होते हैं इसलिए वह ऐसी बातें करते नज़र आते हैं।

मुसलमान बनने में रुकावट

बैरून मुल्क में एक साहब हमारे दोस्त थे। उन्होंने अहले किताब में शादी की। नाम अहले किताब का होता है जबकि चिट्टी चमड़ी की मुहब्बत होती है। वह कहने लगे कि जी मैंने अहले किताब में शादी कर ली। हम समझ गए और कहा कि ठीक है जो किताब आपने पढ़ी है वह आपको मिल गई।

वह एक दिन मेरे पास आए और कहने लगे कि मैं और मेरी बीवी कुछ वक़्त के लिए आना चाहते हैं। मैंने कहा, बहुत अच्छा। वह अपनी बीवी को लेकर आए। उनकी बीवी को पर्दे में बिठा दिया गया। उसने कहा, मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ। मैंने कहा, ज़रूर पूछें। उसने इस्लाम के बारे में सवालात पूछे। इस आजिज़ ने उनके जवाबात दिए। दस पंद्रह मिनट के बाद वह मुतमइन हो गई यहाँ तक कि उसने कह भी दिया कि मैं इस्लाम से बहुत ही मुतमइन हूँ। यह सुनकर मैंने कहा, फिर आप मुसलमान क्यों नहीं बन जातीं? वह अपने ख़ाविन्द की तरफ़ इशारा करके कहने लगी कि इस बंदे से पूछें क्योंकि इसकी वजह

से मैं मुसलमान नहीं बन रही हूँ। वह ख़ाविन्द के सामने बैठकर कहने लगी कि नाम इसका अब्दुल्लाह है और इसके काम शैतानों वाले हैं। जिस दिन यह सीधा हो जाएगा उस दिन मैं भी कलिमा पढ़ लूंगी। वह बंदा अपनी बीवी के दीन में आने में रुकावट बना हुआ था।

वह तबियत का तो अच्छा था मगर असल रुकावट थी कि उसमें गुस्सा बहुत था। ज़रा-ज़रा सी बात पर गुस्से में आ जाता और बीवी को ऐसी-ऐसी गालियाँ देता था कि अल्लाह की पनाह। वह कहती थी कि यह इंसान तो नहीं है बल्कि एक जानवर की तरह है। वैसे भी जो आदमी मामूली बातों पर गुस्से में आकर बर्तन तोड़ने पर आ जाए और ख़ूंख़ार नज़र आए तो उसको इंसान कौन कहेगा। तो इंसान ऐसा भी दीनदार न बने कि उसकी दीनदारी को देखकर लोग दीन में आने से रुक जाएं। इसे चाहिए कि दीन की लाज रखते हुए उनके साथ इतना अच्छा सुलूक करे कि वे ख़ुशी के साथ दीन में दाख़िल हो जाएं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपने घरवालों से बर्ताव

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने घरवालों के साथ बहुत ही मुहब्बत के साथ पेश आते थे। चुनाँचे आपने इर्शाद फ़रमाया ﴿أنا خَيرُكُم لِأهلي﴾ मैं तुममें से अपने घरवालों के लिए सबसे बेहतर हूँ।

एक बार आप अपने घर में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हज़रत आएशा प्याले में पानी पी रही थीं। आपने दूर से फ़रमाया, हुमैरा!

मेरे लिए भी कुछ पानी बचा देना। उनका नाम तो आएशा था लेकिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनको मुहब्बत की वजह से हुमैरा फ़रमाते थे। इस हदीस मुबारक से पता चला कि हर ख़ाविन्द को चाहिए कि वह अपनी बीवी का मुहब्बत में कोई ऐसा नाम रखे जो उसे भी पसन्द हो और इसे भी पसन्द हो। ऐसा नाम मुहब्बत की अलामत होता है और जब इस नाम से बंदा अपनी बीवी को पुकारता है तो नज़दीकी महसूस होती है। यह सुन्नत है।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब फ़रमाया, हुमैरा! मेरे लिए भी कुछ पानी बचा देना तो सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कुछ पानी पिया और कुछ बचा दिया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनके पास तशरीफ़ ले गए और उन्होंने प्याला हाज़िरे ख़िदमत कर दिया। हदीस पाक में आया है कि जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने वह प्याला हाथ में लिया और आप पीने लगे तो आप रुक गए और हज़रत आएशा से पूछा, हुमैरा! तूने कहाँ से लब लगाकर पानी पिया है? किस जगह मुँह लगाकर पानी पिया था उन्होंने निशानदिही की कि मैंने यहाँ से पानी पिया था। हदीस पाक में आया है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने प्याले के रुख़ को फेरा और अपने मुबारक लब उसी जगह पर लगाकर पानी नोश फ़रमाया। जब ख़ाविन्द अपनी बीवी को ऐसी मुहब्बत देगा तो वह क्योंकर घर आबाद नहीं करेगी।

अब सोचिए कि रहमतुल्-लिल-आलमीन तो आपकी ज़ाते मुबारक है। आप सैय्यदुल अव्वलीन-वल-आख़िरीन हैं। इसके बावजूद आपने अपनी बीवी का बचा हुआ पानी पिया। होना तो

यह चाहिए था कि आप का बचा हुआ पानी वह पीतीं। मगर यह सब कुछ मुहब्बत की वजह से था।

एक मर्तबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलाम घर तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने हज़रत आएशा से फ़रमाया, हुमैरा! तुम मुझे मक्खन में छुआरे मिलाकर खाने से ज़्यादा महबूब हो। वह मुस्कराकर कहने लगीं, ऐ अल्लाह के नबी आप मुझे मक्खन और शहद मिलाकर खाने से ज़्यादा महबूब हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुस्करा कर फ़रमाया, हुमैरा! तेरा जवाब मेरे जवाब से ज़्यादा बेहतर है।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दिल में जितनी ख़शियते इलाही थी उसका तो हम अंदाज़ा ही नहीं कर सकते। मगर आप का अपने घरवालों के साथ उन्स, प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक़ था। यह चीज़ ऐन मतलूब है और अल्लाह तआला भी इस चीज़ को पसन्द करते हैं।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब भी घर में तशरीफ़ लाते थे तो हमेशा मुस्कराते चेहरे के साथ तशरीफ़ लाते थे। हदीस पाक के आइने में ज़रा हम अपने चेहरे को देखें कि जब हम अपने घर आते हैं तो तेवरियाँ चढ़ी हुई होती हैं।

मुस्कराहट मुहब्बत का सरचश्मा

कराची के एक साहब का मुझ से ताल्लुक़ था। एक बार वह मियाँ-बीवी दोनों मिलने आए। वह कहने लगे, हज़रत हमारी शादी को चार साल हो चुके हैं। और हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अब हमारा गुज़ारा मुश्किल है। क्योंकि हम दोनों आप से बैअत

हैं। हाज़िर इसलिए हुए हैं कि आप से इजाज़त ले लें और नसीहत भी ले लें ताकि आप नाराज़ न हों कि तुमने तो बताया ही नहीं। यह मियाँ साहब के अल्फ़ाज़ थे।

अब उन्होंने आकर कुछ बातें बतायीं। ऐसे हालात में पीरों का यह काम होता है कि Read in between the line (बैनस्सुतूर असल हक़ीक़त को समझें)। कुछ तो मुरीद आकर बताते हैं और कुछ उनको पढ़ना पढ़ता है कि अंदर की बात क्या है। ख़ैर अंदर की बात का पता चल गया कि इन दिनों शौहर का कारोबार कुछ मुश्किल सा बना हुआ है और जब वह घर आते हैं तो वही फ़िक्रें और वही सोचें उन्हें घेरे रहती हैं। बीवी उस वक़्त खाना खाती है जब वह घर आते हैं। और जब वह घर आते हैं तो उनका मूड बना होता है। ऐसी हालत में तो घर में मुहब्बत वाला माहौल पैदा नहीं किया जा सकता।

मैंने उनसे कहा कि आप जिस फ़ैसलाकुन नतीजे पर पहुँचे हैं उसके लिए आप छः महीने इंतिज़ार करें। वह कहने लगे, जी बहुत अच्छा। मैंने कहा कि शौहर यह वादा करे कि वह एक काम करेगा। उसने कहा, जी हज़रत मैं ज़रूर करूंगा। मैंने कहा कि वादा यह लेना है कि आप जब भी घर आएं, आप अपनी बीवी को देखकर मुस्कराएंगे। उनको यह छोटी सी बात नज़र आई। वह कहने लगे, जी हज़रत! बहुत अच्छा। उस वक़्त इस बात की हक़ीक़त को न पा सके। अब बताएं कि बीवी इंतिज़ार में हो, मिलकर खाना खाना चाहती हो। शौहर के लिए दरवाज़े खोले और शौहर पर उसकी नज़र पड़े और वह मुस्कराए तो बहारें शुरू हो जाती हैं या नहीं?

मैंने उनको छः महीने का वक़्त दिया था। उन्होंने उस नसीहत पर अमल शुरू कर दिया। चुनाँचे छः महीने तो क्या एक महीने बाद फ़ोन आया कि हज़रत जितनी मुहब्बत की ज़िंदगी हम अब बसर कर रहे हैं, हमने इसके बारे में कभी सोचा भी नहीं था। ज़रा सोचिए कि एक मुस्कराहट न होने की वजह से दोनों की ज़िंदगी ख़राब हो कर रह गई थी। जहाँ नबी अलैहिस्सलाम की एक सुन्नत के छूटने पर घर उजड़ने की नौबत आ रही थी, वही सुन्नत ज़िंदा करने पर घर जन्नत का मंज़र पेश करने लगा।

अल्लाह की मुहब्बत की छतरी

आदमी को चाहिए कि बच्चों को मुहब्बत की वजह से शरिअत मुताहिरा के अहकाम को पीठ पीछे न डालने दे। मसलन बच्चे यह ज़िद करें कि अब्बू हमें तो आप टीवी लाकर दें। बच्चों की ऐसी ज़िद कोई अच्छी चीज़ नहीं है क्योंकि शरिअत के ख़िलाफ़ है। ऐसे लोग नाम तो बच्चों का लेते हैं लेकिन हक़ीक़त मे वे अपनी दिली मुराद पूरी करते हैं। वे कहते हैं कि बच्चे पड़ौसियों के घर में जाकर टीवी देखते थे इसलिए हमने कहा कि इससे तो बेहतर है कि इसे अपने ही घर में लाकर दे दें। यह तो ऐसा हुआ :

﴿فَرَّ مِنَ الْمَطَرِ قَامَ تَحْتَ الْمِيزَابِ.﴾

बारिश से भागा परनाले के नीचे आकर खड़ा हो गया।

﴿بَنٰى قَصْرًا وَهَدَمَ مِصْرًا.﴾

महल बना दिया और शहर उजाड़ दिया।

हक़ीक़त यह है कि जो लोग घर में टीवी लाकर रखते हैं वह ईमान की टीबी लाकर रखते हैं। जिस तरह इंसान के अंदर टीबी के जरासीम आ जाएं तो वह अपनी जान से हाथ धो बैठता है इसी तरह जिस घर में टीवी के जरासीम आ जाएं वह ईमान से हाथ धो बैठता है।

शरिअत में ऐसी बातें मतलूब नहीं हैं। इसलिए यह बात ज़हन में रखिए कि इन मुहब्बतों की एक हद है कि ये सब मुहब्बतें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत के नीचे रहनी चाहिएं। इस सिलसिल में क़ुरआन पाक का फ़ैसला सुनिए

قُلْ إِنْ كَانَ آبَائُكُمْ وَأَبْنَائُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالُ نِ
اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ
اللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهِ. (التوبہ:۲۴)

अगर इन तमाम चीज़ों की मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और उसके रास्ते में जिहाद करने की मुहब्बत से ज़्यादा बढ़ गई तो फिर इंतिज़ार करो हत्ताकि अल्लाह तुम्हारे ऊपर अज़ाब का कोड़ा खींच लेगा। यह सब मुहब्बतें अल्लाह की मुहब्बत की छतरी के नीचे रहनी चाहिएं। अगर अल्लाह की मुहब्बत की छतरी हट गई तो ये सब मुहब्बतें नाजाएज़ हो जाएंगी। यहाँ अल्लाह तआला बताना यह चाहते हैं कि ये मुहब्बतें ठीक हैं लेकिन जब ये अल्लाह की मुहब्बत के रास्ते में रुकावट बनने लग जाएं तो फिर तुम्हें चाहिए कि तुम इन मुहब्बतों को पाँव के नीचे डालकर आगे क़दम बढ़ाओ क्योंकि तुम्हारी मंज़िल कोई और है।

मुहब्बत या नफ़्सानियत

एक मुहब्बत इंसानों के दर्मियान नफ़्सानी ख़्वाहिशात की वजह से होती है। ऐसी मुहब्बत को शरिअत में हराम कहा गया है। इस मुहब्बत का ताल्लुक़ शहवत के साथ होता है। इसलिए मुहब्बत का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि वह तो हक़ीक़त में नफ़्सानियत और शैतानियत है। वह मुहब्बत इंसान को मज़बूर करती है कि दूसरों के साथ शरअ के ख़िलाफ़ ताल्लुक़ात बनाए। ऐसे ताल्लुक़ की इंतिहा यह है कि जब आदमी की शहवत पूरी हो जाती है तो ये ताल्लुक़ भी ख़त्म हो जाता है। इंसान के अंदर की गंदगी उसे ऐसे ताल्लुक़ात के लिए मजबूर करती है। इन शहवानी मुहब्बतों से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए।

ऐसे लोग मुख़्तलिफ़ शक्लें पसन्द करते फिरते हैं। अरे! दुनिया में तो मुख़्तलिफ़ ठप्पे चल फिर रहे होते हैं। तुम किस-किस ठप्पे को पसन्द करोगे। शरिअत ने फ़रमा दिया है कि जो चीज़ तुम्हारे लिए हलाल है उससे मुहब्बत करना पसन्दीदा अमल है और जिससे मना कर दिया है उसे तुम आँख उठाकर भी न देखो। Nip the evil in the bud यानी बुराई को शुरू में ही दबा दो के मिस्दाक़ समझा दिया कि तुम ऐसी चीज़ों को देख भी नहीं सकते। लेकिन कई मर्तबा इंसान ऐसे ताल्लुक़ात में फंस जाता है बल्कि सच कहूँ कि ऐसे ताल्लुक़ात में धंस जाता है। फंसने और धंसने में फ़र्क़ होता है। फंसा हुआ बंदा ख़ुद ज़ोर लगाए तो निकल आता है लेकिन धंसा हुआ बंदा ख़ुद उसमें से नहीं निकल पाता। वह जितना ज़ोर लगाता है उतना ज़्यादा धंसता है। उसे कोई निकालने वाला चाहिए।

ऐसे मौके पर अल्लाह वाले काम आते हैं। वे उनके लिए अल्लाह के हुज़ूर दुआएं मांगते हैं। उनकी तरफ़ से माफ़ियाँ मांगते हैं। रो-रो कर अल्लाह को मनाते हैं, उनको तवज्जेहात देते हैं और उन्हें समझाते हैं। आख़िर उस बंदे के लिए उस दलदल में से निकलने का ज़रिया बन जाते हैं और वह गुनाहों की दलदल में फंसा हुआ बंदा बाहर निकल आता है।

शहवानी मुहब्बत का जुनून

इंसान में शहवानी मुहब्बत जुनून की हद तक पैदा हो जाती है। यहाँ तक कि वह उस मुहब्बत में पागल हो जाता है। अरब में क़ैस नामी एक आदमी था। उसको किसी औरत से ताल्लुक़ हो गया। अगरचे वह औरत रात की तरह काली थी और उसके माँ-बाप ने उसका नाम लैला रख दिया था। क़ैस उसकी मुहब्बत में दीवाना हो गया।

सैय्यदना हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का ज़माना था। हज़रत हसन और हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा की आपस में सुलह हुई। हदीस पाक में भी इन दोनों के लिए फ़रमाया ﴿فئتين عظيمتين﴾। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में ख़िलाफ़त से एक तरफ़ होने का ऐलान किया। अगले दिन हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु जा रहे थे कि रास्ते में उनको क़ैस मिल गया। उसको सलाम किया। फिर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क़ैस! यह मैंने अच्छा किया है नां कि हुकूमत उन्हीं के सुपुर्द कर दी जो इसके ज़्यादा अहल थे। क़ैस ख़ामोश रहा। उन्होंने फिर पूछा क़ैस! तुम

जवाब क्यों नहीं देते? क़ैस कहने लगा, सच्ची बात तो यह है कि हकूमत लैला को सजती है। यह सुनकर हज़रत सैय्यदना हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ﴿انت مجنون﴾ तू पागल है, उस वक़्त से उसका नाम मजनून पड़ गया। उसका यह नाम इतना मशहूर हुआ कि असल नाम से बहुत कम लोग वाक़िफ़ हैं।

मजनून के वालिद ने एक बार उसे कहा, तेरी वजह से मेरी बड़ी बदनामी होती है। चल तुझे बैतुल्लाह शरीफ़ ले जाता हूँ और वहाँ जाकर इस ताल्लुक़ से तौबा करवाता हूँ। चुनाँचे वह अपने वालिद के साथ मुक़ामे इब्राहीम पर पहुँच गया। वहाँ खड़े होकर उसके वालिद ने उसे कहा कि अब दुआ करो कि ऐ अल्लाह! मैं लैला की मुहब्बत से तौबा करता हूँ। उसने वालिद के कहने पर हाथ तो उठा लिए मगर दुआ करते हुए कहने लगाः

الهی تبت من کل المعاصی ولکن حب لیلٰی لا اتوب

अल्लाह मैं सब गुनाहों से तौबा करता हूँ लेकिन लैला की मुहब्बत से तौबा नहीं करता।

जब उसने यह कहा तो उसके वालिद ने ग़ुस्से से उसकी तरफ़ देखा और जब वालिद ने ग़ुस्से से उसकी तरफ़ देखा तो उसने दूसरी दुआ मांगी :

الهی لا تسلبنی حبها ابدا ویرحم الله عبدا قال آمنیا

ऐ अल्लाह! उसकी मुहब्बत कभी भी मेरे दिल से सलब न करना और जो बंदा इस दुआ पर आमीन कह दे उसकी भी मग़फ़िरत कर देना।

एक आदमी ने सोचा कि लैला का बड़ा नाम सुना है। ज़रा

देखूं तो सही कि वह हूर परी कौन सी है जिसकी मजनूं के साथ इतनी बातें मशहूर हैं। उसने देखा तो वह आम औरतों से भी गई गुज़री थी। लिहाज़ा उसने देखते ही उसे कहा :

از دیگر خوباں تو افزوں نیستی

ऐ ख़ातून! क्या बात है कि तू दूसरी हसीन औरतों से बढ़ी हुई तो नहीं है।

वह कहने लगी :

گفت خامش چوں تو مجنوں نیستی

उसने कहा, तू चुप हो जा क्योंकि तू मजनूँ नहीं है।

यानी अगर तू मुझे मजनूँ की नज़र से देखेगा तो सारी दुनिया की हसीन औरतों से ज़्यादा मैं तुझे हसीन नज़र आऊँगी। ऐसी मुहब्बत को मुहब्बत नहीं कहते बल्कि पागलपन कहते हैं।

एक दफ़ा मजनूँ कुत्ते को बैठा चूम रहा था। किसी ने कहा, अरे मजनूँ तू कुत्ते को चूम रहा है। कहने लगा, हाँ मैं इसे इसलिए चूम रहा हूँ कि यह उस दयार से होकर आया है जहाँ लैला रहती है।

मुहब्बते मजाज़ी की पहचान

एक सहाबी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से दूसरे सहाबी के बारे में बड़े मज़े के सवालात पूछते थे। इस से बात समझने के लिए हमारे बड़ी आसानी हो गई। उन्होंने एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा ऐ अल्लाह के नबी! लोगों के दिलों में जो मख़्लूक़ की मुहब्बत आ जाती है उसकी क्या पहचान

है? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿سہر اللیالی و ارسال للالی.﴾

इंसान रातों को जागता है और मोती बहाता है।

यानी उसका दिल उसके बस में नहीं होता और यह ताल्लुक़ उसको इतना मजबूर कर देता है कि उसे रातों को नींद नहीं आती। और आँखों से आँसुओं की लड़ियाँ गिरती रहती हैं।

शरिअते मुताहिरा का हुस्न व जमाल

इन मुसीबतों से इंसान कैसे बच सकता है? अगर इंसान शरिअत व सुन्नत का हार गले में पहन ले तो वह इन मुसीबतों से बच सकता है। शरिअत मुताहरा का हुस्न व जमाल देखिए कि उसमें गुनाह का शुरू ही से रास्ता रोक दिया गया है। पहली शरिअतों की निस्बत दीने इस्लाम जिसे मुकम्मल शरिअत कहा जाता है उसकी वजह यह है कि इस शरिअत में जिस काम से रोकना था उसकी शुरूआती बातों से भी रोक दिया गया।

मिसाल के तौर पर शिर्क से रोकना था तो शरिअत ने तस्वीर बनाने से ही रोक दिया क्योंकि शिर्क उस वक़्त होता है जब इंसान बुत बनाता है। तस्वीर में बुतपरस्ती की इब्तिदा है और बुत में उसकी इंतिहा है। गोया जिस मंज़िल पर जाने से रोकना था उस मंज़िल की तरफ़ पहला क़दम उठाने से भी रोक दिया। जैसे लोग कहते हैं कि जिस रास्ते पर जाना नहीं उसका फ़ासला क्या पूछना।

इसी तरह शरिअत ने ज़िना से मना करना था तो कुल्ली तौर पर यह नहीं कहा कि ज़िना न करना बल्कि फ़रमाया :

﴿وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا (بنی اسرائیل:۳۲)﴾

और तुम ज़िना के क़रीब भी न जाना।

यहाँ क़रीब भी न जाने का मतलब यह है कि किसी अजनबी ना महरम के साथ तन्हाई में भी न बैठना और बातचीत भी न करना क्योंकि यह ज़िना की इब्तिदा है। जब इब्तिदा ही से रोक दिया जाएगा तो आगे बात ही नहीं चलेगी।

ज़िना के लिए सबसे पहला क़दम

मैं फिर कह रहा हूँ कि ज़िना के लिए सबसे पहला क़दम अजनबिया से बात करना है। यह उसूल याद रखना क्योंकि क़ुरआन पाक का यही फ़ैसला है। इसीलिए शरिअत ने औरतों को हुक्म दिया कि तुम अगर किसी ग़ैर-महरम के साथ किसी ज़रूरत के तहत बात करो तो ﴿فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ (الاحزاب:۳۲)﴾ बस तुम अपने लहजे में नरमी न रखो।

यानी लहजे में थोड़ी सी सख़्ती रखो। नपे तुले अलफ़ाज़ इस्तेमाल करो। ऐसे अल्फ़ाज़ कहो कि उस आदमी को अगली बात पूछने का मौक़ा ही न मिले। वह जो बात पूछना चाहता है वह भी आधी पूछे और फिर बात करना बंद कर दे क्योंकि बात यहीं से आकर सिमटती है कि गुनाह का रास्ता वहाँ से शुरू होता है जहाँ औरत ग़ैर-महरम से नरम लहजे में बात करती है। इसलिए शरिअत ने नरम लहजे में बात करने से भी मना कर दिया। गोया शैतान जिन रास्तों से गुज़र सकता था शरिअत ने वे सब रास्ते बंद कर दिए। लिहाज़ा जो इंसान शरिअत के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करेगा वह शैतान के असरात से महफ़ूज़ रहेगा।

दोज़ख़ के साथ बातचीत

आज तो यह हालत हो चुकी है कि नवजवान कज़िनों से और अजनबी औरतों से बात करने के मौक़े ढूंढ रहे होते हैं। और समझते हैं कि हम सिर्फ़ बात ही करते हैं। यह शैतान का बड़ा धोका है और इस पर जलती का काम सैल फ़ोन ने कर दिया। आजकल के माँ-बाप बच्चों और बच्चियों को ख़ुद ख़रीदकर देते हैं और वे हर वक़्त अपने पास रखते हैं। मैंने कई मुल्कों में बच्चों के पास सैल-फ़ोन देखे हैं। मैं उन्हें कहता हूँ कि तुम्हारे पास सैल-फ़ोन नहीं बल्कि तुम्हारे पास हैल-फ़ोन हैं क्योंकि ग़ैर-महरमों से बेतल्लुफ़ बातचीत करना दोज़ख़ के साथ बातचीत करना है।

बात करने बाद मुलाक़ात की तमन्ना

एक बात याद रखिए कि जब बेतल्लुफ़ बातें होंगी तो फिर मुलाक़ात करने को भी जी चाहेगा। इसकी दलील क़ुरआन पाक से भी मिलती है। अल्लाह तआला ने तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया किराम दुनिया में भेजे। उन तमाम अंबिया किराम में से सिर्फ़ एक नबी ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह तआला से कहा, ﴿رب ارنی انظر الیک﴾ (الاعراف:۱۴۳) ऐ परवरदिगार! मुझे अपना आप दिखा दीजिए ताकि मैं आपको देखूं।

यह मुतालबा करने वाले मूसा कलीमुल्लाह हैं। वह अल्लाह तआला से बातें किया करते थे। गोया जिनको बातें करने का मौक़ा मिला, मुलाक़ात करने के लिए भी उन्हीं का दिल चाहा। इससे मालूम हुआ कि जहाँ बात शुरू होती है वहाँ देखने का

क़दम भी लाज़मी उठता है और जब देखेंगे तो फिर तीसरा क़दम भी उठेगा—

न तू ख़ुदा है न मेरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इंसान हैं तो क्यों इतने हिजाबों में मिलें

पाकीज़गी के लिए दो चीज़ों की हिफ़ाज़त

इर्शादे बारी तआला है :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذَالِكَ اَزْكٰى لَهُمْ
وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ. (النور:٣٠)

ऐ महबूब! ईमान वालों को फ़रमा दीजिए कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। इसमें ख़ूब पाकीज़गी है उनके लिए और अल्लाह तआला जानता है जो वे करते हैं।

गोया पाकीज़गी के लिए निगाहों और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त की ज़रूरत है।

आयत के मआरिफ़

इस आयत के अंदर कुछ मआरिफ़ हैं। लिहाज़ा उन्हें दिल के कानों से सुनिएगा :

- अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस आयत को 'क़ुल' से शुरू किया यानी अल्लाह तआला ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वास्ता बनाया, डायरेक्ट हुक्म पास नहीं किया जैसे रोज़े का हुक्म बराहेरास्त दिया था। इसकी वजह यह थी कि ऐ मेरे महबूब! जब मेरे अहकाम आप पहुँचाएंगे और यह आपकी

ज़बान मुबारक से सुनेंगे तो ये उस अमल को करने की कोशिश करेंगे तो दुनिया और आख़िरत में आपके सामने शर्मिन्दा होंगे। कोई बंदा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने शर्मिन्दा हो तो यह छोटी बात है और उसे बराहेरास्त अल्लाह तआला के सामने शर्मिन्दा होना पड़ा तो यह उससे भी ऊँची बात होगी। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उम्मत के ऊपर शफ़क़त की वजह से इस हुक्म को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से दिलवाया ताकि मेरे महबूब मेरा हुक्म Pass On पास-ऑन करें और फिर भी ये कोताही कर गए तो मैं अपनी रहमत के साथ उनके साथ माफ़ी का मामला कर दूंगा लेकिन अगर हुक्म भी मैंने दिया और मेरे ही हुक्म को तोड़ेंगे तो फिर वे मेरी रहमत के मुस्तहिक़ कैसे होंगे। इसलिए क़ुल कहकर हुक्म पहुँचाया जैसे बाप ने अगर बेटे को कोई काम कहना हो तो कुछ कभी-कभी सूरतेहाल को सामने रखते हुए अपनी बीवी से कहता है कि आप ही बेटे को कह दें। जैसे उसके इस तरह कहने में हिकमत होती है उसी तरह इस आयत को क़ुल के साथ शुरू करने में भी यह हिकमत थी।

- दूसरी बात यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस आयत में ﴿للمؤمنين﴾ लिल-मुनीन फ़रमाया, लि बनी आदम या लिन्नास नहीं फ़रमाया कि बनी आदम से कह दें या इंसानों से कह दें बल्कि फ़रमाया कि ईमान वालों से कह दें। इसका मतलब यह कि ऐ ईमान वालो! यह कुफ़्फ़ार तो हैं ही जहन्नमी। इनको इस बात के कहने का फ़ायदा ही नहीं है और तुम तो हो ही जन्नती, इसलिए गोया यूँ फ़रमाया कि ऐ जन्नत में

जाने वालो! हम तुम्हें एक हुक्म इस उम्मीद पर दे रहे हैं कि तुम इस हुक्म को जल्दी पूर कर दोगे।

ग़ैर-महरम को देखने का अज़ाब

हदीस पाक में आया है जिसने किसी अजनबी ग़ैर-महरम की तरफ़ देखा तो क़यामत के दिन उसकी आँखों के अंदर पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।

एक और हदीस पाक में है कि उसकी आँख में क़यामत के दिन अंगारे डाले जाएंगे। और एक हदीस पाक में है कि उसकी आँख में क़यामत के दिन फ़रिश्ते लोहे की सलाख़ें डालेंगे।

मुहद्दिसीन ने इन तीनों हदीसों को जमा कर लिया। वे फ़रमाते हैं कि किसी को यह अज़ाब होगा, किसी को यह अज़ाब होगा और किसी को यह अज़ाब होगा। वे फ़रमाते हैं कि तीनों अज़ाब भी हो सकते हैं और तीनों में से कोई एक भी हो सकता है।

एक और हदीस पाक में है :

जिस बंदे ने उस जगह पर निगाह डाली जिस पर डालने से मना किया गया था उस एक नज़र के बदले में उसे जहन्नम में चालीस साल तक जलना पड़ेगा यानी हर एक नज़र के बदले चालीस साल तक जहन्नम में जलना पड़ेगा।

एक और हदीस पाक में फ़रमाया :

﴿اَلنَّظَرُ بِالشَّهْوَةِ سَهْمٌ مَسْمُوْمَةٌ مِنْ سِهَامِ اِبْلِيْسَ﴾

शहवत की एक नज़र इब्लीस के तीरों में से ज़हर बुझा हुआ एक तीर होता है।

शहवत भरी नज़र ज़हर वाला एक तीर होता है जो सीधा बंदे के दिल पर आकर लगता है और बंदे पर उसका बुरा असर पड़ता है। इसलिए हमारे असलाफ़ फ़रमाते थे ﴿اَلْعَيْنُ عَيْنُ الْمَعَاصِىْ﴾ आँख गुनाहों का चश्मा है।

और बाज़ ने फ़रमाया ﴿اَلنَّظَرُ اَسَاسُ الذُّنُوْبِ﴾ इंसान की नज़र गुनाहों की बुनियाद है।

नवजवान के निजात की एक सूरत

एक दफ़ा एक नवजवान सहाबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! ﴿كيف نجاة﴾ हम नवजवानो के लिए निजात किसमें है?

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿اِحْفَظْ عَيْنَكَ﴾ अपनी आँखें की हिफ़ाज़त कर।

मालूम हुआ कि नवजवानों की निजात इस बात में है कि वे अपनी आँखों की हिफ़ाज़त करें।

एक शैतानी धोका

जो लोग यह सोचते हैं कि हम ग़ैर-महरम को देखते हैं हम पर असर नहीं होता। वे बड़े धोके में हैं और झूठ बोलते हैं क्योंकि क़ुरआन मजीद में मर्दों को भी निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया गया और औरतों भी निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया :

﴿ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ.(الاحزاب:٥٣)﴾

इसमें ख़ूब पाकीज़गी है तुम्हारे और उनके दिलों के लिए।

तो मालूम हुआ कि जब क़ुरआन यह कह रहा है तो जो कहता है कि मेरे दिल पर कोई असर नहीं होता वह झूठ बोल रहा होता है। अगर कोई औरत यह कहे कि मुझ पर कोई असर नहीं होता तो वह भी झूठ बोल रही होती है क्योंकि इस आयत में मुज़क्कर (मर्दों) और मौन्नस (औरतों) के लिए लफ़्ज़ इस्तेमाल हुए हैं।

फ़हश काम हराम हैं

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ﴾

ऐ मेरे महबूब! आप फ़रमा दीजिए कि मेरे रब ने फ़हश कामों को हराम फ़रमा दिया है जो ज़ाहिर में हैं या बातिन में।

उलमा ने लिखा है कि जो ज़ाहिर में है उनसे मुराद ज़िना करना है और जो बातिन में हैं उन से मुराद यह है कि पोशीदा तौर पर शहवत को पूरा करना। अल्लाह तआला ने इन दोनों क़िस्म के फ़हश कामों को हराम फ़रमा दिया।

शैतान के बंदे

अल्लाह तआला ने जहाँ इबादुर्रहमान की बात इर्शाद फ़रमाई, वहाँ उसके बाद इल्ला का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया यानी रहमान के इन बंदों के अलावा बंदों की बात करते हुए उन बंदों का तज़्किरा फ़रमाया जो ज़िना करते हैं। मुफ़स्सिरीन ने यहाँ नुक्ता लिखा है कि क़ुरआन का अंदाज़ बता रहा है कि अल्लाह तआला यह

बताना चाहते हैं कि जो ज़िनाकार होते हैं वह रहमान के बंदे नहीं हुआ करते बल्कि वह शैतान के बंदे हुआ करते हैं।

ज़िना करने के छः नुक़सानात

हदीस पाक में आया है कि ज़िना करने के तीन नुक़सानात दुनिया में होते हैं और तीन आख़िरत में होते हैं। दुनिया में तीन नुक़सानात ये होते हैं :

1. उस बंदे के चेहरे का नूर ख़त्म हो जाता है। उसके चेहरे पर फटकार और नहूसत बरसती है।
2. उसके रिज़्क़ को तंग कर दिया जाता है और वह हर वक़्त क़र्ज़ों में जकड़ा रहता है।
3. अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसकी उम्र को कम कर देते हैं।

और आख़िरत के तीन नुक़सानात ये हैं :

1. अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस बंदे के साथ क़यामत वाले दिन गुस्से के साथ पेश आएंगे।
2. उसका हिसाब अल्लाह तआला सख़्ती के साथ लेंगे।
3. उसको जहन्नम में बड़ी लंबी मुद्दत के लिए रहना पड़ेगा, चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا﴾ व-यख़लुद फ़ीहि मुहाना और क़ुरआन मजीद में एक जगह ﴿خٰلِدِينَ﴾ ख़ालिदीना का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है मगर वह काफ़िर मुश्रिक और मुनाफ़िक़ की तरह अगरचे हमेशा-हमेशा के लिए जहन्नम में नहीं रहेंगे अलबत्ता वह बड़ी लंबी मुद्दत के लिए जहन्नम में रहेंगे।

इसलिए मौत से पहले-पहले इस गुनाह से तौबा कर लेनी चाहिए ताकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बख़्शिश किए हुए गुनाहगारों में शामिल हो जाएं।

तीन महरूम आदमी

एक हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन तीन आदमियों से न तो कलाम करेगा और न ही उनकी तरफ़ देखेगा :

1. झूठ बोलने वाला बादशाह,
2. बूढ़ा ज़ानी,
3. फ़क़ीर मुतकब्बिर।

और एक और हदीस सनद के साथ पेश कर रहा हूँ। यह हदीस मैंने किताब में पढ़ी और बाक़ायदा इसकी तसदीक़ की। वह हदीस यह है कि जो औरत इसलिए बने संवरे कि उसे कोई ग़ैर-महरम मुहब्बत की नज़र से देखे, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़ैसला कर लेते हैं कि मैं क़यामत के दिन उसकी तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूंगा और यही चीज़ मर्द के लिए भी है कि जो मर्द इसलिए बने संवरे कि उसे कोई ग़ैर औरत मुहब्बत की नज़र से देखे उसे भी अल्लाह तआला क़यामत के दिन मुहब्बत की नज़र से नहीं देखेगा। इसलिए कि यह कोई छोटा गुनाह नहीं है। इससे सच्ची तौबा की ज़रूरत है। अल्लाह ने जो हलाल किया उसको हलाल समझें और अल्लाह के हराम को हराम समझें। ﴿تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ﴾ ये अल्लाह की हुदूद हैं।

ग़ैर-महरम से नज़रें हटाने के फ़ज़ाइल

आँखों को ग़ैर-महरमों से रोकने के बहुत से फ़ज़ाईल हैं। चुनाँचे हदीस पाक में आया है :

مَنْ غَضَّ بَصَرَهُ عَمَّا حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

जिसने हराम चीज़ से अपनी आँख को बंद कर लिया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके बदले उस पर जहन्नम की आग हराम फ़रमा देंगे।

बाज़ किताबों में लिखा है :

مَنْ تَعَشَّقَ وَكَتَمَ عِشْقَهُ فَهُوَ شَهِيْدٌ.

जिसने इश्क़ किया ओर उसने अपने इश्क़ को छिपाया वह शहीद है।

यानी किसी आदमी की किसी के हुस्न व जमाल पर नज़र पड़ गई और उसे उसका हुस्न अच्छा लगा लेकिन उसने इस बात को दिल में रखा, किसी पर ज़ाहिर नहीं किया और कोई क़दम नहीं उठाया। अगर वह बंदा इसी हाल में मर गया तो अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन शहीदों की क़तार में शामिल फ़रमा देंगे।

एक हदीस पाक में आया है कि तीन बंदों को अगर जहन्नम में डाल भी दिया जाऐ तो जहन्नम की आग उन पर कोई असर नहीं करेगी :

1. कसरत के साथ तिलावत करने वाला,
2. कसरत के मेहमान नवाज़ी करने वाला,
3. ज़िना से बचने वाला।

एक सुनहरी उसूल

एक बात ज़हन में रखें कि अगर हम अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त नहीं करेंगे और ग़ैरों की इज़्ज़तों को हवस की नज़रों से देखेंगे तो ग़ैर भी हमारी औरतों को ऐसी ही नापाक निगाहों से देखेंगे।

एक आदमी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे अपनी बीवी की तरफ़ से भरोसा नहीं है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, तू अपनी निगाहें ग़ैरों की औरतों से महफ़ूज़ कर ले अल्लाह तआला तेरी बीवी की हिफ़ाज़त फ़रमा देंगे। इसलिए इंसान अपनी निगाहों को पाक कर ले। इसके नतीजे में अल्लाह तआला उसके घरवालों को पाकीज़गी अता फ़रमा देंगे। क़ुरआनी फ़ैसला है :

﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ.(فاطر:٤٣)﴾

और बुराई का दांव उल्टेगा उन्हीं दांव वालों पर।

एक इबरतनाक वाक़िआ

एक सुनार की बीवी जवान थी। वह ख़ूबसूरत थी। एक दिन वह सुनार जब घर आया तो देखा कि उसकी बीवी बैठी रो रही है। वह कहने लगा, आप को क्या हुआ? उसने कहा, यह बच्चा जो दो तीन साल का था और इसे हमने घर में बेटे की तरह पाला था, अब सोलह सत्रह साल का हो चुका है। इसे मैंने सब्ज़ी लेने भेजा था। जब वह सब्ज़ी लेकर वापस आया और मैं इससे सब्ज़ी

लेने लगी तो इसने सब्ज़ी देते हुए मेरे हाथ को पकड़कर दबा दिया। उस वक़्त मैंने इसकी निगाहों को बुरा महसूस किया। मुझे यूँ लगा कि इसने मेरे हाथ को बुरी नीयत से दबाया है। मुझे इस पर बहुत अफ़सोस हुआ जिसकी वजह से मैं रो रही हूँ।

जब बीवी ने यह बात सुनाई तो ख़ाविन्द की आँखों में भी आँसू आ गए। बीवी पूछने लगी, जी आप क्यों रो रहे हैं? वह कहने लगा, यह इसका क़ुसूर नहीं बल्कि मेरा क़ुसूर है। उसने कहा, आपका क़ुसूर कैसे? वह कहने लगा कि मैं सुनार हूँ। आज एक औरत चूड़ियाँ लेने आई, उसने चूड़ियाँ ख़रीदीं। उसने वे चूड़ियाँ खुद पहनने की कोशिश की, जब वह न पहन सकी तो वह मुझे कहने लगी कि ज़रा ये चूड़ियाँ मुझे पहना दें। चुनाँचे जब मैं उसे पहनाने लगा तो मुझे उसके हाथ ख़ूबसूरत और मुलायम लगे। मैंने उसके हाथों को शहवत से दबाया। उसके बदले में मेरे नौकर ने मेरी बीवी के हाथों को शहवत से दबा दिया।

जन्नत की ज़मानत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी ग़ैर-महरम औरत पर क़ादिर हो और उसके बावजूद ज़िना न करे तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत देता हूँ यानी किसी को कोई ऐसा मौक़ा मिले कि उसके पास ग़ैर-महरम औरत हो और वह उससे अपनी हवस पूरी कर सकता हो मगर अल्लाह के डर की वजह से बाज़ आ जाए तो उसके लिए जन्नत की ज़मानत हैं।

सुलेमान बिन यसार रह० का तक़्वा

अलहम्दुलिल्लाह इस उम्मत में ऐसे-ऐसे औलिया गुज़रे हैं

जिन्होंने पाकदामनी की अनमिट छाप छोड़ी हैं। सुलेमान बिन यसार रह० इमाम आज़म रह० इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० के पास बैठने वालों में से थे। उनके पास कसरत से आते जाते थे। उनका शुमार वक़्त के मुहद्दिसीन और सूफ़िया में होता था। वह बहुत ही ख़ूबसूरत थे। एक बार एक औरत ने उनकी तरफ़ गुनाह का पैग़ाम भेजा और कहा कि मैं आपकी ख़ूबसूरती की वजह से आप पर फ़िदा हूँ। अब मौक़ा है लिहाज़ा आप मेरे घर आ जाएं ताकि मैं अपनी हसरत पूरी कर सकूँ। उन्होंने जवाब में कहा, ﴿معاذ الله﴾ मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

जब वह रात को सोए तो उन्हें ख़्वाब में सैय्यदना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, सुलेमान यसार! मैं तो अल्लाह का नबी था। मेरे साथ अल्लाह की हिफ़ाज़त थी। जब मेरे सामने गुनाह पेश हुआ तो मैंने कहा था, मअज़ल्लाह। लेकिन नबुव्वत की हिफ़ाज़त के साथ कहा था। कमाल तो तूने दिखाया कि वली होकर वह काम किया जो वक़्त का नबी किया करता है।

एक तालिब-इल्म की सबक़ देने वाली दास्तान

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० के शागिर्दों में एक नवजवान था। वह बहुत ही ख़ूबसूरत और नेक सीरत था। वह रोज़ाना एक रास्ते से गुज़रकर मदरसे जाता था। एक औरत उसे रोज़ाना देखती थी। उस औरत की नीयत में ख़राबी आ गई। उससे न रहा गया। चुनाँचे उसने एक दिन अपने घर की नौकरानी को भी साथ मिलाया और कहा कि इसको किसी बहाने घर ले आओ। उस

दिन जब वह वहाँ से गुज़रने लगा तो वह नौकरानी उसके सामने आकर कहने लगी कि इस घर में एक मरीज़ है, उसको दम कर दीजिए। यह भी एक मर्ज़ ही होता है। वह तालिब इल्म समझ न सका। लिहाज़ा वह घर में दाख़िल हो गया। पीछे से नौकरानी ने दरवाज़े बंद कर दिए। अब वह औरत उसके सामने आ गई और कहने लगी कि मैं आपको इतनी मुद्दत से अपने घर के सामने से गुज़रते हुए देखती थी। आप मुझे बहुत ही अच्छे लगते हैं। सोचती थी कि किसी तरह आपको बुलाकर अपनी हसरत पूरी करूं। जब वह बेहिजाब सामने आई और ये बातें कीं तो वह तालिब इल्म घबरा गया। जब वह घबराया तो वह कहने लगी आज तो घर में कोई नहीं है–

जिसका था डर, वह नहीं है घर, अब ज़ो चाहे कर।

जब उसने देखा कि मामला बिल्कुल ही उलट चुका है तो वह उससे कहने लगा, अच्छा मैं तेरी मुराद पूरी करूंगा, लेकिन मुझे क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत है। उसने कहा, अच्छा फिर आप बैतुलख़ला चले जाइए। चुनाँचे वह बैतुलख़ला में चला गया। उस वक़्त बैतुलख़ला आज के दौर के बैतुलख़ला तो नहीं होते थे क्योंकि यहाँ तो हर चीज़ गुम हो जाती है। जब वह बैतुलख़ला में गया, वहाँ गंदगी पड़ी देखी। उसने वह गंदगी उठाकर अपने हाथों पर लगा ली। जब वह बाहर निकला तो उससे बदबू आ रही थी। अब वह बदबू जब औरत ने सूंघी तो उसे उससे नफ़रत आई और कहने लगी कि मुझे क्या पता था कि तू इतना गंदा है। दफ़ा हो जा यहाँ से। जब उसने उसे कहा दफ़ा हो जा यहाँ से तालिब इल्म अपना ईमान बचाकर वहाँ से निकल गया।

बाहर निकलकर देखा तो उसे वह गंदगी कपड़ों पर भी लगी नज़र आई। उसने सोचा कि अब तो लोगों को बू आएगी। लिहाज़ा वह तेज़ी से मदरसे की जानिब चला ताकि जल्दी से पहुँचकर अपने कपड़ों और बदन को पाक करे। जब मदरसा पहुँचा तो सीधा ग़ुस्लख़ाने की तरफ़ गया। वह वहाँ नहाया, कपड़े धोए, उन्हें निचोड़ा औ पहनकर दरसगाह की तरफ़ जाने लगा। वह परेशान था कि कभी भी सबक़ नाग़ा नहीं हुआ था मगर आज तो सबक़ में देर हो गई है। लिहाज़ा चुपके से दरसगाह में दाख़िल हुआ और क्लास में सबसे आख़िर में बैठ गया।

अभी थोड़ी देर ही गुज़री थी कि शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया : अरे तुम में से कौन है जिसने इतनी तेज़ ख़ुशबू लगाई हुई है। जब शाह साहब रह० ने पूछा तो सब तुलबा हैरान होकर इधर-उधर देखने लगे। एक तालिब इल्म जो उसके क़रीब बैठा हुआ था कहने लगा, हज़रत! इसके कपड़ों से ख़ुशबू आ रही है। वह तो पहले ही डर रहा था, जब उस्ताद ने बुलाया तो और ज़्यादा परेशान हुआ। शाह साहब रह० ने पूछा आज तुम आए भी देर से हो और ख़ुशबू भी इतनी लगाई हुई है, क्या वजह है? उस वक़्त उस तालिब इल्म की आँखों में आँसू आ गए। आख़िर उसने बता दिया कि हज़रत! मेरे साथ तो यह वाक़िआ पेश आ गया था। मैंने तो गंदगी लगाई हुई थी ताकि मेरे जिस्म से बदबू आए और मैं गुनाह से बच जाऊँ। अब मैंने गंदगी को धो दिया है लेकिन अल्लाह तआला की रहमत पर हैरान हूँ कि मैंने जिस-जिस जगह पर गंदगी लगाई थी मेरी उस जगह से अब तक ख़ुशबू आ रही है।

वह नवजवान जब तक ज़िंदा रहा उसके जिस्म से ख़ुशबू आती रही। इस वजह से उसका नाम 'ख़्वाजा मुश्की' पड़ गया। तो जो इंसान अल्लाह के हुक्म की अज़मत को सामने रखते हुए उससे डरता है फिर अल्लाह तआला उसकी क़द्रदानी भी फ़रमाते हैं।

मुहब्बते मजाज़ी का इलाज

अगर कोई इंसान इस मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाए तो उसका इलाज क्या है? इस सिलसिले में चंद इलाज आपको बता देते हैं

पहला इलाज

सबसे पहली बात यह है कि हमारे मशाइख़ ने इस मुसीबत से निजात हासिल करने के लिए एक ज़िक्र बताया है जिसे हमने हज़ारों लोगों पर आज़माया और सौ फ़ीसद नतीजा पाया। ऐसे बंदे को आप भी यह तस्बीहात बता सकते हैं। आप सबको मेरी तरफ़ से इजाज़त है क्योंकि यह गुनाह आम हो रहा है। इसलिए सद्दे‌बाब भी आम करना चाहिए। वह ज़िक्र यह है :

لَا مَرْغُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہ، لَا مَطْلُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہ، لَا مَحْبُوْبِیْ اِلَّا اللّٰہ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ.

ला मरग़ूबि इल्लल्लाह ला मतलूबि इल्लल्लाह ला महबूबि इल्लल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह।

ये कलिमात एक सौ मर्तबा सुबह को पढ़े और एक सौ मर्तबा शाम को पढ़े। अल्लाह इसकी बरकत से उसके दिल से ग़ैर और मा-सिवा की मुहब्बत निकाल देंगे।

दूसरा इलाज

दूसरी बात यह है कि वह यह बात ज़हन में रखे कि मैं फ़ना होने वाली मुहब्बत में गिरफ़्तार हूँ और मैं इसके बदले में उस हमेशा रहने वाली मुहब्बत से महरूम हो रहा हूँ क्योंकि महबूब जो भी है वह आख़िर इंसान है। अगर आज हसीन है तो कल ऐसी शक्ल बन जाएगी कि देखने को भी दिल नहीं चाहेगा।

एक सालिक की इस्लाह

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने वाक़िआ लिखा है कि एक सालिक साहब अपने शेख़ के पास ज़िक्र सीखने के लिए आए। अल्लाह की शान कि वह औरत जो सफ़ाई करने के लिए आया करती थी वह अच्छी शक्ल की थी और वह सालिक साहब उसको देखा करते थे। उस औरत ने शेख़ को बता दिया कि जी यह जो आपका नया मेहमान है उसकी निगाहें बदली बदली हैं। जब उसने शेख़ को यह बात की तो क़ुदरतन उसको दस्तों की शिकायत हो गई और उसे उस दिन कई दफ़ा बैतुलख़ला में जाना पड़ा।

अगले दिन उसकी बड़ी बुरी हालत थी लेकिन क्योंकि उसको काम पर जाना था इसलिए वह फिर आ गई। जब उसकी नज़र उस पर पड़ी तो देखा कि उसकी हड्डियाँ निकली हुई थीं और पहले वाली चमक नहीं थी। लिहाज़ा उसने देखते ही अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया और उससे कहा जल्दी से यहाँ से तू चली जा। उसने जाकर शेख़ से यह भी बता दिया। उन्होंने कहा बहुत अच्छा, अब तू चली जा। वह चली गई। अब उन्होंने उस (सालिक) को बुलवाया। जब वह आया तो शेख़ उससे फ़रमाने

लगे कि मैंने तुझे इसलिए बुलवाया है कि आप अपने महबूब को जाकर देखा लीजिए। उसने कहा, हज़रत कहाँ? फ़रमाया बैतुलख़ला में। जब वह वहाँ गया तो देखा वहाँ गंदगी ही गंदगी है। वह कहने लगा हज़रत! बदबू आ रही है। फ़रमाने लगे कल वही औरत थी तो इसे ललचाई नज़रों से देख रहे थे और आज वही औरत है मगर वह लालच नहीं है। इसका मतलब यह है कि जिस चीज़ का तुझे लालच था वह उससे जुदा हो गई और वह यही गंदगी है। लिहाज़ा मालूम हुआ कि तुझे इस चीज़ से इश्क़ था। इसलिए हमने चाहा कि आपको अपने महबूब के साथ मिलवा दिया जाए।

तीसरा इलाज

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐसे बंदे को लगातार रोज़े रखने चाहिएं क्योंकि पेट ख़ाली रखने से सब मस्तियाँ हवा हो जाती हैं। इसलिए वह नवजवान जो ग़ैर शादीशुदा हैं और शैतानी, शहवानी और मस्तानी ख़्यालात से परेशान हैं उनके लिए लाज़िम है कि वे रोज़े रखें। वे रोज़े बग़ैर गुनांहों से नहीं बच सकेंगे।

हज़रत अक़्दस का ज़ाती मामूल

अलहम्दुल्लिाह हमने इस नुस्ख़ें को बहुत कामयाब पाया। इस आजिज़ को याद है कि इब्तिदाई जवानी से लेकर जिस दिन तक शादी नहीं हुई थी चौबीस घंटों में एक वक़्त खाना खाया करता था। ज़िंदगी के तेरह साल यही मामूल रखा। रोज़े में तो लोग फिर भी दो दफ़ा खाना खा लेते हैं और आजिज़ का एक वक़्त खाने

का मामूल था और वह भी इतना की कमर सीधी रहे। सिर्फ़ तीन लुक़्मे। इस जवानी को महफ़ूज़ रखना आसान काम नहीं है। मैं तो हैरान होता हूँ कि लोग इसे कैसे महफ़ूज़ रख लेते हैं। वे तो बड़े हौसले वाले लोग होते हैं। एक दिन में तीन लुक़्मे खाने का फ़ायदा यह हुआ कि अलहम्दुलिल्लाह निगाह पाक हो गई जिसकी वजह से दिल में यह ख़्याल भी पैदा नहीं होता था कि कोई पीला है, कोई नीला है या कोई काला है। जो भी है अपने लिए है। हमारा उससे कोई मतलब नहीं है। अलहम्दुलिल्लाह दिल बिल्कुल बेतमा हो गया। जब शादी हुई तो उस दिन से दो मर्तबा खाना खाने का मामूल बनाया।

चौथा इलाज

इस मुसीबत से जान छुड़ाने का एक तरीक़ा यह है कि ऐसे बंदे को अल्लाह की मुहब्बत से आशना कर दिया जाए। मशाइख़ के हाँ आमतौर पर यही मामूल है। जब लोग उनके पास आते हैं तो वे उनको तवज्जोहात देते हैं। उनके लिए दुआएं करते हैं और उनकी तरफ़ से इस्तिग़फ़ार करते हैं और उन्हें अल्लाह की मुहब्बत से आशना कर देते हैं। जब उन्हें इश्के मौला का नशा चढ़ जाता है तो वे इश्के लैला भूल जाते हैं—

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

एक नवजवान की हिकायत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक शहज़ादी थी। किसी ने उसके साथ ताल्लुक़ जोड़ने की कोशिश

की। उस शहज़ादी ने कहा, मियाँ! यह काम इतना आसान नहीं है। मैं इस सिलसिले में आपको एक तर्कीब बताती हूँ कि मेरे वालिद साहब अल्लाह वालों से अक़ीदत और मुहब्बत रखते हैं और उनके पास आना-जाना रखते हैं। आप भी जाकर कहीं यही भेस बना लें तो फिर शायद मुझे भी आपके पास आने का मौक़ा मिल जाए। उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनाँचे उसने शहर से बाहर जाकर ख़ेमा लगा लिया और अल्लाह ही अल्लाह! अल्लाह ही अल्लाह! अल्लाह ही अल्लाह करने लगा।

कुछ अरसे के बाद लोगों में उसकी धूम होना शुरू हो गई। वह दुआ करवाने जाते और वह दुआ कर देता। वह उसे हदिए देते मगर वह वह हदिए न लेता। उसकी और भी ज़्यादा शोहरत हो गई कि वह तो हदिया भी नहीं लेता। उड़ते-उड़ते बात बादशाह तक भी पहुँची। जब उसने सुना तो वह भी कहने लगा कि अगर वह वाक़ई अल्लाह वाला है तो हम भी मिलते हैं। चुनाँचे बादशाह भी उसके पास गया। उसने भी दुआ की दरख़्वास्त की। उसने उसके लिए भी दुआ कर दी। फिर उसने उसे हदिया दिया तो वह कहने लगा, हम फ़क़ीरों को क्या ज़रूरत है ले जाइए। जब उसने बादशाह को भी हदिया वापस कर दिया तो उसे भी तसल्ली हो गई कि यह पक्का बंदा है कोई दुकानदार नहीं है। लिहाज़ा उसका आना-जाना शुरू हो गया।

बेटी को भी पता चल गया कि मेरे अब्बू भी उस फ़क़ीर के पास आते जाते हैं। चुनाँचे कुछ अरसे के बाद उसने बादशाह से कहा, अब्बू! आप तो उस फ़क़ीर के पास जाते हैं, क्या मुझे भी उसके पास जाकर दुआएं करवाने की इजाज़त है यानी चाहती हूँ

कि मैं भी अपने मर्ज़ की दवा लेकर आऊँ। उसने कहा चली जाओ।

अब वह बन-संवर कर उसके ख़ेमे में गई। उसने देखा कि वह नमाज़ और तिलावत में लगा हुआ है। वह उसके पास जाकर बैठ गई और उसे कहने लगी कि मैं फ़लां हूँ, आपके पास आई हूँ। वह नमाज़ ही पढ़ता रहा। जब उसने सलाम फेरा तो उसने कहा कि मैं बादशाह की बेटी हूँ और आपसे मिलने आई हूँ। तुझे यह गुर मैंने ही तो बताया था। वह फिर भी इबादत में लगा रहा। जब काफ़ी देर हो गई तो उसको फ़िक्र हुई कि मैंने पीछे भी जाना है। लिहाज़ा उसे कहने लगी, तू कर क्या रहा है? उसने जवाब में कहा, जनाब! जब मैं आपकी ख़िदमत के क़ाबिल था उस वक़्त आपसे मुलाक़ात न हो सकी। अब मैं आपकी ख़िदमत के क़ाबिल नहीं रहा। अब मुझे मौला की ख़िदमत का मज़ा आ गया है। अब मुझे अल्लाह की मुहब्बत का मज़ा आ गया है। अब आप जैसी सैंकड़ों भी आ जाएं तो मुझे कोई परवाह नहीं है। सुब्हानअल्लाह वह नक़ली तौर पर अल्लाह! अल्लाह करने बैठा था। अल्लाह ताअला ने उसे असली मुहब्बत का मज़ा चखा दिया। इसी तरह अल्लाह वाले भी यह काम करते हैं कि जिनके दिल में दुनिया की मुहब्बत का रौब होता है उनको अल्लाह की मुहब्बत से आशना कर देते हैं जिसकी वजह से वे दुनिया की मुहब्बतें भूल जाया करते हैं।

दिल पर मुसीबतें आने की वजह

सही बात यह है कि हरामकारी से बचने के लिए इंसान अपनी

आँखों को महफ़ूज़ करे। याद रखें कि :

- अगर माँ हव्वा फल को न देखतीं तो आज़माइश में मुब्तला न होंती,
- अगर हाबील क़ाबील की बीवी को न देखता तो भाई को क़त्ल न करता,
- अगर ज़ुलेख़ा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को न देखती तो क़ुरआन में उसका यूँ तज़्किरे न होते।

ये सब मुसीबतों में इसलिए फंसे कि उनकी निगाह पड़ गई थी। हमारे मशाइख़ ने भी यही फ़रमाया है कि इंसान की निगाहों की वजह से उसके दिल पर मुसीबतें आती हैं।

अल्लाह की ग़ैरत से डरते रहें

जब इंसान किसी को मुहब्बत की नज़र से देखता है तो अल्लाह तआला को ग़ैरत आती है। यही वजह है कि इसका इतना अज़ाब बताया गया। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَنَا اَغْيَرُ وُلْدِ آدَمَ وَاللّٰهُ اَغْيَرُ مِنِّيْ.﴾

मैं बनी आदम में सबसे ज़्यादा ग़य्यूर हूँ और अल्लाह तआला मुझ से भी ज़्यादा ग़ैरत वाला है।

चूँकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ग़ैरत वाले हैं इसलिए जब उसका बंदा उसके बजाए किसी और की तरफ़ मुहब्बत की नज़र उठा रहो होता है तो कभी-कभी अल्लाह तआला को ग़ैरत आ जाती है और जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ग़ैरत आती है तो फिर बंदे को फटकार कर रख दिया जाता है। इसलिए डरते रहें कि क्या पता

कि यही वह लम्हा न हो कि जब मेरे मालिक को ग़ैरत आ जाए और ईमान से महरूम कर दिया जाऊँ।

बद नज़री का वबाल

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का एक मुरीद था। उसने एक ख़ूबसूरत लड़के को देखा। वह कहने लगा, हज़रत यह लड़का ग़ैर-मुस्लिम है। क्या यह भी जहन्नम में जाएगा? उन्होंने फ़रमाया कि लगता है कि तूने इसे बुरी नज़र से देखा है। अब इसका वबाल तुझ पर ज़रूर पड़ेगा। वह हाफ़िज़ क़ुरआन था। इस एक नज़र की वजह से उनका वह मुरीद क़ुरआन मजीद भूल गया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि अब तक जो गुनाह हो चुके हैं वह माफ़ फ़रमा दें और आइंदा गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा दें। ऐ मालिक! हम कमज़ोर हैं। हमें अपनी मदद अता फ़रमा दीजिए और हमें नफ़्स और शैतान के मुक़ाबले में कामयाब फ़रमा दीजिए, आमीन सुम्मा आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى.

इस्लाहे नफ़्स

यह बयान 25 रमज़ानुल मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 11 दिसंबर 2001 ई० मस्जिदे नूर लूसाका (ज़ाम्बिया) में हुआ। सुनने वालों में उलमा, सुल्हा और आम लोगों की बड़ी तादाद थी।

इक्तिबास

अगर शैतान के पीछे भागते फिरेंगे तो फ़ायदा नहीं होगा जब तक कि नफ़्स उसके साथ मिला हुआ है। अगर हम इस (नफ़्स) को ठीक कर लेंगे और यह उसके साथ तआवुन छोड़ देगा तो फिर शैतान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। लिहाज़ा इन दोनों में ज़्यादा ख़तरनाक इंसान का नफ़्स है। जैसे कहते हैं नाँ "धोबी पटरा लगाना" यानी गिरते का पता नहीं चलता। ऐसे ही यह नफ़्स भी ऐसा धोबी पटरा लगाता है कि यह आदमी को गिरा देता है। इसलिए इससे बहुत ज़्यादा चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
नक़्शबंदी मुजद्ददी मद्देज़िल्लहु

इस्लाहे नफ़्स

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى. وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰىo (الاعلى:۱۴تا۱۵)

وَقَالَ اللّٰهُ تعالٰى مقام آخروَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَافَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا تَقْوٰهَا. قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَاo (الشمس:۷تا۱۰)

وَقَالَ اللّٰهُ تعالٰى مقام آخروَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ. (سورۃ فاطر:۱۸)

وَقَالَ اللّٰهُ تعالٰى مقام آخرفَلَا تُزَكُّوْا اَنْفُسَكُمْ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى. (النجم:۳۲)

وَقَالَ اللّٰهُ تعالٰى مقام آخر وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ اَبَدًا. وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاءُ. (النور:۲۱)

واَلَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ. (الروم:۶۹)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

चौथा बड़ा दुश्मन

इंसान का चौथा और सबसे बड़ा दुश्मन "नफ़्स" है। यह

सबसे बड़ा गुरू घंटाल है बल्कि महाबदमाश है। आज की इस महफ़िल में इसके शुरूर और फिर उनसे बचने के तरीक़े बताए जाएंगे। सब कारसतानियाँ इसी नफ़्स की हैं। इसी नफ़्स ने अज़ाज़ील को ताउसुल मलाइका से इब्लीस और शैतान बनाया और इसी नफ़्स ने ही क़ाबील को हाबील के क़त्ल प आमादा किया।

तज़्किया-ए-नफ़्स की अहमियत

क़ुरआन मजीद में किसी बात को बयान करते हुए इतनी क़समें नहीं खायी गयीं जितनी क़समें तज़्किया-ए-नफ़्स के बारे में कहते हुए खाई गयीं। बड़े आदमी का तो कह देना ही काफ़ी होता है अगर वह कोई बात क़सम खाकर कहे तो वह बात और ज़्यादा अहम हो जाती है। यहाँ इंसानों की बात तो क्या, परवरदिगार आलम का शाही फ़रमान है। सिर्फ़ एक बार कह देना ही काफ़ी था मगर रब्बे करीम ने इसके बारे में सात क़समें खायीं हैं :

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ○ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ○ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ○ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ○
وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنٰهَا ○ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ○ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ○ فَاَلْهَمَهَا
فُجُوْرَهَا وَ تَقْوٰهَا ○ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ○ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ○ (الشمس ١-١٠)

इन आयतों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने लगातार सात चीज़ों की क़सम खाकर इर्शाद फ़रमाया कि जो बंदा सुथरा हुआ वह फ़लाह पा गया और जो इंसान सुथरा न हुआ तो वह ख़ाएब और ख़ासिर (नुक़सान और टोटे वाला) हो गया।

फ़लाह का मतलब

अरबी ज़बान में फ़लाह का मतलब है "किसी पोशीदा चीज़ का खुलना।" इसीलिए किसान को फ़लाह कहते हैं। इसी तरह वह बंदा जिसका निचला होंठ खुला हुआ हो उसे अरबी ज़बान में रजुलुन अफ़-ल-ह कहते हैं। क़ुरआन मजीद के हिसाब से इसका खुलासा यह है कि वह बंदे जिनका अज्र और बदला क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ खुलेगा।

गोया फ़लह का मतलब है :

- ऐसी कामयाबी कि जिसके बाद नाकामी न हो,
- ऐसी इज़्ज़त कि जिसके बाद ज़िल्लत न हो और
- अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ऐसा क़ुर्ब जिसके बाद दूरी न हो।

फ़लाह के लिए तीन चीज़ों की ज़रूरत

क़ुरआन मजीद में फ़लाह को तीन चीज़ों के साथ वाबस्ता किया गया :

पहली चीज :

पहली चीज़ तौबा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَتُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝ (النور:٣١)﴾

और तौबा करो अल्लाह के सामने सब मिलकर ऐ मोमिनो ताकि तुम भलाई पाओ।

दूसरी चीज़

दूसरी चीज़ तज़्किए नफ़्स है। चुनाँचे इशदि बारी तआला है :

﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى. (الاعلى:١٤)﴾

फ़लाह पा गया वह बंदा जो सुथरा हुआ।

तीसरी चीज़

और तीसरी चीज़ नमाज़ है जिसके साथ फ़लाह को वाबस्ता किया गया। चुनाँचे अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ (المؤمنون:۱،۲)﴾

तहक़ीक़ फ़लाह पा गए वे मोमिन जो अपनी नमाज़ों में झुकने वाले हैं।

नतीजा यह निकला कि फ़लाह का आला दर्जा पाने के लिए इन तीनों चीज़ों को हासिल करना ज़रूरी है। इंसान पहले गुनाहों से तौबा करे। उसके बाद तज़्किए नफ़्स की मेहनत करके जब नमाज़ पढ़ेगा तो उसे फ़लाह का सबसे आला रुत्बा नसीब हो जाएगा। इसीलिए जन्नत में जाने वाले सब फ़लाह पाने वाले होंगे। वहाँ सिर्फ़ वह लोग जाएंगे जिनका तज़्किया हो चुका होगा। अल्लाह तआला ने एक जगह पर जन्नत के तज़्किरे फ़रमाए और निचोड़ यह निकला :

﴿وَذٰلِکَ جَزَاءُ مَنْ تَزَکّٰی (طٰہٰ:۷۶)﴾

और यह बदला है उस बंदे का जो सुथरा हो।

इंसान की बनावट और (अनासिर अरबअ) चारों चीज़ों के असरात

हमारे मशाइख़ ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿خلق الانسان من اربعة اشياء من ماء ونار وطين وريح.﴾

इंसान को चार चीज़ों से पैदा किया गया है यानी पानी, आग, मिट्टी और हवा से।

इन चारों चीज़ों के इंसान के अंदर असरात हैं। किसी आदमी में एक चीज़ ज़्यादा होती है तो किसी में दूसरी। लेकिन हर एक की पहचान बता दी गई है :

﴿فان كثر ماء فهو بيت.﴾

बस अगर पानी का असर ज़्यादा होगा तो वह बंदा बड़ा अक़्लमंद और दाना होगा।

ऐसा बंदा सैलानी तबियत का मालिक होता है। सैलानी तबियत का मतलब यह है कि वह बड़ा तेज़ तर्रार बनता है। उसके अंदर अय्यारी और मक्कारी होती है जिसकी वजह से वह अपने आपको बड़ अक़्लमंद समझता है।

﴿وان كثر ناره فهو حريص.﴾

अगर आग का हिस्सा ज़्यादा होगा तो वह आदमी हरीस (लालची) होगा।

हरीस और आग में आपको कुछ जोड़ नज़र आएगा। हरीस भी वही चाहता है जो आग चाहती है। आग यह चाहती है कि मैं हर चीज़ को जलाकर भस्म कर दूं यानी खा लूं। इसी तरह हरीस बंदे का पेट भी कभी नहीं भरता। उसका भी यही जी चाहता है कि जो कुछ दूसरों के पास है वह सब कुछ मेरे पास आ जाए।

﴿وان كثر طينة فهو متواضع﴾

और अगर मिट्टी का हिस्सा ग़ालिब होगा तो उसके अंदर आजिज़ी आ जाएगी।

ऐसा बंदा दूसरों के सामने पछताता फिरता है। वह अपने आपको छिपाकर और मिटाकर रखता है। ज़मीन के अंदर कितनी तवाज़ो है। हम सब अपने पाँव से ज़मीन को रौंदते हैं लेकिन यह कितनी अच्छी है कि यह फिर भी हमें फल फूल देती है जैसे माँ बच्चे को पालती है, इसी तरह ज़मीन भी माँ की तरह इंसान के साथ शफ़क़त का मामला करती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ तवाज़ो और आजिज़ी की इतनी क़द्र मंज़िलत है कि अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿من تواضع الله رفعهُ اللّٰهُ﴾

जो अल्लाह के लिए तवाज़ो आख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसे बुलन्दी अता फ़रमाते हैं।

﴿وان كثر ريحه فهو متكبر.﴾

और अगर हवा का जुज़्व ग़ालिब होगा तो वह आदमी मुतकब्बिर होगा।

वैसे ही मुतकब्बिर बंदा हवा में उड़ता है जिसकी वजह से उस के पाँव ज़मीन पर नहीं लगते और वह फ़ुटबाल की तरह उछलता फिरता है। फ़ुटबाल में हवा ज़्यादा भर दो तो वह ज़रा से इशारे पर भी ख़ूब उछलता है। इसी तरह ज़रा सी बात पर ही मुतकब्बिर आदमी की हक़ीक़त खुलकर सामने आ जाती है। वैसे बड़े सूफ़ी साफ़ी बने फिरते होते हैं लेकिन अगर भाई कोई बात कर दे या कोई दोस्त कोई बात कर दे या घर में बीवी कोई बात कर दे तो बनावट का चढ़ावा हुआ खोल फ़ौरन उतर जाता है और अंदर जो गंद भरा हुआ होता है वह सब खुलकर बाहर आ जाता है। फिर

शरिअत व सुन्नत की इत्तिबा करने वाले चेहरे गालियाँ बकते हैं। उस वक़्त वह इंसान नहीं बल्कि हैवान नज़र आ रहे होते हैं।

जो इंसान यह चाहे कि उसकी ज़िंदगी का बैलेंस बाक़ी रहे उसे चाहिए कि वह किसी रूहानी इलाज करने वाले की ख़िदमत में रहे क्योंकि इन्हीं चार चीज़ों के कम या ज़्यादा होने की वजह से इंसान में रूहानी बीमारियाँ जन्म लेती हैं।

बातिनी बीमारियाँ और नफ़्स

तमाम बातिनी बीमारियों का ताल्लुक़ नफ़्स के साथ है। इस बात का सुबूत क़ुरआन मजीद से मिलता है। मिसाल के तौर पर शहवत का ताल्लुक़ नफ़्स के साथ है। इर्शादे बारी तआला है :

﴿وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيْ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ. (حم السجدہ:۳۱)﴾

और तुम्हारे लिए वहाँ वह है जो तुम्हारे दिल की चाहत है और तुम्हारे लिए वहाँ है जो कुछ मांगोगे।

ख़्वाहिशात भी इंसान के नफ़्स के अंदर जन्म लेती हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى. (النزعت:۴۰)﴾

सफ़ाहत का ताल्लुक़ भी इंसान के नफ़्स के साथ है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रमान है :

﴿إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ.(البقرہ:۱۳۰)﴾

मगर वही कि जिसने अहमक़ बनाया अपने नफ़्स को।

बुख़्ल का ताल्लुक़ भी इंसान के नफ़्स के साथ है। इर्शादे बारी

तआला है :

﴿وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ (النساء:۱۲۸)﴾

और नुफ़ूस के सामने मौजूद है हिर्स।

हसद का ताल्लुक़ भी नफ़्स के साथ है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿حَسَدًا مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ (البقرہ:۱۰۹)﴾

हसद के सबब जो उनके नुफ़ूस में है।

तकब्बुर का ताल्लुक़ भी नफ़्स के साथ है। क़ुरआन मजीद में इर्शादे बारी तआला है :

﴿لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِىْ اَنْفُسِهِمْ .(فرقان:۲۱)﴾

तहक़ीक़ बहुत तकब्बुर रखते हैं अपने नुफ़ूस में।

ग़ौर कीजिए कि यहाँ इन तमाम बातिनी बीमारियों के साथ नफ़्स का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है, क़ल्ब का नहीं। इसलिए मालूम हुआ कि इन बातिनी बीमारियों का ताल्लुक़ इंसान के नफ़्स के साथ ही है।

रूहानी तरक़्क़ी और रूहानी त्रुटी

यह बात ज़हन में रखिए कि जिस चीज़ में नफ़्स की ज़िंदगी है उसमें दिल के लिए मौत है और जिस चीज़ में दिल की ज़िंदगी है नफ़्स के लिए मौत हैं यानी जिस चीज़ से नफ़्स पर चोट पड़ेगी उससे दिल को रूहानी तरक़्क़ी मिल रही होगी और जिस चीज़ से नफ़्स को लज़्ज़तें मिल रही होंगी उससे इंसान को रूहानी "त्रुटि" हो रही होगी। इसलिए जो आदमी अपने नफ़्स की पूजा करे और

अपनी ख़्वाहिशात को पूरा करता फिरे वह बंदा बातिनी तौर पर इंसानी मुक़ाम से गिरकर कभी-कभी हैवानों की गिनती में शामिल हो जाता है। अब फ़ैसला हमारे हाथ में है कि हम रूहानी तरक़्क़ी चाहते हैं या रूहानी त्रुटि चाहते हैं।

बीमार दिल की अलामत

इंसान को कैसे पता चले कि उसका दिल बीमार है इस सिलसिले में हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने कुछ अलामतें बताई हैं :

पहली अलामत

पहली अलामत यह है कि जब इंसान फ़ानी चीज़ों को बाक़ी चीज़ों पर तरजीह देने लगे तो वह समझ ले कि मेरा दिल बीमार है। मसलन दुनिया का घर अच्छा लगता है मगर आख़िरत का घर बनाने की फ़िक्र नहीं है। दुनिया में इज़्ज़त मिल जाए मगर आख़िरत की इज़्ज़त या ज़िल्लत की सोच दिल में नहीं। दुनिया में आसानियाँ मिलें मगर आख़िरत के अज़ाब की परवाह नहीं।

दूसरी अलामत

दूसरी अलामत यह है कि जब इंसान रोना बंद कर दे तो वह समझ ले कि दिल सख़्त हो चुका है। कभी-कभी इंसान की आँखें रोती हैं और कभी-कभी इंसान का दिल रोता है। दिल का रोना आँखों के रोने पर फ़ज़ीलत रखता है। यह ज़रूरी नहीं कि आँख से पानी निकलना ही रोना कहलाता है बल्कि अल्लाह के कई बंदे ऐसे भी होते हैं कि उनके दिल रो रहे होते हैं। चाहे उनकी आँखों

से पानी नहीं निकलता मगर उनका दिल से रोना अल्लाह तआला के हाँ क़ुबूल हो जाता है और उनकी तौबा के लिए क़ुबूलियत के दरवाज़े खुल जाते हैं। तो दिल और आँखों में से कोई न कोई चीज़ ज़रूर रोए। और कुछ की तो दोनों चीज़ें ही रो रही होती हैं। आँखें भी रो रही होती हैं और दिल भी रो रहा होता है।

तीसरी अलामत

तीसरी अलामत यह है कि मख़्लूक़ से मिलने की तो तमन्ना हो लेकिन उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मिलना याद ही न हो तो समझ ले कि यह मेरे दिल के लिए मौत है। लोगों के एक दूसरे के साथ ऐसे ताल्लुक़ात होते हैं कि उनके दिल में एक दूसरे से मिलने की तमन्ना होती है। वे उदास होते हैं और उन्हें इंतिज़ार होता है मगर उन्हें अल्लाह की मुलाक़ात याद ही नहीं होती।

चौथी अलामत

चौथी अलामत यह है कि जब इंसान का नफ़्स अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद से घबराए और मख़्लूक़ में बैठने से खुश हो तो यह भी दिल की मौत की पहचान है। अल्लाह की याद से घबराने का मतलब यह है कि जब इंसान का दिल तस्बीह पढ़ने और मुराक़बा करने से घबराए। उसके लिए मुसल्ले पर बैठना बोझ महसूस होता हो। यह अलामत कई लोगों में पाई जाती है। एक मोटा सा उसूल समझ लो कि अगर बंदे का अल्लाह के साथ ताल्लुक़ देखना हो तो उसका मुसल्ले पर बैठना देख लो। ज़ाकिर शाग़िल बंदा मुसल्ले पर उसी तरह सुकून के साथ बैठता है जिस

तरह बच्चा माँ की गोद में सुकून से बैठता है और जिसके दिल में कजी होती है उसके लिए मुसल्ले पर बैठना मुसीबत होती है। वह सलाम फेरकर मस्जिद से भाग खड़े होते हैं। कई तो ऐसे होते हैं कि मस्जिद में आने के लिए उनका दिल आमादा ही नहीं होता। मस्जिद की बनी हुई दुकानों में किराएदार होते हैं मगर अफ़सोस कि जमाअत की नमाज़ों से महरूम होते हैं। पूछा जाए कि क्या आप मुराक़बा करते हैं? तो कहते हैं कि जी बस थोड़ा सा करता हूँ। जी पाँच मिनट करता हूँ। जी मुराक़बे का वक़्त ही नहीं मिलता। यह ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि मुझे खाने का वक़्त नहीं मिलता। जिस आदमी को खाने का वक़्त न मिले तो वह कितने दिन ज़िंदा रहेगा? इसी तरह जिसे मुराक़बा करने का वक़्त नहीं मिलता उसे भी जल्दी रूहानी मौत आ जाती है।

हमारे मशाइख़ तो मुराक़बे के लिए वक़्त ढूंढा करते थे और दुआएं मांगा करते थे कि हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में बैठने की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए। हज़रत मौलाना हुसैन अली वांभुजरांवाले के बारे में सुना है कि उनकी ख़ानक़ाह में जब ईशा के बाद मुराक़बे की महफ़िल होती तो उसके ख़त्म पर दुआ ही नहीं होती थी। क्या मतलब? मतलब यह है कि हज़रत की तरफ़ से इजाज़त थी कि जो बंदा मुराक़बे में थक जाए या जिस पर नींद ग़ालिब आ जाए वह बेशक चला जाए। कोई आधे घंटे बाद जाता, कोई एक घंटे बाद जाता और कोई दो घंटे बाद जाता। इस तरह लोग उठकर जाते रहते यहाँ तक कि सब लोग चले जाते तो हज़रत उठकर तहज्जुद की नीयत बांध लेते थे। इस मुराक़बे के ख़त्म की दुआ ही नहीं होती थी।

जी ढूंढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे जानाँ किए हुए

नफ़्स और शैतान का मकर

इंसान दो दुश्मनों के दर्मियान हुआ है। एक नफ़्स और दूसरा शैतान। शैतान बैरूनी दुश्मन है और नफ़्स अंदरूनी दुश्मन है। शैतान दाना दुश्मन है और नफ़्स भोला और ज़िद्दी दुश्मन है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में शैतान की चालों को ज़ईफ़ कहा और कैदे नफ़्स को अज़ीम कहा है, फ़रमाया :

﴿إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيفًا۔(النساء:٧٦)﴾

बेशक शैतान का मकर कमज़ोर है।

और कैदे नफ़्स का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ (يوسف:٢٨)﴾

बेशक तुम्हारा मकर बहुत बड़ा है।

यहाँ शैतान के मकर को ज़ईफ़ कहा और नफ़्से इंसानी के मकर को अज़ीम कहा। इससे पता चला कि इंसान के नफ़्स का मकर बहुत बड़ा है। इन दोनों में फ़र्क़ यह है कि शैतान इंसान से मुतलक़न गुनाह करवाता है यानी गुनाह ज़रूर करे चाहे कोई सा हो लेकिन नफ़्स इंसानी इंसान से मख़्सूस गुनाह करवाता है। मशाइख़ ने इसकी पहचान लिखी है कि जब इंसान के दिल में गुनाह का वसवसा आए और इंसान अपने ख़्याल को दूसरी तरफ़ लगा ले लेकिन बार बार उसी गुनाह का तक़ाज़ा पैदा होता रहे तो यह पहचान है कि यह ख़्वाहिश इंसान के नफ़्स की तरफ़ से है

और अगर यह ख़्वाहिश शैतान की तरफ़ से होगी तो जब इंसान इस वसवसे को पीछे हटाएगा तो शैतान उसके दिल में किसी दूसरे गुनाह का ख़्याल डाल देगा कि चलो यह नहीं करते तो यह कर लो और अगर यह नहीं करते तो फिर यह कर लो। इस तरह वह कहीं न कहीं बंदे को गुनाह में उलझाने की कोशश करेगा।

अच्छी और बुरी ख़्वाहिश

अल्लाह तआलाने इंसानी नफ़्स को ख़्वाहिशात से भर दिया है। मसलन अच्छी ख़्वाहिशात तो ये हैं कि मैं तहज्जुदगुज़ार बन जाऊँ, मैं हाफ़िज़ क़ुरआन बन जाऊँ, मैं अल्लाह का वली बन जाऊँ, मैं मुस्तजाबुद्दावात (जिसकी दुआ क़ुबूल होती हो) बन जाऊँ। हैं तो ये ख़्वाहिशात भी ख़्वाहिशात लेकिन अच्छी ख़्वाहिशात हैं। इनके अलावा दूसरी क़िस्म की ख़्वाहिशात भी हैं। मसलन मेरे हाथ सब अख़्तियारात आ जाएं, मेरा डंडा चले, लोगों में मेरी शोहरत हो, मेरी तारीफ़ें हों। ऐसी ख़्वाहिशात बुरी ख़्वाहिशात कहलाती हैं। गोया नफ़्स से ही बुरी ख़्वाहिशात की लहरें निकलती हैं और गुनाह का बीज यहीं से फूटता है।

ख़्वाहिशात नफ़्सानी का ख़मीर

जिस तरह पानी में आटा गूंधते वक़्त नमक मिला देते हैं और वह नमक पूरे आटे में समा जाता है इसी तरह जब अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्ते ने इंसान की मिट्टी को गूंधा तो ख़्वाहिशात नफ़्सानी को इस मिट्टी में मिला दिया। यही वजह है कि इसमें नफ़्सानी ख़्वाहिशात रची बसी हुई होती हैं। लेकिन याद रखें कि नमक की वजह से ही रोटी अच्छी लगती है। लिहाज़ा

अगर इस नफ़्स पर मेहनत कर ली जाए तो इसी की वजह से इंसान को तरक्क़ी मिल जाती है। अगर यह बिगड़े तो इंसान को जानवर की तरह बना देता है और अगर संवर जाए तो इंसान को फ़रिश्तों से भी ऊँचा उठा दे।

अज़ली नाफ़रमानियों में नफ़्स का किरदार

रोज़े अज़ल से जितनी नाफ़रमानियाँ हुईं, वे या तो नफ़्स ने अकेले कीं या फिर नफ़्स ने साथ मिलकर करवायीं।

इस काएनात में अल्लाह तआला की पहली नाफ़रमानी अर्श पर हुई। वह नाफ़रमानी शैतान ने की। परवरदिगार आलम ने हुक्म दिया कि ﴿اسجدوا لآدم﴾ यानी आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो। यह फ़रमाने इलाही सुनकर सब फ़रिश्ते सज्दे में चले गए लेकिन शैतान ने इंकार किया, तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया। अब सवाल यह पैदा होता है कि शैतान ने ऐसा क्यों किया? उस वक़्त तो शैतान नहीं था। वह किसका नाम लगाएगा कि मुझ से किसने गुनाह करवाया? क्या वह कहे कि मुझे फ़लाँ शैतान ने काम करवाया था। असल बात यह है कि शैतान ने उसके नफ़्स से गुनाह करवाया था। इसीलिए नफ़्स के बारे में कहते हैं कि यह महा बदमाश है क्योंकि इसने ताउसुल मलाइका को भी इब्लीस और मरदूद बना डाला। बाज़ किताबों में लिखा है कि शैतान मरदूद ने अस्सी हज़ार साल तक इबादत की मगर नफ़्स ने भटका दिया और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ. وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ. (الحجر:٣٤،٣٥)﴾

पस तू यहाँ से दफ़ा हो जा, तू मरदूद है, तुझ पर क़यामत के

दिन तक मेरी लानतें बरसती रहेंगी।

अस्सी हज़ार साल की रहमतों के काम करने के बाद उसके नफ़्स ने उसे क़यामत तक के लिए लानतों का मुस्तहिक़ बना दिया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की दूसरी नाफ़रमानी जन्नत में हुई। शैतान ने अम्मा हव्वा को यक़ीन दिलवाया कि अगर आप इस दरख़्त का फल खा लेंगे तो आप हमेशा के लिए जन्नत में रहेंगी। क़ुरआन मजीद में है कि वे दोनों के सामने क़समें खा खा कर यह बात कहता था। शैतान की तरफ़ से बार बार यक़ीन दिहानियों की वजह से अम्मा हव्वा के अंदर हिर्स पैदा हुई कि हम इसी जगह पर रहें। इससे पता चला कि शैतान अम्मा हव्वा के दिल में दरख़्त के पत्तो खाने की ख़्वाहिश को पैदा करने में कामयाब हो गया। लिहाज़ा उन्होंने खुद अपने लिए दो पत्ते तोड़े और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के लिए एक ही पत्ता तोड़ा। यही राज़ है कि इसमें मीरास उल्टी तक़सीम होती है। अल्लाह तआला बेटे को डबल दिलवाते हैं और बेटी को सिंगल। क्योंकि अम्मा हव्वा ने जन्नत में अमल है ऐसा किया था। चुनाँचे हिर्स कें पैदा होने पर उनसे भूल हो गई और उन्होंने उस दरख़्त का फल खा लिया। यहाँ ग़ौर कीजिए कि उनकी भूल का सबब क्या हुआ? इसका सबब भी इंसान का नफ़्स बना।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तीसरी नाफ़रमानी ज़मीन पर हुई। वह ज़मीन पर सबसे पहली नाफ़रमानी थी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दो बेटे थे जिनका नाम हाबील और क़ाबील था। हाबील की बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी। जब उस पर क़ाबील की

नज़र पड़ी तो वह उस पर लट्टू हो गया। लिहाज़ा उसके दिल में तलब पैदा हुई कि मैं इससे शादी करूं। इसी हवस में आकर वह अपने सगे भाई को कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। चुनाँचे उसने हाबील को क़त्ल कर दिया। क़यामत तक जितने भी क़त्ल होंगे उन सबका बोझ क़ाबील के सर पर होगा। उसके नफ़्स ने उसको ज़मीन पर अल्लाह तआला का सबसे पहला नाफ़रमान बना दिया।

लज़्ज़तों का आदी

हमारे मशाइख़ फ़रमाते हैं ﴿النفس كالطفل﴾ कि नफ़्स की मिसाल बच्चे की सी है यानी बच्चे के ज़हन में जो कोई चीज़ आ जाए तो वह ज़िद करता है कि बस मुझे तो यही चीज़ चाहिए। वह इस मक़सद के लिए रोता है और हाथ-पाँव मारता है। इस शोर व ग़ुल करने में वह चाहता है कि बस मेरा मतलब पूरा हो जाए। अगर उसके दिल में यह ख़्यालपैदा हो जाए कि यह खिलौना लेना है तो फिर जो हो जाए वह अपनी ज़िद पूरी करवाएगा। अब होता भी प्यारा है और ज़िद भी कर रहा होता है। इस तरह बंदा मुश्किल में फंस जाता है। कभी-कभी तो इंसान उसकी ख़्वाहिश को पूरा कर देता है लेकिन हर ख़्वाहिश तो पूरी नहीं की जा सकती। इसी तरह नफ़्स भी लज़्ज़तों का आदी है लेकिन उसको भी हर लज़्ज़त नहीं पहुँचाई जा सकती।

बादशाह की बेबसी

एक बादशाह के यहाँ बेटा नहीं था। उन्होंने अपने वज़ीर से

कहा भाई! अपने बेटे को ले आना। अगले रोज़ वज़ीर अपने बेटे को लेकर आया। बादशाह ने उसे देखा और प्यार करने लगा। बादशाह ने कहा अच्छा बच्चे को आज के बाद रोने मत देना। (वज़ीर ने कहा) बादशाह सलामत! बच्चे की हर बात कैसे पूरी की जाएगी? बादशाह ने कहा इसमें कौन सी बात है? मैं सब को कह देता हूँ कि बच्चे को जिस जिस चीज़ की ज़रूरत हो उसे पूरा कर दिया जाए और इसे रोने न दिया जाए। वज़ीर ने कहा ठीक है जी, आप इस बच्चे से पूछें कि यह क्या चाहता है? चुनाँचे उसने कहा हाथी चाहिए। बादशाह ने एक आदमी को हुक्म दिया कि एक हाथी लाकर बच्चे को दिखाओ। वह हाथी लेकर आया। बच्चा थोड़ी देर तो खेलता रहा लेकिन बाद में फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा अब क्यों रो रहे हो? उसने कहा एक सूई चाहिए। बादशाह ने कहा यह तो कोई ऐसी बात नहीं है लिहाज़ा एक सूई मंगावाई गई। उसने सूई के साथ खेलना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद उस बच्चे ने फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा अरे अब क्यों रो रहा है? वह कहने लगा जी इस हाथी को सूई के सुराख़ में गुज़ारें। जिस तरह बच्चे की हर ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती इसी तरह नफ़्स की भी हर ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती। लिहाज़ा सवाल पैदा होता है कि इसका कोई इलाज होना चाहिए। इसका इलाज यह है कि इसकी इस्लाह हो जाए।

सबसे ज़्यादा ख़तरनाक दुश्मन

शैतान हमारा बाहरी दुश्मन है। वह हर वक़्त हमारे पीछे लगा

हुआ है। न तो उसको खाने पीने की मसरूफ़ियत है और न ही सोने की। हम उसे भूल जाते हैं लेकिन वह हमें नहीं भूलता। उसका एक ही प्रोजेक्ट है। कई मर्तबा तो उसके साथ उसके मददगार शतूंगड़े भी होते हैं। गोया बंदे के ऊपर एक टीम काम कर रही होती है और अंदर से यह नफ़्स उनको ख़बर दे रहा होता है। गोया अंदर की सीआईडी करना नफ़्स के ज़िम्मे है। अब बताएं कि काम कितना मुश्किल हो चुका है। जब भी पता चले कि दुश्मन से हमारी जंग है मगर उसके मुख़्बिर हमारे अंदर छिपे हुए हैं तो हर अक़्लमंद आदमी यह फ़ैसला करेगा कि अंदर वालों को पहले टटोला जाए और उनको पहले गिरफ़्तार कर लिया जाए ताकि वे बाहरी दुश्मनों को कुछ बता न सकें। जब यह कोई ख़बर ही नहीं दे सकेंगे तो फिर हमारे लिए लड़ना आसान होगा। हमारे मशाइख़ ने भी यही कहा कि अगर शैतान के पीछे भागते फिरेंगे तो फ़ायदा नहीं होगा जब तक कि नफ़्स उसके साथ मिला हुआ है। अगर हम इस (नफ़्स) को ठीक कर लेंगे और यह इसके साथ मदद छोड़ देगा तो फिर शैतान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। लिहाज़ा इन दोनों में से ज़्यादा ख़तरनाक इंसान का नफ़्स है। जैसे कहते हैं नाँ "धोबी पटरा लगाना" यानी गिरते का पता नहीं चलता। ऐसे ही यह नफ़्स भी ऐसा धोबी पटरा लगाता है कि यह आदमी को गिरा देता है। इसलिए इससे बहुत ज़्यादा चौकन्ना रहने की जरूरत है। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जब इंसान का नफ़्स यादे इलाही से घबराए और मख़्लूक़ के साथ बातें करने में ख़ुश हो तो इंसान समझ ले कि अब उसको इलाज की बहुत ज़रूरत है।

नफ़्से इंसानी इतना ख़तरनाक क्यों

नफ़्स इंसानी के ख़तरनाक होने की दो वुजूहात हैं :

पहली वजह

पहली वजह यह है कि नफ़्स घर का चोर है। जब चोर घर के अंदर होता है तो वह ज़्यादा ख़तरनाक होता है क्योंकि उसके पास ज़्यादा चान्स होते हैं। वह जब भी मौक़ा पाएगा नुक़सान पहुँचाएगा। इसीलिए कहत हैं, "घर का भेदी लंका ढाए।"

दूसरी वजह

दूसरी वजह यह है कि यह इंसान का महबूब दुश्मन है यानी नफ़्स एक ऐसा दुश्मन है जिसके साथ इंसान को मुहब्बत होती है। जब किसी इंसान को अपने दुश्मन से मुहब्बत हो जाए तो इंसान बड़े आराम से वार खा लेता है। हैरानी की बात यह है कि जब कोई महबूब होता है तो उसकी कोताहियाँ भी नज़र नहीं आतीं। क्योंकि मुहब्बत नाम ही इसी चीज़ का है कि महबूब के ऐब मुहिब्ब (मुहब्बत करने वाले) की निगाहों में ख़त्म हो जाते हैं और उसे उसकी हर चीज़ अच्छी नज़र आती है।

क्योंकि घर का भेदी और महबूब दुश्मन है इसलिए यह ज़्यादा ख़तरनाक है। इसीलिए हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया–

नहनंग ओ अज़दहा ओ शेर नर मारा तो क्या मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्स अम्मारा को गर मारा

अब यहाँ नफ़्स को मारने का यह मतलब नहीं है कि नफ़्स को बिल्कुल ख़त्म कर दिया जाए। ऐसा तो कभी न होगा बल्कि

नफ़्स को मारने का मतलब यह है कि इसको शरिअत की लगाम डालकर क़ाबू में कर लिया जाए। इसको नफ़्स-कशी कहते हैं।

अब मसअला बड़ा नाज़ुक है कि एक तरफ़ तो नफ़्स के लिए इतनी क़ुव्वत होना ज़रूरी है कि यह नेक काम कर सके और दूसरी तरफ़ यह इतना कमज़ोर हो जाए कि गुनाह न कर सके। इसी बैलेन्स को रखने का नाम तज़्किए नफ़्स है। यह बड़ा मुश्किल काम है। इसको क़ुव्वत भी चाहिए ताकि यह नेकी कर सके लेकिन अगर ज़रा सी भी क़ुव्वत मिलेगी तो गुनाहों पर जुर्रत करेगा। इसलिए ज़रूरी होगा कि यह इतना कमज़ोर भी हो ताकि गुनाह न कर सके।

नफ़्स को कंट्रोल करने के तरीक़े

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि नफ़्स को कंट्रोल करने के तीन तरीक़े हैं :

पहला तरीक़ा

नफ़्स को कंट्रोल करने का पहला तरीक़ा यह है कि इसको शहवतों से रोका जाए। आजकल नवजवान यह समझते हैं कि शहवत का लफ़्ज़ सिर्फ़ जिन्स यानी सैक्स के लिए इस्तेमाल होता है। ऐसी बात नहीं बल्कि अरबी ज़बान में यह लफ़्ज़ आम है। शहवत का लफ़्ज़ "इश्तिहा" से बना है और इश्तिहा किसी भी चीज़ की हो सकती है। मसलन बाज़ लोगों को खाने पीने की बहुत इश्तिहा होती है। उनका जी हर वक़्त यह चाहता है कि ये चीज़ खाएं, वह चीज़ खाएं, यह चीज़ बनाएं, वह चीज़ बनाएं। कुछ लोगों को अच्छे कपड़े पहनने की शहवत होती है। वे चाहते

हैं कि हर वक़्त बन-ठन कर और संवरकर रहें। अच्छी गाड़ी हो और अकड़ फ़ूं में चलें। बाज़ लोगों में अपनी ख़्वाहिशात नफ़्सानिया पूरी करने की शहवत होती है। तो पहला काम शहवत तोड़ना है यानी जब इंसान यह महसूस करे कि किसी चीज़ की रग़बत ज़्यादा हो रही है और वह शरिअत के रास्ते में रुकावट बन रही है तो फिर इसको लगाम डालें। जितना हम ख़्वाहिशात को पूरा करेंगे उतना ही नफ़्स मोटा होगा और जितना अपनी ख़्वाहिशात को तोड़ेंगे उतनी ही नफ़्स कमज़ोर होगा। इसकी मिसाल ऐसे है कि जैसे घोड़े क़ाबू में न आता हो तो लोग उसको थोड़ा चारा देते हैं। जब उसे कई दिन भूख मिलती है तो वह फिर कमज़ोर हो जाता है फिर वह सवार को अपने ऊपर बैठने भी देता है और सवारी भी करने देता है। इसी तरह नफ़्स के घोड़े पर सवारी के लिए ज़रूरी है कि उसे ख़्वाहिशात की ग़िज़ा थोड़ी दें।

दूसरा तरीक़ा

दूसरा तरीक़ा यह है कि नफ़्स के ऊपर इबादत का बोझ ख़ूब ला दें यानी बंदा अपना मामूल बना ले कि वह अपने आपको नेकी में मसरूफ़ रखे क्योंकि

An idle man's brain is devil's workshop.

फ़ारिग़ आदमी का ज़हन शैतान की वर्कशाप होता है।

इसलिए नफ़्स को फ़ारिग़ न रखें। जब कोई गधा क़ाबू में न आए तो सबसे पहले उसको भूखा रखते हैं। फिर वह लगाम डालने देता है। उसके बाद उस पर टिकाकर बोझ लाद देते हैं। फिर वह बोझ उठाकर आराम से चलता रहता है। इसी तरह जब

नफ़्स पर इबादत का बोझ लादेंगे तो यह अपने आप दीन के रास्ते पर चल पड़ेगा।

लिहाज़ा अगर पहले पाँच नमाज़ें पढ़ते हैं तो अब तहज्जुद भी शुरू कर दीजिए, इशराक भी शुरू कर दीजिए, चाश्त भी शुरू कर दीजिए, अव्वाबीन भी शुरू कर दीजिए।

पहले एक पारा क़ुरआन पाक पढ़ते हैं तो अब दो पारे पढ़ना शुरू कर दीजिए। तस्बीहात का वक़्त बढ़ा दीजिए। मुराक़बे का वक़्त बढ़ा दीजिए।

तीसरा तरीक़ा

तीसरा तरीक़ा यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ मांगते रहें क्योंकि नफ़्स की इस्लाह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत के बग़ैर मुमकिन नहीं। जैसे क़ुरआने अज़ीम में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया :

﴿وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِيْ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوْءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ. (يوسف ٥٣)﴾

और मैं पाक नहीं कहता अपने नफ़्स को। बेशक नफ़्स तो बुराई सिखाता है मगर जो रहम कर दिया मेरे रब ने।

यहाँ ﴿مَا رَحِمَ رَبِّيْ﴾ 'मा रहिमा रब्बि' के अलफ़ाज़ इंसानियत के नाम रब्बे रहमान का यह बहुत बड़ा पैग़ाम हैं कि जिस पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का रहम होगा उसका नफ़्स उसके क़ाबू में आएगा।

मालूम हुआ कि पहले दो काम करने के बाद इंसान हाथ उठाए और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ मांगे कि ऐ मेरे

मालिक! जो मैं कर सकता था मैंने उसकी कोशिश की है। अब तू रहमत फ़रमा दे और मेरे नफ़्स को मुतमइन्ना बना दे।

हज़रत थानवी रह० और इस्लाहे नफ़्स

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया कि नफ़्स की इस्लाह के लिए तीन काम करने ज़रूरी हैं :

पहला काम

सबसे पहला काम पहला यह करे कि मुर्शिद कामिल की ख़िदमत में रहे क्योंकि उनको पता होता है कि इंसान का नफ़्स उसके कैसे वरग़लाता है। इंसान मुर्शिद के सामने अपने को इस तरह पेश कर दे जैसे मुर्दा ग़ुस्ल देने वाले के हाथ में होता है। वह उनको अर्ज़ कर दे कि हज़रत! आप जो हुक्म करें मैं हाज़िर हूँ या जैसे कोई अंधा अपनी लाठी को दूसरे के हाथ में पकड़ाकर कहता है कि इसे पकड़कर मेरे घर में पहुँचा दो। इसी तरह इंसान अपने आपको बातिनी एतिबार से अंधा समझे और अपनी लाठी अपने मुर्शिद के हाथ में पकड़ा दे। क्योंकि मुर्शिद कामिल एक ऐसी शख़्सियत होती है जिसने अपनी ज़िंदगी इबादते इलाही में गुज़ारी होती है। वे जानते हैं कि रास्ते में गढ़े कहाँ-कहाँ आते हैं। इसलिए वे आसानी से हमें हमारी मंज़िल तक पहुँचा देंगे।

आप ने अक्सर तजरिबा किया होगा कि अगर आप किसी दोस्त के घर जाएं और वह आप को डाइरेक्शन लिखवा दे तो आपको अपनी मंज़िल तक पहुँचे के लिए कई मर्तबा रुकना पड़ता है और पूछना पड़ता है यहाँ तक कि गुम होना पड़ता है। मुश्किल

से जाकर पहुँचते हैं और कभी देर से पहुँचने की वजह से फंक्शन ही रह जाता है। और कभी ऐसा होता है कि आपसे अगली सीट पर कोई ऐसा दोस्त बैठ जाता है जो घर को जानता है तो आपको उस वक़्त कोई फ़िक्र नहीं होती न किसी से पूछने की ज़रूरत पड़ती है, न घबराहट होती है और न देर हो जाने की फ़िक्र होती है। बस वह आपको बता देता है कि अब यहाँ से दाएं मुड़ जाएं और यहाँ से बाईं तरफ़ मुड़ जाएं यहाँ तक कि एक जगह जाकर कह देता है कि बस अब यहाँ ब्रेक लगा दें क्योंकि सामने घर आ गया है।

जो मुर्शिद कामिल होता है उसका भी यही हाल होता है क्योंकि उसने मारिफ़ते इलाही का यह रास्ता किसी शेख़ कामिल की ख़िदमत में रहकर तय किया होता है और उसकी ऊँच नीच को देखा होता है। इसलिए वह सालिक को दोनों दुश्मनों (नफ़्स और शैतान) से बचाकर चलता है और उसे उसकी मंज़िल (मारिफ़ते इलाही) तक पहुँचा देता है।

कुछ लोगों को यह बात भी समझ में नहीं आती। वे कहते हैं कि मुर्शिद की क्या ज़रूरत होती है? जिस तरह उस्ताद की ज़रूरत होती है उसी तरह मुर्शिद की ज़रूरत होती है। मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं–

हर आँ कारे के बे उस्ताद बाशद
यक़ीन दानी के बे बुनियाद बाशद

हर वह काम जो बेउस्ताद होता है यक़ीन कर लो कि वह बेबुनियाद होता है।

एक और मिसाल से आपको यही बात समझाते हैं। एक तालिब इल्म इम्तिहान के पेपर दे रहा है। जब वह अपना पेपर हल कर लेता है तो उस तालिब इल्म की नज़र में वह सौ फ़ीसद ठीक होता है। अगर उसे पता हो कि मैं ग़लत लिख रहा हूँ तो वह लिखे ही क्यों। वह तो बेचारे सारी सारी रात जागकर पढ़ता रहा। वह अपनी समझ से क्यों ग़लत लिखेगा। वह तो चाहेगा कि मुझे नंबर मिले। वह जब पेपर इम्तिहान लेने वाले के सुपुर्द कर रहा होता है तो उसके ख़्याल में वह पेपर सौ फ़ीसद ठीक होता है लेकिन वही पेपर जब उस्ताद के हाथ में जाता है तो वह काटे लगाना शुरू कर देता है और कहता है कि तूने यह भी ग़लत लिखा, यह भी ग़लत लिखा। यह भी ग़लत लिखा है हत्ताकि वह तसलीम करता है कि वाक़ई मुझसे बड़ी ग़ल्तियाँ हुई हैं।

बिल्कुल इसी तरह जब इंसान अपने अमलों को देखता है तो उसकी नज़र में उसके तमाम आमाल सौ फ़ीसद ठीक होते हैं लेकिन जब वह शेख़ के पास जाता है तो वह उसे बताता है कि मियाँ! तुम्हारे इस अमल में उजब था, इसमें तकब्बुर था और इसमें रिया थी। फिर इंसान तसलीम करता है कि हाँ मेरे अंदर ये सब चीज़ें मौजूद थी। इसीलिए जब डाक्टर बीमार होते हैं तो वे अपना इलाज खुद नहीं करते बल्कि किसी दूसरे डाक्टर से इलाज करवाते हैं। गोया इंसान अगर अपना इलाज खुद करने लग जाए तो उसका अल्लाह ही हाफ़िज़ होता है। इसलिए मुर्शिद की ज़रूरत होती है जो उसको समझाए क्योंकि नफ़्स अपने हर काम में कोई न कोई जस्टीफ़िकेशन यानी दलील देगा। वह कोई उल्टा काम करेगा तो उसे सही साबित करने की कोशिश करेगा। शेख़ उसको शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ मशवरा देगा। उस पर नज़र रखेगा

और रोक-टोक करता रहेगा। जिसकी वजह से वह मारिफ़त की मंज़िल तय करता चला जाएगा।

कुछ लोग समझते हैं कि बस हम बरकत के लिए बैअत हुए हैं। नहीं बल्कि इस बैअत का मक़सद भी यही होता है कि शेख़ ने उसकी तर्बियत करनी होती है। जब इंसान उनके साथ राब्ता ही नहीं रखेगा अपने हालात बताएगा ही नहीं तो उसकी इस्लाह कैसे होगी। इसलिए शेख़ के साथ राब्ता रखने में ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है। अपने शेख़ के सामने अपनी किताब खोल दे ताकि वह आपको गाइड कर सकें कि क्या करना है।

आज तो हालत यह है कि मुरीद लोग शेख़ को आकर ख़्वाब सुनाते हैं तो ख़्वाब का वह हिस्स सुना देते हैं जो कुछ ज़्यादा अच्छा होता है और बुरे हिस्से को गोल कर जाते हैं। अगर एक मरीज़ डाक्टर से अपने मर्ज़ को छिपाए और ख़ुश हो कि मैंने डाक्टर को मर्ज़ का पता ही नहीं चलने दिया तो नुक़सान किसका होगा? नुक़सान उसी मरीज़ का होगा और वह मर जाएगा। डाक्टर को कोई नुक़सान नहीं होगा। इसलिए अपनी जो भी कैफ़ियत हो, अच्छी या बुरी, अपने शेख़ के सामने बिना घटाए बढ़ाए कह देनी चाहिए। हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया है कि जिस तरह बेटी से ग़लती हो जाए तो वह अपना सब कुछ अपनी माँ के सामने खोल देती है इसी तरह मुरीद को चाहिए कि वह अपना सब कुछ अपने शेख़ के सामने खोल दे क्योंकि एक तो वह उसको समझाएंगे और दूसरा वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ भी करेंगे और उनकी दुआ की बरकत से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको इन गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा देंगे। इसलिए शेख़ की रोक-टोक पर दिल तंग नहीं होना चाहिए क्योंकि वह

कभी कभी एंटी बाइटिक दे देते हैं। सुबह, दोपहर, शाम। उसके बग़ैर बुख़ार नहीं उतरता। हमारे मशाइख़ ने तो यहाँ तक लिखा है कि अगर बग़ैर किसी ग़लती के शेख़ इंसान को चौराहे में खड़े करके जूते मारे तो मुरीद का हक़ बनता है कि फिर जूता उठाकर अपने शेख़ के हवाले करे। इस तरह अपने आपको पेश करे। फिर देखें कि इस्लाह होती है या नहीं होती। दीन के जितने भी बड़े-बड़े हज़रात गुज़रे हैं। उन्होंने अपने मशाइख़ की सोहबत में इसी तरह बैठकर तर्बियत पाई।

तर्बियती सिलसिले की इब्तिदा

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तर्बियत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने की और सहाबा किराम की तर्बियत नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने की। इससे पता चला कि तर्बियत का सिलसिला ऊपर से चला आ रहा है। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास एक औरत आई। वह छोटे क़द की थी तो उन्होंने हाथ से इशारा करके बताया और कहा कि वह जो इतनी सी है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनकी इस्लाह फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया, आएशा! तूने एक ऐसी बात कही कि अगर इस बात को सुमन्दर में डाल दिया जाए तो वह सारे समुन्दर को कढ़वा बना दे। यह तर्बियत है। मशाइख़ भी इसी तरह आदमी की तर्बियत करते हैं।

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के अंदाज़े तर्बियत की एक झलक

हमारे सिलसिले में मशाइख़ "चुप शाह" नहीं होते लेकिन कुछ

जगहों पर मशाइख़ चुप शाह होते हैं। बस वह बैठे रहते हैं और उनके मुरीद जो मर्ज़ी आए करते फिरें, वे चुप ही रहेंगे। और हमारे हाँ तो वैसे ही डंडा हाथ में होता है।

एक मर्तबा हज़रत मुर्शिद आलम रह० मक्का मुकर्रमा में थे। वहाँ एक इंजीनियर साहब के हाँ ठहरे हुए थे। जब हज़रत रह० हरम शरीफ़ से निकले तो हज़रत रह० ने उन्हें फ़रमाया कि आगे चलो और बताओ कि किधर को जाना है। मगर उन्होंने कहा कि हज़रत! आप ही आगे चलें, मैं पीछे से आपको बताता रहूँगा। हज़रत रह० ने आगे चलना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद फिर दो रास्ते आ गए। फिर हज़रत ने पूछा, भई! बताओ किधर जाना है? उन्होंने कहा हज़रत इधर जाना है। हज़रत ने फ़रमाया तुम आगे चलो। वह कहने लगे नहीं हज़रत! मैं यहीं ठीक हूँ, आप आगे चलें। इस दफ़ा हज़रत ने इकराम कर लिया। ज़रा आगे चले फिर यही सूरतेहाल पेश आई और हज़रत ने पूछा भई! किधर जाना है? तो वह कहने लगे, हज़रत बाईं तरफ़ जाना है। हज़रत ने फ़रमाया, भई आगे चलो। वह कहने लगे, नहीं! नहीं! हज़रत! मैं पीछे ही ठीक हूँ, आप आगे चलें। हज़रत रह० के पास डंडा था। हज़रत ने उसे दिखाते हुए फ़रमाया :

तू मैडा पीर एं या मैं तेडा पीर आँ?"

यानी तुम मेरे शेख़ हो या मैं तुम्हारा शेख़ हूँ?

तब जाकर उसका दिमाग़ सीधा हुआ। फिर हज़रत रह० ने उन्हें समझाया कि कहीं पीछे चलना अदब होता है और कहीं आगे चलने में अदब होता है।

दूसरा काम

दूसरा काम यह है कि इंसान अपने दुश्मनों और हासिदों से सबक़ सीखे। कई दफ़ा अल्लाह तआला बंदे के ऊपर थानेदार मुक़र्रर कर देते हैं। वे थानेदार उस पर हर वक़्त तनक़ीद करते रहते हैं कि यह भी ठीक नहीं, यह भी ठीक नहीं, यह भी ठीक नहीं। यह बंदे को लगता तो बुरा है लेकिन वे उसे रखते हैं ठीक। अगर ये थानेदार न हों तो बंदा बिगड़ जाए। लिहाज़ा यह अल्लाह तआला की रहमत होती है। इंसान जितना ज़्यादा फ़ज़्ल व कमाल वाला होगा उसके हासिद उतने ही ज़्यादा होंगे। हज़रत अक़्दस थानवी रह० को अल्लाह तआला ने क्या ही फ़ज़्ल व कमाल अता किया था, लोग उन पर तनक़ीद करते थे। अल्लाह तआला ने इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० को कितना ज़्यादा फ़ज़्ल व कमाल अता किया था। उन पर भी लोग तनक़ीद करते हैं। इस दुनिया में सबसे ज़्यादा फ़ज़्ल व कमाल नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को हासिल हुआ और दुनिया में सबसे ज़्यादा हासिद भी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के थे। इतने हासिद थे कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन हासिदीन के शर से पनाह मांगने के लिए तरीक़ा बता दिया और फ़रमाया :

﴿وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾

इंसान को चाहिए कि वह अपने हासिदीन से सीखे। जब वह कोई तन्क़ीद करें तो वे उस तन्क़ीद से सबक़ सीखे और अपनी इस्लाह करे। वह इस तरह कि जब वह तन्क़ीद करें तो वह सोचे

कि इन्होंने मुझ पर जो तन्क़ीद की है अगर इसमें हक़ीक़त है तो मुझे अपनी इस्लाह कर लेनी चाहिए। हमारी यह हालत है कि हम हर उस बंदे को पसन्द करते हैं जो हमारी हर बात को ठीक कहे। गोया हमें यस मैन अच्छा लगता है और जिसने भी कह दिया कि यूँ नहीं बल्कि यूँ कर लें में उसी पर ग़ुस्सा आ जाता है।

तीसरा काम

तीसरा काम यह इर्शाद फ़रमाया कि इंसान दूसरे लोगों से इबरत हासिल करे। मसलन किसी ने कोई ग़लती की और उसकी वजह से ज़िल्लत और शर्मिन्दगी उठाई। इससे आदमी सबक़ सीखे कि उसनें जब यह काम किया तो उसे ज़लील होना पड़ा था। इसलिए मैं यह काम नहीं करूंगा। जो बंदा दूसरों से इबरत पकड़ता है उसकी इस्लाह जल्दी हो जाती है और जो बंदा दूसरों के हालात व वाक़िआत से इबरत नहीं पकड़ता, कुछ दिनों के बाद वह ख़ुद तमाशा बन जाता है।

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि जब इंसान इन चार तरीक़ों को अपनाएगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके नफ़्स की इस्लाह फ़रमा देंगे।

रूहानी पहलवान बनने के लिए ज़रूरी चीज़ें

यह तयशुदा बात है कि माँ का पेट इंसान के जिस्म बनने की जगह है। अगर माँ के पेट में इंसान के जिस्म में कोई नुक़्स रह जाए और बच्चा वैसे ही पैदा हो जाए तो पूरी दुनिया के डाक्टर मिलकर भी उस नुक़्स को दूर नहीं कर सकते। मसलन जो बच्चा माँ के पेट से अंधा पैदा हो, दुनिया के डाक्टर उसे आँखों वाला

नहीं बना सकते। माँ के पेट में अगर एक बच्चे की उंगलियाँ न बनीं तो दुनिया के डाक्टर उसकी उंगलियाँ नहीं बना सकते। इसी तरह यह ज़मीन और आसमान का पेट इंसान की रूहानियत के बनने की जगह है। अगर इसमें कमी रह गई तो वह क़यामत के दिन पूरी नहीं हो सकेगी। इसलिए जब रोज़े महशर मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें देखेंगे कि ईमान वालों के सरो पर ईमान का नूर है तो वे उनसे नूर मांगेगे। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ. (الحديد:١٣)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि ज़रा हमारी तरफ़ तवज्जोह कीजिए ताकि हमें भी तुम्हारी इस रोशनी से फ़ायदा मिल जाए।

मगर अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآئَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا. (الحديد:١٣)

फिर उनसे कहा जाएगा कि तुम जाओ अपने पीछे दुनिया में फिर यह नूर तलाश करो।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ. (الحديد:١٣)﴾

फिर उनके दर्मियान एक दीवार बना दी जाएगी जिसमें होगा दरवाज़ा।

साबित हुआ कि जिस तरह जिस्मानी कमी दुनिया में आकर पूरी नहीं होती इसी तरह रूहानियत में जो कमी रह जाएगी वह आख़िरत में जाकर पूरी नहीं होगी। इस वक़्त हम ज़मीन और आसमान के दर्मियान में हैं। यह पेट हमारी शख़्सियत और

रूहानियत बनने की जगह है। इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि हमारे अंदर बुरे अख़्लाक़ निकल जाएं और उनकी जगह अख़्लाक़े हमीदा पैदा हो जाएं। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि जिस तरह आदमी इरादा करे कि जी मैं पहलवान बनूंगा और उसके बाद वह अपने आपको इस काम के लिए फ़ारिग़ कर ले। रोज़ाना वर्ज़िश करे और अच्छा खाए पिए तो रोज़ाना की वर्ज़िश और अच्छी ख़ुराक के इस्तेमाल के एक दो साल बाद वह आदमी पहले से ज़्यादा मज़बूत और सेहतमंद हो जाएगा। इसी तरह इंसान मेहनत के ज़रिए विलायत भी हासिल कर सकता है। अगर एक आदमी नीयत कर ले कि मैंने अल्लाह तआला का वली बनना है और इसके बाद वह लोहे का लंगोट बांध ले, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे, अपनी आँखों की हिफ़ाज़त करे, अपने दिल व दिमाग़ की हिफ़ाज़त करे और जिन जिन आज़ा से गुनाह होते हैं उनकी हिफ़ाज़त करे तो यक़ीनन कुछ अरसे के बाद वह इंसान रूहानी तौर पर पहलवान बन जाएगा बल्कि दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ समझिए कि वह अल्लाह का वली बन जाएगा।

विलायत की क़िस्में

याद रखें कि विलायत एक कस्बी चीज़ है और नबुव्वत वहबी चीज़ है। कसबी उस चीज़ को कहते हैं जो मेहनत करके हासिल की जा सके और वहबी चीज़ वह है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके फ़ज़्ल व करम से बंदे को अता हो जाए। कोई भी बंदा अगर अल्लाह का वली बनना चाहे तो वह बन सकता है।

विलायत दो तरह की होती है :

विलायते आम्मा

विलायते अम्मा हर कलिमा पढ़ने वाले को हासिल होती है यानी जिसने भी कलिमा पढ़ा है वह अल्लाह का दोस्त है। चुनाँचे क़ुरआनी फ़ैसला है :

﴿اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا. (البقرة:٢٥٧)﴾

अल्लाह दोस्त है ईमान वालों का।

मिसाल के तौर पर अगर यह पूछा जाए कि इस मजमे में अल्लाह का दुश्मन कौन है तो कोई भी खड़ा नहीं होगा। लिहाज़ा मालूम हुआ कि यहाँ अल्लाह का दुश्मन कोई नहीं है बल्कि सब अल्लाह के दोस्त हैं।

विलायते ख़ास्सा

विलायत ख़ास्सा यह होती है कि इंसान के जिस्म से गुनाह न हों और उसके सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ूनों तक पूरे जिस्म पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अहकाम लागू हो जाएं। जो इंसान ऐसा मुत्तक़ी बन जाए उसके बारे में क़ुरआने अज़ीम का फ़ैसला है :

﴿اِنْ اَوْلِيَآءُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ. (الانفال:٣٤)﴾

उसके वली वही होते हैं जो मुत्तक़ी होते हैं।

ऐसे लोगों को अल्लाह तआला विलायते ख़ास्सा अता फ़रमा देते हैं। जैसे इंसान के बहुत से वाक़िफ़ लोग होते हैं लेकिन जिगरी यार क़िस्म के लोग थोड़े होते हैं। इसी तरह जिस आदमी

ने कलिमा पढ़ लिया, वे सब के सब अल्लाह के नेक बंदों में शामिल हो जाते हैं लेकिन जो लोग मुत्तक़ी और परहेज़गार बन जाते हैं उनको विलायते ख़ास्सा हासिल हो जाती है। यह विलायत ख़ास्सा हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। इस मेहनत का नाम तज़्किए नफ़्स है।

इस्लाहे नफ़्स के लिए सबसे बेहतरीन काम

यह बात नोट कर लें कि सब मुजाहिदों से बड़ा मुजाहिदा हर हाल में शरिअत पर अमल करना। इंसान जो मुजाहिदे अपनी मर्ज़ी से करता है, वे इस नफ़्स के लिए बड़े आसान होते हैं लेकिन हर हाल में शरिअत की पाबन्दी करना नफ़्स पर बहुत बोझल होता है।

एक मर्तबा एक साहब इस आजिज़ से मिलने आए। वह जवान थे। वह पिछले बाइस साल से लगातार रोज़ा रख रहे थे। जब उन्होंने इस आजिज़ को बताया तो पास बैठने वाले बड़े हैरान हुए। मैंने कहा, यह काम आसान है। वह कहने लगे, जी वह कैसे? मैंने कहा कि इनसे कहें कि एक दिन रोज़ा रखें और दूसरे दिन इफ़्तिार यानी नाग़ा करें। जब उन्होंने उनसे यह बात की तो वह कहने लगे कि जी यह काम मुश्किल है। फिर मैंने उन्हें समझाया कि एक दिन छोड़कर रोज़ा रखना सुन्नत है, इसीलिए मुश्किल नज़र आ रहा है क्यों साइमुद्दहर (लगातार रोज़ से) रहना आसान है और एक दिन के वक़्फ़े से रोज़ा रखना मुश्किल काम है। जिस तरह लोग सुबह व शाम खाने की आदत बना लेते हैं इसी तरह इसने सहरी और इफ़्तारी के वक़्त खाने की आदत बना

ली थी। इसलिए इसके लिए आसान था। लिहाज़ा यह उसूल ज़हन में बिठा लें कि हर हाल में सुन्नत व शरिअत पर अमल करने से ज़्यादा बोझल काम नफ़्स के लिए कोई नहीं होता। लिहाज़ा नफ़्स की जितनी इस्लाह इस काम से होती है और किसी काम से इतनी इस्लाह नहीं होती। इसलिए इमाम रब्बानी रह० ने लिखा है कि दोपहर के वक़्त सुन्नत की नीयत से थोड़ी देर क़ैलूला की नीयत सो जाने पर वह अज्र मिलता है जो करोड़ों नफ़्ली शब बेदारियों पर भी नहीं मिल सकता। तो उसूल यह बना कि अल्लाह का वली वह होता है तो हर हाल में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत पर अमल करता है। यक़ीनन इस बंदे की तबियत सुन्नत के मुताबिक़ ढल जाती है। आम आदमी को सुन्नत पर अमल करने के लिए तकल्लुफ़ करना पड़ता है लेकिन अल्लाह वालों को कोई तकल्लुफ़ नहीं करना पड़ता।

मुस्तक़िल मिज़ाजी की एक झलक

एक साहब पूछने लगे, हज़रत! क्या आप मीठी चीज़ इस्तेमाल नहीं करते? मैंने कहा, जी हाँ मैं ज़्यादा भाग दौड़ नहीं सकता, वर्ज़िश नहीं कर सकता। इसलिए डाक्टरों ने कहा है कि आप परहेज़ करें। इसलिए मैं परहेज़ करता हूँ। वह कहने लगे, फिर तो आपके लिए बड़ा मुश्किल होता होगा। मैंने कहा, अल्लाह भला करे हमारे मशाइख़ का कि उन्होंने ऐसी मेहनत करने का सलीक़ा सिखा दिया है कि जब से डाक्टरों ने कहा, मीठी चीज़ इस्तेमाल नहीं करनी । उसके बाद से कभी दिल में तलब भी पैदा नहीं हुई। तसव्वुफ़ व सुलूक की मेहनत इंसान को ऐसा मुस्तक़िल

मिज़ाज़ बना देती है। गोया ज़िक्र की मेहनत से मशाइख़ नफ़्स को लगाम डाल देते हैं। फिर इंसान लज़्ज़तों का आदी नहीं बनता बल्कि सुन्नत ही हर वक़्त उसकी नज़र के सामने रहती है। उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना हर चीज़ सुन्नत के मुताबिक़ हो जाती है। यह सधाया हुआ इंसान अल्लाह का वली कहलाता है। जबकि हम समझते हैं कि वली वह होता है जिससे करामतें होती हों हालाँकि करामतों के होना तो बड़ा आसान काम होता है। यह काम तो जोगी और हिन्दुओं से हो जाता है। इसी तरह काले इल्म वाले भी क्या-क्या शोब्दे दिखा देते हैं। यह सब काम आसान है मगर इनमें ज़ुलमत होती है और इससे ईमान का जनाज़ा निकल जाता है। जब वह फंसते हैं तो फिर हमारे पास आते हैं। हमें आज तक कभी जिन का अमल करने की ज़रूरत पेश नहीं आई बल्कि हमें तो पता ही नहीं कि वे कैसे करते हैं। जिन्नों के आमिल फंसकर हाँ हमारे पास आ जाते हैं। अल्लाह की शान देखिए कि हमें पता ही नहीं होता कि आदमियों के जिन्न हमारे पास आकर कैसे निकल जाते हैं। चुनाँचे मुर्शिदि आलम रह० फ़रमाया करते थे :

"कामिल बनना, आमिल न बनना।"

ऐसी चीज़ें तो इस तसव्वुफ़ वाले रास्ते की गिरी पड़ी चीज़ें हैं। और असल चीज़ यह है कि हर हाल में शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर हो रही हो। यही असल चीज़ है।

शरिअत की लगाम

ज़िक्र व सुलूक का मक़सद ज़िक्र की लज़्ज़तें हासिल करना

नहीं है। हमारे मशाइख़ हमें अब्दुल-लुत्फ़ नहीं बनाते बल्कि अब्दुल-लतीफ़ बनाते हैं। वे हमें लज़्ज़तों का आदी नहीं बनाते बल्कि सुन्नतों की पैरवी करने वाला बनाते हैं। गोया वे हमें सिखाते हैं कि नफ़्स एक मुँह ज़ोर घोड़ा है इसको शरिअत की लगाम दे दो। जब इसे शरिअत की लगाम मिल जाएगी तो समझना कि अब यह क़ाबू में आ चुका है। अब इस पर सवारी करो और अल्लाह के क़ुर्ब के मुक़ामात की सैर करो।

शरिअत की ख़ादिमा

जो इंसान यह समझे कि शरिअत और चीज़ है और तरीक़त और चीज़ है, वह पक्का जाहिल है। दिल के कान खोलकर सुन लें जो कुछ भी है वह शरिअत में है। तरीक़त तो शरिअत की ख़ादिमा है। यह ग़लतफ़हमी दूर कर लेनी चाहिए। आजकल तो लोग बंदे को वली जब समझते हैं जो उन्हें उल्टा सीधा काम करके दिखा दे।

कैफ़ियत का अलट पलट होना

एक आम आदमी और अल्लाह के वली में यह फ़र्क़ होता है कि आम आदमी भी बड़े बड़े काम कर जाता है लेकिन उसको इस्तिक़ामत नसीब नहीं होती। लिहाज़ा एक वक़्त में वह ऐसी नमाज़ पढ़ेगा जैसी वक़्त का अब्दाल पढ़ता है और अगली नमाज़ ऐसे पढ़ेगा जैसे वक़्त का फ़ासिक़ फ़ाजिर पढ़ रहा होता है। उसकी कैफ़ियतों में बड़ी ऊँच नीच होती है कभी तो उसकी अल्लाह से ऐसी लौ लगी होती है कि उसके सामने गिड़गिड़ाकर मुनाजात कर रहा होता है और आदमी को उस पर रश्क आता है

और कभी वह कबीरा गुनाह कर रहा होता है। नए सालिक की कैफ़ियत अदलती बदलती रहती है। इसको 'तलवीन अहवाल' कहते हैं लेकिन साहब निस्बत लोग 'साहिबे तमकीन' होते हैं। उनको इस्तिक़ामत हासिल होती है। वह हर हाल में एक ही रास्ते पर चल रहे होते हैं। देस या परदेस और ख़ुशी व ग़मी के हालात उनके मामूलात में रुकावट नहीं बनते। इसीलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन अज़ीम में इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا. (حم السجدہ:۳۰)﴾

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर इस पर डटे रहे।

इस्तिक़ामत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बहुत पसन्द है। और यह इस्तिक़ामत इस्लाहे नफ़्स के बाद हासिल होती है।

नफ़्स की मक्कारियाँ

अगर नफ़्स की इस्लाह न की जाए तो यह नफ़्स इंसान के साथ इसी तरह खेलता है जैसे बच्चे गेंद के साथ खेलते हैं। यह उल्टे काम करवाकर हुज्जतें पेश करते हैं। एक साहब रिश्वत लेते थे। किसी ने उससे कहा, भई! रिश्वत क्यों लेते हो? वह कहने लगा, जी मैं अपने लिए तो नहीं लेता, मैंने तो दो रोटियाँ ही खानी होती हैं। मैं यह सब कुछ बच्चों के लिए करता हूँ क्योंकि उनके लिए भी तो कुछ लाना फ़र्ज़ है नाँ। अब देखो कि नफ़्स ने इसे कैसे बहकाया।

अगर मामला नफ़्स पर छोड़ दिया जाए तो फिर आदमी जो बड़े से बड़ा गुनाह कर रहा होता है उसके लिए भी नफ़्स कोई न

कोई दलील पेश कर देगा। ख़ुद चोर को यह कहते हुए सुना कि हम सारी रात जागे और बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ और डर के साथ चोरी की, इसलिए हमारी भी तो मेहनत की कमाई है नाँ।

दो तालिब इल्म थे। एक उम्र में बड़ा था और दूसरा छोटा। उस्ताद ने बड़े से पूछा कि तुम्हें किसने पैदा किया? वह कहने लगा, माँ-बाप ने। फिर उस्ताद ने छोटे से पूछा कि तुम्हें किसने पैदा किया? उसने कहा, अल्लाह ने। उस्ताद इस पर बड़ा ख़ुश हुआ और बड़े को शर्म दिलाई कि तू बड़ा है, छोटे ने तो सही जवाब दिया लेकिन तूने ग़लत। वह कहने लगा कि जी असल में मैं पहले पैदा हुआ था और यह अभी अभी पैदा हुआ है। इसलिए इसको याद रहा और मैं भूल गया।

कहने का मक़सद यह है कि यह नफ़्स इंसान को कोई न कोई दलील पेश कर देता है। यहाँ तक कि कबीरा गुनाह करेगा और नफ़्स उसे कह रहा होगा कि नहीं तू ठीक कर रहा है। नवजवान तौबा ताएब होते हैं, वे ख़ुद आकर बताते हैं कि हम गुनाहे कबीरा कर रहे होते हैं और एक दूसरे से कह रहे होते हैं कि दुनिया की मुहब्बत गंदी होती है और हमारी मुहब्बत तो सच्ची है।

एक बुरी सी मिसाल है समझाने के लिए बता रहा हूँ। कॉलेज में एक प्रोफ़ेसर साहब थे। मख़्लूत तालीम (को-एजुकेशन) की वजह से किसी लड़की के साथ उसके ताल्लुक़ात बन गए। इन नाजाएज़ ताल्लुक़ात की वजह से लड़की हमल से हो गई। उसकी बड़ी बदनामी हुई। किसी और प्रोफ़ेसर ने उसको शर्म दिलाई कि तूने बदकारी करनी थी तो एहतियात से कर लेता। अज़्ल ही कर लेता, हमल न ठहरता। वह कहने लगा, हाँ ख़्याल तो मुझे भी

आया था लेकिन बाज़ उलमा ने इसको मकरूह लिखा है।

बैअत की ज़रूरत और अहमियत

नफ़्स की मक्कारियों से बचने के लिए इसकी इस्लाह बहुत ज़रूरी है। और इसकी इस्लाह करने के लिए इंसान को किसी न किसी मुरब्बी के साथ ताल्लुक़ जोड़ना पड़ता है, जिसे बैअत कहते हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कई जगहों पर ﴿لِـمَـا﴾ 'लिमा' का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है। इसका मतलब है 'क्यों।' अल्लाह तआला ने यह लिमा का लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तर्बियत फ़रमाई।

जहाँ बनी इस्राईल के लिए 'लिमा' का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है, वहाँ इस लफ़्ज़ से या तो पहले मग़फ़िरत का ऐलान फ़रमाया या बाद में जैसा :

﴿يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ الرَّحِيْمٌ. (التحريم:١)﴾

ऐ महबूब! आपने अपने ऊपर उस चीज़ को क्यों हराम कर लिया जिसको अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए हलाल क़रार दिया।

यहाँ वल्लाहु ग़फ़ूरु-रहीम के अल्फ़ाज़ के ज़रिए माफ़ी का ऐलान साथ ही कर दिया।

और कहीं पर पहले माफ़ी का ऐलान फ़रमा दिया और बाद में लिमा का लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाया :

﴿عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ (التوبة:٤٣)﴾

अल्लाह आपको माफ़ कर दे। आपने क्यों इजाज़त दी।

पहले या बाद में माफ़ी का ऐलान इसलिए फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जानते थे कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में अज़मते इलाही और ख़शियते इलाही इतनी है कि अगर माफ़ी के ऐलान के बग़ैर लिमा के लफ़्ज़ से ख़िताब किया तो महबूब के लिए शायद बर्दाश्त करना मुश्किल हो।

और जहाँ ईमान वालों की तर्बियत के लिए क़ुरआन मजीद में लिमा का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है वहाँ माफ़ी का ऐलान नहीं फ़रमाया गया, मसलन :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ○ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ○ (الصفت ٢،٣)﴾

ऐ ईमान वालो! क्यों कहते हो जो करते नहीं। बड़ी बेज़ारी की बात है अल्लाह के हाँ कि कहो वह चीज़ जो न करो।

इसलिए कि अगर मानोगे तो रहमत का हिस्सा मिलेगा और अगर नहीं मानोगे तो फिर तुम्हारी पिटाई की जाएगी। इन आयतों में हमें सबक़ मिलता है कि इंसान को तर्बियत हासिल करनी चाहिए वरना ख़्वाहिशात इंसान पर ग़ालिब आ जाती हैं। यहाँ तक कि इंसान अपने बस में नहीं रहता।

ख़्वाहिशात की जड़ व मर्कज़

किसी किताब में मैंने पढ़ा कि किसी से पूछा गया कि तुम्हारी पसन्दीदा आयत कौन सी है? उसने कहा : ﴿كُلُوْا وَاشْرَبُوْا (المرسلت: ٤٣)﴾ यानी खाओ और पियो। उसने फिर पूछा कि तुम्हारी

पसन्दीदा दुआ कौन सी है? वह कहने लगा,

﴿رَبَّنَا اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ. (المائدة:١١٤)﴾

ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे ऊपर आसमान से ख़्वान नाज़िल फ़रमा।

उसने फिर सवाल किया कि अच्छा, तुम यह बताओ कि तुम्हारी पसन्दीदा सुन्नत कौन सी है? कहने लगा, खाने की प्लेट को अच्छी तरह साफ़ करना।

उसने फिर पूछा कि तुम अल्लाह का कोई पसन्दीदा हुक्म भी सुना दो। वह कहने लगा कि मेरे नज़दीक अल्लाह तआला का पसन्दीदा हुक्म यह है :

﴿فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَاءِ. (النساء:٣)﴾

बस तुम निकाह करो उन औरतों से जो तुम्हें पसन्द हों।

जी हाँ जब इंसान नफ़्स के हाथों खिलौना बनता है तो उसकी ख़्वाहिशात भी उसी तरह की बन जाती हैं। उसकी ख़्वाहिशात बुनियाद और मर्कज़ दुनिया की लज़्ज़तें बन जाती हैं।

मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम ने अपनी किताब 'तराशे' में अशअब तअमा नामी एक आदमी के बारे में लिखा है कि वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का ग़ुलाम था। उसके अंदर बहुत ज़्यादा तमा यानी लालच था। वह अपने ज़माने का नामी गरामी तामा था। यहाँ तक कि उसकी यह हालत थी कि उसके सामने अगर कोई आदमी अपना जिस्म खुजाता तो वह सोच में पड़ जाता कि शायद यह कहीं से कुछ दीनार निकालकर मुझे हदिया देगा। वह ख़ुद कहता था कि जब मैं

दो बंदों को कानाफूंसी करता देखता था तो मैं हमेशा सोचा करता था कि इनमें से शायद कोई वसीयत कर रहा है कि मेरे मरने के बाद मेरी विरासत अशअब को दे देना।

जब वह बाज़ार से गुज़रता और मिठाई बनाने वाले लोगों को देखता तो उनसे कहता कि बड़े-बड़े लड्डू पेढ़े बनाओ। वह कहते कि हम बड़े लड्डू क्यों बनाएं? वह कहता कि क्या पता कोई ख़रीदकर मुझे हदिए में ही दे दे।

एक बार उसको लड़कों ने घेर लिया। यहाँ तक कि उसके लिए जान छुड़ाना मुश्किल हो गया। आख़िर उसको एक तर्कीब सूझी। वह लड़कों से कहने लगा, क्या तुम्हें पता नहीं कि है कि सालिम बिन अब्दुल्लाह कुछ बांट रहे हैं। तुम भी उधर जाओ शायद कुछ मिल जाए। लड़के सालिम बिन अब्दुल्लाह रह० की तरफ़ भागे तो पीछे से उसने भी भागना शुरू कर दिया। जब सालिम बिन अब्दुल्लाह के पास पहुँचे तो वह तो कुछ भी नहीं बांट रहे थे। लड़कों ने अशअब से कहा कि आपने तो हमें ऐसे ही ग़लत बात कर दी। वह कहने लगा कि मैंने तो जान छुड़ाने की कोशिश की थी। लड़कों ने कहा कि फिर तुम खुद हमारे पीछे पीछे क्यों आ गए? कहने लगा कि मुझे ख़्याल आया कि शायद वह कुछ बांट ही रहे हों।

कम्युनिज़्म और नफ़्स की कारफ़रमाई

यह जो 'कम्युनिज़्म' दुनिया में आया है उसके पीछे भी इंसान का नफ़्स कार फ़रमा था। नारा यह लगा कि रोटी, कपड़ा और मकान ग़रीबों को देंगे। इस नारे की वजह से एक निज़ाम बनाया

गया जिसका मक़सद यह था कि हम हमेशा के लिए हाकिम ओर तुम हमेशा के लिए महकूम। इनको ग़रीब और अमीर का फ़र्क़ ख़त्म करने के लिए बराबरी क़ायम करने की तो ज़रूरत नज़र आई मगर ख़ुद सारी ज़िंदगी हाकिम बनने के मुस्तहिक़ रहे। देखें कि नफ़्स ने कैसा धोका दिया। नतीजा यह निकला कि सत्तर साल के बाद इस निज़ाम को ख़ुद इसके मानने वालों ने दुनिया से ख़त्म कर दिया।

हक़ीक़ी मुजाहिदा

हदीस पाक में आया है कि किसी ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा, मुजाहिद कौन है? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿الْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ فِيْ نَفْسِهٖ طَاعَةِ اللّٰهِ﴾

मुजाहिद वह होता है जो अल्लाह की इताअत के मामले में अपने नफ़्स के साथ मुजाहिदा करे।

यह मुजाहिदा हर एक को करना पड़ता है। अपनी पसन्द की चीज़ें छोड़कर हर हाल में शरिअत व सुन्नत पर अमल करके दिल की ऐसी कैफ़ियत हासिल कर लेना ज़रूरी है जिसमें शरिअत पर चलने में कोई रुकावट न हो।

इसकी एक सादी सी मिसाल यूँ समझिए कि जो लोग नमाज़ी होते हैं और मस्जिद में आने जाने के आदी होते हैं उनको अगर कहें कि ज़मीन पर बैठ जाएं तो उनके लिए ज़मीन पर बैठना बड़ा आसान है बल्कि उनको अगर आप सोफ़े पर बैठने को कहें तो वह कहते हैं कि नहीं ज़मीन पर बैठना अच्छा लगता है। लेकिन

अगर किसी ग़ैर-मुस्लिम अंग्रेज़ से कहें कि जी ज़मीन पर बैठ जाएं तो उसको जान के लाले पड़ जाएंगे। वह ज़मीन पर बैठ ही नहीं सकता।

हमें कई मर्तबा ऐसे तजरिबे हुए। एक बार कुछ ऐसे ही लोग हमें मिलने आए। हमने उनको पेशकश कर दी कि हम नीचे बैठे हैं आप भी यहीं बैठ जाएं। वह कहने लगे कि हम बैठ ही नहीं सकते क्योंकि हमारी टांगे इस तरह बैठने की आदी नहीं हैं। तो मेरे दिल में बात आई कि अल्लाह वाले शरिअत पर अमल करके ऐसे बन जाते हैं कि उनको शरिअत पर अमल करने में राहत महसूस होती है।

परवरदिगार आलम की सत्तारी की तारीफ़

मेरे दोस्तो! अगर गुनाहों से बू आया करती तो शायद कोई आदमी भी हमारे पास आकर न बैठता। यह तो परवरदिगार की तरफ़ से सतरपोशी है कि उसने हमारी असलियत को छिपा दिया है। एक बुज़ुर्ग बहुत ही प्यारी बात इर्शाद फ़रमाया करते थे। मुझे वह बात बहुत अच्छी लगती है। फ़रमाते थे कि ऐ दोस्त! जिसने तेरी तारीफ़ की उसने दरहक़ीक़त तेरे परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की जिसने तुझे छिपाया हुआ है और तेरी गंदगियों के बावजूद लोग तेरी तारीफ़ें करते फिरते हैं। लिहाज़ा जो हमारी तारीफ़ें कर रहा होता है वह हमारी तारीफ़ें नहीं कर रहा होता बल्कि वह उस परवरदिगार की सिफ़्ते सत्तारी की तारीफ़ें कर रहा होता है। यह तो परवरदिगार की रहमत है कि उसने पर्दे से डाले हुए हैं। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला की रहमत से फ़ायदा

उठाएं और इससे पहले कि यह मुहलत ख़त्म हो जाए अपने नफ़्स की इस्लाह कर लें वरना जो साहिबे नज़र होते हैं वे बंदे की बातिनी कैफ़ियत को महसूस कर लेते हैं।

सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़रासते ईमानी

एक बार हज़रत उस्मान ग़नी तशरीफ़ फ़रमा थे। इसी बीच एक आदमी उनके पास आया। आपने उसी वक़्त फ़रमाया, लोगों को क्या हो गया कि बेखटके हमारे पास चले आते हैं और उनकी निगाहों से ज़िना टपकता है। यह सुनकर आने वाले ने तसलीम कर लिया कि हज़रत सचमुच मुझ से रास्ते में बदनज़री हो गई थी। जी हाँ अल्लाह वालों को तो आज़ा से भी पता चल जाता है कि यह नजिस हैं क्योंकि जिस अज़्रू से भी गुनाह होता है वह नजिस हो जाता है।

ज़िना के असरात

एक बार इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने एक नौजवान को नहाते हुए देखा तो महसूस हुआ कि इसके इस्तेमाल हुए पानी में ज़िना के असरात धुलकर जा रहे हैं। वह आदमी थोड़ी देर बाद आप के पास किसी वजह से आया। आपने उसको अच्छे अंदाज़ से समझाया और तंबीह की। उसने कहा, सचमुच मुझ से गुनाह हुआ है। मैं अल्लाह तआला से माफ़ी मांगता हूँ और आज से मैं सच्ची तौबा करता हूँ। उस दिन के बाद से इमाम साहब रह० ने फ़तवा दिया कि इस्तेमाल किए हुए पानी से वुज़ू करना जाएज़ नहीं क्योंकि जब इंसान वुज़ू करता है तो उस वक़्त उसके गुनाह झड़ते

हैं। अल्लाह वालों को उन गुनाहों के असरात नज़र आ जाते हैं। इसी तरह जब इंसान जनाबत (नापाकी) का ग़ुस्ल करता है तो अल्लाह वालों को पता चल जाता है कि कहीं इसके पानी में गुनाहों के असरात तो नहीं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿اللهم ارنا حقائق الاشياء كما هي.﴾

ऐ अल्लाह हमें चीज़ों की हक़ीक़त दिखा दीजिए जैसा कि वे हैं।

इसी तरह अल्लाह वालों को भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त चीज़ों की हक़ीक़त दिखा देते हैं।

एक अजीब मामूल

किताबों में लिखा है कि अल्लामा इब्ने दक़ीक़ और शेख़ ताजुद्दीन सुबकी रह० की यह आदत थी कि जब वह अपने घर से मस्जिद की तरफ़ नमाज़ के लिए जाते थे तो अपने चेहरे पर पर्दा डाल लेते थे। लोग बड़े हैरान होते थे कि यह इनकी अजीब आदत है। एक दिन एक आदमी ने पूछ ही लिया कि हज़रत! क्या वजह है कि आप अपनी चादर से अपने चेहरे को ढांपकर आते हैं? यह सुनकर उन्होंने अपनी चादर उसके ऊपर डाल दी। उसके बाद जब उसने इधर-उधर देखा तो लोग उसे बिगड़ी हुई शक्लों नज़र आए। किसी की शक्ल कुत्तों जैसी, किसी की बंदरों जैसी और किसी की ख़िन्ज़ीर जैसी।

ख़्वाहिशात की प्यास

मेरे दोस्तो! इंसानी नफ़्स लज़्ज़तों का आदी है क्योंकि मशाइख़ ने फ़रमाया है कि नफ़्स बच्चे की तरह है। जिस तरह बच्चा एक

चीज़ के बाद दूसरी मांगता है और दूसरी के बाद तीसरी चीज़ मांगता है। वह मांगता रहता है, उसकी कोई हद्द नहीं होती। इसी तरह नफ़्स का भी यही हाल है। इसलिए अगर कोई बंदा यह सोचे कि अगर मैं नफ़्स की ख़्वाहिश को पूरा कर लूं तो वह नफ़्स मुतमइन हो जाएगा तो इसे याद रखना चाहिए कि नफ़्स हर्गिज़ मुतमइन नहीं होगा बल्कि एक ख़्वाहिश दूसरी ख़्वाहिश को जन्म देगी, दूसरी ख़्वाहिश तीसरी को जन्म देगी और तीसरी ख़्वाहिश चौथी ख़्वाहिश का दरवाज़ा खोलेगी। यह प्यास कभी नहीं बुझती।

यूरोप में जबरन ज़िना

यूरोप के अंदर क्लब बने हुए हैं जिनमें गुनाह करने के मौक़े आम हैं लेकिन हैरान करने वाले बात यह है कि वहाँ जबरन ज़िना होता है। जब उनसे इंटरव्यू लिया गया कि तुम ऐसा काम क्यों करते हो हालाँकि तुम्हें हर तक़ाज़ा पूरा करने के लिए जगहें मयस्सर हैं। वे कहने लगे, हम रज़ामंदी से ख़्वाहिश को पूरा करते करते उकता गए हैं। चुनाँचे हमने सोचा रूटीन से हटकर कोई काम करना चाहिए। इसलिए जबरन ज़िना करते हैं। इससे पता चला कि इंसान का नफ़्स तो कुछ न कुछ ढूंढता ही रहता है। इसलिए इस नफ़्स की इस्लाह ही इसका इलाज है।

बहन से निकाह

नफ़्स इंसान को बड़े धोके देता है। "करामतिया" नामी एक फ़िरक़ा गुज़रा है। उसके बानी का नाम अब्दुर्रहमान था। उसका ऐसा दिमाग़ ख़राब हुआ कि उसने अपने मानने वालों से कहा कि

तुम अपनी बहन से निकाह कर सकते हो। इस पर वह दलील देता था कि बहन क्योंकि बचपन से लेकर बड़े होने तक एक साथ रहती है और जितना वह बंदे की ज़िंदगी को जानती है कोई दूसरी औरत नहीं जानती। इसलिए बीवी बनने की वह ज़्यादा हक़दार है। आप ज़रा अक़्ल के ज़रिए इस दलील को तोड़कर दिखाएं। हर्गिज़ नहीं तोड़ सकते। हाँ अगर शरिअत के ज़रिए इस दलील को तोड़ना चाहें तो शरिअत बताएगी कि कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं कि जहाँ इंसान की हैवानियत ख़त्म होकर सिर्फ़ इन्सानियत बाक़ी रहती है। माँ और बहन वग़ैरह का रिश्ता ऐसा रिश्ता होता है कि जहाँ इंसान की नज़र पाक होती है। अगर सब पर एक ही तरह नज़र पड़ेगी तो दुनिया से शर्म व हया ख़त्म हो जाएगी।

हमजिन्सप्रस्ती एक नफ़्सियाती धोका

जिन मुल्कों में हमजिन्सप्रस्ती के बिल पेश हुए और लोगों ने पढ़े लिखे होने के बावजूद उनको पास कर दिया। उनके दिमाग़ को कैसा धोका लगा कि उन्होंने एक ग़ैरफ़ितरी अमल को ज़िंदगी का क़ानून बना दिया। उनके नफ़्स ने उनको धोका दिया।

ये सब मिसालें हमें बता रही हैं कि नफ़्से इंसानी अपनी लज़्ज़तों और मनमानियों की ख़ातिर इंसान को धोका देता है। इन धोकों से बचने के लिए हमारे सामने शरिअत की राह मौजूद है कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। आप के इन तरीक़ों को ज़िंदगी में अपनाना मुजाहिदा कहलाता है। और जो इंसान नफ़्स के साथ मुजाहिदा करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

उसके लिए रास्ते खोल देते हैं। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ (العنكبوت:٦٩)

इस्लाहे नफ़्स का आसान तरीक़ा

हमारे मशाइख़ फ़रमाते हैं कि नफ़्स की इस्लाह का आसान तरीक़ा यह है कि क्योंकि नफ़्स लज़्ज़तों का आदी है इसलिए तुम अपने नफ़्स को इबादतों की लज़्ज़तों से आशना कर दो। यह अपने आप संवर जाएगा। जी हाँ इबादत की अपनी एक लज़्ज़त होती है चाहे हम इससे वाक़िफ़ न हों। जिस तरह दस्तरख़्वान पर पड़ी हुई चीज़ों का अपना-अपना मज़ा होता है इसी तरह ज़िक्र का मज़ा और है, तिलावते क़ुरआन का मज़ा और है, तहज्जुद का मज़ा और है, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का मज़ा कुछ और है, अल्लाह के रास्ते में निकलकर दावत देने का मज़ा कुछ और है, नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर दरूद पढ़ने का मज़ा और है, रात के आख़िरी पहर में अपने गुनाहों को याद करके रोने का मज़ा कुछ और है। लेकिन हर बंदा इन मज़ों से वाक़िफ़ नहीं होता। और जो वाक़िफ़ होते हैं वे ईशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ें पढ़ा करते हैं। उनके लिए सब कुछ आसान हो जाता है। ज़रा आप इस तरह करके तो दिखाएं।

मुहब्बत इलाही की कसौटी

क्या मुसल्ले पर बैठना आसान काम है? मुसल्ले पर बैठना आसान काम नहीं है। वही बैठता है जिसका दिल अपने परवरदिगार से अटका हुआ होता है वरना तो मुसल्ले पर बैठना

बहुत मुश्किल होता है। क्या आप नवजवानों को नहीं देखते कि उनको पकड़-धकड़ कर मस्जिद में लेकर आते हैं। और वे सलाम फेरकर फ़ौरन भागते हैं और क़मीज़ ठीक करके ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे किसी जेलख़ाने से बाहर निकल आए हों। इससे पता चला कि मुसल्ले पर बैठना कोई आसान काम नहीं है। हज़रत मुर्शिद आलम रह० फ़रमाया करते थे कि मुसल्ले पर बैठना इस बात की कसौटी है कि हमारे दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत कितनी है। जो बंदा सुकून से नमाज़ पढ़े, सुकून से तिलावत करे, सुकून से तस्बीहात करे और मस्जिद के अंदर उसका दिल लगे। यह इस बात की अलामत है कि इस बंदे के दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत मौजूद है।

टूटे हुए दिल की फ़ज़ीलत

मेरे दोस्तो! अपनी ख़्वाहिशात को क़ाबू में करने की आदत डालिए। हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० फ़रमाते थे कि तसव्वुफ़ व सुलूक का निचोड़ यह है कि ख़्वाहिशात नफ़्सानी को कुचल दिया जाए। जब इंसान अपनी ख़्वाहिशात को कुचल देता है तो उस पर अल्लाह तआला की रहमत आती है। जब दिल टूटता है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से रहमतों के दरवाज़े खुल जाते हैं। इसीलिए तो फ़रमाया, ﴿أَنَا عِنْدَ مُنْكَسِرَةِ الْقُلُوْبِ﴾ मुझे ढूंढना हो तो टूटे दिलों में देखो। मैं टूटे दिलों में होता हूँ। जब इंसान की उम्मीदें टूटती हैं तो फिर अल्लाह तआला को तरस आ जाता हैं।

एक दिलचस्प वाक़िआ

किताबों में एक दिलचस्प और अजीब वाक़िआ लिखा है कि

एक औरत निहायत ही पाक दामन और नेक थी। वह चाहती थी कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हो। वह दरूद शरीफ़ भी बहुत पढ़ती थी। लेकिन ज़ियारत नहीं होती थी। उनके शौहर बड़े अल्लाह वाले थे। एक दिन उन्होंने अपने शौहर से अपनी तमन्ना ज़ाहिर की कि मेरा दिल चाहता है कि मुझे भी नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हो लेकिन कभी यह शर्फ़ नसीब नहीं हुआ। इसलिए आप मुझे कोई अमल ही बता दें जिसके करने से मैं ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की सआदत हासिल कर लूँ। उन्होंने कहा मैं आपको अमल तो बताऊँगा लेकिन आपको मेरी बात माननी पड़ेगी। वह कहने लगी आप मुझे जो बात कहेंगे मैं वह मानूंगी। वह कहने लगे कि अच्छा तो बन संवरकर दुल्हन की तरह तैयार हो जाओ। उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनाँचे उसने ग़ुस्ल किया, दुल्हन वाले कपड़े पहने, मैकअप किया, ज़ेवर पहने और दुल्हन की तरह बन संवरकर बैठ गई तो वह साहब उनके भाई के घर चले गए और जाकर उससे कहा देखो, मेरी कितनी उम्र हो चुकी है। और अपनी बहन को देखो कि वह क्या बनकर बैठी हुई है। जब भाई घर आया और उसने अपनी बहन को दुल्हन के कपड़ों में देखा तो उसने उसे डांटना शुरू कर दिया कि तुम को शर्म नहीं आती। क्या यह उम्र दुल्हन बनने की है? तुम्हारे बाल सफ़ेद हो चुके हैं। तुम्हारी कमर सीधी नहीं होती और बीस साल की लड़की बनकर बैठी हो। अब जब भाई ने डांट पिलाई तो उसका दिल टूटा और उसने रोना शुरू कर दिया। यहाँ तक रोते-रोते सो गई। अल्लाह की शान देखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे उसी नींद में

अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करवा दी, सुब्हानअल्लाह।

वह ज़ियारत करने के बाद बड़ी ख़ुश हुई। लेकिन शौहर से पूछा कि आपने वह अमल बताया नहीं जो आपने कहा था और मुझे ज़ियारत तो वैसे ही हो गई। वह कहने लगे, अल्लाह की बंदी! यही अमल था। क्योंकि मैंने तेरी ज़िंदगी पर ग़ौर किया। मुझे तेरे अंदर हर नेकी नज़र आई। तेरी ज़िंदगी शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ नज़र आई। अलबत्ता मैंने यह महसूस किया कि मैं क्योंकि आपसे प्यार व मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारता हूँ इसलिए आपका दिल कभी नहीं टूटा। इस वजह से मैंने सोचा कि जब आपक दिल टूटेगा तो अल्लाह तआला की रहमत उतरेगी और आपकी तमन्ना को पूरा कर दिया जाएगा। इसीलिए मैंने एक तरफ़ आपको दुल्हन की तरह बन संवरकर बैठने को कहा और दूसरी तरफ़ आपके भाई को बुलाकर ले आया। उसने आकर आपको डांट पिलाई जिसकी वजह से आपका दिल टूटा और अल्लाह तआला की ऐसी रहमत उतरी कि उसने आपको अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करवा दी, अल्लाहु अकबर।

क़ुरआनी फ़ैसला

मेरे दोस्तो! ख़्वाहिशात को कुचलने वाला काम हम में से हर एक को करना है। यह बहुत ही आसान काम है। यह कोई फ़ज़ाइल का काम नहीं बल्कि फ़राइज़ का काम है। इसी को तज़्कियए नफ़्स कहते हैं। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا. وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا. (الشمس ۹،۱۰)﴾

जिसने तज़्किया हासिल किया वह फ़लाह पा गया और नामुराद हुआ वह शख़्स जिसने इसको ख़ाक में मिला छोड़ा।

इस आयत में तज़्किए नफ़्स की फ़र्ज़ियत के बारे में क़ुरआनी फ़ैसला नाज़िल हो चुका है। इसलिए यह काम हर एक के लिए ज़रूरी है।

ईमान की हिफ़ाज़त

जब बंदे को अपनी चीज़ की अहमियत का पता हो तो वह उसकी हिफ़ाज़त के लिए हर मुमकिन कोशिश करता है क्योंकि उसे पता होता है कि यह मेरी ज़रूरत की चीज़ है। इसी तरह ईमान को बचाना हमारी ज़रूरत है। हम से तो वह अंधा अच्छा था। ज़रा वाक़िआ सुन लीजिए।

एक अंधा था। वह अपने सर पर पानी का घड़ा रखकर जा रहा था। रात का वक़्त था। लेकिन हैरानी की बात यह है कि रात की तारीकी में वह अंधा अपने हाथ में चिराग़ भी लिए जा रहा था। किसी दूसरे आदमी ने उसे देखा तो वह बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा कि आपको तो क़दमों के हिसाब से रास्तों का वैसे ही पता है। आपको इस रोशनी की ज़रूरत नहीं है तो आप हाथ में चिराग़ लिए क्यों जा रहे हैं? वह अंधा कहने लगा कि आपने सच कहा, मुझे वाक़ई चिराग़ की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैंने रास्ता अपने क़दमों से इतना नापा हुआ है कि मैं क़दमों से पहचान कर सीधा मंज़िल पर पहुँच जाऊँगा, अलबत्ता मैं जो चिराग़ लिए फिरता हूँ यह आँख वालों के लिए है। ऐसा न हो

कि कोई आँख वाला अंधेरे में चल रहा हो, उसे नज़र न आए और वह मुझसे टकरा जाए और मेरा घड़ा टूट जाए। इसलिए मैं अपने घड़े की हिफ़ाज़त की ख़ातिर आँख वालों को चिराग़ दिखाता फिर रहा हूँ तो हमें भी चाहिए कि हम अपनी क़ीमती दौलत 'ईमान' की हिफ़ाज़त करें। अल्लाह तआला हमें अपने ईमान की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें ताकि हम अपने नफ़्स को शरिअत की लगाम डालकर उसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का मुतीअ और फ़रमांबरदार बना लें।

जन्नत दो क़दम

हज़रत बयज़ीद बुस्तामी रह० ने ख़्वाब में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ियारत की और अर्ज़ किया ﴿يا الله! كَيْفَ اَصِلُ اِلَيْكَ﴾ यानी ऐ अल्लाह! मैं आप तक कैसे पहुँच सकता हूँ?

परवरदिगार आलम ने फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे ﴿دَعْ نَفْسَكَ وَتَعَالَ﴾ यानी तू अपना पहला क़दम नफ़्स पर रख ले तेरा दूसरा क़दम मुझ तक पहुँच जाएगा।

यही वजह है कि बयज़ीद बुस्तामी रह० फ़रमाया करते थे, "जन्नत दो क़दम है।"

किसी ने अर्ज़ किया, हज़रत! दो क़दम का क्या मतलब है? फ़रमाया, "तुम अपना पहला क़दम नफ़्स पर रख लो। तुम्हारा दूसरा क़दम जन्नत में चला जाएगा।"

क़ाबिले लाहौल माहौल

आजकल का माहौल अमली एतिबार से ख़राब होता चला जा

रहा है बल्कि सच्ची बात तो यह है, "आजकल का माहौल क़ाबिले लाहौल है।"

अगर घरों का माहौल अच्छा भी बना लिया जाए तो स्कूलों और कॉलेजों में जाने की वजह से वह कमी पूरीं हो जाती है। स्कूल तक तो बच्चे छोटी उम्र होने की वजह से फिर भी ठीक रहते हैं लेकिन जब कॉलेज में जाते हैं तो उन बेचारों को रूहानी फ़ालिज हो जाता है। वहाँ उनके ख़्यालात उनके क़ाबू में नहीं रहते। यही वजह है कि तुलबा आकर पूछते हैं कि हज़रत! क्या करें जब किताब खोलकर बैठते हैं तो हमें तो लफ़्ज़ों के बजाए किताब में तस्वीर नज़र आ रही होती है—

किताब खोलकर बैठूं तो आँख रोती है
वर्क़ वर्क़ पर तेरा चेहरा दिखाई देता है

बुरे ख़्यालात की वजह से सज़ा

याद रखें कि दिमाग़ में पैदा होने वाले ऐसे ख़्यालात की वजह से भी इंसान को सज़ा मिलेगी। इसीलिए क़ुरआन मजीद में जो मुख़्तलिफ़ सज़ाए बयान की गयी हैं उनमें से एक सज़ा यह भी है कि जहन्नमियों के सरों पर अल्लाह के फ़रिश्ते उबलता हुआ पानी डालेंगे। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ. (الحج:١٩)﴾

डाला जाएगा उनके सरों पर खौलता हुआ पानी।

सर पर गर्म पानी इसलिए डालेंगे कि इस दिमाग़ के अंदर नफ़्सानी, शैतानी, शहवानी ख़्यालात का हुजूम रहता था और यह

बंदा इन ख़्यालात को ज़हन में जमा लेता था। अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाए।

इस्लाहे नफ़्स के लिए दुआ

नफ़्स की इस्लाह बहुत ज़रूरी है। सुल्तान बाहू रह० ने फ़रमाया :

"नफ़्स पलीत पलीत जा कीता ऐ कोई असल पलीत तां नाहिसा हो।"

इसको क़ाबू में करने के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ मांगनी होती है। जिनको इस बात की फ़िक्र होती है उनकी रात के आख़िरी पहर में अपने आप आँख खुलती है और वे अल्लाह तआला से दुआएं मांगते हैं कि ऐ रब्बे करीम! इस नफ़्स को क़ाबू करने में हमारी मदद फ़रमा दीजिए। याद रखें कि जब यह उम्मत रातों को उठकर रोया करती थी तो दिन को हंसा करती थी मगर आज यह रातों को सोती है और पूरा दिन रोती है।

तहज्जुद की तौफ़ीक़ की दुआ

एक नुक्ता ज़हन में रख लीजिए कि अगर थके हुए हैं, नींद ग़ालिब है और उठ नहीं सकते तो कई मर्तबा इंसान की रात को आँख ज़रूर खुलती है। किसी तक़ाज़े की वजह से करवट लेते हुए आँख ज़रूरत खुलती है। जिन हज़रात को तहज्जुद की तौफ़ीक़ नहीं मिलती वह जब करवट लेने के लिए जागें तो इस एक लम्हे में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से तहज्जुद की तौफ़ीक़ की दुआ ज़रूर मांग लिया करें। यह एक छोटी सी बात है लेकिन इसका आपको

यह फ़ायदा होगा कि उस लम्हे मांगी हुई दुआ भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का मक़्बूल बना देगी। हमारे मशाइख़ तो यहाँ तक फ़रमाते हैं कि जो औरतें फ़ज्र की अज़ान से पहले उठकर घरों में झाड़ू देती हैं या लस्सी बिलोती हैं वह भी अल्लाह की रहमत से फ़ायदा पा लेती हैं।

अल्लाह तआला की क़द्रदानी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बड़े क़द्रदान हैं। वह किसी के किए हुए अमल को ज़ाए नहीं करते हैं। अल्लाह तआला की क़द्रदानी का क़ुरआनी सुबूत भी सुनिए। इर्शाद फ़रमाया :

﴿اِنِّیْ لَآ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْکُمْ مِّنْ ذَکَرٍ اَوْ اُنْثٰی. (آل عمران:۱۹۴)﴾

मर्द हो या औरत, मैं किसी के भी किए हुए अमल को ज़ाए नहीं करूंगा।

अल्लाह तआला के इस फ़रमान की मिसाल भी क़ुरआन मजीद में मौजूद है।

फ़िरऔन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ऐसा दुश्मन था जिसने ख़ुदा ख़ुदाई का दावा किया था। वह कहता था : ﴿اَنَا رَبُّکُمُ الْاَعْلٰی. (النزعت:۲۴)﴾ यानी मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ।

वह इतना बड़ा दुश्मन था लेकिन इतने बड़े दुश्मन ने भी मौत के क़रीब जब सामने हालात को देख लिया तो कहने लगा,

اٰمَنْتُ بِرَبِّ مُوْسٰی وَهَارُوْنَ. قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ.

उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि उस ज़ात के सिवा कोई

माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान ला चुके हैं।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इतने क़द्रदान हैं कि इतने बड़े दुश्मन ने एक चीज़ ज़ाहिर होने पर ज़ाहिरी ईमान क़ुबूल किया था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसके बदले उसके ज़ाहिरी जिस्म को महफ़ूज़ फ़रमा दिया। गोया अल्लाह तआला ने यह फ़रमा दिया कि अगर तो बिन देखे ईमान लाता तो तेरे ईमान को महफ़ूज़ कर देते। अब क्योंकि हर चीज़ ज़ाहिर हो चुकी थी और तूने ज़ाहिर को देखकर यह कलिमात पढ़े। लिहाज़ा तेरा यह अमल भी हम इतना क़ुबूल कर लेते हैं ﴿فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ﴾ (يونس : ۹۲) यानी सो आज हम बचा देते हैं तुम्हारे जिस्म को।

जो परवरदिगार इतने बड़े दुश्मन के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ को सबब बनाकर बदन को महफ़ूज़ कर दें वह मोमिन के ग़ायब पर अमल को सबब बनाकर उसके ईमान को महफ़ूज़ क्यों नहीं फ़रमाएंगे।

एक इल्मी नुक्ता

नफ़्स किसी भी वक़्त इंसान पर वार कर सकता है। इसका कोई वक़्त तय नहीं है। इसलिए इससे हर वक़्त ख़बरदार रहने की ज़रूरत है। इसको इस्तिक़ामत कहते हैं। इंसान को डट जाना चाहिए। एक इल्मी नुक्ता भी सुन लीजिए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ चचा जान! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज रख दें और दूसरे हाथ में चाँद रख दें तो भी मैं इस पैग़ाम को पहुँचाने से पीछे नहीं हटूंगा जिसको मैं लेकर आया हूँ। हम जैसे नीचा ज़हन रखने वाले लोगों के ज़हन में यह बात आती है कि चांद बहुत भारी है और सूरज उससे भी ज़्यादा भारी

है। इस भारी होने की वजह से यह मिसाल दी गई है। मगर आरिफ़ीन उलमा ने इसकी और वजूहात लिखी हैं। वे फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने चांद और सूरज की मिसाल इसलिए दी है कि :

- चाँद वह है जिससे नज़र नहीं हटती और सूरज वह है जिस पर नज़र नहीं जमती।
- चाँद से ठंडक मिलती है और सूरज से तपिश मिलती है।
- चाँद में जमाल है और सूरज़ में जलाल है।

चाँद और सूरज की ख़ुसूसियतें बयान करने बाद उलमा फ़रमाते हैं कि जो यह फ़रमाया गया है कि अगर मेरे एक हाथ पर चाँद और दूसरे हाथ पर सूरज रख दें तो बताने का मक़सद यह था कि :

"ऐ चचाजान! अगर ये मुझे डराएं धमकाएं यानी जलाल दिखाएंगे या मुझे औरत से निकाह करने का लालच दें यानी जमाल दिखाएंगे तो मैं उनके जलाल और जमाल के हथकंडों की वजह से इस पैग़ाम को पहुँचाने से पीछे नहीं हटूंगा जिसको मैं लेकर आया हूँ।"

इस्लाहे नफ़्स का मतलब

जब नफ़्स की इस्लाह हो जाती है तो इसका मतलब यह नहीं है कि बंदा हवा में उड़ना शुरू कर देता है या उसको भूख लगना बंद हो जाती है। नहीं बल्कि वह रहता फिर भी इंसान है, ज़रूरतें उसके साथ लगी रहती हैं। मगर फ़र्क़ यह होता है कि उसकी ज़िंदगी शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ हो जाती है। उसकी सोच,

रफ़्तार, किरदार, बातचीत यहाँ तक कि उसका हर अमल नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुबारक तरीक़ों के मुताबिक़ हो जाता है। इसलिए आम लोगों के लिए मुब्तदी (नए) और मुन्तही (पुराने) के दर्मियान फ़र्क़ करना मुश्किल हो जाता है। आम लोग तो बेचारे करामत के पीछे भागते फिरते हैं। कोई आमिल या जादूगर उनको कोई शोब्देबाज़ी दिखा दे तो वे ख़ुश हो जाते हैं।

मुब्तदी (नए) और मुन्तही (पुराने) का फ़र्क़

सुलूक की एक बात याद रखना कि जिस बंदे का नुज़ूल कामिल होगा उस की ज़ाहिरी ज़िंदगी एक आम बंदे की सी नज़र आएगी मगर उसका बातिन हर वक़्त अल्लाह तआला के साथ मुताल्लिक़ होगा। उसको हर वक़्त रुजुइलल्लाह की कैफ़ियत हासिल रहती है। उसके दिल में अल्लाह की याद हर वक़्त रहती है। और उसका कोई काम भी शरिअत व सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं होता। उनकी ज़ाहिरी ज़िंदगी आम इंसानों जैसी नज़र आती है। इसलिए ज़ाहिर में लोगों को धोका हो जाता है। इससे पता चला कि औलिया अल्लह की पहचान भी हर बंदा नहीं कर सकता। एक बुज़ुर्ग फरमाया करते थे :

"या अल्लाह यह क्या राज़ है कि जिस बंदे से तू ख़ुश होता है तो उसको अपने औलिया की पहचान दे देता है और जिससे तू नाराज़ होता है तो उसके दिल से औलिया की पहचान को निकाल दिया करता है।"

इस बात को एक मिसाल से समझ लीजिए। एक दरिया के दो किनारे हैं। मुब्तदी पहले किनारे पर है और मुन्तही दरिया को पार

करके दूसरे किनारे पर है। अगर किनारे की ज़ाहिरी हैसियत को देखें तो दोनों किनारे पर हैं लेकिन मुक़ाम को देखें तो दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। एक ने अभी दरिया पार करना है और दूसरा दरिया को पार कर चुका है। यही मुब्तदी यानी नए और मुन्तही यानी पुराने का फ़र्क़ है कि देखने में तो एक जैसे नज़र आते हैं लेकिन मुक़ाम में फ़र्क़ होता है। एक नफ़्स का तज़्किया करके उसे शरिअत की लगाम दे चुका होता है जबकि दूसरा अभी इब्तिदा में होता है।

काफ़िर लोग इसी बात से धोका खाते थे। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी को देखते थे तो वे सोचते थे कि नबी तो उनको होना चाहिए था जिनके साथ फ़रिश्ते होते हैं, सज-धज से आते और पता चलता कि यह अल्लाह के नबी हैं। लोग नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देखते और कहते थे :

﴿مَالِهٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِىْ فِى الْاَسْوَاقِ.(فرقان:٧)﴾

यह कैसे रसूल हैं जो खाना खाते हैं और गली बाज़ारों में चलते हैं।

इन काफ़िरों को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी आम सी नज़र आती थी। आप की ज़िंदगी इतनी सादा होती थी कि आने वालों को पूछना पड़ता था कि ﴿من منكم محمدا ﷺ﴾ यानी आपमें से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन हैं?

उलमा ने लिखा है कि नमाज़ में सज्दा सहू मुब्तदी को पेश आता है और मुन्तही को भी पेश आता है। अलबत्ता दोनों की वजूहात अलग-अलग होती हैं। मुब्तदी को सज्दा सहू नफ़्सानी, शैतानी, शहवानी ख़्यालात की वजह से पेश आता है जबकि

मुन्तही को सज्दा सहू अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जोह ग़र्क़ होने की वजह से पेश आता है यानी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ तवज्जोह में डूबे होने की वजह से यह बात ज़हन से निकल जाती है कि मैंने कितनी रकअतें पढ़ी हैं। दोनों के सज्दा सहू की हक़ीक़त में यह फ़र्क़ होता है।

नाम और काम में तज़ाद (फ़र्क़)

आज की इस महफ़िल में हम दिल में पक्का अहद करें कि हमने अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को तोड़ना है। इबादत का बोझ उस पर ज़्यादा डालना है और इसको शरिअत की लगाम देकर रखना है वरना कई मर्तबा ऐसा भी होता है कि

- नाम पूछो तो इब्राहीम और तकब्बुर देखो तो नमरूद से बढ़कर।
- नाम पूछो तो मूसा और ज़ुल्म देखो तो फ़िरऔन से बढ़कर।
- नाम पूछो तो ग़ुलाम रसूल और अमल देखो तो अबूजहल से बढ़कर।

एक अहम अमल

आज यह हालत है कि लोग ख़्वाब देखकर अपने मौतक़िद बन जाते हैं और ख़्याल यह करते हैं कि जो ख़्वाब हमें आते हैं वे सच्चे होते हैं। कितनी अजीब बात है कि बंदे को दूसरों की बुराईयों का शक होता है और उनसे नफ़रत करना शुरू कर देता है। और अपने ऐबों का यक़ीन होता है फिर भी अपने नफ़्स से मुहब्बत करता है। इसलिए नफ़्स की इस्लाह एक अहम अमल है।

रब्बे करीम हमें तज़्किए नफ़्स हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। और जो वक़्त लेकर हम सब इकठ्ठे हुए हैं परवरदिगार आलम इस वक़्त को आदाब के साथ ज़िक्र व अज़्कार के साथ और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह के साथ गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अल्लाह तआला इसको सबब बनाकर हमारी इस्लाह फ़रमा दे।

بسم الله الرحمن الرحيم

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىْ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنَ

रमज़ानुल-मुबारक के फ़ज़ाइल

यह बयान 21 रमज़ानुल-मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 6 दिसंबर 2001 ई० को मस्जिद नूर लोसाका (ज़ाम्बिया) में हुआ। सुनने वालों में उलमा, सुल्हा और आम लोगों की बड़ी तादाद थी।

इक़्तिबास

हदीस पाक में है कि रमज़ान पूरे साल का क़ल्ब है। अगर यह दरुस्त रहा तो पूरा साल दरुस्त रहा। इसीलिए इमाम रब्बानी हज़रत मौलाना मुजद्दिद अलफ़सानी रह० अपने मक्तूबात (ख़तों) में फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल-मुबारक के महीने में इतनी बरकत का नुज़ूल होता कि बक़िया पूरे साल की बरकतों को रमज़ानुल-मुबारक की बरकतों के साथ वह निस्बत भी नहीं जो समुन्दर को क़तरे के साथ होती है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्ददी मद्देज़िल्लहु

रमज़ानुल-मुबारक के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِO بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُO(البقرہ:۱۸۵)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ O وَسَلٰمٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَO وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَO

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

''रमज़ान'' का लुग़वी मफ़हूम

इर्शादे बारी तआला है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُO(البقرۃ۱۸۵)

रमज़ान का वह महीना जिसमें क़ुरआन नाज़िल हुआ।

रमज़ान का लफ़्ज़ ﴿رَمْــض﴾ रम्ज़ से निकला है। इसके लफ़्ज़ी मानी तेज़ी और शिद्दत के हैं जैसे :

- अरबी में कहते हैं ﴿رمـض يومنا ای اشتدّ حرّہ﴾ कि आज तो बहुत गर्मी है।
- इसी तरह जब कोई परिन्दा बहुत ज़्यादा प्यासा हो और प्यास

की वजह से लंबे लंबे सांस ले रहा हो तो इसे अरबी में ﴿رَمِضَ الطَّائِرُ﴾ कहते हैं यानी परिन्दे को बहुत प्यास लगी हुई है।

- चाश्त की नमाज़ जो आमतौर पर दिन के दस बजे अदा की जाती है उसके बारे में आता है कि ﴿صَلٰوةُ الضُّحٰى حِيْنَ تَرْمَضُ الْفِصَالُ﴾ यानी यह वह नमाज़ है कि जिसके पढ़ने के वक़्त ऊँटनी के बच्चे के पाँव भी गर्म हो जाते हैं।
- मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि सहाबा किराम फ़रमाते हैं कि :

﴿شَكَوْنَا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَلصَّلٰوةُ فِىْ رَمَضَاءِ﴾

हमने नबी अलैहिस्सलाम से शिकायत की कि नमाज़ के वक़्त बड़ी गर्मी है।

गोया ज़ोहर की नमाज़ के बारे में यूँ कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! ज़ोहर के वक़्त तो बड़ी गर्मी है।

रमज़ान का लफ़्ज़ ﴿فَعْلَان﴾ के वज़न पर इस्मे जिन्स है और बाज़ उलमा ने कहा कि बाब ﴿سَمِعَ يَسْمَعُ﴾ से ﴿رَمِضَ يَرْمَضُ﴾ इस्मे मुस्दिर है।

यह वह महीना है कि गुनाहों की तपिश को ठंडा करने के लिए आता है। गोया रमज़ान का लफ़्ज़ अपना मानी ख़ुद बता रहा है कि लोगों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किए, उन गुनाहों की शिद्दत की वजह से आग जल रही थी और रमज़ानुल मुबारक का महीना इस आग की शिद्दत को ख़त्म करने के लिए भेजा गया है।

रोज़े के लुग़वी और इस्तिलाही मतलब

रोज़े को अरबी ज़बान में सौम कहते हैं। इसके लुग़वी मानी रुक जाना, ठहर जाना।

- जब बीबी मरयम ने बोलना बंद किया तो क़ौम ने कहा कि आप बात करें तो उन्होंने इशारे से कहा :

﴿اِنِّیْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا(مریم:٢٦)﴾

बेशक मैंने रहमान के लिए रोज़ा मान लिया है।

उनका यह रोज़ा खाने पीने से रुकना नहीं था बल्कि इसका मतलब बोलने से रुक जाना था।

- इसी तरह अगर कोई घोड़ा चलते चलते रुक जाए और थकावट की वजह से न चले तो अरबी में इसको साइम कहते हैं।
- अरब लोग अपने घोड़े को जिहाद के लिए तैयार करते थे। क्योंकि जिहाद के वक़्त उनके लिए चारा और दाना पानी मैयस्सर नहीं हो सकता था। इसलिए वे उनको गर्मी के मौसम में ये चीज़ें नहीं देते थे ताकि उनको मश्क़ हो सके। जिन घोड़ों को तर्बियत की ख़ातिर भूखा प्यासा रखा जाता था उनको अरबी में साइम कहते हैं।

शरई मुहावरे में तुलू सादिक़ से लेकर ग़ुरूब आफ़ताब तक खाने पीने और जमा से परहेज़ करने को रोज़ा कहते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने रोज़े की तारीफ़ यह लिखी है :

وَفِی الشَّرْعِ اِمْسَاکٌ مَخْصُوْصٌ فِیْ زَمَنٍ مَخْصُوْصٍ عَنْ

شَیْءٍ مَخْصُوْصٍ بِشَرَائِطِ مَخْصُوْصَۃٍ

मख़्सूस वक़्त में मख़्सूस शर्तों के साथ मख़्सूस चीज़ों से रुकने का नाम रोज़ा है।

रोज़े की नीयत करने का वक़्त

रोज़े के लिए नीयत का होना शर्त है। अगर कोई आदमी बग़ैर नीयत के भूखा प्यासा रहेगा तो उसको कोई अज्र नहीं मिलेगा क्योंकि मोमिन की नीयत यह होती है कि मैंने रमज़ान के रोज़े रखने हैं इसलिए वह नीयत सारे रमज़ान के लिए काफ़ी होती है। उलमा ने लिखा है कि रोज़े की नीयत करने का बेहतरीन वक़्त वह है जब पहले रोज़े को इफ़्तार किया जाए तो उसी वक़्त अगले रोज़े की नीयत कर ली जाए यानी उसी वक़्त दिल में यह नीयत कर ली जाए कि मैंने कल का रोज़ा रखना है। इसका मतलब यह भी नहीं कि रात को खाना पीना बंद हो जाएगा, नहीं बल्कि सहरी तक खा पी सकता है।

इमाम जाफ़र सादिक़ रह० की तहक़ीक़

यह वह महीना है जिसकी पहली रात में जन्नत के दरवाज़ों को खोल देते हैं। कज़वीनी की किताब 'अजाएबुल-मख़्लूक़ात' में एक अजीब बात लिखी है कि इमाम जाफ़र सादिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि हर रमज़ानुल मुबारक का जो पाँचवां दिन होता है वह आने वाले रमज़ानुल मुबारक का पहला दिन होता है। उन्होंने यह क़ानून बता दिया। वह फ़रमाते हैं कि इस बात को पचास साल तक हर रमज़ानुल मुबारक में देखा गया। और इसे ठीक पाया। आज दुनिया साइंसदान बनती फिरती है, देखें हमारे मशाइख़ ने कैसी-कैसी बातें बता दीं। आप भी इस चीज़ को

आज़मा कर देख लीजिए कि इस रमज़ानुल मुबारक का जो पाँचवाँ दिन था वही आइन्दा रमज़ानुल मुबारक का पहला दिन होगा।

रमज़ानुल मुबारक पाने के लिए मसनून दुआ

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुआ फ़रमाते थे :

﴿اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبٍ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا اِلٰى رَمَضَانَ.﴾

ऐ अल्लाह! रजब और शाबान में हमें बरकत अता फ़रमा और हमें रमज़ानुल मुबारक तक पहुँचा।

आज बहुत कम दोस्त ऐसे हैं जो रमज़ानुल मुबारक से एक दो महीने पहले यह दुआ मांगना शुरू कर दें। आप ज़रा अपने दिल से पूछिए कि कितने लोगों ने यह दुआ मांगी थी। अफ़सोस कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की यह सुन्नत ख़त्म होती जा रही है

रमज़ानुल मुबारक के लिए इतना एहतिमाम

इब्ने फज़ल मशहूर ताबई हैं। वह फ़रमाते हैं कि हमारे हाँ रमज़ानुल मुबारक का इतना एहतिमाम होता था :

كَانُوْ يَدْعُوْنَ اللّٰهَ سِتَّةَ اَشْهُرٍ اَنْ يُّبَلِّغَهُمْ رَمَضَانَ ثُمَّ
يَدْعُوْنَهُ سِتَّةَ اَشْهُرٍ اَنْ يَّتَقَبَّلَهُ مِنْهُمْ.

हम छः महीने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ मांगते थे कि वह हमें रमज़ान तक पहुँचा दे और जब रमज़ानुल मुबारक गुज़र जाता था तो बक़िया छः महीने दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! हम से रमज़ान क़ुबूल फ़रमा ले।

पूरे साल का क़ल्ब

हदीस पाक में है कि रमज़ान पूरे साल का क़ल्ब है, अगर यह ठीक रहा तो पूरा साल सही रहेगा। इसीलिए इमाम रब्बानी हज़रत मौलाना मुजद्दिद अलफ़सानी रह० अपने मक्तूबात (ख़तों) में फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक के महीने में इतनी बरकत का नुज़ूल होता कि बक़िया पूरे साल की बरकतों को रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के साथ वह निस्बत भी नहीं जो क़तरे को समुन्द्र के साथ होती है।

क़ुबूलियते दुआ का इशारा

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है :

إِنَّ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عُتَقَاءَ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ يَعْنِيْ فِيْ رَمَضَانَ وَإِنَّ لِكُلِّ
مُسْلِمٍ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ دَعْوَةٌ مُّسْتَجَابَةٌ.

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रमज़ानुल मुबारक के हर दिन और हर रात में जहन्नम से जहन्नमियों को बरी करते हैं और रमज़ानुल मुबारक के हर दिन और हर रात में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हर मोमिन की कोई न कोई दुआ क़ुबूल फ़रमा लेते हैं।

अब हमारे ऊपर है कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से कितना मांगते हैं। क़ुबूलियत का इशारा दे दिया गया है। हमेशा मांगने वाले को अपने दामन के छोटा होने का शिकवा रहा है मगर देने वाले के ख़ज़ाने बहुत बड़े हैं।

टूटे रिश्ते वो जोड़ देता है
बात रब पे जो छोड़ देता है

उसके लुत्फ़ो करम के क्या कहने
लाख मांगो करोड़ देता है

यह तो मांगने वाले पर है, जैसी फ़रियाद करेगा वैसा ही ईनाम मिलेगा। अल्लाह के बंदो! दुनियादार लोग भी फ़क़ीरों के भेस का लिहाज़ रखते हैं। अगर रमज़ानुल मुबारक में कोई बंदा नेकों का भेस बनाकर अल्लाह से मांगेगा तो अल्लाह तआला क्यों लिहाज़ नहीं फ़रमाएंगे।

इबादत का महीना

इब्ने माजा की रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया :

إِنَّ هٰذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَلَا يَحْرُمُ خَيْرَهَا اِلَّا مَحْرُوْمٌ.

इस महीने में एक रात है जो हज़ार महीनों की इबादत से अफ़ज़ल है। जो बंदा इसकी ख़ैर से महरूम हुआ वह सारी ही ख़ैर से महरूम हुआ और इसकी ख़ैर से वही महरूम होता है जो हक़ीक़त में महरूम होता है।

एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرُ بَرَكَةٍ يَغْشَاكُمُ اللّٰهُ فِيْهِ فَيُنْزِلُ الرَّحْمَةَ وَ يَحُطُّ الْخَطَايَا وَيَسْتَجِيْبُ فِيْهِ الدُّعَاءَ يَنْظُرُ اللّٰهُ تَعَالٰى اِلٰى تَنَافُسِكُمْ فِيْهِ. (رواه الطبرانى)

रमज़ान तुम्हारे ऊपर आ गया है जो बरकत वाला महीना है। इसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह होते है और तुम पर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं। तुम्हारी ख़ताओं को माफ़

करते हैं, दुआओं को कुबूल फ़रमाते हैं और इसमें तुम्हारे तनाफ़ुस को देखते हैं।

तनाफ़ुस कहते हैं नेकी में एक दूसरे से आगे बढ़ने को। इसलिए हर बंदा यह कोशिश करे कि मैं ज़्यादा इबादत करने वाला बन जाऊँ। जैसे क्लास में इम्तिहान होता है तो हर बच्चे की कोशिश होती है कि मैं अव्वल आ जाऊँ इसी तरह रमज़ानुल मुबारक में हमारी कोशिश यह हो कि हम ज़्यादा इबादत करने वाले बन जाएं।

इबादत का मफ़हूम

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मेरा दिल चाहता है कि मैं सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार इंसान बन जाऊँ। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि तू अपने जिस्म से गुनाह करना छोड़ दे तो इंसानों में सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार बन जाएगा। लंबी-लंबी नफ़्लें पढ़ने का फ़ायदा तब ही होगा जब अपने मन को साफ़ करे। यह न हो कि ऊपर से ला इलाहा और अंदर से काली बला। तस्बीह भी फेरते हैं लेकिन झूठ भी नहीं छोड़ते और लोगों के दिलों को तकलीफ़ पहुँचा रहे होते हैं। किसी की ज़रा सी बात पर दिमाग़ गर्म होता है तो घर के अंदर तहलका मचा देते हैं। हालाँकि अपने में सूफ़ी साफ़ी बने फिरते हैं। याद रखें कि इबादत सिर्फ़ लंबी-लंबी नफ़्लें पढ़ने और तस्बीह फेरने का ही नाम नहीं है बल्कि अपने जिस्म से गुनाहों को छोड़ देने का दूसरा नाम इबादत है। ऐसा बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बड़ा महबूब होता है।

रोज़ेदारों का इकराम

इमाम बुख़ारी रह० ने एक हदीस बयान की है। वह फ़रमाते हैं:

اِنَّ فِی الْجَنَّۃِ بَابًا یُقَالُ لَہٗ رَیَّان یَدْخُلہ مِنْہُ الصَّائِمُوْنَ لَا یَدْخُلُ مِنْہُ اَحَدٌ غَیْرُ یُقَالُ اَیْنَ الصَّائِمُوْنَ. فَیَقُوْمُوْنَ لَا یَدْخُلُ مِنْہُ اَحَدٌ غَیْرُھُمْ وَاِذَا دَخَلُوْا اُغْلِقَ وَلَمْ یَدْخُلْ مِنْہُ اَحَدًا.

जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसका नाम रैय्यान है। क़यामत के दिन उसमें से रोज़ेदार लोग गुज़रेंगे। उनके सिवा कोई बंदा इस दरवाज़े से नहीं गुज़र सकता। आवाज़ दी जाएगी कि रोज़ा रखने वाले कहाँ हैं? रोज़दार खड़े हो जाएंगे। उनके सिवा कोई इसमें दाख़िल नहीं हो सकेगा और जब वे दाख़िल हो जाएंगे तो वह दरवाज़ा बंद कर दिया जाएगा।

बाज़ किताबों में लिखा है कि जब लोग इस दरवाज़े में से दाख़िल होंगे तो फ़रिश्ते उनको यह आयत पढ़कर सुनाएंगे :

﴿كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْئًا بِمَا اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ. (الحاقۃ:۲۴)﴾

तुम खाओ पियो यह बदला है उन अय्याम का जो तुमने अल्लाह की इबादत में गुज़ारे थे।

मक़सद यह है कि रमज़ान में तुम भूखे प्यासे रहते थे, अब तुम इस दरवाज़े में से दाख़िल हुए हो, अब तुम्हें अल्लाह की नेमतें मिलेंगी। लिहाज़ा तुम इन नेमतों को खाओ और पियो।

रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ

बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत है, नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम ने फ़रमाया :

﴿لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ إِذَا أَفْطَرَ فَرِحَ وَإِذَا لَقِيَ رَبَّهُ فَرِحَ بِصَوْمِهِ﴾

रोज़ेदार आदमी के लिए दो खुशियाँ हैं। जब वह रोज़ा इफ़्तार करता है उस वक़्त भी उसको खुशी मिलती है और क़यामत के दिन जब वह अल्लाह तआला से मुलाक़ात करेगा तो अल्लाह तआला उसको उस वक़्त भी खुशी अता करेंगे।

एक खुफ़िया मुआहिदा

रोज़ा अल्लाह तआला और उसके बंदे के दर्मियान एक खुफ़िया मुआहिदा है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿الصَّوْمُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ﴾

रोज़ा मेरे लिए है और उसका बदला भी मेरे ज़िम्मे है।

चुनाँचे बाक़ी हर क़िस्म की इबादत का सवाब फ़रिश्ते लिखते हैं। मगर रोज़े के बारे में फ़रिश्ते यह लिखते हैं कि इसने रोज़ा रखा, इसका अज्र और बदला क़यामत के दिन अल्लाह तआला देंगे।

इसमें एक नुक्ता है। इसको ख़ूब समझ लें कि हर देने वाला अपने मुक़ाम के मुताबिक़ देता है। फ़र्ज़ करें कि अगर कोई साइल आकर मुझ से मांगे तो मैं अपनी हैसियत के मुताबिक़ उसे एक रुपया दे दूंगा। अगर वह आदमी मुल्क के किसी अमीर आदमी से मांगे तो वह एक रुपया देते हुए शर्माएगा। हो सकता है कि वह उसे एक हज़ार रुपया दे दे। और अगर वही आदमी सऊदी अरब के बादशाह से जाकर मांगे तो वह एक हज़ार रुपए देता हुआ

शर्माएगा। वह उसे एक लाख रुपए देगा बल्कि हमने सुना है कि वहाँ करोड़ों चलते हैं। इससे कम की बात ही नहीं होती। जब दुनिया के बड़े लोग अपने मुक़ाम और हैसियत के मुताबिक़ देते हैं तो यहाँ से यह बात समझ लेनी चाहिए कि क़यामत के दिन जब रोज़े की इबादत का अज्र अल्लाह तआला देंगे तो वह अपनी शान के मुताबिक़ अता फ़रमाएंगे। बाज़ मुहद्दिसीन फ़रमाते हैं कि हदीस पाक के अलफ़ाज़ तो यही हैं मगर ऐराब में फ़र्क़ है। वह फ़रमाते हैं कि हदीस पाक में है :

﴿اَلصَّوْمُ لِیْ وَاَنَا اُجْزٰی بِہٖ.﴾

रोज़ा मेरे लिए और रोज़े का बदला भी मैं ख़ुद हूँ यानी क़यामत के दिन अल्लाह तआला रोज़े के बदले अपना दीदार अता फ़रमाएंगे।

बेमिसाल और बेरिया इबादत

हदीस पाक में आया है :

﴿عَلَیْکَ بِالصَّوْمِ فَاِنَّہٗ لَا مِثْلَ لَہٗ.﴾

तुम्हारे ऊपर रोज़ा लाज़िम है क्योंकि इसकी कोई मिसाल नहीं।

लिहाज़ा रोज़े के बारे में दो बातें ज़हन नशीन कर लें। एक तो यह कि यह एक बेमिसाल इबादत है और दूसरी बात यह है कि यह एक बेरिया इबादत है। रोज़े में रिया होती ही नहीं। आप पूछेंगे कि वह कैसे? वह इस तरह कि रोज़ेदार आदमी जब वुज़ू करता है तो उस वक़्त कुल्ली करने के लिए मुँह में पानी डालता है। अब अगर वह आधा पानी अंदर ले जाए और आधा बाहर निकाल दे तो किसी को क्या पता चलेगा। प्यास होने के बावजूद

जब वह मुँह में गए हुए पानी को निकाल देता है तो इसका मतलब यह होता है कि वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए रोज़ा रख रहा होता है वरना मख़्लूक़ को क्या पता। इसलिए रोज़े में रिया नहीं है और क्योंकि रोज़े में रिया नहीं होती इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया कि इसका बदला भी मैं ख़ुद हूँ।

रोज़ा ढाल है

एक हदीस पाक में फ़रमाया गया ﴿الصَّوْمُ جُنَّةٌ﴾ यानी रोज़ा ढाल है।

1. नफ़्स और शैतान के मकर व फ़रेब से ढाल है। लिहाज़ा जिस इंसान को ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया तंग करें रोज़ा उसके लिए अचूक इलाज है। जो शैतानी वसवसों में हर वक़्त गिरफ़्तार रहता हो वह ज़रा भूखा रहकर देखे। जवानी का नशा हिरन हो जाएगा।
2. दुनियावी परेशानियों और मुसीबतों से ढाल है। इसलिए जो इंसान कसरत के साथ रोज़े रखने वाला होगा अल्लाह तआला उसको दुनिया के मसाइब और परेशानियों से महफ़ूज़ फ़रमा देंगे।
3. क़यामत के दिन दोज़ख़ के अज़ाब से ढाल होगा।

रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअत

हदीस पाक में आया है :

﴿الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ﴾

रोज़ा और क़ुरआन क़यामत के दिन बंदे की शफ़ाअत करेंगे।

रोज़ा क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने यह शफ़ाअत करेगा कि ऐ अल्लाह! इस बंदे को अपनी रज़ा अता फ़रमा दीजिए और क़ुरआन मजीद भी शफ़ाअत करेगा कि ऐ अल्लाह! यह बंदा मेरी तिलावत करता था। इसलिए इससे अज़ाब हटा दीजिए।

नेकियों का सीज़न

आपने दुनिया में देखा होगा कि मुख़्तलिफ़ कारोबारों के सीज़न होते हैं। जब किसी चीज़ का सीज़न होता है वह ताजिर अपने आपको हर तरफ़ से फ़ारिग़ करके सीज़न कमाता है। उसको पता होता है कि मैं चंद महीने काम करूंगा और इसका नफ़ा पूरे साल मुझे फ़ायदा देगा। रमज़ानुल मुबारक का महीना नेकियों के सीज़न की मानिन्द है। इसलिए इस महीने में हमारे मशाइख़ ख़ूब डटकर इबादत किया करते थे।

मग़फ़िरत का मौसम

मौसमों में एक बहार का मौसम भी होता है। जब वह मौसम आता है तो हर तरफ़ हरियाली नज़र आती है। फूल ही फूल नज़र आते हैं। उनकी ख़ुशबू से फ़िज़ा मौत्तर रहती है। यूँ लगता है कि रमज़ानुल मुबारक का महीना मग़फ़िरत का मौसम है। इसमें अल्लाह तआला बंदे की मग़फ़िरत का मंज़र सजाते हैं। रोज़ा रखने वाले के लिए पानी के अंदर मछलियाँ, बिलों के अंदर चींटियाँ और हवा के अंदर परिन्दे मग़फ़िरत की दुआएं मांगते हैं। रोज़ेदार आदमी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को इतना पसन्द है कि इसका सोना भी इबादत है। जब वह सांस लेता है तो उसे अल्लाह का ज़िक्र

करने का अज्र व सवाब दिया जाता है। इफ़्तारी के वक़्त रोज़ेदार की दुआएं क़ुबूल होती हैं।

एक बात पर ग़ौर कीजिए कि मान लें कि अल्लाह का कोई नेक और बरगुज़िदा बंदा हो और वह आदमी आपको किसी वक़्त बताए कि अभी मुझे ख़्वाब के ज़रिए बशारत मिली है कि यह क़ुबूलियते दुआ का वक़्त है। तुम जो कुछ मांग सकते हो, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मांग लो। अगर वह आपको बताएगा तो आप कैसे दुआ मांगेगे? बड़ी आजिज़ी और इन्किसारी के साथ रो रो कर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से सब कुछ मांग लेंगे क्योंकि दिल में यह ध्यान होगा कि अल्लाह के एक वली ने हमें बता दिया है कि क़ुबूलियते दुआ का वक़्त है। जब एक वली बताए कि यह दुआ की क़ुबूलियत का वक़्त है तो हम इतने शौक़ से दुआ मांगेगे। अब ज़रा सोचिए कि वलियों और नबियों के सरदार अल्लाह तआला के महबूब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ेदार आदमी की इफ़्तार के वक़्त अल्लाह तआला दुआएं क़ुबूल फ़रमाते हैं तो हमें इफ़्तारी के वक़्त कितने शौक़ और लजाजत से और पुरउम्मीद होकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआएं मांगनी चाहिएं। वैसे भी दस्तूर यह है कि अगर आप किसी आदमी को मज़दूरी करने घर लाएं और वह सारा दिन पसीना बहाए और शाम के वक़्त घर जाते हुए आप से मज़दूरी मांगे तो आप उसकी मज़दूरी कभी नहीं रोकेंगे हालाँकि हमारे अंदर कितनी कमियाँ हैं। बुग़्ज़ है, कीना है, हसद है, बुख़्ल है लेकिन जो हमारे अंदर थोड़ी सी शराफ़ते नफ़्स है, वह इस बात को गवारा नहीं करती कि जिस बंदे ने सारा दिन मेहनत की है

हम उसको शाम के वक़्त मज़दूरी दिए बग़ैर ख़ाली भेज दें। अगर हमारा दिल यह नहीं चाहता तो जिस बंदे ने अल्लाह के लिए भूख और प्यास बर्दाश्त की और इफ़्तारी के वक़्त उसका मज़दूरी लेने का वक़्त आता है तो क्या अल्लाह तआला बग़ैर मज़दूरी दिए उसको टरख़ा देंगे।

आमाल में जमियत हासिल करने का सुनहरी मौक़ा

हज़रत मुजद्दिदद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक इंसान के आने वाले साल का एक नमूना होता है। इसलिए जिस बंदे ने जमियत के साथ रमज़ानुल मुबारक गुज़ारा उसका आने वाला साल भी जमियत के साथ गुज़रेगा और जिसका रमज़ान तफ़रके (गड़बड़ी) के साथ गुज़रा उसका आने वाला साल भी तफ़रके के साथ गुज़रेगा। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि जो आदमी चाहता है कि मुझे तहज्जुद की पाबन्दी नसीब हो वह रमज़ानुल मुबारक में पूरा महीना तहज्जुद की पाबन्दी कर ले। आने वाले साल में अल्लाह तआला अपनी मदद फ़रमाएंगे और उसको तहज्जुद की पाबन्दी अता फ़रमा देंगे। अगर किसी को यह शिकवा है कि मेरी आँख क़ाबू में नहीं है तो वह तजरिबा करके देख ले। वह पूरा रमज़ान अपनी नज़रों की हिफ़ाज़त कर ले तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसे आइन्दा पूरे साल में निगाहों पर कंट्रोल अता फ़रमा देंगे। इसी तरह जो आदमी झूठ से नहीं बच सकता वह पूरे रमज़ान झूठ से बचे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसे आने वाले साल में झूठ से महफ़ूज़ फ़रमा देंगे। गोया हम जिस तरह अपना रमज़ान गुज़ारेंगे हमारा आने वाला साल उसी तरह गुज़रेगा। पूरा

रमज़ान बाक़ायदगी से तिलावत करें अल्लाह तआला आने वाले साल में बाक़ायदगी से तिलावत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देंगे।

एतिकाफ़ के लुग़वी मानी

एतिकाफ़ 'उकुफ़' से निकला है और उकुफ़ के मानी है जम जाना, बैठ जाना। शरई मुहावरे में रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिन सुन्नत की नीयत के साथ मस्जिद के अंदर अपने आपको पाबन्द कर लेना एतिकाफ़ कहलता है। अलबत्ता इस दौरान इंसान अपनी ज़रूरी ज़रूरतों के लिए मस्जिद से बाहर जा सकता है।

एतिकाफ़ का असल मक़सद

एतिकाफ़ का असल मक़सद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दर की चौखट को पकड़कर बैठ जाना है। आप जानते हैं कि जो सख़ी लोग होते हैं उनका दरवाज़ा बंद होता है तो फ़क़ीर लोग वहाँ आकर डेरा लगा लेते हैं। उनको पता होता है कि यह दरवाज़ा बंद नहीं रह सकता। यह ज़रूर खुलेगा और जब खुलेगा मैं सामने हूंगा तो मुझे ज़रूर मिलेगा। इसी तरह मौतकिफ़ भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतों के दरवाज़े के सामने उम्मीद लगाकर बैठ जाता है। इन रातों में शबे-क़द्र की तलाश करनी होती है। आप यह नीयत करें कि हम इन दस दिनों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत, उसका क़ुर्ब और उसकी रज़ा हासिल करने के लिए यहाँ आए हैं।

आख़िरी अशरे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुजाहिदा

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं :

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَجْتَهِدُ فِي الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ مَا لَا يَجْتَهِدُ فِيْ غَيْرِهٖ. (مسلم)

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम रमज़ान के आख़िरी अशरे में इतना मुजाहिदा फ़रमाया करते थे कि इतना मुजाहिदा साल के दूसरे हिस्सों में नहीं करते थे।

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है :

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا دَخَلَ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ شَدَّ مِيْزَرَهٗ وَاَحْيٰى لَيْلَهٗ وَاَيْقَظَ اَهْلَهٗ.

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आख़िरी अशरा दाख़िल होता था तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने आज़ार को कसकर बांध लेते थे। रातों को जागकर गुज़ार देते थे और रातों में अपने घरवालों को भी जगाते थे।

लैलतुल-क़द्र की फ़ज़ीलत

यह सब कुछ उम्मत की तालीम के लिए था। इसीलिए हदीस पाक में आया है :

مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ اِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ. (بخاری و مسلم)

जो आदमी लैलतुल-क़द्र में ईमान के साथ और सवाब की नीयत से (इबादत के लिए) खड़ा हो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

इसमें एक नुक्ता है कि जो आदमी यह चाहता है अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त मुझे माफ़ कर दे, उसे चाहिए कि अपने दिल से वह सब लोगों के बारे में गुस्सा निकाल दे। वह अपने सीने को बेकीना कर ले। सबको अल्लाह के लिए माफ़ कर दे। यह वह मोती और हीरा है कि जो अल्लाह वालों की महफ़िलों से इस आजिज़ ने पाया है। जो आदमी इन आख़िरी रातों में जागकर इबादत करे और अपने सीने से सबके बारे में ग़ुस्सा निकाल दे तो रोज़े महशर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इसी को बहाना बनाकर माफ़ फ़रमा देंगे।

ज़िंदगी के बेहतरीन लम्हात

इसलिए यह वक़्त आपकी ज़िंदगी के बड़े ही क़ीमती अवक़ात में से एक है। इस वक़्त को ग़नीमत समझते हुए आप अपने लम्हात को ज़िक्र, इबादत और तिलावत में ख़र्च कीजिए। मस्जिद में रहकर दुनिया की बातें करना वैसे ही मना है। इसलिए एतिकाफ़ की हालत में बहुत ज़्यादा परहेज़ कीजिए। वक़्त को ऐसे गुज़ारें कि हर बंदे को अपनी फ़िक्र लगी हुई हो। यह न हो कि लोग इबादत कर रहे हों तो मैं भी इबादत करूं और जब लोग सो जाएं तो मैं भी सो जाऊँ नहीं बल्कि हर एक का अपना ज़र्फ़ है। हर एक की अपनी हिम्मत है। इसमें ख़ूब हिम्मत लगाएं। अलबत्ता जो इज्तिमाई आमाल हैं मसलन जब बयान या तालीम का वक़्त हो तो उसमें पाबन्दी करना ज़रूरी होगा। इस सिलसिले में हमने एक निज़ामुल अवक़ात बना दिया है। इंशाअल्लाह इस महफ़िल के आख़िर में वह निज़ामुल अवक़ात बांट दिया जाएगा। आप इसको अपने पास रखें और उसके मुताबिक़ वक़्त की पाबन्दी करें। यह

न हो कि जब बयान का वक़्त हो उस वक़्त आप सो जाएं और जब सोने का वक़्त हो तो उस वक़्त आप तबादलए ख़्यालात फ़रमाएं। अगर आप इस निज़ामुल अवक़ात की तर्तीब से चलेंगे तो फ़ायदा होगा। इतनी बात अर्ज़ करना ज़रूरी समझता हूँ कि आप आज अपने दिलों की कैफ़ियत देख लीजिए। अगर ज़िंदगी रही तो जब एतिकाफ़ से उठकर जाने लगेंगे तो उस वक़्त भी आप दिल की कैफ़ियत को देख लीजिएगा। यह हमारे मशाइख़ की निस्बत कोई कच्ची चीज़ नहीं है बल्कि एक पक्की ठोस चीज़ है। इन दस दिनों में आपको अपने दिल की हालत में साफ़ बदलाव नज़र आएगा। आप यूँ महसूस करेंगे कि जैसे आदमी किसी दूसरे जहान में चला गया था और बहुत अरसे के बाद दोबारा इस दुनिया में वापस आया है। अल्लाह वालों की सोहबत की यह तासीर होती है कि दिलों से दुनिया की मुहब्बत निकाल देते हैं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत दिलों में भर देते हैं। आप आदाब के साथ वक़्त गुज़ारिएगा। सादा सी बातें होंगी, हमने कोई ज़मीन व आसमान के क़लाबे नहीं मिलाने। कोई अनोखे मज़मून बयान नहीं करने। मक़सद सिर्फ़ यह है कि अपना वक़्त भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा के लिए गुज़र जाए और आपका यहाँ आना भी क़ीमती बन जाए।

रमज़ानुल मुबारक कमाने वाले ख़ुशनसीब

आज भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो ख़ूब इबादत करते हैं :

एक जवान उम्र आलिम हैं। उनकी दाढ़ी के सब बाल स्याह हैं। उनका इस आजिज़ से बैअत का ताल्लुक़ है। वह पिछले

रमज़ानुल मुबारक के बाद फ़रमाने लगे कि हज़रत अलहम्दुलिल्लाह! अल्लाह की तौफ़ीक़ से यह रमज़ानुल मुबारक ऐसा गुज़रा कि मैंने हर दिन में एक क़ुरआन मजीद की मुकम्मल तिलावत की। गोया तीस दिनों में तीस क़ुरआन मजीद पूरे किए।

एक साहब ने लिखा, हज़रत! इस रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना दस हज़ार मर्तबा कलिमा तैय्यबा पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

अगर लोगों के मामूलात आप हज़रात को बताने लगूं जो वे ख़त लिखकर बताते हैं तो आप महसूस करेंगे कि हम तो कुछ कर ही नहीं रहे। ये लोग इस वक़्त भी इसी दुनिया में हैं। उनके लिए भी दिन चौबीस घंटे का है। उनके बीवी बच्चे भी हैं, कारोबार भी हैं, ज़रूरतें भी हैं, बीमारियाँ भी हैं लेकिन इसके बावजूद वे रमज़ानुल मुबारक कमाते हैं। हम अगर पिछले बीस दिनों में कुछ नहीं कर सके तो कोई बात नहीं। अब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जो दस दिन दिए हैं इन दस दिनों को क़ीमती बनाने की कोशिश कीजिएगा। जो दोस्त अहबाब अपने कारोबार या मुलाज़मत या किसी वजह से सुन्नत एतिकाफ़ में नहीं बैठ सके उनको चाहिए कि नफ़्ल एतिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में रहें। यहीं से वे कपड़े बदलकर दफ़्तर जाएं और वहाँ से सीधे मस्जिद में आ जाएं। इस तरह इन बरकतों से उनको भी हिस्सा मिल जाएगा।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

आप दिल में रमज़ानुल मुबारक का एहतिराम रखें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को रमज़ानुल मुबारक का एहतिराम बहुत पसन्द है। 'नुज़हतुल मजालिस' किताब में एक वाक़िआ लिखा है कि एक

मजूसी था। यह वह वक़्त था जब मुसलमान ग़ालिब थे मगर कुफ़्फ़ार उनके दर्मियान रहते थे। एक बार मजूसी के बेटे ने रमज़ानुल मुबारक के दिनों में खाना खाया। जब उसने खुलेआम खाना खाया तो उस मजूसी को बहुत ग़ुस्सा आया। उसने बेटे को डाँट-डपट की कि तुझे हया नहीं आती कि मुसलमानों का मुक़द्दस महीना है, वे दिन में रोज़ा रखते हैं और तू दिन में इस तरह खुलेआम खा रहा है। ख़ैर बात आई गई हो गई। उस मजूसी के पड़ौस में एक बुज़ुर्ग रहते थे। जब उस मजूसी का इंतिक़ाल हो गया तो उन बुज़ुर्ग ने उसको ख़्वाब में देखा कि वह मजूसी जन्नत की बहारों में है। वह बड़े हैरान हुए। उससे पूछने लगे कि आप तो मजूसी थे और मैं आपको जन्नत में देख रहा हूँ। वह जवाब में कहने लगा कि एक बार मेरे बेटे ने रमज़ानुल मुबारक में खुलेआम खाना खाया था और मैंने रमज़ानुल मुबारक के अदब की वजह से उसको डाँटा था। अल्लाह तआला को मेरा यह अमल इतना पसंद आया कि मौत के वक़्त मुझे कलिमा नसीब फ़रमाया दिया। इस तरह मुझे इस्लाम पर मौत आई और अब मैं जन्नत के मज़े ले रहा हूँ।

सोचने की बात है कि जो बंदा अदब की वजह से बच्चे को तंबीह करता है, अल्लाह तआला को उसका यह अमल भी पसन्द आ जाता है तो जो बंदा उसका हक़ीक़ी माइनों में अदब करेगा और इसमें आमाल को उसी तरह अपनाएगा जैसे अपनाने का हक़ है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस पर क्यों नहीं मेहरबानी फ़रमाएंगे। लिहाज़ा इन दस रातों को ज़िंदगी की क़ीमती रातें समझें और यूँ सोचें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें अपने घर में लाकर बिठा

दिया है। अल्लाह तआला हमें कुछ देना चाहते हैं। इसलिए हम मांगे जो मांगना चाहते हैं।

नेकियों की चैकबुक

आप रमज़ानुल मुबारक की मिसाल यूँ समझें जैसे बैंक की चेक बुक होती है। अल्लाह तआला ने गोया हमें तीस चैक वाली चैक बुक दी है कि तुम इसके अंदर जितनी चाहे रक़म लिख लो। वह तुम्हारे लिए आख़िरत में जमा होती जाएगी। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने ख़ाली चैक भेज दिए और कुछ नहीं लिखा। उनके दिन ऐसे ही गए। और कई ऐसे होंगे जो एक लाख लिखेंगे, कई मिलियन लिखेंगे, कई बिलियन लिखेंगे। हर कोई अपनी-अपनी पसन्द और नसीब के मुताबिक़ लिखेगा। हमारे बीस चैक जमा हो चुके हैं और दस चैक बाक़ी हैं। इन चैकों पर लिखना हमारा काम है। जितनी रक़म लिखेंगे आख़िरत के ख़ज़ाने में उतनी नेकियाँ जमा होती जाएंगी। इसलिए इन दिनों और रातों को ख़ूब इबादत में गुज़ारिए। दिल में यह नीयत रखिए कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे आप ही को चाहता हूँ। इसलिए मैं आपके घर में आकर बैठ रहा हूँ। जब आप यूँ नीयत कर लेंगे तो अल्लाह तआला आसान फ़रमा देंगे। अल्लाह तआला बड़े क़द्रदान हैं। जब इंसान सच्चे दिल के साथ उसकी चौखट पर पड़ जाता है तो अल्लाह तआला ज़रूर रहमत का मामला फ़रमाते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल है कि अगर अल्लाह तआला ने उम्मते मुहम्मदिया को अज़ाब देना होता तो वह इस उम्मत को सूरः इख़्लास और रमज़ानुल मुबारक का महीना अता न फ़रमाते।

रमज़ानुल मुबारक और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की आपसी निस्बत

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि रमज़ानुल-मुबारक को बाक़ी महीनों के साथ वह निस्बत है जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने भाईयों से थी। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे थें उनमें एक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे। अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बरकत से बाक़ी ग्यारह बेटों की ग़लती और जुर्म को माफ़ फ़रमा दिया था। हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि साल के बारह महीने हैं। इसमें रमज़ानुल-मुबारक का महीना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह है। इस एक महीने की बरकत से अल्लाह तआला ग्यारह महीनों के गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं।

एतिकाफ़ की मज्लिस का मक़सद

आपकी ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ मज्लिसों में तर्बियत के उनवान पर कुछ बातें पेश की जाती रहेंगी। उनका मर्कज़ी ख़्याल तर्बियत होगा। सारे मज़मून इस तरह के होंगे कि इंसान में नेकी का शौक़ आएगा, अख़्लाक़ अच्छे पैदा होंगे, इंसान गुनाहों से बाज़ आएगा और आख़िरत की तरफ़ रुजू नसीब होगा। आप तलब लेकर बैठें। अल्लाह तआला हमारा यहाँ आना और बैठना क़ुबूल फ़रमाएंगे और हम आजिज़ मिस्कीनों पर तरस फ़रमा देंगे।

एक बद्दुआ पर नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आमीन कहना

हदीस पाक में आया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने एक

मर्तबा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सामने बद्दुआ की :

﴿بَعُدَ مَنْ اَدْرَکَ رَمَضَانَ. فَلَمْ يُغْفَرْ لَهُ. (رواه الحاكم)﴾

बर्बाद हो जाए वह शख़्स जिसने रमज़ान का महीना पाया और उसने अपनी मग़्फ़िरत न करवाई।

इसमें समझने की बात यह है कि अव्वल तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम बद्दुआ नहीं कर सकते क्योंकि क़ुरआनी फ़ैसला है :

﴿لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَا اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ. (التحريم:٦)﴾

नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की जो बात फ़रमाए उनको। और वही काम करते हैं जो उनको हुक्म हो।

इसका मतलब यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से हुक्म था और मंशाए ख़ुदावंदी थी कि जाओ और बद्दुआ करो कि बर्बाद हो जाए वह शख़्स जिसने रमज़ानुल मुबारक का महीना पाया और अपनी मग़्फ़िरत न करवाई। लेकिन इस बद्दुआ पर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का आमीन कहना बहुत ही अजीब बात है। आप ज़रा किसी माँ के सामने उसके बेटे को बदबख़्त कह कर तो देखें या किसी माँ के सामने उसके बेटे को बद्दुआ देकर के तो देखें। वह एक लफ़्ज़ भी अपने बेटे के ख़िलाफ़ नहीं सुन सकेगी। वह कहेगी कि मेरे बेटे को बद्दुआ क्यों दी जा रही है। कोई ऐसा तसव्वुर नहीं कर सकता कि कोई बेटे को बद्दुआ दे और माँ उस पर आमीन कह दे। अगर माँ मुहब्बत की वजह से आमीन नहीं कह सकती तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो ﴿بالمؤمنين رؤف الرحيم﴾ हैं। मोमिनीन के साथ शफ़्क़त और मेहरबानी से पेश आने वाले हैं। उन्होंने कैसे जिब्रील अलैहिस्सलाम की बद्दुआ पर आमीन कह दी?

हमारे मशाइख़ ने जवाब में लिखा है कि वजह यह थी कि रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त गुनाहों को इतना जल्दी माफ़ कर देते हैं कि जो बंदा थोड़ी सी भी कोशिश कर ले अल्लाह तआला उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं। और जो इतनी भी कोशिश न करे वह पक्का महरूम है। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही कहा कि जो रमज़ान का इतना भी लिहाज़ नहीं करता कि अल्लाह से गुनाहों की मग़फ़िरत करवा ले तो वह पक्का महरूम है। उसका तो बर्बाद हो जाना ही बेहतर है। इसलिए आमीन की मुहर लगा दी।

ईद या वईद

रमज़ानुल मुबारक के बाद या तो हमारे लिए ईद होगी या फिर हमारे लिए वईद होगी। दोनों में से एक हाल होगा। ईद के बारे में तो आप जानते हैं कि खुशी को कहते हैं और वईद सज़ा को कहते हैं। जिन लोगों की रमज़ानुल मुबारक में मग़फ़िरत होगी उनकी इस रमज़ान के बाद ईद होगी। जिन की रमज़ानुल मुबारक में में मग़फ़िरत न हो सकी उनके लिए रमज़ान के बाद वईद होगी। एक बार ईद क़रीब थी। एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा, हज़रत ईद कब होगी? वह फ़रमाने लगे, जब दीद होगी तब ईद होगी। मतलब यह है कि जब महबूब की दीद होगी तब हमारी ईद होगी क्योंकि आशिक़ का तो काम ही यही होता है। उसके लिए महबूब का वस्ल ही असल ईद होती है। इसलिए आप इन रातों में दुआ मांगिए कि ऐ अल्लाह! हमें अपना क़ुर्ब अता फ़रमा ताकि हमारी ईद सही मानों में ईद बन सके।

इज्तिमाई अमल की फ़ज़ीलत

यह ज़हन में रखिएगा कि जब कोई काम इज्तिमाई तौर पर किया जाता है तो उस जमाअत में से अगर किसी एक का भी कोई अमल क़ुबूल हो जाए तो अल्लाह तआला उस एक की बरकत से सब का अमल क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। इसीलिए फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअत का यह मसअला है कि जितने नमाज़ पढ़ने वाले होते हैं उनमें से किसी एक की नमाज़ क़ुबूल हो जाए तो अल्लाह तआला उसकी बरकत से सबकी नमाज़ क़ुबूल फ़रमा लेते हैं क्योंकि अल्लाह तआला की रहमत से यह बईद है कि सब लोग इकठ्ठे काम करें। उनमें से एक का तो वह क़ुबूल कर लें और दूसरों को पीछे हटा दें। वह फ़रमाते हैं कि जब सब ने मिलकर काम किया। उनमें से एक का अमल क़ुबूलियत के दर्जे तक पहुँच गया तो चलो उसकी बरकत से सबका क़ुबूल कर लेते हैं। जब नमाज़ और हज इस तरह क़ुबूल हो जाते हैं तो एतिकाफ़ का मसअला भी इसी तरह है। हम सब यहाँ मिलकर बैठे हैं। अब आख़िर इतने बंदों में से किसी की फ़रियद तो अल्लाह को पसन्द आएगी। किसी का रोना, किसी का तहज्जुद, किसी का सज्दा और किसी की तौबा तो अल्लाह तआला के हाँ क़ुबूल होगी। जिसका भी कोई अमल क़ुबूल होगा उसकी बरकत से अल्लाह तआला हम मिस्कीनों के एतिकाफ़ को भी क़ुबूल फ़रमा लेंगे। इसलिए आप हुस्ने ज़न के साथ बैठिएगा कि मैं जो यहाँ बैठा हुआ हूँ बस मुझे अल्लाह ने कुछ नवाज़ने के लिए यहाँ पहुँचा दिया है। मेरा काम है इस वक़्त को इबादत के साथ गुज़ारना और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेरा यह एतिकाफ़ ज़रूर-बिल-ज़रूर क़ुबूल

फ़रमाएंगे और इसे मेरे लिए आख़िरत में निजात का सबब बनाएंगे।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ है कि वह हमें पाबन्दी के साथ इन मज्लिसों में बैठने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमारी इस्लाह फ़रमा दे। हम सब जिस मक़सद के लिए यहाँ मिलकर बैठे हैं वह यह है कि सब अपनी इस्लाह चाहते हैं। इसलिए दिल में अपनी इस्लाह की नीयत कर लीजिए क्योंकि इंसान अल्लाह तआला से जो उम्मीद लगाता है अल्लाह तआला उस उम्मीद को पूरा फ़रमा देते हैं। दुआ है कि अल्लाह तआला इस एतिकाफ़ को हमारी इस्लाह का ज़रिया बनाए। हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत पैदा फ़रमा दे और इन दस दिनों में हमें लैलतुल-क़द्र की इबादत का शर्फ़ नसीब फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन।

अशआरे मुराक़बा

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे
दिले बे नूर को पुर नूर कर दे

फ़िरोज़ाँ दिल में शमए तूर कर दे
ये गोशा नूर से मामूर कर दे

है मेरी घात में ख़ुद नफ़्स मेरा
ख़ुदाया इसको बे मक़्दूर कर दे

मए वहदत पिला मख़्मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे